بسم الله الرحمن الرحيم

# क़ुरआन की धारणाएँ

(Translation: Concepts of Quran – A Topical Study)


लेखक

डॉक्टर मोहम्मद फ़त्ही उसमान

अनुवादक

अदील अख़तर



प्रकाशक

ज़कात फ़ाउंडेशन ऑफ़ इंडिया

# प्राक्कथन

''हमने यह किताब तुम पर उतारी है जो हर चीज़ की साफ़ साफ़ व्याख्या करने वाली है और हिदायत व रहमत और ख़ुशख़बरी है अल्लाह का आज्ञापालन करने वालों के लिए। अल्लाह *अद्ल* (न्याय) करने, *अहसान* (परोपकार) करने और रिश्तेदारों को देते रहने का हुक्म देता है और *फ़हश* (बेशर्मी), *मुनकर* (बुराई) व *बगयि* (जुल्म) से मना करता है। वह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम सीख लो।'' (अल-क़ुरआनः 16:89-90)

क़ुरआन वह किताब है जो अल्लाह के पैग़ाम को जो कि इस किताब में दिया गया है, लाने वाले पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसलल्म पर अल्लाह तआला ने क्रमवार उतारी। क़ुरआन के उतरने का यह सिलसिल 610 ई० में शुरू हुआ जब पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्र 40 साल थी, और उनकी मृत्यू यानि 632 ई० तक यह सिलसिला चला। यह पैग़ाम जिस *अक़ीदे* (आस्था) को अपनाने की आग्रह करता है उसे 'इस्लाम' कहा जाता है जिसका अर्थ अरबी भाषा में अल्लाह के आगे समपर्ण करना है, और यह शब्द क़ुरआन में अल्लाह के सभी संदेशों के लिए इस्तेमाल हुआ है जो पहले आ चुके पैग़म्बरों के माध्यम से अल्लाह ने उतारा, जैसे हज़रत नूह (Noah), हज़रत इब्राहीम (Abraham), याक़ूब (Jacob), यूसुफ (Joseph) और याकूब के वंशज (जिन्हें अरबी में *अलअस्बात* कहा जाता है), मूसा (डवेमे), सुलेमान (Solomon) और ईसा (Jesus) आदिः देखें क़ुरआन की आयतें 2:182, 130-133य 3:52, 5:44,111, 7:126, 10:72,84, 12:10, 22:78, 27:44, 28:53,

'क़ुरआन' एक अरबी शब्द है जिसका अर्थ है "पढ़ी जाने वाली किताब" (75:17-18)। यह शब्द इस किताब के लिए पूरी किताब में जगह जगह इस्तेमाल हुआ है (2:185; 4:82; 5:101; 6:19; 7:204; 9:111; 10:15, 37, 61; 12:3; 15:1, 87,91; 16:98; 17:9, 41, 45-46,60,78, 82, 88-89; 20:2, 114; 25:30, 32, 27:26, 92, 28:85; 34:31; 36:2,69; 41:36; 43:31; 47:24, 50:1, 45; 54:17; 55:2; 56:77; 59:21; 73:4,20; 76:23; 84:21; 85:21)। यह किताब अरबी भाषा में उतरी और ख़ुद इस किताब में ही इसे अरबी किताब कहा गया है (12:2; 20:13; 39:28; 41:3,44; 42:7; 43:3)। इसे ''अलकिताब'' भी कहा जाता है, और इसे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पैग़ाम की सच्चाई को एक चुनौतीपूर्ण सुबूत माना जाता है जिसके सामने किसी भौतिक चमत्कार या अजूबे की ज़रूरत नहीं हैः ''और वे कहते हैं कि इसके ऊपर उसके रब की तरफ़ से कोई अचम्भित करने वाली निशानी (प्रतीक) क्यों नहीं उतारी गयी, इन से कहो निशानियां तो अल्लाह के पास हैं और मैं केवल ख़बरदार (सचेत)

करने वाला हूँ।'' (29: 50,51)। क़ुरआन या उसके किसी अंश के समान कोई चीज़ लाने की चुनौती भी इन आयतों में दी गयी है। (2:23; 10:38; 11:13; 17:88)

क़ुरआन के अनुसार पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर पैग़म्बरों का सिलसिला ख़त्म हो गया और उनके द्वारा आने वाला आसमानी पैग़ाम अन्तिम है 33:40,, और इस तरह यह किताब ही उनके पैग़ाम की हमैशा तक रहने वाली गवाही है जबकि कोई भौतिक चमत्कार या निशानी अपना प्रभाव सदियां बीत जाने के बाद खो देती है। क़ुरआन की प्रारम्भिक आयतें पढ़ने व सीखने पर ज़ोर देती हेः *''पढ़ो और तुम्हारा रब बहुत करीम है जिसने इंसान को क़लम (लेखनी) के द्वारा इल्म (ज्ञान) दिया, इंसान को वह कुछ सिखाया जो वह नहीं जानता था''* (96: 3-5)। किसी ज़ाहिरी चमकत्कार के बजाए क़ुरआन अपने पाठकों को अवलोकन करने और अल्लाह की रचनाओं में मौजूद उसकी निशानियों तथा ख़ुद क़ुरआन और उसमें बयान होने वाले पैग़ाम पर ग़ौर (चिंतन) करने का आग्रह करता है।

क़ुरआन को ''अलजिक्र'' भी कहा गया है अर्थात याद दिहानी करानी वाली या उपदेश देने वाली किताब , क्योंकि यह मनुष्य जाति को यह ध्यान दिलाती है कि पूरी सृष्टि और उसकी रचना करने वाली हस्ती के साथ उसका सम्बंध क्या है [3:58; 15:6,9; 16:44; 36:69; 41:41]। चूंकि क़ुरआन एक ऐसी किताब है जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पैग़ाम को पेश करती है और उनकी सच्चाई की गवाही देती है इसलिए यह अल्लाह की निशानियों और उसकी सृष्टि और उसकी उतारी गयी किताब में दिए गए संदेश पर गम्भीरता से विचार करने के लिए इंसानों को अपनी बुद्धि को काम में लाने का आग्रह करती है इस बात पर ज़ोर देते हुए कि जो लोग अपनी बुद्धि का प्रयोग करते हैं और सोच-विचार से काम लेते हैं उन्हीं को ज्ञान प्राप्त होता है और वही वास्तव में इस पैग़ाम को समझते हैंः 2:73, 242; 3:118; 12:2; 24:61; 57:17; 2:219; 3:191; 7:176, 184; 10:24; 16:44; 30:8,21; 59:21; 2:197,169; 3:190-91; 5:100; 12:111; 38:29; 65:10; 2:221, 269; 14:25; 17:41; 28:43, 51; 39:27; 44:58; 2:102,103 230; 7:32; 12:40; 21:42; 29:64; 34:28; 39:9; 6:56: 63:3,

क़ुरआन मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यू तक कई वर्षों पर आधारित उनके पैग़म्बराना जीवन के दौरान क्रमवार उतरा। इस तरह अंश अंश करके उतरने की वजह भी क़ुरआन में बायन की गयी है कि इस पैग़ाम और पैग़म्बर की बदलती हुई स्थितियों को सम्बोधित किया जाएः *''और जो लोग सत्य को झुटलाने वाले हैं वह कहते हैं कि यह क़ुरआन उस पर एक बार में ही क्यों नहीं नाज़िल (अवतरित) किया गया, हां ऐसा इसलिए किया गया है कि इस को अच्छी तरह तुम्हारे मस्तिष्क में बैठाते रहें और (इसी लिए) हमने इस को एक विशेष क्रम के साथ अलग अलग अंशों का रूप दिया है और (इस में यह मंशा भी है) कि जब*

*कभी तुम्हारे सामने कोई निराली बात (या बे तुका सवाल) लेकर आएं तो उसका ठीक ठीक जबाव उसी समय हम ने तुम्हें दे दिया और बहतरीन तरीक़े से बात खोल दी।''* [25:32,33; 15:10-13; 17:106; 20:114; 75:16,17]। लेकिन क़ुरआन सम्पूर्ण रूप से अपने अवतरित होने के क्रम में या विषय क्रम में संकलित नहीं किया गया है। क़ुरआन का पूरा संदेश 114 अध्यायों में विभाजित है जिन्हें ''सूरतें (सूरत)'' कहा जाता है, जो आयतों पर आधारित होती हैं और आयतों की कुल संख्या पूरी किताब में 6,200 है। आयतों की लम्बाई और उनकी संख्या अलग अलग सूरतों में अलग अलग है।

आरम्भिक सूरत (*अलफ़ातिहा*) जो हर नमाज में कम से कम दो बार दोहराई जाती है समग्र रूप से अल्लाह और आख़िरत के दिन (परलोक में बदले का दिन) पर विश्वास को जगाती है और अल्लाह से इंसान के सही समबन्ध को व्यक्त करती है अर्थात यह कि इंसान सीधे रस्ते पर चलने के लिए अल्लाह से *हिदायत* (मार्गदर्शन) की गुहार लगाते हैं। सूरत फातिहा के बाद क़ुरआन में बाक़ी सूरतों का क्रम मुख्यतः उनकी लम्बाई के हिसाब से रखा गया है, सबसे पहले सबसे लम्बी सूरत आती है फिर उससे कुछ छोटी सूरतें, जिनके बाद दरमियानी साइज़ वाली सूरतें आती हैं और फिर छोटी छोटी सूरतें अन्तिम भाग में आती हें। जो सूरतें उस ज़माने में अवतरित हुईं जब मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का में थे, वे आम तौर से छोटी छोटी आयतों पर आधारित हें और क़ुरआन की छोटी सूरतें अधिकतर मक्का में ही उतरीं। मक्की सूरतों में मुख्यतः अक़ीदे (आस्था) की बुनियादों यानि *सब्र व इस्तेक़ामत* (संयम व सहनशीलता) और दूसरे नैतिक मूल्यों पर ज़ोर दिया गया है जो कि अल्लाह पर ईमान लाने वालों को अपने अन्दर पैदा करना ज़रूरी हैं, और अल्लाह की तरफ़ से पहले आ चुके पैग़ामें और उन लोगों के अंजाम का बयान है जिन्होंने ढिटाई के साथ सत्य को नकार दिया, तथा उन पुरस्कारों का उल्लेख है जो अल्लाह ने उन लोगों के लिए तैयार कर रखा है जो ईमान और सत्यकर्म को अपनाने वाले हैं। सत्य को स्वीकार करने और ईमान पर जमने को हमैशा सद्कर्म और दूसरों से सौहार्द के साथ पेश आने से जोड़ा गया है और क़ुरआन की 75 आयतों में ये तत्व अटूट ढंग से बयान हुए हें। मक्का में उतरने वाली *वह्यि* (आसमानी संदेशे) उन इबादतों से भी सम्बंधित है जो कि अल्लाह के आगे समर्पण के प्राथमिक और मौलिक रूप (बुनियादी शक्लें) हैं जो एक मुसलमान से अपेक्षित हैं , साथ ही साथ ग़रीबों को ज़कात देने की शिक्षा भी इसमें दी गयी है यद्यपि उन्हें विस्तार से यहाँ नहीं बताया गया है

मदीना में जहां मुसलमानों ने अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहो वसल्लम के नैतृत्व में पहले इस्लामी राज्य की स्थापना की थी, क़ुरआन ने व्यक्तियों, परिवारों, समाज और राज्य के व्यवहार को निर्धारित करने के लिए क्रमवार मार्गदर्शन किया और उसी के साथ उन मौलिक शिक्षाओं पर ज़ोर दिया जो पहले मक्का में अवतरित हो चुकी थीं। या यह कि उनमें से कुछ

विषय मक्का या मदीना में अवतरित होने वाली सूरतों में साथ साथ आते हैं, इस तरह कि एक सूरत विभिन्न विषयों को समेटती है और किसी भी सूरत का पढ़ने वाला अल्लाह के पैग़ाम को अच्छी तरह जान लेता है और उन अनेक विषयों से भी लाभान्वित होता है जिन से पूरी सूरत में उनका आपसी सम्बंध, और कलाम की रवानी (धारा प्रवाह) व सामंजस्यपूर्ण प्रस्तुति पर फ़र्क़ नहीं पड़ताः *"और बेशक हमने इस क़ुरआन को नसीहत (सीख) के लिए आसान माध्यम बना दिया है, फिर क्या है कोई नसीहत क़ुबूल करने वाला (सीख लेने वाला)?"* (54: 17)। इस तरह, एक सूरत क़ुरआन में प्रस्तुत किए गए इस्लाम के पैग़ाम की हिकमत, आपसी समन्वय और एकता की मिसाल पेश करती है (जैसे सृष्टा और सृष्टि का सम्बंध, सृष्टि के यौगिक तत्वों का आपसी सम्बंध, इंसानों का आपसी सम्बंध और सृष्टि व सृष्टा से उनका सम्बंध, इस संसार का जीवन और परलोक के जीवन का आपसी सम्बंध वग़ैरह)।

क़ुरआन को उसके पूरे विवरण के साथ अल्लाह का कलाम मानने का और यह यक़ीन रखने का कि यह एक जीवन शैली की ओर रास्ता दिखाता है जिसकी ख़ास बातों को इसमें समेट लिया गया है, मतलब यह नहीं है कि इस आसमानी कलाम को समझने, उसकी व्याख्या करने, उससे नतीजे निकालने और इसे व्यवहार में बरतने के लिए इस कलाम में चिंतन मनन की कोई गुंजाइश इंसानी अक़्ल के लिए नहीं है। अल्लाह का यह कलाम अरबी भाषा में अवतरित हुआ है और भाषा में किसी शब्द के अलग अलग शाब्दिक अर्थों के लिहाज से उसकी अलग अलग व्याख्या की गुंजाइश होती है (जैसे अरबी का शब्द *क़ुरः* (2:228) है जिसका मतलब महिला के मासिक धर्म की अवधि, लाल रंग, या दो मासिक धर्मो के बीच का सफेद काल होता है, या किसी शब्द के बोध के लिए उसके कई सम्भावित अर्थ सामने हो सकते हैं या किसी शब्द या सांकेतिक उद्बोधन से उसका मतलब अलग हो सकता है (जैसे पानी होने की स्थिति में गुस्ल करने की ज़रूरत के लिए औरत को छूना के शब्द इस्तेमाल हुए हैं ( 4:43, 5:6), अब इसके शाब्दिक अर्थ केवल छूना लिया जाए या सांकेतिक रूप से सम्भोग करना लिया जाए?)। इंसानी अक़्ल को इसके सम्भावित वैकल्पिक अर्थ लेना होंगे और क़ुरआन में दूसरी जगहों पर सम्बंधित टेक्स्ट और सही *सुन्नत* से सीख लेते हुए और कलाम की मंशा व मक़सद को समझते हुए और यह देखते हुए कि अल्लाह की इस हिकमत के नाज़िल होने से इसका क्या मेल हो सकता है, शब्द का सबसे ज़्यादा स्वीकार्य अर्थ निर्धारित करना होगा। कई जगहों पर समान या सम्बंधित टेक्स्ट और उसके संदर्भ में किसी प्रमाणित *सुन्नत* के बीच सम्भावित सम्बंध की विवेचना करनी होती है और इंसानी बुद्धि से इस बात का फ़ैसला करना होता है कि कोई सामान्य या निर्धारित नियम क्या हो सकता है और कोई विशेष या सीमित मामला क्या हो सकता है? क़ुरआन के अनुवाद, व्याख्या और उसे विस्तार से समझने समझाने और व्यवहारिक रूप में उसे बरतने के लिए यह बौद्धिक प्रयास एक दूसरे से भिन्न हो सकते

हैं और एक ही व्यक्ति के लिए युग परिवर्तन की दृष्टि से भी इसमें फ़र्क़ हो सकता है। इंसानी दिमाग़ सामाजिक व सांस्कृतिक स्थितियों से प्रभावित होता है और इसलिए ऐसे बौद्धिक प्रयास अलग अलग ज़मानों में और अलग अलग स्थानों पर अलग अलग नतीजों तक ले जा सकते हैं। चुनांचि, क़ुरआन जिस सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश में अवतरित हुआ उसे समझने के लिए पैग़म्बर सल्ल. के ज़माने में अरब और विशेषकर मक्का व मदीना की सामाजिक व सांस्कृतिक स्थितियों को जानना ज़रूरी है। नेचुरल और सोशल साइंस और ह्यूमन स्टडीज हमें क़ुरआन को समझने में मदद देती हैं क्योंकि क़ुरआन के उपदेश और दिशा निर्देश में आपसी सम्बंध है, वह केवल कुछ बिखरे हुए शब्द नहीं हैं कि उनमें से हर एक को अलग अलग समझा जाए। एक मिसाल पर विचार कीजिएः क़ुदरत, व्यक्तियों और समाज के बारे में अपने सामयिक ज्ञान की रोशनी में हम राजनीतिक और सामाजिक व आर्थिक शक्तियों के सिलसिले को आज उन आयतों के संदर्भ में समझ सकते हैं और उनकी व्याख्या कर सकते हैं जो रात और दिन के आने जाने और जीवन व मृत्यू के संदर्भ में आई हैं (3:26,27)। किसी भी टेक्स्ट के बोध के लिए भाषाई परिवेश और सामाजिक व सांस्कृतिक परिदृश्य का ज्ञान होना अनिवार्य है।

यह बात किसी भी तरह क़ुरआन के पैग़ाम और उसकी हिदायत (मार्गदर्शन) के शाश्वत होने (सदैव बने रहने) के विपरीत नहीं है। क़ुरआन अपने संदेश की वैश्विकता व सार्वभौमिकता पर बार बार ज़ोर देता है (जैसे 12:104; 21:107; 25:1, 68:52; 81:27) चुनाँचे यह सामूहिक रूप से कुल मानव जाति को "बनी आदम" (आदम के बच्चों ) कह कर बार बार सम्बोधित करता है [7:26, 27, 31,35, 172; 17:70; वग़ैरह] इसी तरह *"या अय्युहन्नास"* (ऐ इंसानों) कह कर सारे इंसानों को सम्बोधित करता है [2:21,5,49,73; 31:33; 35:3,5,15; 49:13 वग़ैरह]। लेकिन इसके बावजूद क़ुरआन का पैग़ाम सारी इंसानियत को एक इंसानी माध्यम से ही और और एक ख़ास जगह से और ख़ास समय से ही पहुंचना हैः *"अल्लाह ज़्यादा बहतर जानता है कि अपनी पैग़म्बरी का काम किस से ले।"* (6:124), "और वास्तव में यह (पैग़ाम) तुम्हारे लिए और तुम्हारी क़ौम के लिए एक बहुत बड़ा सम्मान है और जल्दी ही तुम लोगों को इसकी जवाबदेही करना होगी।" (43:44)। लिहाज़ा, अल्लाह के फैसले और योजना के मुताबिक़ सारी इंसानियत के लिए उसके आख़री और कुल पैग़ाम को पहुंचाने वाला माध्यम एक अरब व्यक्ति बना (33:40), और इस आख़री आसमानी संदेश की भाषा अरबी हुई (12:2; 13:37; 16:103; 20:113; 26:192-95; 39:28; 41:3,44; 42:7; 43:3; 46:12)। इस संदेश के प्राथमिक सम्बोधित अरब थे कि यह उनके बीच अवतरित हुआ था, फिर अरबों के द्वारा दूसरे लोग इसके सम्बोधित हुए जिन्होंने इसे पहले पहल स्वीकार किया, फिर कुल मानव जगत और विभिन्न स्थानों पर बसी हुई विभिन्न इंसानी पीढ़ियां। इस पैग़ाम का विषय और उसका मूल तत्व सार्वभौमिक और वैश्विक है, अलबत्ता यह ज़रूरी था कि उसका प्रारूप और ढांचा

पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में इसके पहले सम्बोधित अरब वासियों के लिए समझने योग्य हो ताकि वे इस पैग़ाम को दूसरे लोगों तक पहुंचाने के योग्य बनें और ताकि ख़ुद यह पैग़ाम भी बाकी रह सके और अरबों के बीच यह फैल जाए। इस अन्तिम आसमानी पैग़ाम को अच्छी तरह समझने के लिए और किसी भी सम्भावित भ्रम से बचने के लिए जो कभी पैदा हो सकता हो, इन दोनों तथ्यों को अटूट ढंग से एक साथ दिमाग़ में रखना ज़रूरी है।

जैसे, 54:16,17 आयतों को पूरी सूरत में कई बार दोहराया गया है और आयत 55:13 इसी सूरत में 31 बार दोहराई गयी लेकिन इस तकरार (पुनरावृत्ति) को अनावश्यक नहीं समझा जा सकता अगर यह बात ध्यान में रखी जाए कि पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में इसके प्रथम सम्बोधित अरब लोग अपनी संस्कृति और साहित्य में इस तरह की पुनरावृत्ति के आदी थे और इससे प्रभावित होते थे। वे अपनी शायरी में एक विषय से दूसरे विषय की ओर जाकर बात को फैलाते थे। मुहम्मद असद, अल्लाह उनकी मगफिरत करे और उनकी क़ब्र को नूर से रोशन करे, हालांकि अरब नहीं थे लेकिन अरबी भाषा का गहन ज्ञान उन्होंने प्राप्त किया था, उन्होंने अपनी किताब "दि मैसेज आफ़ क़ुरआन" के प्राक्कथन में इस अरबी शैली को बहुत सुन्दरता से पिरोया है। प्राचीन अरबी साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियों में अरब की सांस्कृतिक परम्पराओं से भी पता चलता है कि इस तरह क़ुरआन को उसकी शैली और वाक्य रचना में सरल बनाया गया है ताकि स्वयं क़ुरआन के शब्दों में "याद रखने के लिए" आसान हो जाए [54:17]। क़ुरआन के एक गम्भीर विद्यार्थी को क़ुरआन अवतरित होने के युग के अरब, अरब वासियों और अरबी भाषा को जानना होगा और, जैसा कि असद ने अपने प्राक्कथन में संक्षेप में इस की तरफ़ इशारा किया है, "इस बात को हमैशा ध्यान में रखना होगा कि क़ुरआन के कुछ ख़ास बयान, ख़ास तौर से वे बयान जो अदृश्य तथ्यों के सम्बंध में आए हैं, उनसे सम्बंधित शब्दों के अर्थ समय बीतने के साथ बदल गए हैं। महान इस्लामी स्कॉलर मुहम्मद अबदुहू ने इस बिन्दु को उजागर किया है कि कुछ मशहूर या भाषाविद व्याख्याकार भी कहीं कहीं इस लिहाज़ से भटक गए हैं।" दूसरी तरफ़ एलिप्टिसिज़्म (घूम फिर कर बात वहीं आ जाना) "अरबी मुहावरों की, और इसी लिए क़ुरआनी भाषा की, एक अटूट विशेषता रही है" जैसा कि असद ने लिखा है।

क़ुरआन के इन आयामों अर्थात उसकी सार्वभौमिक स्थिति और विशेष सामयिक स्थिति के लिहाज़ से उसका सुधार संदेश प्राथमिक रूप से उस समय के अरब समाज और उसके बाद क्रमवार हर समाज के लिए है जहाँ तक यह कभी भी पहुंचे। कभी कभी हम देखते हैं कि क़ुरआन का सम्बोधन हमारे ज़माने के अति स्पष्ट और समझ में आने वाले तथ्यों के साथ ख़ुद हमारी आज की ज़रूरतों की चर्चा करता है। अतएव, हम इस बात की तरफ़ ध्यान नहीं देते

कि पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में उस समय के अरब वासी किस तरह एक ऐसे संदेश से प्रभावित हुए होंगे, उस पर ईमान लाए होंगे, उसे समझा होगा और उसे दूसरों तक पहुंचाया होगा, जिसका अर्थ उनके लिए समझना उस समय सम्भव नहीं था। क्या क़ुरआन ने उन विशेष सम्बोधितों और उस टाइम-स्पेस को जो उसके वैश्विक व शाश्वत पैग़ाम के लिए एक माध्यम थे, वैश्विकता और शाश्वतता के लिए क़ुरबान कर दिया? क्या यह अरबों के दिल व दिमाग़ थे जो बाद में दूसरे स्थानों पर दूसरों के दिल व दिमाग़ जीतने के लिए बाक़ी नहीं बचे?, और इस तरह उसने वर्तमान और भविष्य दोनों को खो दिया? और आख़िर यह कैसे माना जा सकता है कि जो बात आज हमारे मस्तिष्क व बुद्धि और हमारी आवश्यकताओं के मुताबिक़ है, आने वाले दशकों या शतकों में समझ से परे हो जाएगी।

आज की दुनिया में हमें यह लग सकता है कि क़ुरआन ने अगर ग़ुलामी, जंग और औरतों या किसी ख़ास जाति, समुदाय या किसी ख़ास समुदाय के साथ भेदभाव व अन्याय जैसे मुद्दों पर साफ़ शब्दों में रोक लगादी होती तो आज वह सब लोगों के दिलों व दिमाग़ों के लिए स्वीकार्य होता। लेकिन क़ुरआन को अपनी शिक्षाएं इस तरह प्रत्यक्ष और निर्धारित तरीक़े से क्यों प्रस्तुत करना चाहिएं और इंसानी बुद्धि की भूमिका और ज़िम्मेदारी को क्यों नज़र अंदाज़ कर देना चाहिए जिसे सामान्य लक्ष्यों और इस पैग़ाम के सिद्धांतों, और उसके तक़ाज़ों को पूरा करने या उसे रद्द कर देने के विभिन्न स्तरों, और अल्लाह की मुस्तक़िल हिदायत व इंसानी हालत में होते रहने वाले बदलावों के बीच आपसी सम्बंध और इन्ट्रेक्शन पर नज़र रखनी है? क्या इंसानी मस्तिष्क अल्लाह के दूसरे वर्दानों की तरह इंसानों के लिए अल्लाह का उपहार नहीं हे जिसे उसके पैग़ाम को समझने के लिए और उसे व्यवहारिक रूप देने के लिए इन्ट्रेक्शन करना है? क़ुरआन सामाजिक व सांस्कृतिक विकास के प्राकृतिक नियमों की अनदेखी क्यों करे और इस पैग़ाम के अवतरित होने के युग और स्थान में इंसानी बुद्धि के भ्रम में पड़ने व या इंसानी बौद्धिक क्षमता को नकारने का ख़तरा क्यों मोल ले? इंसानी बुद्धि एक अमूल्य वस्तु है, इसे अल्लाह ने, जिसने इंसान को बौद्धिक योग्यता के साथ पैदा किया है, और क़ुरआन को उसके बहु आयामी और जटिल ढांचे के साथ बदलती हुई स्थितियों के साथ समझे जाने के लिए उतारा है, क़ुरआन का गहन और व्यापक बोध प्राप्त करने की क्षमता दी है। ग़ुलामी (दासता) को आज क़ुरआनी सिद्धांतों की रोशनी में पूरी तरह या परोक्ष रूप से क्रमवार वर्जित माना जा सकता है, लेकिन यह बोध हमें इंसानी मस्तिष्क और सामाजिक व सांस्कृतिक विकास की बदौलत ही प्राप्त हुआ है। यह क़ुरआन के आलिमों की मुस्तक़िल ज़िम्मेदारी है कि अलग अलग ज़मानों और स्थानों में इंसानी दिमाग़ व दिल को क़ुरआन के मूल संदेश और उसके निहितार्थ से अवगत कराएँ, हालांकि क़ुरआन के पैग़ाम को इस अंदाज़ से समझ पाना मुश्किल मालूम होता है। क़ुरआन का करिशमाती प्रभाव कभी ख़त्म न होने वाला है और इसे इंसानी दिमाग़

की गतिशीलता की बदौलत बार बार समझा जा सकता है क्योंकि इंसानी दिमाग़ इंसानियत के नाम अल्लाह के अन्तिम पैग़ाम के मूल तत्व को समझने के लिए और अधिक गहराई में और व्यापक पटल पर जाने की क्षमता रखता है।

सैयद अबुल आला मौदूदी ने अब्दुल्लाह यूसुफ अली की रचना "दि मीनिंग आफ दि क़ुरआन" के प्राक्कथन में लिखा है किः "क़ुरआन एक बे मिसाल किताब है।" (इसे पढ़ने वाला) यह देखता है कि यह किताब आस्था पर चर्चा करती है, नैतिक उपदेश देती है, नियम देती है, लोगों को इस्लाम की तरफ़ बुलाती है, ईमान न लाने वालों को ख़बरदार करती है, ऐतिहासिक घटनाओं से सीख देती है, बुरे अंजाम से डराती है और अच्छे अंजाम की ख़ुशखबरी देती है यह सारी चीज़ें बहुत सुन्दरता से इस में एक दूसरे से जोड़ कर प्रस्तुत की गयी हैं। एक ही विषय को अलग अलग ढंग से बार बार दोहराया गया है और एक के बाद दूसरा विषय बिना किसी ज़ाहिरी सम्बंध के चला आता है। सम्बोधक, सम्बोधित और सम्बोधन का रूख़ बग़ैर किसी प्रस्तावना के एक दम बदल जाता है। कही पर भी ऐसा कोई प्रतीक नहीं दिया गया है जिससे अध्याय या विषय की पहचान होती हो। फ़िलासफी (दर्शन) और मेटेफिजिक्स (तत्वमीमांसा या अध्यात्मविज्ञान) के मुद्दों को इन विषयों की पाठ्यपुस्तकों से बिल्कुल भिन्न अंदाज़ में छेड़ा गया है। इंसान और सृष्टि की चर्चा नेचुरल साइंस से बिल्कुल अलग ढंग में की गयी हे। इसी तरह यह सांस्कृतिक, राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याओं के हल में स्वयं अपने तरीके की पैरवी (अनुसरण) करता है और क़ानून के नियमों व सिद्धांतों पर सामाजिक विषयों के विशेषज्ञों, वकीलों और जजों के ढंग से भिन्न ढंग में चर्चा करता है। नैतिकता व संस्कारों की सीख इस तरह दी गयी है जिसकी कोई मिसाल नहीं हे। क़ुरआन को गहराई के साथ समझने के लिए इस किताब का अंदाज़ उसके केन्द्रीय विषय और उसके उद्देश्यों व लक्ष्यों को समझना ज़रूरी है। क़ुरआन के पाठक को उसकी शैली, शब्दावलियों और व्यक्त करने के ढंग से भी अवगत होना चाहिए। पाठक को वह परिवेश और परिस्थितियां भी ध्यान में रखना चाहिएं जिसमें क़ुरआन का कोई ख़ास अंश अवतरित हुआ है।"

"क़ुरआन की असिल हक़ीक़त यह है कि यह एक मार्गदर्शक ग्रन्थ है। इसका सम्बोधित इंसान है, यह इंसान के जीवन के उन पहलुओं की चर्चा करता है जो उसकी वास्तविक सफलता या असफलता का कारण बनते हैं। इसका केन्द्रीय विषय जीवन की सच्चाई को सामने लाना और इस आधार पर सही रास्ते की ओर बुलाना है। इसका उद्देश्य और मंशा आदमी को सही रास्ते की तरफ़ बुलाना और हिदायत के रास्ते को स्पष्ट करना है आदमी को उन सामाजिक, ऐतिहासिक और अन्य कारकों या स्थितियों को जानना चाहिए जो किसी ख़ास विषय को स्पष्ट करने में सहायक हो सकते हैं। क़ुरआन लगातार रूप से पूरी होने वाली किसी किताब की तरह अवतरित नहीं हुआ यह आम परम्परागत ढंग की कोई साहित्यिक रचना भी नहीं है क़ुरआन

उस इस्लामी आन्दोलन के मार्गदर्शन के लिए जो अल्लाह के रसूल सल्ल. ने शुरू किया था, स्वयं अपनी एक अलग शैली अपनाता है मदीना में जैसे जैसे हालात बदलते गए और हर बदली हुई हालत की अपनी कुछ विशेष समस्याएं थीं, अल्लाह ने पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल. पर समय व स्थिति की ज़रूरत के लिहाज़ से *वह्यि* उतारी उनमें कहीं चेताने वाली तेजी है और कहीं एक हाकिम के शासकीय आदेश हैं। कहीं एक गुरू, संरक्षक और सुधारक की सी शैली अपनाई गयी है, और एक समूह को संगठित करने, एक राज्य स्थापित करने, और जीवन के विभिन्न मामलों को बरतने के लिए एक अच्छी सभ्यता व संस्कृति के तरीक़े व सिद्धांत सिखाए गए हैं। कहीं इस्लामी राज्य की पनाह में आ जाने वाले दिखावे के मुसलमानों और इस्लाम का इंकार करने वालों के साथ बर्ताव सिखाया गया है। फिर एक तरफ़ मुसलमानों को यह सीख दी गयी है कि वह अहले किताब (यहूदियों व ईसाइयों), विरोधियों और उनके सहयोगियों के साथ किसा तरह का सम्बध रखें। दूसरी तरफ़ उन्हें ज़मीन पर अल्लाह के ख़लीफ़ा के रूप में अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने की शिक्षा व प्रशिक्षण दिया गया है। कहीं उनके मार्गदर्शन के लिए निर्देश दिए गए, और उन की कमजोरियों पर उनूहें चेताया गया और उन्हें अल्लाह के रास्ते में अपनी जानें क़ुर्बान करने के लिए उभारा गया है। तो कहीं उन्हें वे अख़लाक़ सिखाए गए हैं जिनकी ज़रूरत उन्हें जीत या हार की स्थिति में, बदहाली या ख़ुशहाली में और जंग व शान्ति की अवस्था में थी। क़ुरआन के विभिन्न अंश इस आन्दोलन के विभिन्न चरणों में पेश आने वाली ज़रूरतों के लिहाज से अवतरित हुए। चुनाँचे इस तरह की किसी किताब में औपचारिक पुस्तकों की तरह शैली का एक समान रूप नहीं हो सकता यह अपने बुनियादी नजरिए और सिद्धांतों को उचित जगहों पर दोहराती रहती है यह किताब हालांकि आने वाले तमाम युगों के लिए अवतरित होना थी लेकिन इसका अवतरण 23 वर्ष में अलग अलग चरणों की आवश्यकताओं और अपेक्षाओं के अनुसार टुकड़ों में हुआ। क़ुरआन के अध्यन के किसी भी चरण में (क़ुरआन क्रम में) एकतरफ़ा स्थिति से बचने के लिए यह ज़रूरी है कि मक्की सूरतें मदनी सूरतों के बीच में और बाद में उतरने वाली सूरतें पहले उतर चुकी सूरतों के बीच में आएं ताकि क़ुरआन का मुकम्मल संदेश और इस्लाम का पूरा रूप हमेशा पढ़ने वाले के सामने रहे। क़ुरआन पूरी मानव जाति के मार्गदर्शन का दावा करता है लेकिन पढ़ने वाला यह देखता है कि इसका सम्बोधन ख़ास तौर से अरब के उन लोगों से है जो उस समय मौजूद थे। यद्यपि कहीं कहीं यह दूसरे लोगों और सामान्य रूप से सभी इंसानों को भी सम्बोधित करता है लेकिन ख़ास तरीक़े से यह उन चीज़ों का उल्लेख करता है जो कि अरबों को अपील करती थीं और उनके ही माहौल, इतिहास और रीति रिवाजों से उनका सम्बंध था। इसके बावजूद क़ुरआन अरब के दीन विरोधी लोगों के बारे में जो कुछ कहता है वह हर युग में और हर जगह पाए जाने वाले उसी तरह के लोगों के लिए भी पूरी तरह सही है। इस बात की कोई वजह नहीं है कि ऐसे वैश्विक

और सार्वभौमिक पैग़ाम को एक स्थानीय या सामयिक संदेश कह कर रद्द कर दिया जाए केवल इस लिए कि उसने किसी विशेष युग में किसी विशेष समुदाय को सम्बोधित किया। दुनिया में कोई फिलासफी, कोई जीवन शैली और कोई धर्म ऐसा नहीं है जो शुरू से अन्त तक हर बात को बिना किसी विशेष मामले और विशेष मिसाल के प्रस्तुत करता हो।

वास्तव में क़ुरआन का बहुआयामी तरीक़ा और एक ही सूरत के अन्दर अनेक विषयों का बयान अलग अलग तरह के व्यवहार और स्वभाव वाले लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता हेः "हम ने इस क़ुरआन में हर हर तरीक़े से तमाम की तमाम मिसालें लोगों के समझने के लिए बयान कर दी हैं, लेकिन इंसान सब चीजों से बढ़कर झगड़ालू है।" [18:45; और देखें 17:4,89; 24:50[ "और निश्चित रूप से हम ने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर तरह की मिसालें बयान कर दी हैं लेकिन वे इन्हें मस्तिष्क में रखें" [39:27; और देखें 30:85]। लेकिन इस तरह अलग अलग तरह के विषयों और उनके बयान के अलग अलग ढंग से किसी सूरत या पूरी किताब की रवानी (धारा प्रवाह), तारगम्य और सामंजस्य पर असर नहीं पड़ताः "अगर यह क़ुरआन अल्लाह के सिवा किसी और की तरफ़ से होता तो निश्चित रूप से उसमें बहुत से विरोधभास पाते।" (4:82)।

क़ुरआन का मुस्तक़िल वैश्विक व सार्वभौमिक पैग़ाम व्यक्ति और समाज की इस्लाह (सुधार) के लिए उसके प्रस्तुत किए गए सिद्धांतों में है। इसका सम्बोधन यद्यपि उसके उतरने के समय के अरबों से था लेकिन इसका रुख़ किसी वर्ग विशेष की तरफ़ नहीं है चाहे वह धार्मिक अगुवाई करने वाला वर्ग हो, शासक वर्ग हो, नेतागण हैं और धनाड्य वर्ग हो। इसके विपरीत क़ुरआन अपनी दिशा ख़ुद निर्धारित करने के लिए व्यक्ति (मर्द हो या औरत) की और सामूहिक रूप से पूरे समाज की व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर ज़ोर देता हे (जैसे 6:94; 17:13,14; 19:80,95; 34:46), और शक्तिशाली लोगों की नक़ल करने और उनका अनुसरण करने की निन्दा करता है जैसे (4:97-100; 7:75,76; 14:12; 33:66, 67,68; 40:47-48)। इसी तरह क़ुरआन का पैग़ाम किसी विशेष जाति, विशेष नस्ल, विशेष समूह या विशेष लिंगके लिए नहीं है (30:22; 49:13; 9:67,68,71,72; 33:35; 60:10-12; 66:10-12)। क़ुरआन बार बार हर व्यक्ति को उसके अपने स्वभाव के लिहाज से और सामूहिक रूप से सभी इंसानों को अपनी तरफ़ ध्यान आकर्षित कराता है, जैसेः (4:28; 10:12; 11:19; 12:5; 14:34; 16:4; 17:11,13,14,67,83,100; 18:54; 29:8; 41:49; 42:48; 46:15; 53:39-42; 70:19-28; 75:14,15,36-41; 76:1-3; 80:24-32; 82:6-8, 84-86; 86:5; 90:4-10; 95:4-6; 96:6,7; 100:6-8; 103:2,3; 2:8,13, 21, 44, 83, 124, 125, 164, 165, 168, 200-2, 204-7, 213, 21, 251, 264; 3:4, 14, 21, 96, 110, 134, 140; 4:1, 37, 38, 58, 105, 114, 133, 161, 5:32; 6:91, 122, 128; 7:158, 179; 10:44, 57, 99; 11:85, 118, 119; 14:1; 16:44, 61; 17:89; 22:1-5, 11,

40, 73, 77, 78; 29:2; 30:3, 39, 41, 58; 31:18, 33; 34:28, 35:2,15, 28, 45; 40:57; 42:42; 49:13; 51:56; 55:33; 57:24, 25; 72:6; 83:2-6, 99:6-8; 110:1-2; 114:1-6; 7:26,27, 31,35,172; 17:70; 36:60, 61,। क़ुरआन की वो आयतें जो इंसान और उसकी प्रांति या स्वभाव से अपील करती हैं पूरी किताब में अनेक बार आई हैं, जैसेः (2:281, 286; 3:25, 30; 4:1; 6:98, 104, 152, 164; 7:42; 12:53; 17:15; 21:47; 23:62; 31:28,34; 32:12; 35:32; 39:6, 41; 47:38; 50:16; 59:9, 18; 65:17; 74:38; 75:2,14; 79:40; 82:19; 86:4; 89:27; 91:7-9,।

इसके अलावा यह कि, क़ुरआन का पैग़ाम जिसका सम्बोधन पहले पहल एक क़बायली समाज से था, परिवार, वंश, समाज और राज्य व उसके शासकों से भी सदैव सम्बंध रखता है। इसमें क़बीलों को बहुवचन में *"शुऊब"* (व्यक्तियों के समूह) के साथ जो कि स्वयं भी बहुवचन में है, जिक्र किया गया है और अनेक इंसानी गुटों के रूप में केवल एक ही बार जिक्र किया गया हे, और मक़सद यह बयान किया गया है कि उन्हें एक दूसरे से परिचित होना है ताकि इंसानियत के समान या सामूहिक हितों के लिए वे एक दूसरे से सहयोग करें (49:13)। मर्दों और औरतों को उसी तरह समान रूप से सम्बोधित किया गया है जिस तरह उन्हें समान रूप से पैदा किया गया है और बराबर से ज़िम्मेदार बनाया गया है (4:1; 7:189; 9:68, 71, 72; 33:35, 36; 39:6; 60:10,11,12; 66:10,11,12)। इंसानों के बीच परस्पर मतभेद इंसानी स्वभाव से हैं इसलिए इससे बचा नहीं जा सकता, और अल्लाह की हिदायत में बहुलता व विविधता पर ज़ोर दिया गया है कि यही एक तरीक़ा है जो इंसानी स्वभाव से मेल खाता है और इसी से आपसी अन्तर व भेद का फ़ायदा एक संगठित, निर्माणकारी और नैतिकतापूर्ण अंदाज़ में प्राप्त किया जा सकता हैः "अगर तुम में किसी बात पर मतभेद हो तो उसे अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ ले जाओ अगर तुम अल्लाह और आख़िरत (परलोक में अल्लाह के सामने जवाबदेही) पर सच्चा विश्वास रखते हो" (49:59), "और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हें एक ही समुदाय बना देता लेकिन वह चाहता है कि जो कुछ तुम्हें दिया गया है उसमें तुम्हारी परीक्षा करे। तो तुम अच्छे कामों में एक दूसरे से आगे बढ़ने का प्रयास करो, तुम सब को अल्लाह ही की तरफ़ पलटना है, फिर वह तुम्हें हर चीज़ बता देगा जिसमें तुम मतभेद करते रहे हो।" (5:48), आपसी मतभेदों को सकारात्मक रूप से बरतने के लिए देखें (2:42; 16:125; 29:46; 42:15; 49:6, 9-13; 61:2-3), "अगर आपका पालनहार चाहता तो सब लोगों को एक रस्ते पर एकजुट कर देता, वे तो बराबर मतभेद करते रहेंगे, उन लोगों को छोड़ कर जो जिन पर आप का रब दया करे, उन्हें तो इसीलिए पैदा किया गया है।" (11: 118-119)। अगर विभिन्न व्यक्ति और समूह एक दूसरे से वार्तालाप और सहयोग करें तो इंसानी समाज की इस विविधता से इंसानी समाज का भला हो (3:4 ,10, 110; 4:114; 30:22; 49:13)। आस्थाओं और

विचारों के भेद को दबाया नहीं जाना चाहिए क्योंकि दबाव से वास्तविक सहमति और सच्ची एकता स्थापित नहीं होती (2:256; 10:99; 11:28)। लोगों को अपने मतभेद इंसानी विविधता को स्वीकार करते हुए और बहुलता के नज़रिए से काम लेकर नैतिक और उचित ढंग से बरतना चाहिएं। केवल अल्लाह तआला ही फैसले के दिन मतभेदों का फैसला कर सकता है, वही हर व्यक्ति की नियत और उसकी स्थितियों को ठीक से जानता है (2:113; 3:55; 4:141; 5:48, 105; 6:60, 108, 164; 7:87; 16:23,124; 22:69; 28:70, 88; 29:8; 31:15,23; 39:3,7)। इस दुनिया में इंसानों के आपसी सम्बंधों में जो चीज़ महत्व रखती है वह है अच्छे काम और वास्तविक सहयोग (2:62, 177, 203-7; 3:75, 76, 113, 114, 115; 60: 7,8,9)।

क़ुरआन इस्लाम के विरोधियों की बातों को सामने रखता है और उनके जवाब देता है और इस तरह इंसानी विविधता के प्रति महत्वपूर्ण मार्गदर्शन करता है (2:80,81,82, 101, 102, 103; 3:154, 155, 156, 181; 4:123, 124; 36:47; 45:24)। इस सम्बंध में क़ुरआन का मार्गदर्शन यह है कि जवाबी तर्कों को भी बेहतरीन तरीक़े से नैतिक और तथ्यात्मक ढंग से पेश किया जाए (16:125; 29:46; 42:15)। क़ुरआन मुसलमानों और ग़ैर मुस्लिमों की जीत और हार और सकारात्मक व नकारात्मक पहलुओं को बयान करता है और हर एक बयान से नैतिकता और बर्ताव का पाठ पढ़ाता है (2:83-86, 96, 134-139, 148, 216; 3:75, 76, 103-108, 112-115, 118-123, 135, 140-148, 152-161; 4 95-100, 104, 105 9:23-27, 38, 39, 42-59, 81, 82, 93-102, 117, 118; 24:11-25; 33:10-20; 47:38; 48:1-7, 11, 12, 15, 18 -21, 27-29; 49: 2-5, 7, 11, 12, 14, 17)। अपनों और परायों सबके साथ न्याय होना चाहिए, और इंसाफ से भी बड़ी चीज़ है क्षमा, दया, नर्मी और शुभ कामना, इस पर हमेशा ज़ोर दिया गया है और इस पर अल्लाह मेहरबान की तरफ़ से बहतरीन बदले का वायदा है (4:58, 135; 5:8,2,4; 49:9; 57:25; 2:109, 178, 229, 237; 3:134, 159; 5:13; 15:85 16:90; 35:32; 42:37, 40-43; 41:34, 35; 43:89; 60:8; 64:14)। अच्छे कामों में मुक़ाबले और प्रतिस्पर्धा को पसन्द किया गया है और इसकी प्रेरणा दी गयी है (2:148; 3:123; 5:48; 23:66; 35:32; 56:7-40; 57:12; 83:26)।

क़ुरआन में प्राकृतिक व्यवस्था और नियमों पर ज़ोर दिया गया है और ईमान वालों को इसे समझने और इस पर ग़ौर करने की ताकीद की गयी है (6:96; 13:8; 15:19, 21, 22; 16:66, 86, 69; 21:30; 23:96; 52:2, 53; 36:37-40; 35:27,28,43; 36:37-40; 39:6,19; 41:53; 48:23; 51: 20, 21; 65:3; 67:3,14; 82: 6-8; 87: 2,3; 90:8-10; 91:1-10; 96:1-5)। अल्लाह की सृष्टि में कोई चीज़ अचानक या बिना किसी योजना के अस्तित्व में नहीं आती न इसे केवल आस्था से समझा जा सकता है: "वही है जिसने सूरज को उजाला देने वाला बनाया और चांद को चमक दी और चांद के घटने बढ़ने की मंज़िलें ठीक ठीक निर्धारित कर दीं ताकि

तुम इससे वर्षों और तारीख़ों की गणना करो, अल्लाह ने यह सब कुछ तथ्यात्मक रूप से पैदा किया है '' (10:5), ''और उसने चांद को (प्रितबिम्बित होने वाला) नूर (प्रकाश) और सूरज को (प्रकाश का स्रोत) दीपक बनाया'' (71:16), *''न सूरज चांद को पार कर सकता है न रात दिन से आगे बढ़ सकती है, सब के सब (अल्लाह के बनाए हुए नियमों के अन्तर्गत) अपनी अपनी कक्षाओं में तैर रहे हैं।''* (36:40), *''तुम रहमान की सृष्टि में किसी तरह का अटपटा पन न देखोगे। बार बार पलट कर देखो, कहीं तुम्हें कोई झोल दिखाई देता है?''* (67:3), *''और हमने इस (धरती ) में हर प्रकार की वनस्पति ठीक ठीक नपी तुली मात्रा के साथ उगाई।''* (15:19), *''और वही है जिसने हर चीज़ को पैदा किया फिर (अपनी मंशा के अनुसार) उसका एक भाग्य निर्धारित किया''* (25:2), *''तुम अल्लाह के तरीके में हरगिज कोई बदलाव न पाओगो और तुम कभी न देखोगे कि अल्लाह के नियम को उसके निर्धारित क्रम से कोई शक्ति हटा सकती है।''* (35:43)

इंसान ख़ुदा नहीं बल्कि ख़ुदा की रचना है। उसे (मर्द या औरत को ) शरीरिक, अध्यात्मिक व नैतिक और बौद्धिक व मानसिक क्षमताओं के साथ पैदा किया गया है और उसकी प्रतिष्ठा व सम्मान का हर तरह से लिहाज रखा गया है (2:30-9; 16:70; 55:3-4; 82:6-8; 90:8-10; 91:7-10; 96:3-5)। औरत और मर्द के बीच भावनात्मक व मनोवैज्ञानिक आकर्षण एक प्राकृतिक नियम है और इसे बरतने का माध्यम दामपत्य सम्बंध है। परिवार समाज की इकाई है और यह मानव विकास का पहला सामाजिक माध्यम है। दम्पत्ति के बीच और माता-पिता व संतान के बीच आपसी सम्बंध पूरे समाज के लिए नमूना होना चाहिएं (15:71)। जहां एक तरफ़ यह बात है कि आपसी मेलमिलाप और प्रेम से परिवार मज़बूत होता है, वहीं दूसरी तरफ़ यह बात भी है कि स्वभाव का अन्तर एक सच्चाई है और यह ज़रूरी भी है इसलिए इसे बहतरीन तरीक़े से बरतना चाहिए। यदि कुछ कारणों से दामपत्य सम्बंध समाप्त करना बहुत ज़रूरी हो जाए तो बहतरीन और सुशील ढंग से अलग हो जाने का निर्देश है और इस निर्देश पर अमल में बच्चों के अधिकारों की रक्षा पर ज़ोर दिया गया है (30:21; 2: 229, 231, 233, 236, 237, 241; 4:6-10, 21, 35; 65:6,7)। बच्चों का पालन इस तरह से करना चाहिए कि हर पहलू से उनके इंसानी व्यक्तित्व का विकास हो और आत्मविश्वास तथा अभिव्यक्ति की क्षमता उनके अन्दर पैदा हो (31:21-29)। अगर बच्चे को घर या परिवार में स्पष्ट और सुशील ढंग से विचारों को व्यक्त करने का प्रशिक्षण न दिया जाए तो उससे समाज में स्पष्ट और सुशील ढंग से अपनी बात कहने की अपेक्षा नहीं की जा सकती (3:104-110)।

धन से वंचित लोगों का धनवानों के माल में हक़ है क्योंकि धन कमाना और उसे बढ़ाना एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें पूरा समाज सहभागी होता है। विकास व कल्याण के लिए दान अर्थात जकात अदा करने के निर्देश को पूरे क़ुरआन में नमाज़ के आदेश के साथ बयान किया

गया है। उचित ढंग से दौलत कमाना और दुनिया के इस जीवन में अच्छी चीजों से लाभान्वित होना अल्लाह की कृपा है लेकिन इंसानों की अनिवार्य आवश्यकताओं वाली चीजों के वितरण में इंसाफ और सबके लिए समान अवसर उपल्ब्ध होना ज़रूरी है। ऐश व मस्ती में पड़े रहने और गरीबों व वंचितों की ज़रूरतों को अनदेखा करने की कड़ी निन्दा क़ुरआन में की गयी है और कई जगह इसे वर्जित ठहराया गया है (7:31-33; 9:34; 11:116; 16:116; 17:16,26,27,29; 21:13; 25:67; 34:34; 56:45,46; 59:7-10; 68:17-33; 93:6-10; 104:1-3; 107:1-7)।

इंसानी विकास की यह सारी धारणाएं स्पष्ट व सम्पूर्ण तरीक़े से और विभिन्न प्रकार के तमाम लोगों के लिए विभिन्न सूरतों (अध्यायों) में प्रभावपूर्ण ढंग से पिरोयी गयी हैं (25:32; 73:4)। क़ुरआन निश्चित रूप से शायरी की कोई किताब नहीं है (36:69), लेकिन उसकी रवानी में प्रभावपूर्ण काव्य कला है। इसी तरह क़ानूनी नियमों और ऐतिहासिक तथ्यों के बयान में गद्य शैली का सा लचीला पन है (2:219-242, 274-283; 3:152-175; 4:1-35, 101-125; 8:1-28, 41-75; 19-29; 38:127; 65:1-7)। इस तरह के क़ानूनी और ऐतिहासिक कलाम को धार्मिक और नैतिक शिक्षाओं के पहलू ब पहलू बड़ी ख़ूबसूरती और मज़बूती से पेश किया गया हे। क़ुरआनी सूरतों की बनावट और उनका सामंजस्य उसके विषयों को समझने, उन्हें दिमाग़ में बैठाने और हर शब्द को याद कर लेने में सहायक है (54:17)। क़ुरआन के अवतरण से लेकर अब तक अरबों के बीच इस पर लगभग सहमति रही है कि क़ुरआन अनोखा और बे-मिसाल कलाम है और इसकी नक़ल नहीं की जा सकती, हालांकि इसमें किसी भी सम्भावित नक;ल या उसके किसी भी अंश की कोई मिसाल लाने की चुनौती मौजूद है (10:38; 11:13; 17:88)।

क़ुरआन के अलावा जो कि अल्लाह के पैग़ाम को लोगों तक पहुंचाने के लिए पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल. पर नाज़िल होने वाली आसमानी किताब है, ख़ुद मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कथनी व करनी यानि "*सुन्नत*" की रिपोर्टें (हदीसें) भी मौजूद हैं जो रब के पैग़ाम का एक और माध्यम हैं। *सुन्नत* अरबी शब्द है जिसका अर्थ होता है तरीक़ा या कार्यविधि। अतः पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल. की *सुन्नत* का मतलब हुआ अल्लाह के पैग़ाम की व्याख्या और उसको बरतने के लिए पैग़म्बर के कथन व कार्यः "और यह ज़िक्र तुम पर नाज़िल किया है ताकि तुम लोगों के सामने इस संदेश की व्याख्या करते जाओ जो उनके लिए उतारा गया है, और ताकि लोग ख़ुद भी ग़ौर व फ़िक्र करें (16:44), *"जो कुछ पैग़म्बर तुम्हें दें वह लेलो और जिस चीज़ से वह तुम को रोक दें उससे रुक जाओ। अल्लाह से डरो, अल्लाह कड़ी सज़ा देने वाला है।"* (59:7) *"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, तुम अल्लाह का आज्ञापालन करो और रसूल का आज्ञा पालन करो और अपन कर्मों को बर्बाद न कर लो।"* [(47:33); और देखें 3:32, 132; 4:13, 59, 69, 80; 5:92; 8:1,20,46; 19:7; 24:52, 54, 56; 33:33, 71; 49: 14;

58: 13; 64:12] *"हमने जो रसूल भी भेजा है इसी लिए भेजा है कि अल्लाह की इजाजत से उसका आज्ञापालन किया जाए।"* (4:64), *"वास्तव में तुम लोगों के लिए अल्लाह के पैग़म्बर में एक उच्चतम आदर्श है, हर उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और आख़िरत के दिन की उम्मीद रखता हो, और अल्लाह को बहुत ज़्यादा याद किया करे।"* (33:21)। इसी तरह अल्लाह के पैग़म्बर के सामने जो कुछ कहा गया या किया गया और उस पर आप ने कोई आपत्ति नहीं की उसे पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम द्वारा अनुमोदित या मंजूर किया गया माना जाता है और इस लिए उसे भी *सुन्नत* में गिना जाता है। अल्लाह के रसूल की हर *सुन्नत* को उसके परिवेश और परिदृश्य या परिप्रेक्ष्य में समझा जाता है कि क्या वह कोई आदेश है या केवल प्रेरणा है या यह कि वह कोई वर्जित बात है या केवल आप सल्ल. ने उसे ना पसन्द किया है या उसकी इजाजत है। इस लिहाज से *सुन्नत* को उसके शब्दों, सम्बंधित परिस्थिति और क़ुरआन व *सुन्नत* के किसी सम्बंधित बयान से उसके सम्बंध को सामने रख कर समझा जाता है। *सुन्नत* की रिपोर्ट (हदीस) प्रमाणित होना चाहिए, हालांकि उसके अर्थ और उसके आदेश या मनाही में मतभेद हो सकता है। क़ुरआन ख़ुद भी मुसलमानों के ईमान के अनुसार एक प्रमाणित ग्रन्थ है लेकिन उसकी कुछ आयतों का एक से अधिक मतलब और निहितार्थ हो सकता है।

मुसलमानों का यह अक़ीदा है कि पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वो बातें और काम जिनका सम्बंध अल्लाह के पैग़ाम से है वह भी *वह्यि* (उतरा हुआ संदेश) है, लेकिन आपने जो बातें या काम एक इंसान होने के तौर पर कही या करी हैं वो *वह्यि* नहीं हैं। क़ुरआन के शब्द अल्लाह का उतारा हुआ कलाम है जबकि *सुन्नत* के रूप में आने वाली *वह्यि* पैग़म्बर साहब ने आपनी इंसानी वाणी में बयान की है। हालांकि इन जुबानी रिवेयतों की शैली भी अति उत्तम है लेकिन उसकी और क़ुरआन की शैली में पाया जाने वाला अन्तर बहुत स्पष्ट है। सभी *सुन्नतों* को आसमानी *वह्यि* इसलिए नहीं माना जाता कि मुहम्मद सल्ल. का मुबारक वजूद इंसानी था और उन पर जो आसमानी *वह्यि* उतरी उसने उन्हें इंसानी वजूद की प्रांति से अलग किसी प्राकृति में नहीं बदला न उसकी वजह से उनकी इंसानी प्राकृति समाप्त हो गयी: "ऐ नबी कहो कि *"मैं तो एक इंसान हूं तुम ही जैसा, मेरी तरफ़ वही की जाती है कि तुम्हारा मअबूद (पूज्य) बस एक ही इलाह है।"* (18:110; आगे देखें 17:93; 21:34; 41:6; 42:51)। इसी तरह केवल एक इंसानी आदत के तौर पर पैग़म्बर साहब की जो क्रियाएं बयान की गयी हैं (जैसे खड़े होने या बैठने का खास अंदाज़, पसन्द के भोजन या आहार, पसन्द के पेय पदार्थ, पसन्द का रंग वग़ैरह), या उनका अनुभव और राय (जैसे लड़ाई की योजना बनाने में या फसल उगाने में), या वो चीज़े जो विशेष रूप से आप के लिए ही जायज थीं, सभी मुसलमानों के लिए नहीं, ये सारी चीज़ें उन पर ईमान लाने वालों के लिए एक अनिवार्य नियम नहीं हैं। पैग़म्बर सल्ल. की हदीस में हम पढ़ते है: "मैं तो केवल एक इंसान हूं अगर मैं तुम्हें तुम्हारे दीन के सम्बंध

मैं कोई हिदायत दूं तो उस पर तुम्हें अमल करना है, लेकिन अगर मैं तुम्हें कोई बात केवल अपनी राय से बताऊं तो मैं केवल एक इंसान हूँ।'' (मुस्लिम नसई), ''मैं तुम्हारी तरह एक इंसान हूं, और इंसानी ख़्याल सही या ग़लत हो सकता है, लेकिन जब में कहूं कि अल्लाह तआला यह फ़रमाता है तो मैं अल्लाह के मामले में कभी झूठ नहीं बोलता'' (इब्ने हंबल, इब्ने माजा), ''मैं तो एक इंसान हूं और तुम मेरे पास अपने मामले निपटारे के लिए लाते हो तो तुम में से जो कोई दूसरे का हक़ ले जाता है तो वह उसके लिए आग का शोला है वह चाहे तो उसे ले ले चाहे तो उसे छोड़ दे।'' (बुख़ारी, मुस्लिम, इब्ने हंबल, अबू दाऊद, तिर्मिजी, नसई, इब्ने माजा)। ''तुम दुनियावी मामलों में मुझ से ज़्यादा सूझ बूझ रखते हो।'' (मुस्लिम)।

जब किसी मामले में क़ुरआन या हदीस से सीधे कोई रहनुमाई न मिले जिसे उस मामले पर लागू किया जा सकता हो तो उसके लिए इस्लाम के विधि शास्त्रियों (फ़क़ीहों) ने कुछ ख़ास बौद्धिक तरीक़े विक्सित किए हैं जो ऐसे मामलों में रहनुमाई के लिए इस्तेमाल किए जा सकते हैं। जब किसी विचाराधीन मामले में दो अलग अलग क़ियास (अंदाज़े) लगाए जा सकते हों तो अधिकतर लोगों के नज़दीक जो क़ियास ज़्यादा उपयोगी और उपयुक्त हो उसे दूसरे क़ियास पर प्राथमिकता दी जाएगी (इसे *इस्तेहसान* कहा जाता है)। इसके अलावा यह आम सिद्धांत कि 'जब तक किसी चीज़ के वर्जित होने के बारे में कोई सीधे आदेश मौजूद न हो वह मुबाह (जायज़) है' लागू होगा (इसे *इस्तिसहाब* कहते हैं)। लोगों का सीमित आम फ़ायदा (*मसलहा, मुरसला, इस्तिसलाह*) भी एक अन्य सिद्धांत है जिसे माध्यम के रूप में लिया जाता है। इस्लामी शरीअत के उद्देश्य व क़ानून और इन क़ानूनों के ये आम सिद्धांत जो कि क़ुरआन व *सुन्नत* से लिए गए हैं, लगातार बदलती हुई स्थितियों से उभरने वाले विभिन्न प्रकार के तक़ाज़ों को पूरा करने के लिए, जिनके लिए क़ुरआन व हदीस से कोई स्पष्ट संकेत नहीं मिलता, एक महत्वपूर्ण माध्यम हैं। सम्बंधित मामले के सम्भावित नतीजों को सामने रखने से भी उस मामले का समाधान करने में मदद मिलती है। किसी *फ़र्ज़* (अनिवार्य) काम को पूरा करने के लिए जो चीज़ माध्यम या कारण होती है उसको प्राप्त करना भी फर्ज हो जाता है और किसी वर्जित या हराम काम के लिए जो चीज़ माध्यम बनती है वह ख़ुद भी हराम हो जाती है। इस तरह के बौद्धिक नतीजों को *इज्तेहाद* कहा जाता है जिनका आधार पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उन हदीसों पर है जिन से ज़रूरत के समय इस तरह के बौद्धिक प्रयास करने के लिए प्रेरणा मिलती है। (इब्ने हंबल, तिरमिजी, नसई, इब्ने माजा, अलदारमी)

यह *आफ़ाक़ी* (सार्वभौमिक) पैग़ाम जो विभिन्न विषयों पर आधारित सूरतों के साथ पैग़म्बर सल्ल. के युग में अरबों को दिया गया, आम पाठक के दिल व दिमाग़ में अपनी जगह बनाता है। किसी शोधकर्ता या किसी पाठक की यह इच्छा हो सकती है कि किसी एक विषय से सम्बंधित सभी आयतें एक ही जगह मिल जाएं ताकि वे यह जान सकें कि किसी ख़ास विषय

पर क़ुरआन में सामूहिक रूप से क्या कहा गया है। इनमें से किसी एक या कुछ विषयों पर कुछ नए लोगों ने काम किया है लेकिन वे सम्बंधित विषयों पर एक समग्र अध्धयन प्रस्तुत करने के लिए आम तौर से क़ुरआन, हदीस, फ़क़ीहों की व्याख्याओं और संकलन कर्ताओं के विचारों को एक जगह जमा कर देते हैं। इसके अलावा, इस तरह के प्रयासों में क़ुरआन के सभी ख़ास विषयों पर चर्चा नहीं होती, बल्कि उनकी दिलचस्पी के कुछ विषय ही इनमें होते हैं। हालांकि ऐसे सभी प्रयास भी बहुत उपयोगी हैं और सामान्य पाठकों व शोधकर्ताओं के लिए उनकी उपयोगिता कम नहीं है लेकिन कुछ लोग सभी विषयों से सम्बंधित क़ुरआनी आयतों को ही देखना चाहते होंगे, और इस तरह से क़ुरआन के सभी तसव्वुरात (धारणाओं) को समझने की ज़रूरत महसूस करते होंगे। लगभग दो दशक पहले इस तरह के कुछ काम करते हुए यह ज़रूरत सामने आई। थॉमसन बालिन्टाइन एरोंग, ख़ुरशीद अहमद और मुहम्मद मुनाज़िर अहसन ने 1979 में दि क़ुरआन बैसिक टीचिंग (इस्लामिक फाउण्डेशन, लीसिसटर, इंगलैण्ड) प्रकाशित की थी, जिसे उन्होंने ''आधुनिक अंग्रेज़ी भाषा में अनुवादित क़ुरआन के कुछ विशेष अवतरणों का एक संग्रह'' के रूप में प्रस्तुत किया था और क़ुरआन के पैग़ाम का परिचय कराया था। फ़ज़लुर्रहमान की कृति थीम्स आफ दि क़ुरआन 1980 में शिकागो से प्रकाशित हुई। इस तरह की कुछ और पुस्तकें भी आई हैं जैसे विलियम मोण्टगुमरी की 'कम्पेनियन ऑफ़ दि क़ुरआन', फारूक़ शरीफ़ की 'ए गाइड टु कन्टेण्ट्स आफ दि क़ुरआन' और मुहम्मद अब्दुल हलीम की 'अण्डरस्टैण्डिंग दि क़ुरआनः थीम्स एण्ड स्टाइल' वग़ैरह। अरबी में मिस्र के पूर्व औक़ाफ़ मंत्री और अलअज़हर यूनिवर्सिटी के पूर्व अध्यक्ष डाक्टर मुहम्मद अलबही मरहूम और मिस्र के ही पूर्व औक़ाफ़ उप मंत्री शेख़ मुहम्मद अलग़ज़ाली ने भी इस मैदान में काम किया है। विभिन्न भाषाओं में होने वाले इन कामों में आधुनिक युग की नई मुस्लिम पीढ़ी के लिए, ख़ास तौर उन लोगों के लिए जो पश्चिमी देशों में पैदा हुए और पले बढ़े हैं या वहां रह रहे हैं, और पश्चिमी देशों के स्कॉलर्स, पत्रकारों, छात्रों और अन्य वर्गों की ज़रूरत को सामने रखा गया है। मलेशिया में रह रहे फुल ब्राइट विजिटिंग फेलो डाक्टर पीटर हेथ ने एक बार यह बात कही कि ''क़ुरआन का गैर-कथात्मक (non.narrative or meta narrative) अंदाज़ उन क़ुरआन पढ़ने वालों के लिए अजनबी है जो धार्मिक ग्रन्थों के कथात्मक अंदाज़ से अधिक मानूस (परिचित) हैं।'' (न्यू स्ट्रेट्स टाइम्स, क्वालालम्पुर, 18 अगस्त 95)

लिहाज़ा, इस कृति का उद्देश्य इसी ज़रूरत को पूरा करना है। इस काम की शुरूआत क़ुरआन का एक संक्षिप्त विषय आधारित अध्यन करने की इच्छा से हुई, जिसका समर्थन लास ऐंजिलिस में दोस्तों के एक ग्रूप ने किया था, लेकिन करते करते यह एक लम्बा चौड़ा काम बन गया। यह किताब क़ुरआन पर ही केन्द्रित है लेकिन इसमें क़ुरआन के समस्त विषयों को अभी तक किए गए अध्ययनों के मुक़ाबले ज़्यादा समग्रता के साथ लिया गया है और उन पर विस्तृत

चर्चा की गयी है। क़ुरआनी आयतों की व्याख्या विस्तार से इस अहतियात के साथ की गयी है कि आयत के शब्दों पर ध्यान केन्द्रित रहे। किसी भी विषय या धारणा पर चर्चा करते हुए मैं ने सम्बंधित आयतें क़ुरआन के मौजूदा क्रम के लिहाज से प्रस्तुत की हैं, जबकि आयतों को विषय के आधार पर जमा किया गया है। जहां कहीं किसी विषय पर कई कई आयतें एक ही अंदाज़ से आई हैं तो अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचने के लिए उनमें से एक ही आयत की *तशरीह* (व्याख्या) ली गयी है और बाक़ी आयतों व उनकी सूरतों के नम्बर का हवाला दे दिया गया है। किताब के अन्त में पाठकों के लिए एक टेबिल दी गयी है जिसमें क़ुरआनी सूरतों के उतरने के क्रम में उन्हें रखा गया है।

अनुवाद के लिए मैं ने क़ुरआन के नवीनतम अंग्रेज़ी अनुवाद को लिया है। "टुवर्ड्स एन इण्टरनेशनल सोसायटी फार दि होली क़ुरआनः इन्ट्रोडक्शन एण्ड बिबलियोग्राफ़ी" के लेखक डाक्टर हस्सान ए मारजी के बक़ौल अब्दुल्लाह यूसुफ अली का अनुवाद पहली बार 1935 में आया, मुहम्मद एम पिक्थॉल ने 1940 में किया, ए.जे.आर्बरी ने 1955 में, जबकि मुहम्मद असद का अनुवाद पहली बार 1980 में प्रकाशित हुआ, थॉम्स बी. एरोंग के अनुवाद की जो कापी मेरे पास है उससे पता चलता है कि वह 1985 में प्रकाशित हुआ। अब्दुल्लाह यूसुफ़ अली ने अपनी कृति के पहले ऐडिशन में लिखा है कि "टेक्स्ट का अनुवाद करते हुए मैंने अपने विचारों को कोई जगह नहीं दी है बल्कि विश्वसनीय व्याख्याकारों को नक़ल किया है। जहाँ उनमें मतभेद है तो मैं ने उस बात को लिया है जो हर तरह से मुझे ज़्यादा तार्किक राय लगी"। पिक्थाल ने अपने प्राक्कथन में लिखा है कि "इस कृति का मक़सद क़ुरआने के कलाम के उस मतलब को जो पूरी दुनिया में फैले हुए मुसलमान समझते हैं अंग्रेज़ी पाठकों के लिए प्रस्तुत करना है। यह बात तर्कसंगत है कि किसी भी धार्मिक ग्रन्थ का सटीक अनुवाद या इन्टरप्रेटेशन किसी ऐसे व्यक्ति से नहीं हो सकता जो उस पर ईमान न रखता हो और उसके पैग़ाम से प्रभावित न हो, इसलिए यह एक ऐसे अंग्रेज़ के द्वारा किया गया क़ुरआन का पहला अनुवाद है जो ख़ुद मुसलमान है"। इसी तरह एरोंग का अनुवाद किसी अमरीकी द्वारा किया गया पहला अमरीकी अनुवाद है। "दि मैसेज ऑफ़ दि क़ुरआन" के प्राक्कथन में मुहम्मद असद ने लिखा है कि यह कृति जो मैं लोगों के सामने अब पेश कर रहा हूं मेरे जीवन भर के अध्ययन पर आधारित है और कई वर्षों की उस अवधि पर मुहीत है जो मैं ने अरब में गुज़ारे हैं। यह क़ुरआन के पैग़ाम को एक यूरोपीय भाषा में यथार्थ रूप से और व्याख्यात्मक स्पष्टीकरण के साथ पेश करने की एक कोशिश है, और शायद पहली कोशिश है। फिर भी मैं यह दावा नहीं करता कि मैं ने क़ुरआन का अनुवाद इस ढंग से किया है जिस ढंग से प्लाटो या शेक्सपेयर के कलाम का अनुवाद किया जा सकता है। किसी भी दूसरी किताब के विपरीत क़ुरआन के अर्थ और उसकी भाषाई अभिव्यक्ति मिल कर उसे एक अलग तरह की किताब बनाते हैं जिसके किसी भी अंश

को दूसरे अंशों से अलग करके नहीं समझा जा सकता। एक वाक्य में शब्दों का चयन और क्रम, इसका रूपक प्रवाह यह सारे तत्व मिल कर इसे एक अनोखा, अनमोल, अद्वतीय और समझने योग्य बनाते हैं। यह एक ऐसी सच्चाई है जिसे पिछले अनेक अनुवादकों ने और सभी अरब स्कॉलर्स ने माना है। लेकिन इसके बावजूद क़ुरआन को उसी के अंदाज़ में किसी दूसरी भाषा में लिखना असम्भव है, इसके पैग़ाम को उन लोगों के लिए जो पश्चिमी देशों के रहने वालों की तरह अरबी से बिल्कुल वाक़िफ (अवगत) नहीं है, या जैसा कि अधिकतर गैर-अरब शिक्षित मुसलमानों का मामला है कि वे इसे बगैर माध्यम के ठीक से नहीं समझ सकते, समझने योग्य अंदाज़ में परिवर्तित किया जा सकता है। इस मक़सद के लिए अनुवादक को क़ुरआन के नाज़िल होने के ज़माने (अवतरित होने के युग) में इस्तेमाल होने वाली भाषा का ज्ञान होना ज़रूरी है और यह बात हमेशा जहन में रखना ज़रूरी है कि इसके कुछ बयानों का, ख़ास तौर से उन बयानों का जिनका सम्बंध अदृश्य धारणाओं से है .. मतलब आम आदमी के जहन में किसी हद तक बदल चुका है, और इसलिए उनका अनुवाद उस अर्थ में न किया जाना चाहिए जो उन्हें बाद के युग में इस्तेमाल होने वाली भाषा से मालूम हुआ है..। दूसरी बात जिसका अनुवादक को पूरा ध्यान रखना चाहिए (और यह भी बहुत महत्वपूर्ण है) वह है क़ुरआन का चमत्कारः एक अनोखे अंदाज़ का बयान जिसमें किसी विचार को कम से कम शब्दों में व्यापक अर्थ के साथ व्यक्त करने के लिए बीच के वाक्यों (मध्यवर्ती खण्डों) को छोड़ दिया जाता है भाषा की नजाकत से हट कर, मैंने अनुवाद व व्याख्या के दो बुनियादी सिद्धांतों की पूरी पाबन्दी करने की कोशिश की है। पहला यह कि क़ुरआन को अलग अलग आदेशों व शिक्षाओं की संकलित पुस्तक के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए बल्कि एक सम्पूर्ण ग्रन्थ समझना चाहिए, दूसरा यह कि क़ुरआन के किसी भी अंश को केवल ऐतिहासिक दृष्टि से नहीं देखा जाना चाहिए क्योंकि पैग़म्बर सल्ल. के ज़माने के या आप से पहले की ऐतिहासिक स्थितियों व घटनाओं के सभी हवाले इंसान की हालत का एक बयान हैं न कि एक ख़त्म हो जाने वाली कहानी है।''

मैंने बड़ी हद तक मुहम्मद असद और कुछ दूसरे अनुवादकों के अनुवादों से फ़ायदा उठाया है लेकिन चूंकि अरबी मेरी मातृ भाषा है इसलिए कुछ जगहों पर मुझे महसूस हुआ कि इन तर्जुमों में किसी विशेष अरबी शब्द की जगह बिल्कुल सटीक अंग्रेज़ी अर्थ देने वाला शब्द इस्तेमाल नहीं हुआ है। इसका अर्थ यह नहीं है कि इस सम्बंध में मेरी कोशिश निश्चित रूप से सफल हुई है लेकिन फिर भी मैं ने अपनी हद तक इसका पूरा प्रयास किया है। क़ुरआन का अनुवाद करते हुए एक दिक़्क़त यह आती है कि कभी कभी कोई ऐसा शब्द हमारे सामने होता है जिसके एक से अधिक अर्थ होते हैं, और यह नहीं हो सकता कि अंग्रेज़ी में उसकी जगह जो शब्द भी इस्तेमाल किया जा सकता हो उसके भी दो या दो से अधिक अर्थ होते हों। किसी जगह कोई अरबी शब्द या अरबी वाक्य या तो अपना विशेष अर्थ रखता है या जिस संदर्भ में

वह आया है उसकी वजह से वहां उसका महत्व किसी दूसरी भाषा में उसके समानान्तर शब्द से ज़्यादा हो सकता है। युसुफ अली ने लिखा है कि वह क्लासीकी मुफस्सिरों (क़ुरआन के व्याख्कारों) के अनुवादों में से उस अनुवाद को चुनते थे जिसके प्रमाणिक होने पर ज़्यादा संतोष होता था। मुहम्मद असद ने अरबी भाषा का अच्छा ज्ञान रखने और अपने तार्किक शैली के साथ क़ुरआन के टेक्स्ट को समझने और समझाने का अपना एक विशेष ढंग अपनाया है। मैं ने अपनी हद तक पूरा प्रयास यह किया है कि क़ुरआन का कोई विशेष अरबी टेक्स्ट अपने जिस विशेष परिप्रेक्ष्य में आया है उससे मिलने वाले भाव से क़रीब तरीन शब्द में उसे बयान करूं।

क़ुरआन के अनुवाद में यह समस्या सबसे ज़्यादा ''असमाए हुसना'' (अल्लाह के गुणों को बयान करने वाले विशेष नाम) के अंग्रेज़ी अर्थ तलाश करने में आती है जिनकी संख्या हदीसों में 99 बताई गयी है (तिरमिजी, इब्ने हब्बान, अलहाकिम, बेहिक़ी आदि में हजरतू अबु हुरैरह रज़ि० और कुछ अन्य सहाबियों द्वारा बयान की गयी प्रमाणित हदीसें)। एक ही मूल से बनने वाले दो ख़ास नामों के बीच फ़र्क़ को बताने में शुरू से ही बहुत से अलग अलग विचार व्यक्ति किए जाते रहे हैं जैसे 'रहमान' और 'रहीम' अल्लाह के दो विशेष नाम हैं जिनका मूल एक ही है और उसका अर्थ है रहमत या मेहरबानी (दया या कृपा)। यह दोनों विशेषण पहली सूरत अलफ़ातिहा में साथ साथ आए हैं जो हर नमाज में कम से कम दो बार पढ़ी जाती है। यह दोनों शब्द एक सूरत को छोड़ कर क़ुरआन की हर सूरत के शुरू में भी पढ़े जाते हैं। ज़ाहिर सी बात है कि अल्लाह के इन विशेष नामों को किसी दूसरी भाषा में ठीक ठीकर उसी तरह बयान करना आसान नहीं है। इसी तरह बख़्शने या मआफ़ कर देने के अर्थ में अल्लाह के दो विशेष नाम गफ़्फ़ार और गफूर हैं पैदा करने वाली हस्ती के संदर्भ में क़ुरआन में अल्लाह के लिए *ख़ालिक़, ख़ल्लाक़, फ़ातिर* और कुछ दूसरे नाम इस्तेमाल हुए हैं। अल्लाह के किसी विशेष नाम को अंग्रेज़ी के किसी एक ही शब्द (जैसे गॉड) से अनुवाद नहीं किया जा सकता। इसलिए अल्लाह के इन नामों को समझने के लिए आसान बनाने की मंशा से उनके विशेष अर्थ की व्याख्या करना ज़रूरी है। ऐसे ही नामों में हैः *अल्लतीफ़, अलवकील, अलकफ़ील, अलमोमिन* वग़ैरह। एक ही सिलसिले के विशेषण जैसे सब्र, संयम, सहनशीलता और सुशीलता वग़ैरह को इंसानों के संदर्भ में तो आसानी से समझा जा सकता है लेकिन अल्लाह के सिफ़ाती नाम जैसे *अस्सुबूर, अलहलीम* को ठीक वैसे ही बयान नहीं किया जा सकता। मैंने ऐसे शब्दों को खोजने का पूरा प्रयास किया है जो अरबी अर्थ से क़रीब तरीन हों और सम्बंधित परिप्रेक्ष्य में सबसे अधिक उपयुक्त हों। मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पहले के पैग़म्बरों के नाम उनके अरबी उच्चारण के अनुसार लिए गए हैं लेकिन जहां वह पहली बार आए हैं तो उन्हें ब्रेकिट में उस तरह लिख दिया गया है जिस तरह वे बाइबिल के अंग्रेज़ी अनुवाद में लिखे मिलते हैं। जैसे

इब्राहीम (अब्राहम), इस्माईल (अशमाइल), इस्हाक़ (इसाक), याक़ूब (जेकब), यूसुफ़ (जोज़फ़) वग़ैरह। लेकिन जहां टेक्स्ट में या तफ़सीर में एक ही शब्द बार बार आया है तो केवल अंग्रेज़ी नाम को ही इस्तेमाल किया गया है क्योंकि इस किताब के टारगेट रीडर्स अरबी न जानने वाले लोग हैं।

यह जानी पहचानी बात है कि शब्द ''हम'' का इस्तेमाल एकवचन के रूप में महानता और उच्चता को ज़ाहिर करने के लिए होता है, इस लिहाज़ से इसे अल्लाह के लिए इस्तेमाल करने से अल्लाह तआला के इकलौती हस्ती होने का अर्थ नहीं बदलता। वेब्सटर न्यू कालेजेट डिक्शनरी में ''वी'' (हम) के बारे में कहा गया है कि इसका उपयोग सत्ताधारी लोगों, और एक औपचारिक चरित्र को व्यक्त करने के लिए किया जाता है। मैंने बन्दों के द्वारा अल्लाह को सम्बोधित करने के मामले में ''यू'', ''योर'', ''योर्स'' का उपयोग किया है बजाए ''थाव'', ''थी'', ''थाइन'' (तू) का इस्तेमाल करने के, जैसा कि ख़ुदा की एकताई को व्यक्त करने के लिए ग्रन्थों में होता रहा है। क्योंकि इसका इस्तेमाल त्याग दिया गया है और एक वचन तथा बहु बचन दोनों के लिए एक ही शब्द इस्तेमाल होने लगा है।

इस पुस्तक की शुरूआत सूरत *अलफ़ातिहा* से होती है जिसमें आस्था के सिद्धांत जमा हैं और इसी लिए पांच वक़्त की नमाज़ों में मुसलमानों के लिए इसे कम से कम दो बार पढ़ना ज़रूरी है। इसके बाद इस किताब में क़ुरआन के ख़ास विषयों पर चर्चा की गयी है: *अक़ीदा* (आस्था), इबादत की ख़ास क्रियाएं, नैतिक मूल्य, और क़ानून वग़ैरह। ''दि फैथ'' (अक़ीदा) के अध्याय में यह किताब क़ुरआन के तरीक़े का अनुसरण करते हुए 'रचना से रचनाकार तक' पहुंचने के अंदाज़ को अपनाती है। यह सृष्टि और जीवन जिसका चरम बिन्दु इंसान है और जिसे क़ुरआन ने उसकी शरीरिक और स्वभाविक यानि बौद्धिक, मनोवैज्ञानिक व नैतिक गुणों पर रोशनी डालते हुए बहुत गहराई व अहमियत के साथ बरता है, के विषय पर कई तरह से चर्चा की गयी है। अल्लाह की रचना की इन अनेक निशानियों को क़ुरआन इस सृष्टि की शोभा और सुव्यवस्था पर ध्यान दिलाने के लिए एक माध्यम के रूप में पेश करता है जिसका तार्किक नतीजा है एक सर्वशक्तिमान, ज्ञान व ख़बर रखने वाली युक्तिपूर्ण हस्ती पर ईमान लाने के लिए मजबूर हो जाना। क़ुरआन वास्तव में साइंस की कोई किताब नहीं है कि इसे केवल इन्द्रियों और दिमाग़ से समझ लिया जाए। तथापि, सृष्टि के बारे में क़ुरआन के समस्त और ईमान को जगाने वाले हवाले हमैशा से उन साइंसी तथ्यों के मुताबिक़ सिद्ध हुए हैं जो आधुनिक साइंसी विकास से ज्ञान में आए हैं।

अक़ीदे के एक अनिवार्य अंग के रूप में आख़िरत के जीवन की क़ुरआनी तसवीर को पेश करने के बाद, अल्लाह के पैग़ाम को क़ुरआन के अनुसार हज़रत आदम से लेकर हज़रत मुहम्मद सल्ल. तक तमाम पैग़म्बरों के हवाले से पेश किया गया है। अनेक पैग़म्बर ऐसे हैं जो रिसालत

(पैग़म्बरों के सिलसिले) के इतिहास में मील के पत्थर का महत्व रखते हैं और इस वजह से क़ुरआन ने उनका वर्णन विस्तार से और बार बार किया है, जैसे हज़रत नूह व हूद जो दक्षिण अरब में 'आद' क़ौम की तरफ़ भेजे गए, हज़रत स्वालेह जो उत्तरी अरब में 'समूद' क़ौम की तरफ़ भेजे गए, हज़रत शुऐब जो उत्तरी अरब में 'मदयन' वालों की तरफ़ भेजे गए, हज़रत इब्राहीम, इस्हाक़, याक़ूब, यूसुफ़ और याकूब की संतान (अलअस्बात), मूसा, दाऊद, सुलैमान और ईसा (अलैहिम अस्सलाम)। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जिन पर क़ुरआन नाज़िल हुआ उन्हें निश्चित रूप से इस किताब में ख़ास मुक़ाम दिया गया है।

इबादत के अध्याय में क़ुरआन की इबादती धारणा को पेश किया गया है और इबादत की उन क्रियाओं को बयान किया गया है जिन का क़ुरआन में जिक्र किया गया है। ये न केवल ख़ास इबादतें हैं जैसे नमाज, जकात, रोजा और हज, बल्कि दुआ, तिलावते क़ुरआन (क़ुरआन को अक्षरता पढ़ना), क़ुरआन में ग़ौर करना, अल्लाह का जिक्र और तसबीह करने वग़ैरह का बयान भी क़ुरआन के हवाले से किया गया है। अख़लाक़ी क़द्रें (नैतिक आचरण) इस दुनिया में अक़ीदे और इबादत का ठोस व्यवहारिक नतीजा हैं जिनके द्वारा एक आदमी अल्लाह पर ईमान रखने वाले और केवल उसी की इबादत करने वाले इंसान की दीनदारी और नेकी को जांच सकता है। ये नैतिक संस्कार व्यक्ति के अंदर, परिवार में, पड़ोस में, समुदाय और समाज के दायरे में जीवन के सभी मामलों में लागू होती हैं और उनसे ज़ाहिर भी होती हैं। क़ानून नैतिक संस्कारों को मज़बूती देने का एक माध्यम है और इन क़ानूनों को प्रभावी बनाने के लिए नैतिक मूल्यों के बल पर ही उन्हें लागू किया जा सकता है। क़ुरआन में क़ानून के बहुत से पहलुओं पर शिक्षा मिलती है जैसे परिवार, नागरिक और व्यापारिक मामले, राज्य तथा जनता के बीच सम्बंध, अपराध और दण्ड संहिता, जंग व अम्न में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बंध वग़ैरह।

जिन विषयों का यहाँ जिक्र किया गया है इन पर क़ुरआन की आयतें बराबर से बंटी हुई नहीं हैं। एक अल्लाह में यक़ीन और आख़िरत के जीवन में इंसान की जवाबदेही पर ईमान का बयान इसमें अल्लाह के पैग़ाम के मौलिक और मूल तत्व तत्व के रूप में हुआ है, ठीक उसी तरह जैसे क़ुरआन से पहले के आसमानी संदेशों में यह अक़ीदे बताए गए थे। लिहाज़ा ईमान व अक़ीदे को क़ुरआन में बहुत व्यापकता से लिया गया है। यहाँ तक कि अख़लाक़ी क़द्रों और क़ानूनी नियमों के बयान में भी इन मामलों से सम्बंधित आयतों को अल्लाह पर ईमान और आख़िरत के दिन पर ईमान और आख़िरत के दिन की जवाबदेही के प्रति ख़बरदार करते हुए बयान किया गया है। इस बात को ध्यान में रखते हुए यह उचित लगा कि अक़ीदे (ईमान या आस्था) से सम्बंधित आयतों को तीन भागों में विभाजित कर दिया जाए, अल-फातिहा को छोड़ कर कि वह तो वैसे भी किताब के पहले संक्षिप्त अध्याय के रूप में है। इस छोटी सी सूरत में केवल सात आयतें ही हैं लेकिन इसमें अकीदें की बुनियादें समेट दी गयी हैं, और इसी लिए

इसे हर नमाज़ में कम से कम दो बार पढ़ा जाता है, और हज़रत उस्मान रजि. के ज़माने में क़ुरआन के विधिवत संकलन से लेकर आज तक यह क़ुरआन की कुंजी या उसका प्राथमिक अध्याय है।

दुआ में कुछ ख़ास भलाई और उपकार मांगे जाते हैं जिन्हें अपनाने के लिए बन्दा/बन्दी अपने रब से दुआ करता/करती है और कुछ ख़ास बुराईयां हैं जिनसे बचने के लिए बन्दा या बन्दी अपने रब से मदद मांगता/मांगती है। ये दोनों पहलू अल्लाह के पैग़ाम के नैतिक तत्व हैं जिन्हें संक्षेप में, खुल कर और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है और यह अल्लाह पर ईमान के साथ मज़बूती से जुड़े हुए हैं। क़ुरआन की कुछ ख़ास दुआएं जो इंसानी गतिविधियों के अलग अलग पहलुओं को समेटती है इस किताब के लेखक को किताब को समाप्त करने के लिए सबसे बहतर लगीं, जिस तरह अलफ़ातिहा इसकी सबसे बहतर शुरुआत है।

अरबी भाषा की ख़ास डिक्शनरियों के अलावा मैंने क़ुरआन की कई पुरानी व नई तफसीरों (व्याख्याओं) से फ़ायदा उठाया है जिनमें ख़ास तौर से निम्नलिखित तफ़सीरें शामिल हैः

- अतिबरी (अबु जाफर मुहम्मद इब्ने जरीर, 310 हिजरी/'922 ई०)
- इब्ने अतिय्या, अबु मुहम्मद अब्दुल हक़ अलगरनाती (546 हिजरी/1151 ई०), अलरबात, अलमराकिश
- अलक़ुरतुबी, अबु अब्दुल्लाह मुहम्मद इब्ने अहमद अलअंसारी (671 हिजरी/1172 ई०), अलजामिउल अहकामुल क़ुरआन, क़ाहिरा, मिस्र
- अलजमख़शरी, अबुलक़ासिम जारुल्लाह महमूद इब्ने उमर (538 हिजरी/1143 ई०), अलकश्शाफ़, क़ाहिरा, मिस्र
- अलफख़र अलराज़ी, मुहम्मद फख़रुद्दीन इब्ने ज़ियाउद्दीन उमर (604 हिजरी/1207 ई०), मफ़ातिहुल ग़ायब या अलतफ़सीरुल कबीर, क़ाहिरा, मिस्र
- अलनसफी, अब्दुल्लाह इब्ने अहमद इब्ने महमूद (701 हिजरी/1301 ई०), मज़ारिकुत्तंजील, क़ाहिरा, मिस्र
- इब्ने कसीर, अबुल फिदा इस्माईल इब्ने अम्र (774 हिजरी/1372 ई०), तफ़सीरुल क़ुरआन अलअजीम, क़ाहिरा, मिस्र
- अलबेज़ावी, अबु सईद अब्दुल्लाह इब्ने उमर इब्ने मुहम्मद अलशीराजी (791 हिजरी/1389 ई०), अनवारुल तंज़ील, क़ाहिरा, मिस्र
- जलालुद्दीन, मुहम्मद इब्ने अहमद अल मुहल्ला व जलालुद्दीन अब्दुर्रहमान इब्ने अबी बक्र अस्सुयूती (911 हिजरी/1505 ई०), तफ़सीरुल जलालेन, बेरूत, लेबनान

- अलशोकानी, मुहम्मद इब्ने अली इब्ने मुहम्मद (1250 हिजरी/1834 ई०), फतहुल क़दीर, बेरूत, लेबनान
- मुहम्मद अब्दुहू, मुहम्मद रशीद रज़ा (1354 हिजरी/1935 ई०), तफ़सीरुल मनार, क़ाहिरा, मिस्र

आख़िर में, इस किताब के लेखक का यह अहसास है कि इस ख़िदमत में हिस्सा लेने वाले सभी लोगों की कड़ी मेहनत और पूरी लगन के बावजूद अल्लाह के कलाम की ख़िदमत व प्रसार के लिए जो कुछ भी बन पड़ा है उसमें, ख़ास तौर से इस तरह के बड़े काम में, इंसानी क्षमता का सीमित होना ज़ाहिर है। अगर इस ख़िदमत से मुसलमानों और उन दूसरे लोगों को जो इस्लाम की आसमानी किताब और उसके पैग़ाम को जानना चाहते हैं कोई फ़ायदा पहुंच सका तो इसके लेखक को उसका बदला मिल गया। मैं अपने पूरे दिल व दिमाग़ के साथ यह समझता हूं कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के द्वारा पेश की गयी क़ुरआन की तसवीर इतनी सच्ची और दुरूस्त है कि क़ुरआन के चमत्कार और करिशमे कभी ख़त्म नहीं हो सकते और न इसे बार बार पढ़ने से इसका आनन्द समाप्त हो सकता है (तिरमिज़ी, अलदारिमी, अलहाकिम)।

यह अल्लाह की मुबारक हस्ती ही है जिसकी तरफ़ हम उसकी वन्दना करते हुए पलटते हैं, जो इंसान को उसकी सीमित क्षमताओं के बावजूद भलाई तक पहुंचने के लायक़ बनाता है।

## अध्याय एक

# प्रारम्भ

# अल-फ़ातिहा

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान रहम करने वाला है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١
الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝٢
مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝٣
اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝٤
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝٥
صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَ لَا الضَّآلِّيْنَ ۝٦

वन्दना केवल अल्लाह के लिए है जो सारे जगतों का पालने वाला रहमान और रहीम है। बदले के दिन का मालिक है। ख़ुदाया हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते है। तू हमको सीधी राह पर साबित क़दम रख। उनकी राह जिन्हें तूने (अपनी) नेअमत अता की है न उनकी राह जिन पर तेरा ग़ज़ब ढाया गया और न गुमराहों की। (1:1-7)

यह छोटी सी सूरत जिससे क़ुरआन शुरू होता है मक्का में नाज़िल (अवतरित) हुई थी। क़ुर्आन जिस क्रम से अवतरित (नाज़िल) हुआ उसके लिहाज़ से यह सूरत कुछ दूसरी छोटी छोटी सूरतों के नाज़िल होने के बाद नाज़िल हुई, लेकिन इसके महत्व की वजह से इसे क़ुरआन के बिल्कुल शुरू में रखा गया है, और इसका महत्व यह है कि इसे हर नमाज़ में एक से अधिक बार दोहराया जाता है। इसकी सभी आयतें (पन्क्तियां) एक ही बार में नाज़िल हुईं थीं। चूंकि इस सूरत में इस्लाम की बुनियादी आस्थाएं व्यक्त हुई हैं इसलिए इसे अल्लाह के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्ल्म ने *उम्मुल किताब* (किताब का मूल) क़रार दिया है। इसे *फ़ातिहतुल किताब* भी कहा गया है, यानि किताब का आरम्भ या प्रस्तावना।

सूरत फ़ातिहा अल्लाह के नाम से शुरू होती है जिसने ख़ुद अपना परिचय कराने के लिए यहाँ अपने उन दो विशेष नामों को इस्तेमाल किया है जो उसकी दया और कृपा व अनुकम्पा को व्यक्त करते हैः *अर्रहमान* व *अर्रहीम* यानि अत्यन्त दयाशील और कृपावान। दूसरी आयत में अल्लाह ने अपने लिए *रब्बुल आलमीन* का शब्द इस्तेमाल किया है जिसका अर्थ है समस्त जगतों का पालनहार। इस तरह अल्लाह ने इस्लामी आस्था की व्यापकता और सार्वभौमिकता

को रेखांकित किया है और इस बात को जताया है कि अल्लाह तआला का सम्बंध किसी विशेष स्थान या कुछ विशेष लोगों से नहीं है। रहमान व रहीम के शब्दों से यह बात ज़ाहिर होती है कि अल्लाह का अपनी रचनाओं से और ख़ास तौर से जीव जन्तुओं से, सम्बंध दया व कृपा पर आधारित है। वह न केवल अपने आप में एक दयाशील हस्ती है बल्कि अल्लाह अपनी दया व कृपा सभी प्राणियों पर सदैव बनाए रखता है और जीवन की स्वभाविक प्रवृत्तियों व प्राकृतिक नियमों के रूप में वह अपनी दया को जारी रखता है जो कि पक्षियों, पशुओं और मनुष्यों की स्वभाविक क्रियाओं में देखी जा सकती है। नवजात शिशुओं के पालन पोषण की प्रक्रिया में इसे ख़ास तौर से देखा जा सकता है जब माता-पिता की ममता और स्नेह ही जन्म लेने वाले बच्चों का एक मात्र सहारा होती है। एक ख़ुदा का नाम लेने और उसके द्रवारा पैदा किए गए जीव जन्तुओं से उसके सम्बंध में दया और कृपा को जताने से अल्लाह पर ईमान रखने वाले बन्दों को इस्लामी आस्था के मूल तत्वों की याद दिहानी होती रहती है। इसी लिए अल्लाह के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों को यह सीख दी है कि हर काम अल्लाह का नाम लेकर शुरू किया करें।

(सन्दर्भः इमाम इब्ने हम्बल र० का हदीस संग्रह)

यहा जो शब्द रब (*रब्बुल आलमीन*) इस्तेमाल हुआ है उसका अर्थ है पालने पोसने वाला। इससे अल्लाह का अपने बन्दों के साथ मुहब्बत, देखरेख, पालन व पोषण का सम्बंध रेखांकित होता है और एक ऐसा सम्बंध ज़ाहिर होता है जिसमें मुहब्बत और दया व कृपा के साथ पालने पोसने वाली हस्ती होने के साथ साथ मालिक और हाकिम होने अर्थ भी शामलि है। अरबी भाषा के इस शब्द के लिए अंग्रेज़ी में रचित इस पुस्तक में *लार्ड* का शब्द इस्तेमाल किया गया है लेकिन *लार्ड* शब्द से रब का पूरा अर्थ व्यक्त नहीं होता। फिर भी यह शब्द यहाँ इसलिए प्रयोग किया गया कि अधिकतर लोग क़ुरआन और अन्य ग्रन्थों के अंग्रेज़ी अनुवाद में इसी शब्द को देखते और पढ़ते हैं। देख-रेख और दया के इस सम्बन्ध पर ज़ोर देने के लिए अल्लाह की हस्ती का उल्लेख *रब्बुल आलमीन* (समस्त जगतों का रब) से करने के बाद उसके दो अन्य विशेषण *अर्रहमान* और *अर्रहीम* को फिर दोहराया गया है। सभी जीवित प्राणियों के लिए उसकी दया और कृपा इस बात से स्पष्ट है कि उसने सभी प्राणियों को स्वभावित प्रवृत्तियां देकर अपनी जैविक आवश्यकताओं को पूरा करने का रास्ता दिखा दिया है, मुख्य रूप से इंसानों को उसका यह मार्गदर्शन इंसानी बुद्धि के रूप में और अपनी तरफ़ से संदेश्टा भेजने से व्यक्त है।

अल्लाह के प्रेम, कृपा, पालन पोषण और दया के बयान के बाद अल्लाह के सामने जवाबदेही का ज़िक्र आता है, यह कह कर कि अल्लाह बदले के दिन और परलोक का अकेला मालिक है। अल्लाह के सामने जवाबदेही की यह चेतना हर एक के लिए न्याय का आश्वासन है क्योंकि

यह दोनों बातें एकदूसरे से जुड़ी हुई हैं और इन्हें अलग अलग नहीं किया जा सकता, जबकि दुनिया का यह जीवन तो इस तरह की जवाबदेही के बगैर ही समाप्त हो जाएगा।

अल्लाह तआला की हस्ती के बारे में मालिक व स्वामी, महरबान व दयावान और परलोक में अकेले वास्तविक न्यायकर्ता होने को स्वीकार करने के बाद अल्लाह का बन्दा अल्लाह पर अपने ईमान की घोषणा करता है और कहता है कि मैं केवल उसी की उपासना करता हूं और मदद व सहारे के लिए केवल उसी की तरफ़ देखता हूं। यह बात बेमतलब होगी कि कोई बन्दा या बन्दी एक अल्लाह पर ईमान तो लाए लेकिन अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए किसी और माध्यम पर निर्भर हो। इसलिए ईमान रखने वाला बन्दा या बन्दी दिन में कई बार इस बात को दोहराता या दोहराती है कि वह अपने अमल (आचरण) में अपने ईमान की इस प्रतिज्ञा को पूरा करेगा या करेगी और ख़ुद को भी यह याद दिलाता रहता या रहती है कि दैनिक जीवन में उसका आचरण अल्लाह पर ईमान और अल्लाह के दिशा निर्देशों के अनुसार ही होना चाहिए।

अन्त में मोमिन बन्दा या बन्दी अल्लाह से सीधे रस्ते पर चलने की सीख मांगता/मांगती है जिस पर अल्लाह के वे बन्दे चलते रहे हैं जिन्हें अल्लाह ने इनाम पाने वाले बन्दों में शामिल किया है, और उन लोगों के रस्ते से बचने का साहस मांगता/मांगती है जो जानते बूझते अल्लाह के दिशा निर्देशों का उल्लंघन करते हैं जिसके कारण अल्लाह ने उन्हें धुत्कार दिया है, और उन लोगों के रस्ते से भी बचने का साहस मांगता या मांगती है जो अपनी या दूसरों की ग़लत इच्छाओं (वासनाओं) की पैरवी में सीधे रस्ते से भटक गए हैं। सीधे रस्ते के लिए अल्लाह का मार्गदर्शन अल्लाह के संदेश में दिया गया है:

इस तरह मोमिन बन्दा या बन्दी इन सात आयतों में उस अकेले अल्लाह पर अपने विश्वास पर ज़ोर देता या देती है जो सभी प्राणियों का ख़ुदा है और पूरे बृह्माण्ड (कायनात) का रचियता है, जो दयाशील अस्तित्व है और अति कृपावान मालिक है। इसी के साथ बन्दा या बन्दी परलोक में इंसान की जवाबदेही पर अपने विश्वास को भी व्यक्त करता है और उस पैग़ाम पर अपने ईमान को जताता या जताती है जो अल्लाह की *वह्यी* (आसमानी संदेश) के द्वारा सीधे रस्ते की सीख देने के लिए अवतरित हुआ है। मोमिन मर्द या मोमिन औरत इन सभी सिद्धांतों में अपने विश्वास को संक्षिप्त और समग्र रूप से ज़ाहिर करता या करती है और बुद्धि व चेतना रखने वाले इंसानों और सबका पालन पोषण करने वाले दयावान व महरबान रब के बीच सम्बंध को स्वीकार करता/करती है।

यह स्वीकारोक्ति (इक़रार) एक अल्लाह के बारे में एक खोखली और क्षणिक स्वीकारोक्ति नहीं है बल्कि एक सक्रिय सम्बंध का इजहार है जो दिल व दिमाग़ में बस जाता है और जीवन भर इंसान के आचरण व व्यवहार को नियंत्रित करता रहता है। मोमिन बन्दा या बन्दी सीधे

रस्ते के लिए अल्लाह से सीख व साहस की दुआ करता या करती है जो उसके पैग़ाम में निहित है, और उन लोगों के रस्ते से बचने का साहस मांगता या मांगती है जो जान बूझ कर और हठधर्मी के साथ अल्लाह के संदेश व दिशा निर्देश को रद्द करते हैं, या जो अपनी या दूसरों की उक्साहट की वजह से गुमराह (दिगभ्रमित) हो गए हैं।

सूरह फ़ातिहा यानि क़ुर्आन की यह शुरूआत संक्षिप्त लेकिन व्यापक और समग्र है, संतुलित है और अल्लाह की क़ुदरत व महरबानी की तरफ़ तथा दुनिया के इस जीवन में इंसान के मक़सद और जिम्मेदारियों को याद दिलाते रहने वाली, तथा इंसान व ख़ुदा के बीच मज़बूत तथा क़रीबी सम्बंध को जताने वाली है। इस तरह, यह संक्षित और समग्र सूरत क़ुरआन का आरम्भ व प्रस्तावना है और हर इबादत का आधार है और इसीलिए इसे किताब का मूल तत्व कहा गया है। यह इस्लामी आस्था का एक बहुत सुन्दर बयान है और इंसान क व्यवहार के लिए एक प्रेरणा है।

अध्याय दो

# अक़ीदा (आस्था)

## रचना से रचना कार तकः
## सृष्टि और जीवन में चिन्तन करने का आग्रह

एक ख़ुदा में आस्था रखने का जो दृष्टिकोण क़ुरआन ने दिया है वह वास्तव में पूरे बृह्माण्ड पर और उसके विभिन्न भौतिक तथा जैविक दृश्यों पर ध्यान देने की एक पुकार है। सृष्टि में जो प्राकृतिक नियम चल रहे हैं और सृष्टि की पूरी व्यवस्था में जो अनुशासन और क्रम दिखाई देता है, जिसकी बदोलत उसकी निरन्तरता और सामनजस्य बना हुआ है उसको समझने का आग्रह है। सृष्टि के इस अवलोकन से क़ुरआन एक ख़ुदा और उसके गुणों के बारे में तर्क देता है और सृष्टि के जनक का उसकी जनित वस्तुओं से क्या सम्बंध है इसको स्पष्ट करता है।

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अवतरित होने वाली पहली आयतों में सृष्टि के जनक को ''तुम्हारा रब'' कहकर परिचित कराया गया है ''जिसने (सामान्यतः सभी जीवों और वस्तुओं को) पैदा किया, और (मुख्य रूप से) इंसान को पैदा किया *अलक़* (रक्त के थक्के) से'' (96:1,2)। क़ुरआन की यह सबसे पहली आयतें पढ़ने और समझने के आदेश से शुरू होती हैं और इंसान को पढ़ने लिखने की जो योग्यता दी गयी है उसे एक वरदान के रुप में ध्यान में लाती हैं, और यह एक ऐसी योग्यता है जो इंसान के पाश्विक वजूद को दूसरे सभी जीवों से ऊपर उठाती है (17: 70) और इसी से इंसान को यह क्षमता प्राप्त होती है कि वह अपने आधीन अन्य जीवों से अधिक से अधिक काम ले सके।

क़ुरआन जन्तु और वनस्पति जगत के विभिन्न जीवों (जैसे भेड़ बकरी, बेल गाय, ऊंट और घोड़ा, सांप, चिड़ियों, कीड़ों, अनाज, फल, घास आदि) की ओर ध्यान दिलाता है। क़ुरआन केवल पशुओं या पेड़ पौधों के लाभ और उपयोगिता को ही रेखांकित नहीं करता बल्कि उनकी बनावट में सुन्दरता को भी जताता है (16: 6,8,13,14,69; 50:7,10; 78:16; 82:7; 95:4)। जीवन के एक अनिवार्य तत्व के रूप में जल का ज़िक्र भी क़ुरआन में किया गया है (21:30; 25:48,49; 80:24-33)।

इंसान भी, जिसे क़ुरआन सम्बोधित करता है, और इंसान के अतिरिक्त अन्य सभी जीव जन्तु भी और समस्त जीवन इसी धरती पर मौजूद है। लेकिन, क़ुरआन बृह्माण्ड और उसके ग्रहों

व नक्षत्रों की ओर भी इशारा करता है जो अपने अपनी कक्षा में गतिमान हैं, और धरती का उसके पर्वतों व मैदानों, घाटियों और मरुस्थलों, नदियों तथा समुद्रों के साथ ज़िक्र करता है, और वातावरण व जलवायु का उसके विभिन्न पहलुओं जैसे ताप, हवा, बादल, बिजली और वर्षा आदि के सन्दर्भ में ज़िक्र करता है। यह इस बात को भी उजागर करता है कि यद्यपि इंसानी दिमाग़ अपने आधीन बहुत सी शक्तियों से काम ले सकता है लेकिन इंसान को अहंकार के जाल में नहीं फंसना चाहिए। "बेशक आसमानों और ज़मीन का पैदा करना इंसान को पैदा करने से बड़ा काम है लेकिन (इस महत्वपूर्ण सच्चाई को) अधिकतर लोग जानते नहीं हैं।" (40:57)। ग्रह अपने अपने स्थान पर और अपनी अपनी कक्षाओं में अलग अलग गतिमान है, वे या तो ख़ुद अपने अन्दर जीवन रखते हैं या जीवन के माध्यम रखते हैं। अल्लाह की इच्छा से और उसके नियमों के अनुसार ही उनके बीच सम्पर्क और मेल हो सकता है: "और उसी की निशानियों में से है ज़मीन का पैदा करना और उन जानदारों का पैदा करना जो ज़मीन में उसने फैला रखे हैं, और वह जब चाहे उन्हें समेट लेने की शक्ति रखता है।" (42:29)। क़ुरआन प्रकृति के सटीक सिद्धांतों और सुन्दर क्रम के अतिरिक्त स्वयं उसकी सुन्दरता को भी ज़ोर देकर जताता है (जैसे 16:6; 37:6; 41:12; 50:7; 67:3-5)।

सृष्टि और जीव जन्तुओं में प्राकृतिक विविधता के दर्शन को क़ुरआन की एक आयत में समेट दिया गया है जो ज्ञान और आस्था के बीच सम्बंध पर ज़ोर देते हुए पूरी होती है, 'क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आसमान से जल बरसाया तो हम ने इससे तरह तरह के रंगों के फल उगाए और पहाड़ों में सफ़ेद और लाल रंगों के खण्ड हैं और (कुछ) काले भुजंग हैं। इंसानों और जानवरों और मवेशियों के भी कई प्रकार के रंग हैं, अल्लाह से तो उसके वही बन्दे डरते हैं जो ज्ञान वाले हैं, बेशक अल्लाह सशक्त और बख़्शने वाला है।" (35:27-28)।

प्रकृति में यह जो विविधता और सामंजस्य है उसके आधार पर क़ुरआन एक ख़ुदा में विश्वास के जगाता है।

سُبْحٰنَ الَّذِیْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ
الْاَرْضُ وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۳۶﴾ وَ
اٰیَةٌ لَّهُمُ الَّیْلُ ۖ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَاِذَا هُمْ
مُّظْلِمُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَالشَّمْسُ تَجْرِیْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ؕ
ذٰلِكَ تَقْدِیْرُ الْعَزِیْزِ الْعَلِیْمِ ﴿۳۸﴾ وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ
مَنَازِلَ حَتّٰی عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِیْمِ ﴿۳۹﴾ لَا
الشَّمْسُ یَنْۢبَغِیْ لَهَاۤ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا

वो ज़ात पाक है जिसने हर चीज़ के जोड़े बनाये, ज़मीन की पैदावार के, और ख़ुद उनके और उन चीज़ों के जिनकी उनको ख़बर नहीं। और उनके लिये एक निशानी रात है के हम उसमें से दिन को खींच लेते हैं तो उस वक़्त उन पर अंधेरा छा जाता है। और सूरज उसका अपने ठिकाने की तरफ़ चलता रहता है, ये एक मुक़र्रर किया हुआ अंदाज़ा है उसका जो ज़बरदस्त है इल्म वाला है। और चांद की हमने मंज़िल मुक़र्रर कर दी हैं, यहाँ तक के चांद (घटते घटते) खजूर की पुरानी टहनी की

الَّيۡلُ سَابِقُ النَّهَارِ ؕ وَ كُلٌّ فِىۡ فَلَكٍ يَّسۡبَحُوۡنَ ﴿۴۰﴾

तरह हो जाता है। ना तो सूरज ही चांद तक पहुंच सकता है के उसको जा पकड़े, और ना रात ही दिन से पहले आ सकती है, और हर एक दायरे में तैर रहा है। (36:36-40)

وَالۡاَرۡضَ مَدَدۡنٰهَا وَاَلۡقَيۡنَا فِيۡهَا رَوَاسِىَ وَاَنۡۢبَتۡنَا فِيۡهَا مِنۡ كُلِّ شَىۡءٍ مَّوۡزُوۡنٍ ﴿۱۹﴾

और ज़मीन को हम ने फ़ैला दिया है और इसमें भारी भारी पहाड़ रख दिये हैं, और उचित मात्रा में हर तरह की चीज़ उगाई है। (15:19)

الَّذِىۡ لَهٗ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَلَمۡ يَتَّخِذۡ وَلَدًا وَّلَمۡ يَكُنۡ لَّهٗ شَرِيۡكٌ فِى الۡمُلۡكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَىۡءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقۡدِيۡرًا ﴿۲﴾

. आसमानों और ज़मीन की बादशाहत उसी की है, और सने किसी को बेटा नहीं बनाया, और उसकी बादशाहत में उसका कोई शरीक नहीं है, और उसने हर चीज़ को पैदा किया, फिर उसका एक अंदाज़ा मुक़र्रर किया। (25:2)

الَّذِىۡ خَلَقَ سَبۡعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ؕ مَا تَرٰى فِىۡ خَلۡقِ الرَّحۡمٰنِ مِنۡ تَفٰوُتٍ ؕ فَارۡجِعِ الۡبَصَرَ ۙ هَلۡ تَرٰى مِنۡ فُطُوۡرٍ ﴿۳﴾

जिसने सात आसमान ऊपर तले बनाये हैं, रहमान के बनाने में क्या फ़र्क़ तुम देखते हो; फिर नज़र उठा कर तो देख तुझे कोई ऐब नज़र आता है। (67:3)

यह त्रुटिमुक्त व्यवस्था, सामंजस्य और निरन्तरता तार्किक रूप से एक ही हस्ती के द्वारा जारी हो सकती और बनी रह सकती है क्योंकि *"यदि आसमान और ज़मीन में अल्लाह के अतिरिक्त और भी पूज्य प्रभु होते तो ज़मीन व आसमान तितर बितर हो जाते, जो बातें ये लोग बनाते हैं आसमान का मालिक अल्लाह उनसे पाक है।"* (21:22), "न उसके साथ कोई दूसरा पूजनीय है, ऐसा होता तो हर पूज्य प्रभु अपने द्वारा जनित जीव जन्तुओं को लेकर चल देता और एक दूसरे पर नियंत्रण पा लेता। ये लोग जो कुछ (अल्लाह के बारे में ) कहते हैं अल्लाह उससे पाक है। (23:91)

वह मेहरबान ख़ुदा मनुष्य जाति को अपने कर्मों की जवाबदेही से मुक्त नहीं रखेगा, या इस दुनिया के जीवन को ही जहां न्याय पूरी तरह लागू नहीं हो सकता, एक मात्र जीवन नहीं बनाएगाः "और कहते हैं कि हमारा जीवन तो बस इस संसार में ही है कि (यहीं) मरते और जीते हैं और हमें युग मार देता है और इनको इसका कुछ ज्ञान नहीं है केवल अटकल से काम

लेते हैं।'' (45:24) ''क्या तुम यह समझते हो कि हमने तुम को निरर्थ पैदा किया है और यह कि तुम हमारी तरफ़ लोट कर नहीं आओगे? अल्लाह जो सच्चा बादशाह है (उसकी शान) इससे ऊंची है, उसके सिवा कोई पूज्य प्रभु नहीं है, वही ऊंचे आसमान का मालिक है।'' (23:15-16) ''और परलोक में उनका इनाम बहुत बड़ा है काश वे इसे जानते।''(16:41)।

इस संसार के बाद आने वाला जीवन वास्तविक जीवन है, पुरस्कृत होने का जीवन है, स्थिर है और शाश्वत (अनन्त) है ''यह दुनिया का जीवन (कुछ दिन का) सामान है और जो बाद का जीवन है वही सदैव रहने का ठिकाना है।''(40:39); ''और यह दुनिया का जीवन तो केवल खेल और तमाशा है और (हमैशा का) जीवन तो आख़िरत (परलोक) का घर है, काश ये समझते।'' (29:64); ''इसमें सलामती के साथ प्रवेश कर जाओ यह हमैशा रहने का दिन है।''(50:34)

# सृष्टि

اِنَّ فِیۡ خَلۡقِ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ وَ اخۡتِلَافِ الَّیۡلِ وَ النَّهَارِ وَ الۡفُلۡكِ الَّتِیۡ تَجۡرِیۡ فِی الۡبَحۡرِ بِمَا یَنۡفَعُ النَّاسَ وَ مَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنۡ مَّآءٍ فَاَحۡیَا بِهِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَا وَ بَثَّ فِیۡهَا مِنۡ كُلِّ دَآبَّةٍ ۪ وَّ تَصۡرِیۡفِ الرِّیٰحِ وَ السَّحَابِ الۡمُسَخَّرِ بَیۡنَ السَّمَآءِ وَ الۡاَرۡضِ لَاٰیٰتٍ لِّقَوۡمٍ یَّعۡقِلُوۡنَ ﴿۱۶۴﴾

बेशक आसमानों और ज़मीन के बनाने में, और रात और दिन के अंतर में और जहाज़ों में जो समुन्दर में चलते हैं आदमियों के फ़ायदे की चीज़ों को लेकर, और बारिश के पानी में जो अल्लाह आसमानों से बरसाता है फिर उस पानी से ज़मीन को नया जीवन देते हैं, जो सूखी पड़ी थी, और हर तरह के जीव-जन्तु उसमें फैला देते हैं और हवाओं के बदलने में और बादलों में जो ज़मीन व आसमान के बीच टिके हुए हैं, ये सब अल्लाह की निशानियाँ हैं, अक़्ल वालों के लिए। (2:164)

यह एक आयत आदमी की इन्द्रियों और विचारों को क़ुदरत के उन विभिन्न पहलुओं की ओर ले जाती है जिनके क्रमबद्ध होने और सुन्दर होने का हवाला यहाँ दिया गया है। आयत विशाल बृहमाण्ड के एक संक्षिप्त उद्धरण से शुरू होती है जिसमें उसके सितारों और नक्षत्रों का सामान्य रूप से उल्लेख किया गया है और ज़मीन का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है जहां मनुष्य जाति बसती है, जिससे क़ुरआन सम्बोधित है। धरती की विशेष स्थिति और सूरज से उसका सम्बंध दिन और रात के आने जाने का कारण है और जिनमें से हर एक की लम्बाई विभिन्न मौसमों में विभिन्न होती है।

अरबी भाषा का शब्द '*अस्समावात*' बहुवचन है जिसका एकवचन *'समा'* है, इसका मतलब है ऊंचाई की ओर जाना और इसका प्राथमिक अर्थ अंतरिक्ष के विभिन्न स्तरों (परतों) से है जो इंसान को अपने ऊपर बुलन्द होती दिखाई देती हैं चाहे वे धरती के किसी भी स्थान पर हो। क़ुरआन में यह शब्द आम तौर से अपने व्यापक अर्थ में गगनों (Heavens) के लिए उपयोग होता है जो वेबस्टर न्यू कॉलेजेट डिक्शनरी के अनुसार अंतरिक्ष का वह फैलाव है जो धरती पर एक गुंबद के रूप में ढका दिखाई देता है और आम तौर से बहुवचन में उपयोग होता है (2:29, 33, 107, 116-117, 164, 255, 284 इ. और 16:49; 17:44; 19:93; 21:30; 22:18; 23:71; 25:59; 31:10; 34:3; 35:41; 40:57; 41:12; 42:29; 45:36; 59:23; 63:7 आदि)। और जब यह एकवचन में अर्थात *"अस्समा"* आता है तो इसका अर्थ ख़ास तौर से आकाश लिया जा सकता है जो कि वेबस्टर के अनुसार वह उपरी वातावरण है जो कि धरती के ऊपर एक विशाल गुंबदीय छत की तरह दिखाई देता है या उपरी वातावरण में छाया हुआ

मौसम है, या केवल मौसम है (2:19,22,164; 6:99,125; 7:96; 8:11; 10:24; 11:44,52; 13:17; 14:24,32; 15:22; 16:10,65,79; 20:53; 21:32; 22:31,63; 23:18; 24:43; 25:48,61; 27:60; 30:48; 31:10; 37:6; 39:21; 41:12; 43:11; 45:5,13; 50:6,9 आदि)। दूसरी तरफ़ यह शब्द चाहे बहुवचन में हो या एकवचन में, एक धार्मिक शब्दावली के तौर से भी इस्तेमाल होता है जिसका अर्थ *'अल्लाह का अर्श'* (कुर्सी) भी हो सकता है जहां अल्लाह का अस्तित्व विद्यमान है, फ़रिश्तों का स्थान भी हो सकता है, और *'मलाइल आला'* (उच्च परिषद) भी हो सकता है (37:7; 38:69), और परलोक के जीवन में चुनिंदा व सफ़ल लोगों का पवित्र स्थान भी हो सकता है (7:40; 17:95; 26:4; 27:65; 36:28; 39:67; 48:4,7; 53:26; 55:33 आदि)।

अहम बात यह है कि पूरे क़ुरआन में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि ये सब अल्लाह की नेअमतें (वरदान) हैं जिनकी बदौलत इस दुनिया में इंसानों की चलत फिरत बनी हुई है। उपरोक्त आयत उन बहुत सी आयतों (6:97; 10:32; 14:32; 16:14; 17:66; 22:65; 27:63; 31:31; 42:32-34; 45:12; 55:24) में से एक है जिनमें समुद्रीय यातायात का हवाला है, जबकि क़ुरआन की दूसरी कई आयतें थलीय (ज़मीनी) यातायात और घोड़ों तथा ऊंटों के लाभ बताती हैं (जैसे 16:7,8; 36:42,71,72; 40:79; 43:21)। इस तरह क़ुरआन इस बात पर ध्यान दिलाता है कि इंसान एक चलता फिरता जीव है और गतिमान रहना मानव स्वभाव के लिए आवश्यक है, इसलिए इस चलत फिरत को इंसान के एक मौलिक अधिकार के रूप में हर तरह से सुरक्षित होना चाहिएः "और हमने आदम के बच्चों को सम्मानित किया है है और उनको जंगल व समुद्र में सवारी दी है और पवित्र जीविका दी और अपने पैदा किए बहुत से जीवों से उत्तम बनाया है।" (17:70) ।

इंसान प्राकृतिक और स्वभाविक रूप से विश्वव्यापी है, और ज्ञान के आदान प्रदान तथा सभ्यता के विकास के लिए विभिन्न स्थानों पर उसके जाने में या तरह तरह के लोगों के साथ घुलने मिलने में (49:13) कोई रुकावट नहीं होना चाहिए। एक और महत्वपूर्ण आयत में जहां क़ुरआन समुद्र को जहाज़ों के माध्यम से इंसान के आधीन होने को अल्लाह की नेअमत के रूप में बयान करता है, यह कह कर इस बात को प्रत्यक्ष रूप से दोहराया गया है कि अल्लाह ने उसे (समुद्र) को इंसान और उसकी अक़ल के आधीन कर दिया हैः "अल्लाह ही तो है जिसने समुद्र को तुम्हारे लिए अनुकूल कर दिया है ताकि उस (अल्लाह) के हुक्म से इसमें नाव चले और ताकि तुम उसकी कृपा से (रोज़ी) तलाश करो और ताकि तुम शुक्र अदा करो" (25:12)। यहाँ आकाश से अभिप्राय वातवरण और अंतरिक्ष दोनों हो सकते है जिनके माध्यम से इंसान आने वाले समय में पर्यटन कर सकता है जिस तरह क़ुरआन के नाज़िल होने के समय समुद्र में करता रहा था। निश्चित रूप से ऐसा कोई हवाला क़ुरआन के अवतरित होने के समय स्पष्ट

रूप से नहीं दिया गया क्योंकि उस समय इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी और इसको समझना मुश्किल था। लेकिन आज के परिप्रेक्ष्य में जब हम इस पर गहन विचार करते हैं तो इसका यह अर्थ भी समझ में आता है।

समुद्र का ज़िक्र आते ही मस्तिष्क में पानी का विचार आता है जो कि प्रकृति के भौतिक और जैविक पहलुओं के बीच एक माध्यम है: "और हम ने हर जीव को पानी से पैदा किया है" (21:31)। वातावरण से पानी इंसान को विभिन्न रूपों में दिया गया है और इसी से धरती पर जीवन शुरू होता है और धरती पर मौजूद हर जीव जन्तु को जीवन मिलता है। यह पानी भाप बनने और फिर उसके जमने से बादल बनने की प्रक्रिया से और फिर विभिन्न प्रकार से हवाओं की उस चहल पहल से प्राप्त होता है जो कि निर्धारित प्राकृतिक नियमों के अन्तर्गत होती है, और जो इस प्रक्रिया का एक अनिवार्य अंग है। प्रक्रति के इन विभिन्न तत्वों और नियमों के बीच इस आपसी सम्बंध, सुचारू व्यवस्था, संतुलन और सम्पर्क व समन्वय से यह ज़ाहिर होता है कि यह सब एक व्यवस्था में बंधे हुए हैं। ऐसी युक्ति और शक्ति की मालिक एक ही हस्ती है क्योंकि इस तरह की एक से अधिक हस्तियां निश्चित रूप से टकराव का कारण बनेंगी, (नमूने के लिए देखें आयतें: 21:22; 23:91; 4:82)।

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْأَرْضِ وَ اخْتِلَافِ
الَّيْلِ وَ النَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿١٩٠﴾
الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰى
جُنُوْبِهِمْ وَ يَتَفَكَّرُوْنَ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ
الْأَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ
فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿١٩١﴾

बिला शुबह आसमानों और ज़मीन के बनाने में और रात और दिन के अदल बदल जाने में अक़्ल वालों के लिए निशानियां हैं। जो खड़े, बैठे, और लेटे हर हाल में अल्लाह को याद करते हैं और आसमानों और ज़मीन के बनाने में फ़िक्र करते हैं और कहते हैं के ऐ हमारे रब! तूने ये सब बेकार या बेफ़ायदा नहीं बनाया, तू पाक है, हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा। (3:190-191)

इस विशाल ब्रह्माण्ड में प्रकृति के यह अजूबे उन लोगों के लिए ध्यान देने वाले हैं जो चिन्तन मनन के महत्व को समझते हैं। इन अजूबों पर यदि वे ग़ौर करेंगे तो उनकी समझ में आ जाएगा कि सृष्टि का रचियता एक अकेला अस्तित्व ही है, और यह कि इन अजूबों की यह रचना सामान्यतः और इंसान की पैदाइश विशेषतः अपना अर्थ व उद्देश्य रखती है। सृष्टा के वजूद को मानना और इंसान की जवाबदेही में विश्वास रखना वे विशेष कारक हैं जो दुनिया के इस जीवन में नैतिकता और न्याय की प्रेरणा देते हैं और आने वाले अनन्त जीवन में पूर्ण न्याय, और अच्छे काम करने वालों के लिए अच्छा बदला और बुरे काम करने वालों के लिए

बुरा बदला मिलने की उम्मीद दिलाते हैं।

فَالِقُ الْاِصْبَاحِ ۚ وَ جَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا وَّ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ حُسْبَانًا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿۹۶﴾ وَ هُوَ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا بِهَا فِیْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰیٰتِ لِقَوْمٍ یَّعْلَمُوْنَ ﴿۹۷﴾

वो ही सुबह का निकालने वाला है, उसी ने रात को आराम के लिए बनाया, और उसी ने सूरज और चांद को हिसाब के लिए बनाया ये मुक़र्रर की हुई उसी की जो बड़ा ज़बरदस्त क़ुदरत वाला और बड़ा ही जानने वाला है। और उसी ने तुम्हारे लिये सितारों को पैदा किया ताकि तुम उनसे अंधेरों में ख़ुश्की में और दरया में रास्ता पा लो, बेशक हमने ये अपनी निशानियां खोल खोल कर बयान कर दी उनके लिये जो ज़रा समझ रखते हैं।

(6:96-97)

उपरोक्त आयत केवल दिन व रात के आगे पीछे आने जाने को ही बयान नहीं करती है बल्कि इस बात को उजागर करती है कि रात बीत जाने के बाद किस तरह दिन निकलता है और प्रकाश व जीवन लाता और लोगों को अपनी रोज़ी कमाने के योग्य बनाता है (और देखें: 3:27; 10:67; 22:61; 25:47; 30:23; 35:13; 36:37; 39:5; 40:61; 57:6; 78:10, 11)। धरती की धुरी से सूरज के स्थान में रोज़ और वार्षिक रूप से होने वाले यह बदलाव इंसान को दिन के समय और साल में चार महीनों का हिसाब लगाने के अवसर देते और ढंग सिखाते हैं, जबकि चांद की मासिक गति और उसके घटने बढ़ने के चरणों से महीनों का हिसाब लगाने में सहायता मिलती है। सितारे अन्धेरों में रोशनी करते हैं और कुछ नक्षत्र समुद्र व स्थल के यात्रियों के लिए दिशाओं निर्धारित करने में मार्गदर्शन का माध्यम बनते हैं। कितनी दुरूस्त है यह व्यवस्था जो इंसान को सूरज, चांद और सितारों की रोशनी से लाभान्वित करती है और समय की गणना करने व दिशों का निर्धारण करने में सहायता देती है। अल्लाह की रचना के इस कमाल में जो लोग इन तथ्यों को समझते हैं और उन पर विचार करते हैं वे इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि निश्चित रूप से इस व्यवस्था का बनाने वाला कोई है जो इसका संचालन भी करता है, और यह कि वह निश्चित रूप से अकेला अस्तित्व है, सर्वशक्तिमान है और ज्ञान व जानकारी रखने वाला है।

هُوَ الَّذِیْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِیَآءً وَّ الْقَمَرَ نُوْرًا وَّ قَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِیْنَ وَ

वो अल्लाह ही है जिसने सूरज को चमकता हुआ बनाया, और चांद को नूरानी बनाया, और उसकी चाल के लिये मंज़िलें निधार्रित कीं, ताकि तुम वर्षों की गिनती और

الْحِسَابَ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ اِنَّ فِى اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَ النَّهَارِ وَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ۝

हिसाब मालूम कर लिया करो, अल्लाह ने ये चीज़ें बेकार पैदा नहीं कीं, अल्लाह ये तर्क साफ़ साफ़ बयान करता है उनके लिये जो बुद्धि रखते हैं। बेशक रात और दिन के अंतर आने में और अल्लाह ने जो आसमानों और ज़मीन में पैदा किया है उन सब में उनके लिये (तौहीद के) तर्क हैं जो अल्लाह से डरते हैं। (10:5-6)

उपरोक्त आयतों में से पहली आयत सूरज और चांद के प्रकाश में अन्तर को जताती है, सूरज के प्रकाश के लिए "*ज़िया*" और चांद के प्रकाश के लिए "*नूर*" शब्दों का प्रयोग किया गया है। क़ुरआन के उतरने के युग में में इन दोनों प्रकाशों को अलग अलग शब्दों से व्यक्त करना अपने आप में एक महत्वपूर्ण बात है। जैसा कि कुछ दार्शनिकों ने कहा है, '*ज़िया*' का अर्थ ऐसे प्रकाश से है जो स्वंय अपने अन्दर से निकलता है, जैसे आग (देखें आयतें: 2:17, 20), जबकि '*नूर*' आम तौर से प्रकाश को कहा जाता है और विशेष रूप से उस प्रकाश को कहा जाता है जो केवल प्रतिबिम्बित हो या किसी दूसरे स्रोत से जारी हो, जैसा कि अक़ीदे की रोशनी को या अल्लाह के मार्गदर्शन की रोशनी को भी नूर कहा गया (2:17; 3:15,44,46; 7:157; 24:35; 39:69; 42:52; 57:12,13,28)। अल्लाह को नूर का स्रोत कहा गया है यानि हर प्रकाश का स्रोत वही है, अतः इस लिहाज़ से भी आयत के इस अर्थ का अनुमोदन होता है, इस में कोई विरोधाभास नहीं है (24:35; तुलना के लिए देखें 4:174; 5:15; 16:122; 24:40; 39:22,69; 64:8)। क़ुरआन में दूसरे स्थानों पर सूरज को '*सिराज*' (दीपक) कहा गया है (25:61; 17:16), और जलता हुआ दीपक कहा गया है (78:13)। इसके अलावा, धूप और रोशनी और सूरज व चांद की स्थिति में धरती से दिखने वाला बदलाव दिन या पूरे महीने में समय का हिसाब लगाने का आधार बनता है, और वर्ष के चार मौसमों में अन्तर का कारण बनता है और विभिन्न मामलों के लिए दिन, महीना या मौसम का हिसाब लगाने का आधार बनता है, जो सभ्यता और उसके विकास के लिए ज़रूरी है (जैसे, उत्पादन, उपभोग, आय, सेवाएं, सर्वे आदि)। दिन व रात लगातार और एक निर्धारित क्रम से क्रमवार एक दूसरे के पीछे आते जाते हैं (3:27; 22:16; 31:29; 35:13; 39:5; 57:6)। रात और दिन की अवधि में चारों मौसमों के बीच अन्तर आता है, और हम इंसानों को जाड़े में छोटा दिन व बड़ी रात, जबकि गर्मी में इसके विपरीत बड़ा दिन और छोटी रात मिलती है, और बसन्त व बहार के दिनों में बराबर के दिन रात मिलते हैं। यह सभी पहलू इस बात का प्रतीक हैं कि सृष्टि कितनी परिपूर्ण और उत्तम ढंग से बनी है और इंसान के भरण पोषण व देखरेख का कितनी ज़बरदस्त व्यवस्था की गयी है।

اَللّٰهُ الَّذِیْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَیْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ وَ سَخَّرَ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ ؕ كُلٌّ یَّجْرِیْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّی ؕ یُدَبِّرُ الْاَمْرَ یُفَصِّلُ الْاٰیٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ ۝ وَ هُوَ الَّذِیْ مَدَّ الْاَرْضَ وَ جَعَلَ فِیْهَا رَوَاسِیَ وَ اَنْهٰرًا ؕ وَ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِیْهَا زَوْجَیْنِ اثْنَیْنِ یُغْشِی الَّیْلَ النَّهَارَ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ۝

अल्लाह वो है जिसने बग़ैर सतूनों के आसमानों को ऊंचा खड़ा कर दिया जो तुम देखते हो, फिर अर्श पर क़ायम हुआ, और सूरज और चांद को काम में लगा दिया, हर एक एक मुद्दते मुक़र्ररा तक गर्दिश करता रहेगा, वही सारे मामलों का इंतेज़ाम करता है, आयतों खोल खोल कर बयान करता है, ताकि तुम अपने रब के सामने हाज़िर होने का यक़ीन कर लो। और वही है जिसने ज़मीन को फ़ैला दिया, और इस में पहाड़ और दूरिया पैदा कर दिये और इसमें हर क़िस्म के मेवों से दो दो क़िस्म पैदा किये, रात को दिन से छुपा लेता है, बेशक इसमें फ़िक्र करने वालों के लिये बहुत सी निशानियां हैं। (13:2-3)

क़ुरआन में आसमानों का ज़िक्र जहां बहुवचन में आया है वहां उनसे अभिप्राय उस आसमान से भी हो सकता है जिसे हम वातावरण और अंतरिक्ष समझते हैं, और उस स्थान से भी हो सकता है जो इस दृश्य से परे है जहाँ ''मलाइल आला'' (उच्च परिषद) है (37:8; 38:69) और जहां फ़रिश्ते इकट्ठे होते हैं। आसमान, विशेष रूप से वह आसमान जो हम अपनी आंखों से देखते और जानते हैं, कुछ निर्धारित प्राकृतिक नियमों (जैसे दबाव और घनन व सान्द्रता आदि) के माध्यम से टिके हुए हैं, लेकिन कोई स्तम्भ और सहारा इसके नीचे दिखाई नहीं देता है। जहां तक ''अल्लाह के अर्श'' की बात है तो उसे चाहे शाब्दिक अर्थ में लिया जाए या एक प्रतीकात्मक कल्पना के अर्थ में लिया जाए, दोनों ही रूप में वह हमारे बोध और संज्ञान की सीमा से परे है। क़ुरआन में अल्लाह के अर्श को ज़ोरदार या शानदार और महान व सुशील कह कर बताया गया है (9:129; 23:86; 27:26)। यह बयान कि वह ''अर्श पर मुस्तवी (ब्राजमान) हो गया'' (उपरोक्त आयत के अलावा देखें 7:54; 10:3; 20:5; 25:29; 32:4; 7:4), इस बयान के बाद आता है कि ''उसने बृह्माण्ड की रचना की है'' अर्थात आसमानों की जिनमें गेलेक्सीज़ (आकाश गंगाऐं), सितारे व ग्रह भी शामिल हैं और अलौकिक कल्पनाएं ''माफ़ोक़ुल फ़ितरी तसव्वुर'' भी। अल्लाह अपने अर्श पर, इस बात से अलग कि वह अर्श कैसा है या क्या है, ब्राजमान हो कर इस बृह्माण्ड को अपनी पूरी शक्ति, ज्ञान, ध्यान और कृपा से चला रहा है और अपनी शक्ति को अपनी दयाशीलता और धैर्य व संयम के साथ काम में ला रहा है, न कि केवल अपना शासन चला रहा है और अपनी निरंकुश शक्ति को बरत रहा है। (10:3; 25:59; 57:4)

ऊपर की आयतों में से पहली आयत सूरज और चांद पर अल्लाह के नियंत्रण को जताती है कि यह दोनों किस तरह अल्लाह के बनाए हुए प्राकृतिक नियमों और व्यवस्था से बंधे हुए हैं, और इंसानों को लाभ पहुंचाने के लिए "सूरज अपने निर्धारित रस्ते पर चलता रहता है यह (अल्लाह) वर्चस्वशाली और युक्तिपूर्ण हस्ती का (ठहराया हुआ) अंदाज़ा है। और चांद की भी हमने मंज़िले निर्धारित कर दी हैं यहाँ तक कि (घटते घटते) खजूर की सूखी डंडी की तरह हो जाता है। न तो सूरज ही से यह हो सकता है कि चांद को जा पकड़े और न रात दिन से पहले आ सकती है, सब अपने अपने दायरे में तैर रहे हैं।" (36:38-40)। इसी तरह दिन और रात का समयांतर हमें चारों मौसमों में अलग अलग मिलता है और हर मौसम में हमें सूरज की धूप अलग अलग तापमान पर मिलती है। चांद हमें पूरे महीने अलग अलग चरणों (स्थितियों) में दिखाई देता है और इस कारण उससे मिलने वाला प्रकाश अलग अलग मात्रा में मिलता है। अल्लाह तआला की शक्ति और युक्ति की यह सभी निशानिया क़ुरआन में दी गयी हैं ताकि लोग इस बात को समझें कि यह दुनिया और इसमें बसे इंसान बग़ैर किसी अर्थ व उद्देश्य के नहीं पैदा किए गए हैं, बल्कि इंसान को अल्लाह तआला ने शरीरिक, बौद्धिक और आत्मिक रूप से जो कुछ भी दिया है, उसकी ज़िम्मेदारी उस पर लागू होती है, और यह कि हर व्यक्ति आने वाले जीवन में उसके सामने हाज़िर होगा और उसके न्याय व नतीजे को देखेगा।

सूरज और चांद से मिलने वाली धूप और रोशनी के अलावा, क़ुरआन धरती की तरफ़ भी इंसान का ध्यान खींचता है कि धरती पर इंसान को बसाने के लिए धरती को बनाया गया जहां उसका अस्तित्व बने रहने और जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति का पूरा प्रबंध मौजूद है। धरती का कोई भी भाग जहां इंसान रहते हैं वह वहां के रहने वालों के लिए उपयुक्त और समतल है हालांकि पूरी धरती एक गोले के रूप में ढाली गयी है। ज़मीन पर मज़बूत पहाड़ खड़े किए गए हैं, बहते पानी के संसाधन हैं और तरह तरह के पेड़ पौधे हैं जिन में नर और मादा बनावट मौजूद है जो फूलों और विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों के उत्पादन व फलने फूलने के लिए एक दूसरे से समन्वय करते हैं। अधिकतर पौधे दिन और रात के आने जाने से फलते हैं क्यों कि दिन में उनके अन्दर प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया होती है और रात में वे सांस लेते हैं। यह सभी चीज़ें अल्लाह ज्ञानी व जानकार और सशक्त व सर्वशक्तिमान की अचंभित करने वाली स्पष्ट निशानियां हैं।

أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا ۚ وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حِلْيَةٍ أَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ

अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया फिर उससे अपने अपने क्षमता के मुताबिक़ नाले बह निकले, फिर बहा लाया वो सैलाब झाग फूला हुआ, और जिन चीज़ों को आग में ज़ेवर या सामान बनाने की ग़र्ज़ से तपाते हैं

مِّثْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ؕ فَاَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَآءً ۚ وَ اَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِى الْاَرْضِ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ ۞

उसमें भी ऐसा ही मैल कुचैल था वो फ़ेंक दिया जाता है, और जो चीज़ें लोगों को फ़ायदा देने वाली होती हैं वो ज़मीन में बाक़ी रहती हैं, अल्लाह इसी तरह मिसालें बयान करता है। (13:17)

उपरोक्त आयत में प्राकृतिक तथ्यों को प्रस्तुत करने वाले कई उदाहरण दिए गए हैं। पहला उदाहरण पानी का है जो अल्लाह बारिश के रूप में आसमान से बरसाता है जिससे नदियां, नाले और तालाब अपनी अपनी समाई के अनुसार भर जाते हैं। इसी तरह इंसान को ज्ञान दिया गया है और मार्गदर्शन किया गया है चाहे वह अल्लाह ने स्वयं दिया हो या उसके पैदा किए किसी साधन से प्राप्त हो, इस ज्ञान और मार्गदर्शन को हर व्यक्ति मर्द या औरत अपनी अपनी क्षमता के अनुसार प्राप्त करता या करती है। चूंकि दूसरों के सही या ग़लत जानकारी देने की सम्भावना हमैशा रहती है इसलिए यह उदाहरण इस बात को सुनिश्चित करने के लिए दिए गए हैं कि अन्त में सच और सत्य ही बाक़ी रहता है। झूट (बातिल) बात या जानकारी झाग की तरह है जो पानी के रैले के ऊपर छा जाता है और जल्दी ही उड़ जाता है और यह बातिल उस मेलकुचेल की तरह होता है जो धात को गर्म करके कुन्दन बनाने की प्रक्रिया में उसके ऊपर आ जाता है। यह झाग और मेलकुचेल दोनों आख़िरकार जाते रहते हैं। ठीक इसी प्रकार जब विभिन्न नज़रियों के बीच कशमकश (खींचतान) होती है तो जो चीज़ ज़मीन पर रहने वालों के लाभदायक होती है वह बाक़ी रहती है और जो झाग व मेलकुचेल की तरह निरर्थ और बेकार होती है वह लुप्त हो जाती है। अलबत्ता, सत्य और सच्चाई दुनिया में उन लोगों के दम से बाक़ी रहती है जो उसमें विश्वास रखते हैं: "और अल्लाह लोगों को एक दूसरे पर (चढ़ाई और हमला करने) से न हटाता तो मुल्क तबाह हो जाता लेकिन अल्लाह दुनिया वालों पर बहुत मेहरबान है।" (2:251)

اَوَ لَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِى الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ؕ وَ هُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۞

क्या उन्होंने नहीं देखा के हम ज़मीन को हर चहार तरफ़ से कम करते जा रहे हैं, और अल्लाह हुक्म करता है, उसके हुक्म को कोई हटाने वाला नहीं है, और वो बहुत ही जल्द हिसाब लेने वाला है। (13:41; और देखें 21:44)

यह आयत धरती की बनावट या उसकी आबादी में भौगोलिक या जनसांख्यिक परिवर्तनों की तरफ़ इशारा करती है जो एक ऐसी बात है जिसका समर्थन विभिन्न वैज्ञानिक अवलोकनों से होता है (जैसेः अंतरिक्ष में होने वाले बदलाव, ज़मीन में कटाव के कारक जैसे गर्मी, हवा,

नमी और बारिश, भौगोलिक, आर्थिक और अन्य कारणों से आबादी में कमी), और यह कारक धरती या आबादी की स्थिति को प्रभावित करते हैं, जैसे बड़ी संख्या में लोगों का मर जाना या ख़राब स्थिति वाले क्षेत्रों से बहतर स्थिति वाले क्षेत्रों की तरफ़ पलायन कर जाना। ये बदलाव यह दर्शाते हैं कि प्राकृतिक और सामाजिक नियम किस तरह एक दूसरे से सम्बद्ध हैं, और इस बात की ओर इशारा करती हैं कि इन भौतिक और मानवीय घटनाओं के पीछे अल्लाह का हाथ काम कर रहा है।

اَللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَ اَنْزَلَ مِنَ
السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا
لَّكُمْ ۚ وَ سَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِیَ فِی الْبَحْرِ
بِاَمْرِهٖ ۚ وَ سَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ﴿۳۲﴾ وَ سَخَّرَ لَكُمُ
الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ دَآىِٕبَیْنِ ۚ وَ سَخَّرَ لَكُمُ الَّیْلَ
وَ النَّهَارَ ﴿۳۳﴾ وَ اٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ؕ
وَ اِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ
الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ﴿۳۴﴾

अल्लाह ही तो है जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और उसने आसमानों से पानी बरसाया, फिर उससे तुम्हारे खाने के लिये फल पैदा किये और उसी ने तुम्हारे लिये नाव और जहाज़ों को नियंत्रित कर दिया ताकि वो ख़ुदा के हुक्म से दरया में चलें और उसने तुम्हारे लिये नहरों को अनुकूल किया। और उसी ने तुम्हारे लिये सूरज और चांद को काम में लगा दिया जो एक नियम पर बराबर चल रहे हैं और रात और दिन को भी तुम्हारे काम में लगा दिया है। और दी तुम को हर वो चीज़ जो तुमने मांगी, और अगर शुमार करने लगो अल्लाह की नेमतों को तो शुमार ना कर सकोगे, बिलाशुबह इन्सान बड़ा बे इन्साफ़ और नाशुक्रा है। (14:32-34)

यह आयतें एक बार फिर अल्लाह की रचना कला के उन प्रतीकों को व्यक्त करती हैं जो विभिन्न चीज़ों में दिखाई देती है जैसे कि वातावरण और अंतरिक्ष में, आसमानों में (उनके धामिक अर्थ के लिहाज़ से, जहां 'मलाइल आला' है और फ़रिश्तों का जमघट है (देखें 37:8; 38:69), आसमान से पानी बरसाने और उसके द्वारा इंसान के अस्तित्व के लिए सब्जियां उगाने में कश्तियों और समुद्र को इंसान के लिए अनुकूल बना देने में, जिनके लिए सूरज की धूप और चांद की रोशनी को सेवक बना दिया गया है, दिन और रात के आने जाने में और विभिन्न मौसमों में उनके अंतराल अलग अलग होने में। फिर यह कि अल्लाह लोगों को वह सब कुछ देता है जिसकी उन्हें आवश्यकता होती है, और इस तरह उसकी कृपा असीम है, चाहे यह सामूहिक रूप से पूरी मनुष्य जाति के लिए हो या विशेष रूप से किसी व्यक्ति के लिए जो कठिन स्थितियों में उसे मदद के लिए पुकारे या कृपा की गुहार करे (186:2)। लेकिन इंसान जब मुश्किल में पड़ता है या उसे कोई कोई राहत मिलती है तो वह तुरन्त बातें बनाने लगता है या अल्लाह की कृपा को भुला बैठता है (7:189-190; 10:12; 22:23; 17:83; 30:33; 31:32;

39:8,49; 41:49-51)। अल्लाह पर ईमान और मृत्यू के बाद जीवन में विश्वास से इंसान को स्वयं को नियन्त्रित रखने और एक संतुलित जीवन बिताने में सहायता मिलती है। पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक हदीस के अनुसार मोमिन को जब दुनिया में कोई भलाई प्राप्त होती है तो वह अहंकार और गर्व में अपनी उर्जा को व्यर्थ नहीं करता बल्कि अपने रब का आभारी होता है और जब उसे कोई दुख पहुंचता है तो वह हाथ पांव छोड़ कर नहीं बैठ रहता बल्कि सब्र करता है, अडिग रहता है और उस कठिन स्थिति से उबर आने की उम्मीद रखता है (इब्ने हंबल, मुस्लिम)। इस तरह इस आस्था का फ़ायदा यह है कि यह इंसान को संतुलन, स्थिरता और सृजन शक्ति के साथ सुरक्षित रखती है।

وَ اَرْسَلْنَا الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَسْقَيْنٰكُمُوْهُ ۚ وَ مَاۤ اَنْتُمْ لَهٗ بِخٰزِنِيْنَ ﴿۲۲﴾

और हम ही हवा चलाते हैं जो बादलों को पानी से भरती हैं, फिर हम ही आसमान से पानी बरसाते हैं, फिर वो तुम को पिलाते हैं, और तुम इतना पानी जमा करके ना रख सकते थे। (15:22)

इस आयत में अरबी भाषा का शब्द "*लवाक़िह*" इस्तेमाल हुआ जिसका अर्थ होता है गर्भधारण, और यह शब्द हवाओं की इस भूमिका की तरफ़ इशारा करता है कि वे वनस्पतियों के उत्पादन में सहायक होती हैं, या भांप को संघनित करके बादल बनाती हैं जो बारिश में बदल जाता है और फिर उससे पानी प्राप्त होता है जो जीवन के लिए अनिवार्य है। लोग पानी को टंकियों में जमा कर लेते हैं या बांध बना कर रोक लेते हैं, लेकिन वह उसके वास्तविक कारकों और प्रक्रिया पर कोई नियंत्रण नहीं रखते यानी भांप बनने और फिर बादल बनने की प्रक्रिया में जो कि हवाओं का कमाल है। इस तरह वास्तव में प्राकृतिक नियमों और व्यवस्था से पृथ्वी पर पानी वितरित होता है।

وَ سَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ ۙ وَ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ ؕ وَ النُّجُوْمُ مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمْرِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَ مَا ذَرَاَ لَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۳﴾ وَ هُوَ الَّذِيْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّ تَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَ تَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيْهِ وَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۴﴾ وَ

और उसने तुम्हारे लिये रात, दिन, सूरज और चांद को काम में लगा रखा है, और उसके हुक्म से सितारे भी काम में लगे हुए हैं, बिला शुबह उसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिये जो समझ रखते हैं। वो चीज़ें जो उसने तुम्हारे लिये इस तौर से पैदा की हैं के उनके रंग अलग-अलग हैं, बेशक उसमें निशानी है उन लोगों के लिये जो नसीहत हासिल करते हैं। और वही है जिसने आधीन कर दिया दरिया को ताकि तुम ताज़ा गोश्त उसमें से खाओ और उसमें से ज़ेवर निकालो, जिसको तुम जानते हो, और तुम

اَلْقٰى فِى الْاَرْضِ رَوَاسِىَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَ اَنْهٰرًا
وَّ سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥﴾ وَ عَلٰمٰتٍ ؕ وَ
بِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿١٦﴾ اَفَمَنْ يَّخْلُقُ كَمَنْ
لَّا يَخْلُقُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٧﴾ وَ اِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ
اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٨﴾

देखते हो कश्तीयों को कि उसमें पानी को चीरती हुई जाती हैं ताकि तुम अल्लाह की रोज़ी तलाश करो, और ताकि शुक्र अदा करो। और उसने ज़मीन पर पहाड़ डाल दिये के तुम को लेकर कहीं डगमगायें नहीं और उसी ने नहरें और रास्ते बना दिये ताकि तुम आसानी से आ जा सको। और बहुत से निशान बना दिये, और लोग सितारों से भी रास्ता मालूम करते हैं। तो जो पैदा करता है क्या वह उनकी तरह हो सकता है जो कुछ भी ना बना सकें (नाऊज़ुबिल्लाह) तो क्या तुम नहीं समझते। और अगर तुम अल्लाह की नेअमतों को शुमार करना चाहो तो तुम गिन ना सको, बिला शुबह अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला और बड़ी रहमत वाला है।

(16:12-18)

रात और दिन का एक दूसरे के पीछे आना जाना, और सूरज, चांद व सितारों की स्थिति व गतिविधियां, सब कुछ विशेष नियमों तथा व्यवस्था की पाबन्द हैं जो इंसानियत के लिए लाभदायक हैं, जैसा कि पिछली आयतों में बार बार दोहराया गया है। धरती पर विभिन्न रंगों तथा गुणों वाले पत्थर हैं, रेत है और मिट्टी है, ऐसी ही विविधता खनिजों, हीरों, पेड़ पौधों में और थल व जल के सभी प्राणियों में पाई जाती है। पृथ्वी की सतह ऊंची नीची है, उस पर चोटियां और घाटियां हैं, पहाड़ हैं, नदिया हैं और रास्ते हैं, और उसके मार्गचिन्ह हैं और दिशा बताने वाले अन्य साधन हैं। रात को लोग सितारों की मदद से रास्ता पा सकते हैं। इन सभी चीज़ों से इंसान फ़ायदा उठाता है और वह ऐसे चिन्ह और प्रतीक उन में देख सकता है जो उसे चिन्तन करने की सीख देते हैं अगर वह अपनी बुद्धि को इस्तेमाल करे और क़ुदरत के इन अजूबों को निश्चिन्ता और उदासीन के साथ अनदेखा न करे। यह अचम्भित करने वाली लाभदायक प्रकृति एक उच्चतम शासन की ओर इंगित करती है जो बुद्धिमान लोगों को सोचने पर मजबूर करती है। लेकिन वे इसे बड़ी आसानी से नज़रअंदाज़ कर देते हैं या उस एक पूजनीय ईश्वर के बजाए किसी और के आगे नतमस्तक हो जाते हैं या उसके साथ ही दूसरों को भी पूजनीय बनाते हैं। यह वास्तविक सृष्टा और रचियता जिसे गम्भीर चिंतन-मनन से पहचाना जा सकता है, उन सभी वरदानों के लिए जो उसने इंसान को दिए हैं, इंसान की तरफ़ से धन्यवाद और आभार का हक़दार है अगर इंसान बुद्धि रखता हो और सही निर्णय लेने की क्षमता रखता हो। लेकिन इसके बावजूद अल्लाह की कृपा से फ़ायदा उठाने वाला इंसान उसका आभारी होने में कंजूस है। लेकिन फिर भी, इंसान को अपने सुधार (तौबा) का मौक़ा हमैश

मिला हुआ है और अल्लाह अपने बन्दों की तौबा स्वीकार करता है और उन्हें उनकी भूल और ग़लतियों पर मआफ़ कर देता है।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَّ جَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمُ الْحَرَّ وَ سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ ۝

और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिये अपनी पैदा की हुई चीज़ों से साये बनाये, और पहाड़ों में पनाह की जगहें बनाईं, और तुम्हारे लिये कुर्ते बनाये जो तुमको गर्मी से बचाये, और ऐसे कुर्ते भी जो जंग से महफ़ूज़ रखें इस तरह वो तुम पर अपनी नेमतों को पूरा करता है, ताकि तुम फ़रमांबर्दार बनो। (16:81)

पहाड़ व पहाड़ियां और पेड़ व गुफाएं इंसानों को प्राकृतिक रूप से छाया और शरण देते हैं, जबकि इंसानी दिमाग़, जो अल्लाह का दिया हुआ एक अमूल्य पुरस्कार है, छाया और शरण लेने के लिए दीवारें और छतें बनाता है। इसी तरह, पहले के युग में धूप, बारिश और सर्दी से सुरक्षित रहने के लिए इंसान जानवरों की खालें इस्तेमाल करते थे, फिर जब उन्होंने इस बात को जान लिया कि जानवरों के ऊन, रेशम के कीड़ों से मिलने वाले रेशमी तार और पेड़ों से प्राप्त होने वाले उत्पादों को वे किस तरह इस्तेमाल कर सकते हैं और किस तरह सूत कात सकते और बुन सकते हैं तो वे पहले से बहतर लिबास (परिधान) बनाने योग्य हो गए। एक दूसरे के हमलों से स्वयं को बचाने के लिए उन्हों ने लोह-कवच बनाना भी सीख लिया।

यह समस्त ख़ुदाई उपहार और वरदान, ख़ास तौर से इंसानी मस्तिष्क जो हमैशा चुनौतियों का सामना करता रहता है और समस्याओं का हल ढूंढने में लगा रहता है, और विकास को गति देता है, इन नेअमतों को देने और उपलब्ध कराने वाले एक अकेले ख़ुदा की तरफ़ ध्यान केन्द्रित करने का माध्यम बनना चाहिएं, इनसे हम अपने पैदा करने वाले को पहचानें और उसके प्रति आभारी होने की भावना अपने अन्दर पैदा करें। उसे हमारे धन्यवाद की आवश्यकता नहीं है, बल्कि उसकी ओर मुंह करने और उसके समक्ष स्वंय को समर्पित करने से ख़ुद हमें अपने अन्दर भी और दूसरों के लिए भी एक वास्तविक आज़ादी का अहसास होगा, और जीवन के उतार-चढ़ाव में तरह तरह की स्थितियों में हम शान्ति व सुरक्षा प्राप्त करेंगे।

اَوَ لَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَنَّ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ؕ وَ جَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ؕ اَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ ۝ وَ جَعَلْنَا فِي الْاَرْضِ

क्या काफ़िरों ने नहीं देखा के आसमान और ज़मीन मिले हुए थे तो हम ने जुदा जुदा कर दिया, और हर जानदार चीज़ हमने पानी से बनाई फिर ये लोग ईमान क्यों नहीं लाते? और हमने ज़मीन में पहाड़ बनाये, ताकि ज़मीन

رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِهِمْ ۪ وَ جَعَلْنَا فِيْهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٣١﴾ وَ جَعَلْنَا السَّمَآءَ سَقْفًا مَّحْفُوْظًا ۚ وَّ هُمْ عَنْ اٰيٰتِهَا مُعْرِضُوْنَ ﴿٣٢﴾ وَ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ وَ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ ؕ كُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ﴿٣٣﴾

उनको लेकर हिलने ना लगे, और हमने इसमें खुले खुले रस्ते बनाये ताकि ये लोग मंज़िल तक पहुंच सकें। और हमने आसमान को महफ़ूज़ छत बनाया, और वो लोग उसकी निशानियों से मुंह फेर रहे हैं। और वही तो है जिसने रात और दिन, और सूरज व चांद बनाये, हर एक अपने दायरे में तैर रहा है। (21:30-33)

सृष्टि के सम्बंध में इंसान के ज्ञान व जानकारी में वृद्धि से यह भेद खुलता है कि यह सृष्टि और उसकी यह क्रमबद्ध व्यवस्था बहुत उत्तम ढंग से और परस्पर समन्वय के साथ गठित की गयी है। हम अब इस बात को समझते हैं कि धरती कभी सूरज के बड़े गोले के अन्दर थी, और उससे टूट कर अलग हुई है। इसीलिए ज़मीन सूरज के चारों ओर घूमती रहती है, जैसा कि ऊपर की आयत (21: 30) में आया है, जिसके नतीजे में दिन और रात एक दूसरे के पीछे आते जाते हैं और चारों मौसम आगे पीछे बदलते रहते हैं। इसके बाद वाली आयत (21: 31) पहाड़ों की ओर इशारा करती है कि यह धरती को रोके रखने का माध्यम हैं जो कि अपनी धुरी पर तेज़ी से घूमते रहने वाला एक ग्रह है, और जिसका भीतरी भाग ढंडा रहता है जिसके कारण उसकी उपरी परत कठोर होती है। यह ठंडक तरल या गैसीय पदार्थ के अणुओं में बाहरी सतह से केन्द्र की तरफ़ जाती है, पृथ्वी के भीतरी भाग की तुलना तरल या गैस के अणुओं से की जा सकती है, जैसा कि मुहम्मद असद ने लिखा है। असद के शब्दों में, ''ऐसा लगता है कि इस भीतरी भाग को उसे चारों ओर से घेरे हुए पदार्थ के ज़ोरदार दबाव से ठोस रखा गया है, जिसका स्पष्ट सुबूत पहाड़ हैं, और इस बात से पहाड़ों के बारे में क़ुरआन के इस बयान की व्याख्या होती है कि ये कीलों की तरह गड़े हुए हैं (78: 7), जो पृथ्वी के बने रहने और संतुलित रहने का प्रतीक हैं, और यह संतुलन पृथ्वी को भौगोलिक परिवर्तनों के लम्बे इतिहास में क्रमवार प्राप्त हुआ है। हालांकि यह संतुलन पूरी तरह स्थिर नहीं है (जैसा कि भूकम्पों और ज्वाला मुखी फटने की घटनाओं से व्यक्त है), बल्कि यह पृथ्वी के कवच का ठोस रूप है जो पृथ्वी के भीतरी भाग की द्रव अवस्था के विपरीत है जिसकी बदौलत धरती पर जीवन सम्भव हुआ है।'' अतः, क़ुरान में पहाड़ों की मज़बूती का यह हवाला जो बार बार दिया गया है कि ''वे पृथ्वी को थामे रखते हैं ताकि पृथ्वी अपनी आबादी के बोझ से किसी ओर ढलक न जाए'', वह असद के शब्दों में ''इस तथ्य की तरफ़ इशारा है कि पहाड़ अपनी ऊंचाई के लिए संतुलन के इस क्रमवार प्रक्रिया के आभारी हैं जो पृथ्वी के कवच की वजह से चल रही है'' (आयत 16:15 की व्याख्या में फूटनोट नम्बर 11)। तथापि, पहाड़ जो अपने आकार के भारी दबाव के चलते धरती के कवच को ठहराए रखते हैं, धरती पर इंसानों के चलने फिरने में रुकावट नहीं

बनते (17:70)। इन पहाड़ों में रास्ते और दर्रे होते हैं जो इनके बीच से गुज़र जाने का रास्ता देते हैं।

जिस तरह धरती पर एक सुरक्षित और ठोस सतह है, इसी तरह उसके ऊपर एक ठोस जैसी बनावट है। क़ुरआन में अरबी शब्द "*समा*" एक वचन में और "*समावात*" बहुवचन में दोनों तरह इस्तेमाल किया गया है जिसका अर्थ उस चीज़ से भी है जिसे हम आसमान या आकाश कहते हैं जो कि वातावरण और अंतरिक्ष है, जिसे हम देख सकते हैं, और उस चीज़ के लिए भी है जिसे कल्पना में जन्नत (स्वर्ग) या क्षितिज कहते हैं। छत जैसी बनावट का हवाला जो ऊपर की आयत में दिया गया है उसे असद के शब्दों में "बृह्माण्ड का अंतरिक्ष समझा जा सकता है जिसमें सितारे हैं, सोलर सिस्टम है (जिसका हम भी अंग हैं) और कहकशाएं है जो अपना काम जारी रखे हुए हैं।" (आयत 2:13 की व्याख्या में नोट नम्बर 4)। सूरज और चांद भी धरती की तरह अपने अपनी कक्षा में तैरते है, और इंसान इस पूरी व्यवस्था से फ़ायदा उठाते हैं कि इसके नतीजे में दिन और रात का चक्र चलता है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِيْ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ
ثُمَّ يَجْعَلُهٗ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ
خِلٰلِهٖ ۚ وَ يُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا
مِنْۢ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ وَ يَصْرِفُهٗ عَنْ
مَّنْ يَّشَآءُ ؕ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ يَذْهَبُ
بِالْاَبْصَارِ ﴿۴۳﴾ يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَ النَّهَارَ ؕ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿۴۴﴾

क्या आपने नहीं देखा के अल्लाह ही बादलों को चलाता है, फिर उनको आपस में मिला देता है, फिर उनको तहबतह कर देता है फिर आप देखते हैं बादल में से मेंह निकल पड़ता है, और आसमान में जो ओले के पहाड़ हैं उनसे ओले बरसते है, तो जिस पर वो चाहता है गिराता है, और जिससे चाहता है रोक लेता है, और बादल की बिजली की चमक ऐसी है कि जैसे आँखों की रोशनी को उचक लेती है। अल्लाह रात और दिन को अदल बदल करता रहता है, दिल की आँखों वालों के लिये इसमें बड़ी सीख है। (24:43-44)

यह आयत एक ऐसी तसवीर पेश करती है जो कलात्मक भी है और वैज्ञानिक भी, अर्थात बादलों का संघनन, बारिश की पूरी प्रक्रिया जिसमें कड़क, चमक और ओलावृष्टि की भी सम्भावना रहती है। इस तरह भांप बनने, बादल के रूप में उनके जमने और कभी कभी बर्फ़ की तरह जम जाने, कड़कने, और चमकने की यह प्रक्रिया प्रकृति की गतिशीलता का एक मंज़र है। यह प्रक्रिया अपने सभी पहलुओं के साथ हर समय जारी रहती है कि बादल बनते रहते हैं, इसी तरह दिन की रोशनी और रात का अंधेरा रोज़ एक दूसरे से बदलते हैं। हालांकि ये बदलाव और उनके पीछे सक्रिय नियमों पर प्रायः उन लोगों का ध्यान नहीं जाता

जो देखने वाली आंख रखते हैं और सौन्दर्य व बौद्धिक कलाकारी से मुग्ध होते हैं। ऐसे लोग यह देख सकते हैं कि ऐसी शानदार व सुव्यवस्थित और विशाल सृष्टि जिसे उनके लिए सजो दिया गया है, सीधे तौर से उनके सृष्टा की ओर इशारा करती है जो सर्वशक्तिमान और युक्तिपूर्ण है।

اَلَمْ تَرَ اِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَ لَوْ شَآءَ لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيْلًا ۞ ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا قَبْضًا يَّسِيْرًا ۞ وَ هُوَ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا وَّ النَّوْمَ سُبَاتًا وَّ جَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا ۞ وَ هُوَ الَّذِىْۤ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًۢا بَيْنَ يَدَىْ رَحْمَتِهٖ ۚ وَ اَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوْرًا ۞ لِّنُحْيِىَ بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّ نُسْقِيَهٗ مِمَّا خَلَقْنَاۤ اَنْعَامًا وَّ اَنَاسِىَّ كَثِيْرًا ۞

क्या आपने अपने रब (की क़ुदरत) को नहीं देखा के वो साये को किस तरह दराज़ करके फ़ैला देता है, और अगर वो चाहता तो उसको ठहरा देता, फिर हमने सूरज को उसका रहनुमा बना दिया। फिर हमने उसको आहिस्ता आहिस्ता अपनी तरफ़ समेट लिया। और वो अल्लाह ही तो है जिसने रात को तुम्हारे लिये पर्दा और नींद को आराम की चीज़ बना दिया, और दिन को उठने का वक़्त बनाया। और वो अल्लाह ही तो हैं जो हवाओं को अपनी बाराने रहमत से पहले ख़ुशख़बरी देने के लिये भेजता है, और हम आसमान से मेंह बरसाते हैं जो पाक करने की चीज़ है। ताकि उससे मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दगी अता करें, और अपनी मख़्लूक़ में से बहुत से जानवरों और चौपायों को पानी पिलायें। (25:45-49)

हम प्राकृतिक व्यवस्था की विभिन्न स्थितियों से इतने अधिक मानूस (अंतरंग) हो गए हैं कि उसमें सक्रिय नियमों और उसकी संरचना की ओर हमारा ध्यान ही नहीं जाता और हम इस प्राकृतिक व्यवस्था के विभिन्न तत्वों के बीच आपसी सम्बंध और उसमें सक्रिय नियमों का आपसी सम्बंध तथा उससे इंसानों को प्राप्त होने वाले फ़ायदों की तरफ़ ध्यान ही नहीं करते। छाया का अस्तित्व, उसका घटना और बढ़ना, हर दिन का एक परिदृश्य है जिसका सम्बंध सूर्य की स्थिति से है, और इस तरह सूर्य व छाया दोनों एक दूसरे का पता देते हैं। अरब जैसी किसी गर्म धरती पर, छाया इंसान के लिए बहुत ही महत्व की चीज़ है। इसका घटना और बढ़ना, जो कि आकाश में सूर्य की हरकत के लिहाज़ से दिखाई देता है लेकिन वास्तव में धरती का सूरज के सामने अपनी धुरी पर घूमते रहने का नतीजा है, बृह्माण्ड के चलने वा घूमने का एक अंग है। छाया को प्रकाश से अलग नहीं किया जा सकता जिस तरह आवाज़ से उसकी प्रतिध्वनि को अलग नहीं किया जा सकता। पिछले ज़माने में लोग छाया देख कर समय बीत जाने का अनुमान लगाते थे, और दोपहर (ज़ोहर), दोपहर बाद (अस्र) की नमाज़ का समय इसी लिहाज़

से रखा गया था। सूरज की घड़ी धूपगाड़ी की छाया के द्वारा समय बताने के लिए बनाई गयी थी। इस वस्तु की छाया की स्थिति और लम्बाई समय की गति का पता देती थी।

आकाश में सूरज की स्थिति के हिसाब से छाया का घटना व बढ़ना मस्तिष्क को दिन और रात की ओर ले जाता है और इस बात की तरफ़ कि इन दोनों चीज़ों से इंसान किस तरह लाभान्वित होता है यानि दिन में काम करके और रोज़गार अर्जित करके और रात को आराम करके और सोकर। रात का अंधेरा, कुछ विशेष इंसानी गतिविधियों के लिए उचित स्थिति बनाता है जो लोगों की चहल पहल से बच कर या सूरज की चिलचिलाती धूप से सुरक्षित रह कर करना आसान होता है जैसे रेगिस्तान से गुज़रना या सड़कों और पुलों के निर्माण का काम। अधिकतर लोग रातों को आराम करते हैं और सुबह में उठ कर अपना काम शुरू करते हैं, और इंसानी जीवन के प्रतीक रात में स्थगित रह कर दिन में फिर दिखाई देने लगते हैं।

हवाओं का चलना भी बृह्माण्ड के गतिमान रहने का एक सूचक है। वाष्पीकरण और संघनन से हवाओं का सम्बंध उन्हें विशेष परिस्थितियों में ख़ुशख़्बाबरी देने वाला बनाता है यानि बारिश के आने की सूचना मिलती है, जिसके बरसने से धरती पर जीवन को गति मिलती है, पेड़ पौधों, जानवरों और इंसानों की नराई व नमू होती है। रोशनी और अंधेरे का एक दूसरे में बदलना, शान्ति और सक्रियता, सूखापन व नमी आदि सारी बातें ब्रह्माण्ड की विशाल, लगातार, परस्पर जुड़ी हुई और त्रुटिमुक्त गतिशीलता को बताती हैं जो आधुनिक वैज्ञानिक खोजों के बावजूद कल्पना से परे है और सृष्टि की अचम्भित करने वाली योजना को उजागर करती है, और उसके पीछे सक्रिय सर्वशक्तिमान योजनाकार हस्ती का पता देती हैं।

وَهُوَ الَّذِیْ مَرَجَ الْبَحْرَیْنِ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّ هٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ بَیْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿۵۳﴾

और वो अल्लाह ही तो हैं जिसने दो दरयाओं को मिला दिया, एक का पानी मीठा है, प्यास बुझाने वाला, और एक का पानी खारा है, और दोनों के दरमियान एक आड़ और मज़बूत ओट बना दी। (25:53)

مَرَجَ الْبَحْرَیْنِ یَلْتَقِیٰنِ ﴿۱۹﴾ بَیْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا یَبْغِیٰنِ ﴿۲۰﴾

उसी ने दो दरया जारी किये जो आपस में बहते हैं। उन दोनों में एक आड़ है के उससे आगे नहीं बढ़ सकते। (55:19-20)

संसार में दो तरह का पानी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैः एक नदियों, झीलों, कुंवों तथा धरती के नीचे जल संसाधनों से मिलने वाला मीठा पानी, और दूसरा समुद्र का खारा पानी। लेकिन

समुद्र का यही खारा पानी वाष्पीकरण और संघनन की प्रक्रिया से गुज़र कर मीठे पानी का माध्यम बन जाता है जो बारिश या बर्फ़बारी के रूप में प्राप्त होता है। यह दोनों तरह का पानी अपनी मूल अवस्था में यद्यपि एक जगह इकट्ठा हो सकता है, जैसे समुद्र में नदी का पानी गिरने की स्थिति में, जहां हम देखते हैं कि मीठा पानी नदी के दहाने से समुद्र में गिरता है तो एक दिखाई न देने वाली रुकावट दोनों तरह के पानियों को अपने अपने विशेष गुण के साथ एक दूसरे से अलग रखती है। इस तरह हम देखते हैं कि दोनों तरह के पानियों में बहतरीन समन्वय के साथ एक आपसी सम्बंध होने के बावजूद, और कुछ विशेष स्थानों पर उनके एक दूसरे से मिलने के बावजूद यह अलग अलग ही रहते हैं, और दोनों अपने अपने विशेष गुणों के साथ इंसानों के लिए लाभदायक होते हैं, एक पीने के काम आता है और दूसरा जहाज़रानी में सहायक होता है या नमक मिलने का साधन है। उपरोक्त आयत की इस वैज्ञानिक और तथ्यात्मक व्याख्या के अलावा, इसकी एक अध्यात्मिक व्याख्या भी है जैसा कि अल्लामा असद ने अपने नोट में लिखा है कि इस आयत में समुद्र की मिसाल इंसान की मीठी अध्यात्मिकता और दुनिया के खारी वातावरण की तरह है, जिनके बीच एक प्राकृतिक और सकारात्मक आपसी सम्बंध कुछ निर्धारित सीमाओं से परे नहीं है।

وَ تَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّ هِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ؕ صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِيْۤ اَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ؕ اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ۝۸۸

और तुम पहाड़ों को देखते हो तो ख़्याल करते हो के वो अपनी जगह पर जमे हुए होंगे, हालांकि बादलों की तरह उड़े फिरेंगे, ये अल्लाह की कारीगरी है, जिस ने हर चीज़ बड़ी मज़बूत बनाई है, बिला शुबह वो तुम्हारे सारे आमाल से ख़ूब वाक़िफ़ है। (27:88)

यह आयत इस दुनिया की गतिशील प्रकृति की तरफ़ अणु की वास्तविकता के हवाले से इशारा करती है इसके बावजूद कि पदार्थ स्थिर होता है। यह बात प्रचुर मात्रा वाले ठोस दृव्य के सिलसिले में कही जा सकती है, जिसकी मिसाल विशाल पहाड़ों की स्थिरता से दी जा सकती है। यह पहाड़ धरती की दैनिक और वार्षिक चाल के साथ साथ सक्रिय रहते हैं और धूप, हवा, बारिश और बर्फ़ से प्रभावित भी होते हैं। थ्योरी आफ़ रिलेटिविटी अर्थात सापेक्षता का सिद्धांत (नज़रिया इज़ाफ़त) से यह बात मालूम है कि सभी प्रकार की चाल किसी दूसरी चाल से सम्बंधित होती है जैसे कार में बैठा हुआ कोई व्यक्ति धरती पर चलती हुई कार के साथ साथ गतिशील होता है, और धरती सूरज तथा आकाशगंगा के केन्द्र के चारों ओर घूमती रहती है। इसके अलावा पहाड़ के हर अणु में उसका नाभिक (NUCLEUS) होता है जो इलैक्ट्रान से घिरा हुआ है, न्यूक्लेयस जहां पाज़िटिव चार्ज है वहीं इलैकट्रांस निगेटिव इलैक्ट्रिसिटी वाले अणु हैं

जो न्यक्लेयस के चारों ओर अपनी कक्षाओं में घूमते रहते हैं। इन इलैक्ट्रांस को एक प्रबल दबाव (गुरुत्वाकर्षण बल) न्यूक्लेयस के प्रोटोन्स से बांधे रखता है और यह आकर्षण बल अनेक प्रोटोन्स के बीच काम करने वाले विपरीत बलों को नियंत्रण में रखने के लिए उसके मुक़ाबले कहीं अधिक सशक्त होता है।

पहाड़ों में भी, धरती के कवच पर स्थिरता बनाए रखने वाले एक कारक के रूप में महसूस न होने वाली प्रक्रिया जारी रहती है जो दबाव और फैलाव के बलों के बीच एक संतुलन रखती है, फैलाव का यह बल धरती के द्रवित केन्द्र से उसकी सतह की ओर लगता है (देखें इससे पहले उल्लिखित आयत 16:15 और उस पर नोट)। दुनिया के बहुत से भागों में नगरों को विक्सित करने के लिए जंगलों और पहाड़ियों को हटाने से पृथ्वी की सतह (मिट्टी) में ढीला पन आ गया है और धरती में कटाव होने लगा है। अतः, गति और जड़त्व के बीच ऐसा संतुलित ठहराव देख कर कोई भी बुद्धिमान इंसान सृष्टा (सृष्टि के जनक) की इस बहतरीन संरचना की सराहना किए बिना नहीं रह सकता। यह आयत जिस आयत के बाद आई है उसमें दिन निकलने और फिर से जी उठने के कुछ फीचर बताए गए हैं। क़ुरान के प्राचीन व्याख्या कारों ने इसका अर्थ संसारिक जीवन का परोलक के जीवन में बदलने से लिया था।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ بِالَّيْلِ وَ النَّهَارِ وَ ابْتِغَآؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿۲۳﴾ وَ مِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّ طَمَعًا وَّ يُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَيُحْيٖ بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۲۴﴾

और उसी की निशानियों में से है तुम्हारा रात और दिन में सोना, और उसके फ़ज़्ल का तलाश करना, बेशक इसमें निशानियां हैं सुनने वालों के लिये। और उसकी (क़ुदरत की) निशानियों में से ये है के वह तुम को बिजली दिखाता है डर व उम्मीद दिलाने को, और आसमान से पानी बरसाता है, फिर उसके ज़रिये से ज़मीन को ज़िन्दा कर देता है, उसके मरने के बाद, अक़्ल वालों के लिये इसमें निशानियां हैं। (30:23-24)

सोने और जागने की प्रक्रिया और लोगों का अपने रोज़गार के लिए सक्रिय होना इंसान की जैविक और बौद्धिक योग्यता को व्यक्त करता है कि यह जागना और सोना दिन और रात के प्राकृतिक क्रम के अनुसार होता है, उन लोगों को छोड़ कर जिन को रात में ही काम करना होता है और फिर दिन में सोना पड़ता है, लेकिन ऐसे लोगों की संख्या और अनुपात बहुत ही कम है। बाद वाली आयत यह बताती है कि यही प्राकृतिक विशेषताएं, जैसे के बिजली के साथ कड़क होना, विभिन्न लोगों के लिए लाभदायक और हानिकारक होने का कारण हो सकती हैं, जिस तरह यह बिजली और कड़क बारिश की उम्मीद जगाने के साथ साथ जान व माल की

हानि की सम्भावनाएं भी लाती है, और यह इंसानी बुद्धि के लिए एक चुनौती है कि वह नुक़सान से सुरक्षित रहने का रास्ता खोजे। बिजली के नुक़सान से सुरक्षित रहने का उपाय खोजने की इस चुनौती के नतीजे में 18वीं शाताब्दी में लाइटिंग राडार का अविष्कार हुआ। इस तरह के चुनौती पूर्ण संदेशों से इंसानों को सृष्टि की रचना और उसके रचानाकार के बारे में गहराई से विचार करना चाहिए, तथा इस जीवन पर उसके सभी आनन्दपूर्ण वरदानों पर इस तथ्य के साथ विचार करना चाहिए कि यह सब कुछ अमर नहीं है बल्कि आख़िरकार लुप्त हो जाने वाला है, और फिर इसी के साथ आने वाले जीवन की कभी समाप्त न होने वाली ख़ुशियों के बारे में सोचना चाहिए। क़ुदरत अपने सभी दर्शनों के साथ पूरे विश्व के उन सभी लोगों के सामने ज्ञान का एक खुला और व्यापक परिदृश्य पेश करती है जो सोचने समझने की क्षमता और योग्यता रखते हैं।

اَللّٰهُ الَّذِیْ یُرْسِلُ الرِّیٰحَ فَتُثِیْرُ سَحَابًا
فَیَبْسُطُهٗ فِی السَّمَآءِ كَیْفَ یَشَآءُ وَ یَجْعَلُهٗ
كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ یَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَاۤ
اَصَابَ بِهٖ مَنْ یَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اِذَا هُمْ
یَسْتَبْشِرُوْنَ ۝ وَ اِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ یُّنَزَّلَ
عَلَیْهِمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمُبْلِسِیْنَ ۝ فَانْظُرْ اِلٰۤى اٰثٰرِ
رَحْمَتِ اللّٰهِ كَیْفَ یُحْیِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ
اِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْیِ الْمَوْتٰى ۚ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ
قَدِیْرٌ ۝

अल्लाह ही हवाओं को चलाता है, तो वो बादलों को उभारती हैं, फिर अल्लाह जिस तरह चाहता है आसमान में फैला देता है और तहबतह कर देता है, फिर तुम देखते हो के उसके बीच में से मेंह निकलता है, फिर जब वो अपने बन्दों में से जिनको चाहता है पहुंचा देता है, तो वो ख़ुश हो जाते हैं। और अधिकतर तो वो मेंह के उतरने से पहले ना उम्मीद हो रहे थे। देखो अल्लाह की रहमत के आसार को के वो कैसे ज़िन्दा कर देता है ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद, बेशक वो ज़िन्दा करने वाला है मुर्दों को और वो हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (30:48-50)

उपरोक्त आयतें बादलों के बनने और बारिश के बरसने की ओर ध्यान दिलाती हैं और इस बात की ओर भी ध्यान आकर्षित करती हैं कि यह हवा और वाष्पिकरण व संघनन के ये प्राकृतिक दर्शन किस तरह बारिश का कारण बनते हैं जिससे धरती पर जीवन सक्रिय होता है और लोगों के लिए खेती की निराई व पशुओं के प्रजनन से आय व आहार के साधन मिलते हैं, साथ ही खाने और पीने से इंसानी जीवन को जारी रहने का अवसर मिलता है। इस तथ्य को उजागर करने में क़ुरआनी तर्क स्पष्ट हैं। जैसे कि अल्लाह ने इस दुनिया में जीवन को जारी किया और प्राकृतिक नियमों से इसको जारी रखने की मुस्तक़िल व्यवस्था की। वह अपनी क़ुदरत और अपनी मंशा से मृत इंसानों को फिर जीवित करेगा जिस तरह वह धरती को मृत

وَ تَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّ هِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ؕ صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ؕ اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۸۸﴾

अवस्था में चले जाने के बाद फिर से जीवन देता है। और तू पहाड़ों को देखता है तो ख़्याल करता है के वो अपनी जगह पर जमे हुए होंगे, हालांकि बादलों की तरह उड़े फ़िरेंगे, ये अल्लाह की कारीगरी है, जिसने हर चीज़ बड़ी मज़बूत बनाई है, बेशक वो तुम्हारे सारे आमाल से ख़ूब वाक़िफ़ है। (27:88)

ये दो विभिन्न प्रकार के पानियों का एक ओर प्रसंग है, और इस बात का बयान है कि ये दोनों तरह के पानी किस तरह इंसानी जीवन के लिए लाभदायक हैं कि पीने का पानी मिलता है, आहार मिलता है, साज सज्जा की वस्तुएं प्राप्त होती हैं और आवागमन का साधन बनता है, और यह आवागमन स्वयं अपने आप में अल्लाह के फ़ज़ल (रोज़ी या जीविका) और आर्थिक विकास की प्राप्ति में मददगार होता है। इंसानों को मिलने वाले यह सभी भौतिक लाभ इस बात का तक़ाज़ा करते हैं कि इंसान अपने पालनहार का शुक्र अदा करने वाला बने जो हमें यह सारे फ़ायदे बख़्शता है। अगली आयत फिर आदमी का ध्यान रात और दिन के आने जाने और चारों मौसमों में उनका अन्तराल अलग अलग होने पर ध्यान दिलाती है और चांद व सूरज से धरती वासियों के सम्बंध की तरफ़ ध्यान दिलाती है। जब कभी भी और जहां कहीं भी इंसान सृष्टि के दृश्य पर ध्यान देता है तो उसे इसमें एक बहतरीन वैज्ञानिक तंत्र और इंसानों के लिए उसकी उपयोगिता दिखाई देती है, जो एक पैदा करने वाली हस्ती की ओर इशारा करते हैं जो कि *रब्बुल आलमीन* (सारे जहानों को पालने वाला) है, और उस रब के साथ या उस को छोड़ कर किसी और को पुकारना बुद्धिमानों को एक मूर्खता और ना समझी मालूम होती है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهَا ؕ وَ مِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيْضٌ وَّ حُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهَا وَ غَرَابِيْبُ سُوْدٌ ﴿۲۷﴾ وَ مِنَ النَّاسِ وَ الدَّوَآبِّ وَ الْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ؕ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ ﴿۲۸﴾

क्या तुमने नहीं देखा के अल्लाह ने आसमान से मेंह बरसाया, फिर हमने उससे रंग रंग के मेवे निकाले, और पहाड़ों में से सफ़ेद और लाल रंग के भूखण्ड हैं जिनके अलग-अलग रंग हैं और उनके कुछ काले भूखण्ड और इन्सान, जानवरों और चौपायों में भी मुख़्तलिफ़ रंगों के हैं, इसी तरह अल्लाह से इसके बन्दों में से वही डरते हैं जो इल्म वाले हैं, बेशक अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त बख़्शने वाला है। (35:27-28)

सृष्टि में और उसमें सक्रिय नियमों में और उसके सभी दर्शनों में जो अत्यधिक विविधता

है वह अल्लाह की क़ुदरत और उसके एक अकेले होने का स्पष्ट सुबूत है। उपरोक्त आयतें चट्टानों (या पत्थरों), वनस्पतियों और जीव जन्तुओं में जिनमें इंसान भी शामिल हैं, विविधता की ओर इशारा करती हैं। क़ुरआन एक अकेले पूजनीय ख़ुदा में दृढ़ विश्वास और उसकी सृजन शक्ति पर ईमान लाने और उसकी क़ुदरत के अजूबों का अवलोकन करने का तक़ाज़ा करता है। वह इंसान की इन्द्रियों और बुद्धि को इस सृष्टि के विभिन्न और अनेक दर्शनों पर ग़ौर करने के लिए रास्ता दिखाता है, और उसके नतीजे में एक सर्वशक्तिमान युक्तिपूर्ण हस्ती के अस्तित्व पर ईमान लाने की प्रेरणा देता है जोकि इस विशाल और विविध लेकिन समन्यवित सृष्टि को चला रहा है। *"उसके बन्दों में ऐसे भी हैं जो अल्लाह की ख़ातिर सच्चाई के साथ खड़े होते हैं और ज्ञान रखते हैं।"* इन में ऐसे भी लोग हैं जो अल्लाह पर ईमान रखने वालों की आस्था पर ज्ञान और चिंतन के बिना ही हमला करते हैं, और जो यह समझते हैं कि ईमान वाले मूर्ख हैं, लेकिन वास्तव में तो यह लोग स्वयं ही अज्ञानी हैं, या ऐसे लोग हैं जिन्होंने अपनी देखने और सोचने समझने की क्षमताओं को केवल सृष्टि के भौतिक फ़ायदों को देखने और समझने तक ही सीमित कर रखा है हालांकि सृष्टि के दर्शन, उसके नियम और उसका क्रमिक ढांचा उनके सामने व्यक्त है।

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيۡلُ ۖ نَسۡلَخُ مِنۡهُ النَّهَارَ فَاِذَا هُمۡ
مُّظۡلِمُوۡنَ ﴿۳۷﴾ وَ الشَّمۡسُ تَجۡرِىۡ لِمُسۡتَقَرٍّ لَّهَا ؕ
ذٰلِكَ تَقۡدِيۡرُ الۡعَزِيۡزِ الۡعَلِيۡمِ ﴿۳۸﴾ وَ الۡقَمَرَ قَدَّرۡنٰهُ
مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالۡعُرۡجُوۡنِ الۡقَدِيۡمِ ﴿۳۹﴾ لَا
الشَّمۡسُ يَنۡۢبَغِىۡ لَهَاۤ اَنۡ تُدۡرِكَ الۡقَمَرَ وَ لَا الَّيۡلُ
سَابِقُ النَّهَارِ ؕ وَ كُلٌّ فِىۡ فَلَكٍ يَّسۡبَحُوۡنَ ﴿۴۰﴾

और उनके लिये एक निशानी रात है कि हम उसमें से दिन को खींच लेते हैं तो उस वक़्त उन पर अंधेरा छा जाता है। और सूरज अपने ठिकाने की तरफ़ चलता रहता है, ये एक मुक़र्रर किया हुआ अंदाज़ा है उसका जो ज़बरदस्त है इल्म वाला है। और चांद की हमने मंज़िल निर्धारित कर दी हैं, यहां तक कि चांद (घटते घटते) खजूर की पुरानी डंडी की तरह हो जाता है। ना तो सूरज ही चाँद तक पहुंच सकता है कि उसको जा पकड़े, और ना रात ही दिन से पहले आ सकती है, और हर एक अपने दायरे में तैर रहा है।

(36:37-40)

दिन से रात और रात से दिन में होने वाले क्रमवार बदलाव और विभिन्न मौसमों में उनके विभिन्न अन्तराल का हवाला क़ुरआन में बार बार दिया गया है कि यह रोज़ नज़र आने वाली निशानियां हैं जो हर इंसान के सामने खुली हुई हैं चाहे वह कही भी रहता या रहती हो और उसकी सूझ बूझ जैसी कुछ भी हो। यह बहतरीन प्राकृतिक व्यवस्था एक तरफ़ सृष्टि की इस योजना में उसमें सक्रिय उसके नियमों में अल्लाह तआला की शक्ति व युक्ति को व्यक्त करती

है और दूसरी ओर इस व्यवस्था में जीव जन्तुओं के लिए अल्लाह की देखरेख को व्यक्त करती है। रोज़ का यह दृश्य क़ुरआन में जगह जगह इस तरह बयान किया गया है कि *"रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़लि करता है।"* (3:27; 22:61; 31:29; 35:13; 57:6)। दो अन्य आयतों में यह परिदृश्य इस तरह बयान किया गया है कि *"रात को दिन का लिबास पहनाता है।"* (17:54; 13:93) एक और आयत ( 39:5) में दिन पर रात के छा जाने और रात पर दिन के छा जाने को भौगोलिक क्रम के संदर्भ में बयान किया गया है, यह एक ऐसी शैली है जो इस तरफ़ इशारा करती है कि धरती का आकार गोल है। जिस तरह इस प्राकृतिक दृश्य का सम्बंध दिन और रात के समय में और पूरे वर्ष के दौरान सूरज और उसके मुक़ाबले पृथ्वी की स्थिति से है उसी तरह क़ुरआन में इसे प्रायः सूरज और चांद के हवालों से दोहराया गया है कि सूरज दिन में रोशनी देता है तो चांद रात में रोशनी देता है।

उपरोक्त आयत में यही परिदृश्य एक दूसरे से लेने, एक दूसरे को खींचने और एक दूसरे से अलग हो जाने के अंदाज़ में प्रस्तुत किया गया है, और यह हवाला इस आयत में विशेष रूप से इस बारे में है कि धीरे धीरे दिन चला जाता है और रात को आने का अवसर मिलता है ताकि लोग अचानक रात के अन्धेरे में घिर न जाएं। उपरोक्त आयत (36: 38) सूर्य की मन्द गति और उसकी स्थिति में धीमे बदलाव का इशारा करती है और साथ ही साथ इस धीमी गति के साथ लगातार आगे बढ़ते रहने के बावजूद उसकी स्थिरता की ओर इशारा करती है। हालांकि 'ज़मख़शरी' के अनुसार, पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबी (साथी) अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि. जो क़ुरआन का ज्ञान रखने में मशहूर हैं, *"लि मुस्तक़र्रिल लहा"* को *"ला मुस्तक़रिल लहा"* पढ़ा करते थे, जिसमें दोनों शब्दों के बीच ठहराव भी नहीं होता था। जिस तरह पृथ्वी अपनी धुरी पर और सूरज के चारों ओर परिक्रमा करती रहती है, जिसके नतीजे में दिन और रात आते जाते हैं और उनके अन्तराल में बदलाव होता रहता है, इसी तरह चन्द्रमा भी पृथ्वी के चारों ओर अपना मासिक चक्र पूरा करते हुए विभिन्न चरणों से गुज़रता है। अतः, सृष्टि के विभिन्न दर्शन, गति और बदलाव बिल्कुल एक स्पष्ट बात है, लेकिन इन बहु आयामी गतिविधयों में एक क्रम और व्यवस्था को और उनकी कारकर्दगी को एक शक्तिशाली हस्ती के अलावा कोई स्थापित नहीं कर सकता, इसीलिए क़ुरआन में कहा गयाः "अगर आसमान और ज़मीन में अल्लाह के अलावा और दूसरे मालिक होते तो ज़मीन व आसमान अस्त व्यस्त हो जाते, जो बातें ये लोग बनाते हैं अल्लाह उन से पाक है।" (21:22)।

لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

अल्बत्ता आसमानों और ज़मीन का पैदा करना आदमियों के पैदा करने से ज़्यादा बड़ा काम है, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। (46:57)

उपरोक्त आयत इस विशाल बृह्माण्ड और उसकी कहकशाओं, सोलर सिस्टम, सितारों तथा ग्रहों के परिप्रेक्ष्य में एक करिशमें के रूप में पेश करती है। इस तरह रोशन ख़्याली (उदारता) से इंसान को सृष्टि में अपनी हैसियत व स्थान के सम्बंध में एक संतुलित नज़रिया मिलता है, क्योंकि जिन प्राकृतिक शक्तियों पर अल्लाह ने इंसान को अधिकार बख़्शा है उन्हें इंसान अपने से तुच्छ और स्वयं को बरतर समझने की ग़लती में मुब्तिला हो सकता है, हालांकि क़ुदरत की विभिन्न शक्तियों पर इंसान को अल्लाह का दिया हुआ इख़्तेयार (नियंत्रण) उसकी तरफ़ से एक नेअमत (वरदान) है। क़ुरआन करीम पूरी सृष्टि की रचना और उसकी सटीक व्यवस्था का हवाला देता है और इंसान व उसको अल्लाह की तरफ़ से दी गयी अध्यात्मिक, बौद्धिक, नैतिक और भौतिक शक्तियों का हवाला देता है जो सामूहिक रूप से इंसानी समाज की तरक़्क़ी के लिए तथा सृष्टि के इन संसाधनों को विक्सित करने में इस्तेमाल करने के लिए हैं जो अल्लाह ने इंसान के अधिकार में दिए हैं।

وَ مِنْ اٰیٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَثَّ فِیْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ؕ وَ هُوَ عَلٰی جَمْعِهِمْ اِذَا یَشَآءُ قَدِیْرٌ ﴿۲۹﴾

और उसी की निशानियों में से है आसमानों और ज़मीन का पैदा करना, और उन जानवरों का पैदा करना जो उसने आसमानों और ज़मीन में फ़ैला दिये हैं, और वो जब चाहे उन सब को जमा करने पर क़ुदरत रखता है। (42:29)

इस महान और विशाल बृह्माण्ड में जीवन किसी भी स्थान पर और किसी भी रूप में मौजूद हो सकता है, यह केवल धरती तक ही सीमित हो यह ज़रूरी नहीं है। अल्लाह बृह्माण्ड के विभिन्न स्थानों के इन विविध जीवों को जब और जहां चाहे एकत्र करने की क्षमता रखता है। यह अंतरिक्ष युग का एक प्राथमिक संदर्भ है जिसे वर्तमान अंतरिक्ष यात्राओं व खोजों का प्रारम्भिक बिन्दु समझा जा सकता है।

اِنَّ فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ لَاٰیٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۳﴾ وَ فِیْ خَلْقِكُمْ وَ مَا یَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ اٰیٰتٌ لِّقَوْمٍ یُّوْقِنُوْنَ ﴿۴﴾ وَ اخْتِلَافِ الَّیْلِ وَ النَّهَارِ وَ مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْیَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَ تَصْرِیْفِ الرِّیٰحِ اٰیٰتٌ لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ﴿۵﴾

बेशक आसमानों और ज़मीन में ईमान वालों के लिये (ख़ुदा की क़ुदरत की) निशानियां हैं। और तुम्हारी पैदाईश में भी, और जानवरों में भी जिनको वो फ़ैलाता है यक़ीन करने वालों के लिये निशानियां हैं। और रात और दिन के आगे पीछे आने जाने में, और उस रिज़्क़ में भी जिसको अल्लाह ने आसमान से उतारा है फिर उससे ज़मीन को ज़िन्दा किया बाद

उसके मरने के, और हवाओं के रद्दोबदल में अक़्ल वालों के लिये निशानियां हैं। (45:3-5)

उपरोक्त आयतें अल्लाह की क़ुदरत, हिकमत और रहमत की कुछ निशानियों को बयान करती हैं जो कि सृष्टि में हर तरफ़ बिखरी हुई हैं और जिन्हें जीवन की सक्रियता में (आम तौर से सभी प्राणियों में और ख़ास तौर से इंसान के जीवन में), दिन व रात के आने जाने में और अलग अलग मौसमों में उनके अलग अलग अन्तराल में, और विभिन्न दिशाओं में हवाओं के चलने में, और उनके नतीजे में बारिश के बरसने में जो कि सभी प्राणियों के लिए नया जीवन ले कर आती है, देखा और महसूस किया जा सकता है। इन सभी क़ुदरती दर्शनों का और अल्लाह की शक्ति व नियंत्रण का तथा उसकी कृपा का हवाला पिछली आयतों में बार बार दिया गया है।

उपरोक्त आयत (45: 5, और 2: 42) में *"तसरीफ़ुर्रियाह"* (हवाओं के फिरने) की तरकीब इस्तेमाल की गयी है। हवा अपने तेज़ या कम दबाव के हिसाब से एक ख़ास दिशा में चलती है। ज़मीन और पानी का वितरण हवा पर प्रभाव डालता है और इन कारणों से हवा या तो शुष्क होती है या नम। बारिश से हमारे अलग अलग जलवायु वाले भूभागों और अलग अलग विशेषताओं वाले भू खण्डों पर अलग अलग तरह की वनस्तपतियां उगती हैं। क़ुरआन विभिन्न तरीक़ों से बार बार इस बात को जताता है कि सृष्टि में कितनी अधिक विविधता है और यह किस तरीके से व्यवस्थित और समन्वयित है।

اَللّٰهُ الَّذِیْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِیَ الْفُلْكُ فِیْهِ بِاَمْرِهٖ وَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ جَمِیْعًا مِّنْهُ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۱۳﴾

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिये समुद्र को नियंत्रित किया ताकि उसके हुक्म से उसमें कश्तियां चलें और ताकि तुम उसको फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करो, और ताकि तुम शुक्र करो। और उसी ने वो सब जो कुछ आसमानों आर ज़मीन में है अपनी तरफ़ से तुम्हारे काम में लगा रखा है, इसमें निशानियां हैं इन लोगों के लिये जो ग़ौर करते हैं। (45:12-13)

उपरोक्त आयतों में जलकुण्डों से होने वाले फ़ायदों का ज़िक्र किया गया है, यह एक ऐसा विषय है जो पिछली आयतों में विस्तार से बयान हुआ है। यहाँ पहली आयत में पानी के विभिन्न स्रोतों व भण्डारों का ज़िक्र है जो पूरी दुनिया में इंसानों को उपलब्ध हैं और अन्तर्राष्ट्रीय जलमार्गों का माध्यम बनते हैं, फिर उसके नतीजे में आर्थिक लेनदेन और पूरी दुनिया के

संसाधनों को इस्तेमाल करने के अवसर प्राप्त होते हैं। अगली आयत आसमानों को, उनके सामान्य अर्थ में, इंसानों के लिए सधा देने (उपयोगी बना देने) को बयान करती है जो इंसान के लिए अंतरिक्ष में जाने और दूसरे ग्रहों तक पहुंचने के योग्य बनाने का एक इशारा है, ख़ास तौर से पहली आयत को इससे मिला कर देखने से यह बात समझ में आती है जिसमें पानियों को इंसान के लिए सधा देने (इंसानी गतिविधियों के लिए अनुकूल बना देने) का ज़िक्र है, जिन में इंसान किश्तियां और जहाज़ चलाता है।

इन दोनों आयतों में इंसानी सम्बंधों और आर्थिक विकास में वैश्विकता पर ज़ोर देने के अलावा आख़री आयत में इस्लामी आस्था का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत और नियम बयान किया गया है कि *"आसमानों और ज़मीनों में जो कुछ भी है उसे (ऐ इंसानो) अल्लाह ने तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया है (सधा दिया है) और यह सब अल्लाह की तरफ़ से जमा किया गया है।"* एक और आयत यह कहती है कि *"ज़मीन पर जो कुछ है वह अल्लाह ने (ऐ इंसानों) तुम्हारे लिए बनाया है।"* (2:29) इस्लामी शरीअत के व्याख्याकारों (फ़िक़्ह के जानकारों) ने इस्लामी क़ानून का एक अनिवार्य सिद्धांत यह बताया है कि किसी भी चीज़ के बारे में यह एक सामान्य नियम है कि अल्लाह ने उसके इस्तेमाल की इजाज़त दी है अगर उसके निषेध होने के बारे में क़ुरआन या *सुन्नत* के किसी निर्देश से कोई संकेत न मिलता हो। क़ुरआन व *सुन्नत* में अल्लाह के जो क़ानून बयान हुए हैं वो उन सभी चीज़ों या कामों के लिए स्पष्ट नहीं हैं जिनकी इंसान को इजाज़त है, लेकिन जो चीज़ें या काम मना हैं उन्हें स्पष्ट तरीक़े से और विशेष रूप से बता दिया गया है। लिहाज़ा, जिन चीज़ों या कामों को निषेध नहीं किया गया है वे सब जायज़ और क़ानूनी माने जाते हैं जब तक कि वे नुक़सान का कारण न हों क्योंकि हर नुक़सान पहुंचाने वाली चीज़ निषेध (हराम) है। और यदि किसी चीज़ या काम में उन चीज़ों या कामों का गुण या प्रभाव पाया जाए जो क़ुरआन व *सुन्नत* में स्पष्ट रूप से मना हैं तो वे भी तार्किक और सैद्धांतिक रूप से निषेध समझी जाती हैं।

# जीवन

## इंसानों के अलावा प्राणीः
## वनस्पति, पशु, पक्षी, जल-जन्तु और कीड़े मकोड़े

### आम धारणाएंः

وَ قَالُوْا لَوْ لَا نُزِّلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ
اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يُّنَزِّلَ اٰيَةً وَّ لٰكِنَّ
اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۷﴾ وَ مَا مِنْ دَآبَّةٍ فِى
الْاَرْضِ وَ لَا طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّآ اُمَمٌ
اَمْثَالُكُمْ ؕ مَا فَرَّطْنَا فِى الْكِتٰبِ مِنْ شَىْءٍ ثُمَّ
اِلٰى رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ ﴿۳۸﴾ وَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّ بُكْمٌ فِى الظُّلُمٰتِ ؕ مَنْ يَّشَاِ
اللّٰهُ يُضْلِلْهُ ؕ وَ مَنْ يَّشَاْ يَجْعَلْهُ عَلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۳۹﴾

और ये लोग कहते हैं के उनके रब की तरफ़ से कोई मौअज़ा (चमत्कार) उन पर क्यों नाज़िल ना किया गया, आप फ़रमा दीजिये बेशक अल्लाह को पूरी क़ुदरत है के वो चमत्कार उतार दे, लेकिन उनमें अक्सर ज्ञान नहीं रखतें। ज़मीन के तमाम पशु और तमाम पक्षी तुम्हारी तरह गिरोहों में बंटे हुए हैं, हमने लौहे महफ़ूज़ में कोई चीज़ बग़ैर लिखे नहीं छोड़ी है, फिर उन सबको अपने रब के सामने जमा होना है। और जो लोग हमारी आयतों के झुटलाते हैं वो तो बहरे और गूंगे हो रहे हैं, तरह तरह के अंधेरों में गिरफ़्तार हैं, अल्लाह जिसे चाहे गुमराह कर दे, और जिसे चाहे सीधी राह पर डाल दे। (6:37-39)

पैदा करने वाली हस्ती और उसके द्वारा रचित सृष्टि की तरफ़ इशारा करने वाली निशानियां इंसानों के चारों ओर बिखरी हुई हैं अगर वे इन पर ग़ौर करने और उन्हें समझने की जिज्ञासा अपने अन्दर रखते हों। लेकिन अधिकतर लोग ऐसे हैं जो अपनी इन्द्रियों और दिमाग़ों को इस प्राकृतिक परिदृश्य को समझने से रोके रखते हैं, और अल्लाह से यह चाहते हैं कि वह कोई अप्राकृतिक और जादू जैसी चौंकाने वाली निशानी उन्हें दिखाए। क़ुरआन बार बार यह कहता है कि अल्लाह तआला अपनी शक्ति और अपने पैग़म्बर की सच्चाई को साबित करने के लिए चमत्कार दिखाने की शक्ति रखता है लेकिन उसने पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उतारे अपने पैग़ाम में लोगों को उन निशानियों का हवाला देना पसन्द किया है जो सृष्टि की इस अचम्भापूर्ण संरचना में दिखाई देती हैं और अपनी इस किताब की तरफ़ ध्यान दिलाया है जो बे जोड़ और बे मिसाल है, ताकि जो लोग मुहम्मद सल्ल. की तरफ़ भेजे गए उसके पैग़ाम

की सच्चाई के लिए वास्तव में सुबूत चाहते हैं वे इन निशानियों में सुबूत देख सकें।

हमारी इस धरती पर विभिन्न प्रकार के जीव जन्तु हैं जो अल्लाह के एक होने, उसकी शक्ति, उसकी कृपा और उसकी हिकमत की मुंह बोलती निशानियां हैं। पहाड़ों, मैदानों, रेगिस्तानों, घाटियों, जंगलों, खारे और मीठे पानी के भण्डारों और हवा, इन सब में जीवन रखने वाले प्राणि हैं जो विभिन्न इंसानी समूहों की तरह अलग अलग समूहों में हैं। चूंकि जीवन को एक दिन निश्चित रूप से समाप्त हो जाना है इसलिए सभी प्राणियों का भाग्य अन्तः अल्लाह के ही हाथ में होगा। जो लोग प्रकृति और जीवन की इन रंग बिरंगी और असंख्य निशानियों को देखने और समझने से अपनी इन्द्रियों को रोके रखते हैं वे सच्चाई की रोशनी से अपने आप को वंचित करते हैं और जिहालत के अंधेरों में व मानसिक रूप से संकुचित रहने को पसन्द करते हैं। चूंकि अल्लाह ने इंसान को आज़ाद मर्ज़ी और अपनी पसन्द व नापसन्द का अधिकार देकर पैदा किया है इसलिए जो भी अन्धेरे और तंगी में रहना पसन्द करता है उसे अल्लाह तआला भटकने के लिए छोड़ देते हैं, और मार्गदर्शन उसी का करते हैं जो उसके संदेश पर कान धरते हैं।

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَ الْاَرْضُ وَ مَنْ فِيْهِنَّ ؕ وَ اِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَ لٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿۴۴﴾

उसकी तसबीह (महिमा) तमाम सातों आसमान और ज़मीन और जो उन दोनों में हैं सब करते हैं और जीवों में से कोई चीज़ ऐसी नहीं है जो उसकी तारीफ़ के साथ महिमा बयान ना करती हो, लेकिन तुम उनको नहीं समझते, बेशक वो बहुत सुशील, बख़्शने वाला है। (17:44)

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ الطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ ؕ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَ تَسْبِيْحَهٗ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿۴۱﴾

41. क्या आपने नहीं देखा के जो लोग आसमानों और ज़मीन में हैं ख़ुदा की तसबीह करते रहते हैं, और पर फ़ैलाये जानवर भी, और सब अपनी नमाज़ और तसबीह के तरीक़ा से वाक़िफ़ हैं, और जो कुछ वो करते हैं सब ख़ुदा को मालूम है। (24:41)

अल्लाह की रचनाएं चाहे वे सजीव हों या निर्जीव, और चाहे वे ज़मीन पर हों या हवा में हों, या पानी में हों या कहीं और, तथा फ़रिश्ते और उनके समान दूसरे जन्तु हों जो हमारे ज्ञान व बोध की सीमा से परे हैं, वे सब के सब ख़ुद अपने अस्तित्व से और सामूहकि रूप से पूरी सृष्टि की सुचारू व्यवस्था के दर्शन से अल्लाह की महानता और एक होने को बयान करती हैं। (67:2) सृष्टि या जीवन का हर दर्शन एक रचनात्मक योजना और एक योजनाकार के

अस्तित्व को ज़ाहिर करता है। लेकिन जो लोग गहन विचार और सच्चाई को स्वीकार करने से गुरेज़ करते हैं वे सृष्टि की इस भाषा को नहीं समझ सकते या इस ख़ुदाई योजना को अनदेखा करते हैं (22:18)

وَاللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنْ مَّآءٍ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى بَطْنِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰٓى اَرْبَعٍ ۭ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝

और हर चलने फिरने वाले जानदार को अल्लाह ने पानी से पैदा किया, उनमें से कुछ पेट के बल चलते हैं, और कुछ दो टांगों पर चलते हैं, कुछ चारों टांगों पर चलते हैं, अल्लाह जो चाहता है पैदा कर देता है, बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (24:45)

आयत 21:30 और 24:25 में क़ुरआन इस सच्चाई पर ज़ोर देता है कि हर जीव पानी से पैदा किया गया है। जैसा कि मुहम्मद असद ने "मैसिज आफ़ दि क़ुरआन" में लिखा है, क़ुरआन के इस बयान के तीन अर्थ हैः (1) पानी और ख़ास तौर से समुद्र वह वातावरण था जिसके अन्दर सभी प्राणियों का प्राथमिक नमूना या कीटाणु पैदा हुआ, (2) सभी देखे या महसूस किए जाने वाले द्रव पदार्थों में से केवल पानी के अन्दर ही वे गुण पाए जाते हैं जो जीवन का बीज पड़ने और उसके फलने फूलने के लिए ज़रूरी हैं, और (3) प्रोटो प्लाज्ज्म (अमीबा) जो हर जीवित कोशिका के भौतिक अस्तित्व का आधार है, चाहे वे वनस्पति हों या पशु हों और जो पदार्थ के उस रूप को व्यक्त करता है जिसमें जीवन के तत्व विक्सित होते हैं, पानी से बनता है और पानी पर ही निर्भर होता है। इसी आयत (21:30) के पहले भाग कि "आसमान और ज़मीन एक ही वजूद थे" को असद ने एक ऐसा बयान माना है जो यह बताता है कि सृष्टि के भौतिक अस्तित्व की उत्पत्ति एक ही तत्व से हुई है, और बाद की दोनों आयतों को मिला कर पढ़ने से मालूम होता है कि एक ही तत्व से और एक ही तत्व के भीतर जीवन की उत्पत्ति, इस पूरी सृष्टि की रचना में एक ही योजना को इंगित करती है, और इसी तरह से एक रचनाकार के अस्तित्व और उसके अकेले अस्तित्व को व्यक्त करती है (आयत 21:30 की व्याख्या में नोट नम्बर 39)। आयत 11:7 पर भी हमें इसी रोशनी में विचार करना चाहिए जिसमें कहा गया है कि अल्लाह ने ज़मीन और आसमानों को 6 दिन (मुद्दतों) में पैदा किया और *"उसका अर्श पानी पर था।"* यह एक ऐसा बयान है जो अल्लाह सुब्हानहू व तआला की उस मंशा को व्यक्त करता है जिसके तहत उसने जीवन को इस अनिवार्य तत्व की उत्पत्ति से जारी किया। इसके तुरन्त बाद इंसान की रचना और उसकी रचना के उद्देश्य को बताया गया है *"ताकि तुम्हें जांचें कि तुम में कौन बहतरीन तरीक़े से अमल करने वाला है।"* (11:7)

इंसान की अधिकतर जीवित कौशिकाएं पानी से बनी हैं, ख़ून में पानी का 92 प्रतिशत अंश है, शिराओं या पटठों में 80 प्रतिशत, रक्त की लाल कणिकाओं में लगभग 60 प्रतिशत और शरीर के अन्य अधिकतर तत्वों में आधी से अधिक मात्रा पानी की है। दूसरी जीवित वस्तुओं के टिश्यूज़ का सबसे महत्वपूर्ण तत्व भी पानी ही है। इसके अतिरिक्त, धरातल (धरती की सतह) के क्षेत्रफल का 70 प्रतिशत भाग जल से घिरा है चाहे वह द्रव के रूप में हो या जमे हुए बर्फ़ के रूप में (दि न्यू कोलम्बिया एन्साइक्लोपीडिया, पेज 2937)। अतएव, यह धरती पर पाए जाने वाले द्रव पदार्थों में सबसे अधिक जाना पहचाना जाने वाला और सबसे अधिक मात्रा में पाया जाने वाला द्रव है, और वातावरण में भी यह विभिन्न रूपों और मात्रा में मौजूद है। इस तरह आदमी यह देख सकता है कि पानी धरती पर पाए जाने वाले सभी प्राणियों के जीवन के लिए अनिवार्य है।

इन आयतों में उन जन्तुओं (*"दाब्बा"*) का हवाला है जिनके अन्दर जीवन है और जो ज़मीन पर चल सकती हैं, और इनमें मोटे तौर पर पूरा प्राणि जगत शामिल है जिसमें इंसान भी है। यह आयत कुछ विशेष प्रकार के प्राणियों की ओर इशारा करती है जैसे पेट के बल चलने वाले प्राणि, जिनमें कीड़े मकोड़े और बिच्छू आते हैं जैसे सांप। मछलियां और पानी में रहने वाले अन्य जीव भी फिसलने या रींगने वाले जानवरों में गिने जा सकते हैं। पक्षी और इंसान उन प्राणियों में आते हैं जो दो टांगों पर चलते हैं, जबकि अधिकतर पशु चार टांगों वाले होते हैं और ऐसे कीड़े भी होते हैं जो उड़ सकते हैं या कई टांगों पर चलते हैं। चूंकि अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है, यहाँ तक कि ऐसे प्राणी भी हैं जो दूसरी तरह से चलते हैं (जैसे वे जिन्हें जीव सूक्ष्म जीव कहा जाता है), यह सब इस क़ुरआनी हवाले के अन्तर्गत आ जाते हैं, और किसी न किसी रुप मे उन प्राणियों का भी हवाला इसमें है जो क़ुरआन नाज़िल होने के बाद के युग में साइंस और तकनीक के विकास की बदौलत इंसान की जानकारी में आने वाले थे।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهَا ؕ وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيْضٌ وَّ حُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهَا وَغَرَابِيْبُ سُوْدٌ ﴿۲۷﴾ وَمِنَ النَّاسِ وَ الدَّوَآبِّ وَ الْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ؕ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ ﴿۲۸﴾

क्या तुमने नहीं देखा के अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया, फिर हमने उससे रंग रंग के मेवे निकाले, और पहाड़ों में से सफ़ेद और लाल रंग के भू-भाग हैं के उनके मुख़्तलिफ़ रंग हैं और कुछ बहुत ज़्यादा काला। और इंसान, जानवरों और चौपायों में भी मुख़्तलिफ़ रंगों के हैं, इसी तरह अल्लाह से इसके बन्दों में से वही डरते हैं जो इल्म (ज्ञान) वाले हैं, बेशक अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त बख़्शने वाला है। (35:27-28)

पेड़ पौधों, फलों, फूलों, जानवरों और इंसानों में रंग और गुणों के लिहाज़ से बहुत विविधता है, यहाँ तक कि एक ही प्रजाति के प्राणियों के अन्दर भी यह विविधता दिखाई देती है। इंसान को ही ले लीजिए कि विभिन्न नस्लों के और तरह तरह के इंसान हैं जिनके रंग अलग अलग हैं, भौतिक और सांस्कृतिक विशेषताएं अलग अलग हैं, जानवर और पेड़ पौधे भी अलग अलग प्रजातियों और श्रेणियों में बंटे हुए हैं जिनमें से हर एक के गुणों और विशेषताओं में बहुत अन्तर है। यह विविधता और इसके बावजूद आपस में एक ही डोर से बंधा होना इस सृष्टि में किस तरह सम्भव हुआ? जो लोग इन पर ध्यान देंगे और चिन्तन मनन करेंगे उन्हें सामने से दिखाई देने वाले इस मंज़रनामे से परे इसके पीछे सक्रिय प्राकृतिक क़ानून और एक वैश्विक व्यवस्था दिखाई देगी। इस तरह गहन चिंतन से प्राप्त होने वाले ज्ञान की बदौलत उनकी बुद्धि उन्हें रचना से आगे बढ़ कर रचनाकार तक ले जाएगी, जो सर्वशक्तिमान है, लेकिन साथ ही साथ दयालू और कृपावान भी है। एक वास्तविक ज्ञान ही एक वास्तविक और ठोस अक़ीदे (आस्था) की तरफ़ ले जाने वाला रास्ता है। इंसान की भौतिक, मनोवैज्ञानिक, बौद्धिक और अध्यात्मिक शक्तियां आपस में एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं और हमैशा एक दूसरे के साथ सक्रिय होती हैं।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ؕ وَهُوَ عَلٰى جَمْعِهِمْ اِذَا يَشَآءُ قَدِيْرٌ ۝٢٩

और उसी की निशानियों में से है आसमानों और ज़मीन का पैदा करना, और उन जानवरों का पैदा करना जो उसने आसमानों और ज़मीन में फ़ैला दिये हैं, और वो जब चाहे उन सब को जमा करने की क़ुदरत रखता है। (42:29)

यह वास्तव में आंखें खोल देने वाली आयत है जो साफ़ तौर से यह इशारा करती है कि जीवन केवल धरती तक ही सीमित नहीं है। आसमान अपने व्यापक अर्थ में स्वयं अपने प्राण और आत्मा रखने वाले जीव रखता है, और दूसरे ग्रहों और आकाशगंगाओं पर भी किसी प्रकार का जीवन हो सकता है और वहां भी किसी तरह के प्राणी पाए जा सकते हैं। अल्लाह को यह शक्ति प्राप्त है कि वह जीव जन्तुओं को पूरे बृह्माण्ड में फैला दे और पूरे बृह्माण्ड के जीवों को एक ही जगह जमा कर दे। जिस तरह उसने पहली बार इस बृह्माण्ड में प्राणियों को पैदा किया, और सबसे महत्वपूर्ण प्राणि इंसान को पैदा किया, इसी तरह उसको यह शक्ति भी प्राप्त है कि वह भावी जीवन में उन सभी आत्माओं को जमा कर दे। "जिस दिन यह धरती दूसरी धरती से बदल दी जाएगी और आसमान भी (बदल दिए जाएंगे) और सब लोग सर्वशक्तिमान अकेले अल्लाह के समक्ष निकल खड़े होंगे"(14:48)। आधुनिक युग में, यानि क़ुरआन अवतरित होने के 1400 साल बाद के युग में, इंसान सेटेलाइट और अंतरिक्ष यान की मदद से दूसरे ग्रहों और

उन पर जीवन की सम्भावनाओं को तलाशने मे लगा है। लेकिन क़ुरआन की इस आयत की शान यह है कि इसमें ऐसे शब्द इस्तेमाल किए गए हैं जिनके, आने वाले युग में विभिन्न मतलब निकाले जा सकते हैं और अलग अलग तरह के दिमाग़ों को सम्बोधित करने की इसमें गुंजाइश है।

## वनस्पति व जंतु

إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوَىٰ ۖ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ﴿٩٥﴾

बेशक अल्लाह ही बीज को और गुठली को फ़ाड़ने वाला है, वो जानदार को बेजान से निकाल लाता है, और बेजान को जानदार से निकालने वाला है, ये है अल्लाह फिर तुम किधर जा रहे हो। (6:95)

وَهُوَ الَّذِي أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَأَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا وَمِنَ النَّخْلِ مِن طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَجَنَّاتٍ مِّنْ أَعْنَابٍ وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۗ انظُرُوا إِلَىٰ ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَيَنْعِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكُمْ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٩٩﴾

और उसी ने आसमान से पानी बरसाया, फिर हमने ही उससे हर क़िस्म की वनस्पति निकाली, और उससे हरी डाली निकाली, उस डाली से एक के ऊपर एक दाने निकालते हैं, और खजूर के पहले फूल से गुच्छे निकालें जो लटक जाते हैं, और उसी पानी से हमने अंगूर के बाग़त, ज़ैतून और अनार के पेड़ पैदा किये जो एक दूसरे से बहुत मिलते जुलते हैं, कुछ मिलते भी नहीं हैं ज़रा देखो तो जब वो फल लाता है और पकता है, उनमें भी हमारी निशानियां हैं उनके लिए जो अल्लाह पर ईमान रखते हैं। (6:99)

जीवन अल्लाह की क़ुदरत का एक करिशमा है। उसी की क़ुदरत से तमाम तरह के बीजों में फटने का ज़ोर पैदा होता है जैसे खजूर या दूसरे फलों की गुठलियां, और इस तरह उनमें से किसी बीज के अन्दर से उगने वाला पौधा इंसानों या दूसरे प्राणियों के लिए आहार का सामान उपलब्ध कराता है। एक बीज में, जैसे खूबानी, आड़ू, बैर या खजूर की गुठली के अन्दर, विभिन्न प्रकार के आहार साधनों से युक्त और उसे सुरक्षित करने वाले एक वाह्य कवच के अन्दर जेनिन में जीवन की शुरूआत होती है। इनसे जो बीज और पौधे पैदा होते हैं वे ज़मीन के तत्वों से परवान चढ़ते हैं जिसके अन्दर वे फलते फूलते हैं और अपने लिए ज़रूरी पानी बारिश से या धरती के नीचे मिलने वाले पानी से प्राप्त करते हैं। इस तरह आदमी यह देख सकता है कि जीवन मृत पदार्थों से भी उत्पन्न होता है। फिर एक निर्धारित समय के बाद वह

समाप्त हो जाता है और जीवन की यह अवधि अलग अलग प्राणियों में अलग अलग होती है।

जीवन रचना और सृजन की एक निरन्तर प्रक्रिया है जो एक सर्वशक्तिमान और हकीम सृजक (पैदा करने वाले) की तरफ़ इशारा करती है। लेकिन ऐसे लोग हमैशा रहे हैं जो अल्लाह की रचना में अल्लाह की निशानियों को देखने से बे-परवाह हैं, इसके बावजूद कि विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों की उत्पत्ति और उनके रंग व रूप में, उनके विक्सित होने को और उनके लाभ को देखते हैं। ऊपर की आयत में पेड़ पौधों जैसे अंगूर, अनार, खजूर और ज़ेतून आदि का ज़िक्र है जो उस समय अरबों के ज्ञान और उपयोग में थे। तमाम तरह के पेड़ पौधों की विकास प्रक्रिया में और उनके अँगों व क्रिया में एक प्रकार की समानता भी देखी जा सकती है, इसके अतिरिक्त एक ही तरह के सभी फलों के रूप में भी यही समानता है। हालांकि हर एक फल अपने साइज़, रंग और दूसरे गुणों में अपनी अलग विशेषता रखता है। यह आयत लगभग सभी पौधों की एक संयुक्त विशेषता अर्थात उनके हरा होने को भी रेखांकित करती है, यह चीज़ पौधे के जीवन को फ़ोटोसिन्थेसिस की प्रक्रिया के द्वारा सुरक्षित रखने के लिए अनिवार्य है, जिसमें क्लोरोफिल जो कि पौधों को हरा रंग देता है, उसे सूर्य की ऊर्जा को कार्बन डाइ आक्साइड और पानी से कार्बोहाइड्रेट पैदा करने के योग्य बनाता है (और देखे आयत 36:80)। हालांकि अपनी समानताओं के बावजूद ये पौधे और उनके फल साइज़, रंग और दूसरी विशेषताओं में अलग अलग होते हैं। जीवित प्राणियों में समानता में विविधता पर यह ज़ोर क़ुरआन का एक आंखे खोल देने वाला बयान है।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ وَّ غَيْرَ
مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَ الزَّرْعَ مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ
وَ الزَّيْتُوْنَ وَ الرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّ غَيْرَ
مُتَشَابِهٍ ؕ كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَ اٰتُوْا
حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ ۖ وَ لَا تُسْرِفُوْا ؕ اِنَّهٗ لَا
يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ۙ﴿۱۴۱﴾ وَمِنَ الْاَنْعَامِ
حَمُوْلَةً وَّ فَرْشًا ؕ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَ لَا
تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ
مُّبِيْنٌ ۙ﴿۱۴۲﴾

और वही है जिसने बाग़ उगाये छत्रियों पर चढ़ाये हुए और नहीं चढ़ाये हुए भी, और खजूर और खेती जिनके तरह तरह के फल होते हैं, और ज़ैतून और अनार जो कुछ बातों में मिलते जुलते हैं और कुछ बातों में नहीं मिलते, और जब ये फल दें तो उनके फल खाओ और जिस रोज़ (फल तोड़ो और) खेती काटो तो अल्लाह का हक़ भी अदा करो, और व्यर्थ ना करो, क्योंकि अल्लाह हद से गुज़रने वालों को दोस्त नहीं रखता। और मवेशियों में बोझ उठाने वाले और छोटे क़द के पैदा किये, अल्लाह का दिया हुआ अन्न खाओ, और शैतान के क़दमों पर ना चला करो, बेशक वो तुम्हारा खुला दुश्मन है।

(6:141-142)

यह एक और क़ुरआनी हवाला है जो विभिन्न फलों तथा खेतियों की स्थिति को बयान करता है। तरह तरह के पौधों का उत्पन्न होना फिर फलना व फूलना, और ये अलग अलग होने के बावजूद गुणों में एक दूसरे से मिलते जुलते हैं जबकि उनका अंतर भी स्पष्ट होता है और यह अंतर भी एक ही तरह के फूलों में और यहाँ तक कि एक ही पेड़ के फलों में नज़र आता है। इसके अलावा, ऊपर की पहली आयत में यह आदेश भी दिया गया है कि उनकी पैदावार का एक निर्धारित अंश ग़रीबों को दिया जाएगा और उसी समय दे दिया जाएगा जब यह खेतियां काटी जाएंगी। क़ुरआन की यह आयत इस अंश को ग़रीबों का हक़ ठहराती है जो कि किसान पर या उसकी पैदावार पर वाजिब होता है। क्रषि उत्पाद की प्रक्रिया में, काटे जाने में, उसे एक जगह से दूसरी जगह ले जाने में, उसे स्टोर करने में और उसे इस्तेमाल करने में, हर मामलें में उत्पाद को व्यर्थ करने से रोका गया है। प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित करने पर इस्लाम बार बार ज़ोर देता है।

ऊपर की दूसरी आयत एक और तरह के प्राणियों का हवाला देती है और इंसानों के लिए उनकी उपयोगिता को बयान करती है कि वे एक तरफ़ भार ढोने में काम आते हैं और दूसरी तरफ़ उनके ऊन व चर्म से कपड़े व साज सज्जा की वस्तुएं बनाई जाती हैं (और देखें 16:80)। कुछ पशुओं का मास भी खाया जाता है, तथा कुछ से पीने के लिए दूध प्राप्त किया जाता है और उनके दूध से खाद्द पदार्थ भी बनाए जाते हैं (देखें आयत 16:66)।

وَ هُوَ الَّذِیۡ یُرۡسِلُ الرِّیٰحَ بُشۡرًۢا بَیۡنَ
یَدَیۡ رَحۡمَتِهٖ ؕ حَتّٰۤی اِذَاۤ اَقَلَّتۡ سَحَابًا
ثِقَالًا سُقۡنٰهُ لِبَلَدٍ مَّیِّتٍ فَاَنۡزَلۡنَا بِهِ
الۡمَآءَ فَاَخۡرَجۡنَا بِهٖ مِنۡ کُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ
کَذٰلِکَ نُخۡرِجُ الۡمَوۡتٰی لَعَلَّکُمۡ تَذَکَّرُوۡنَ ﴿۵۷﴾
وَ الۡبَلَدُ الطَّیِّبُ یَخۡرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذۡنِ
رَبِّهٖ ۚ وَ الَّذِیۡ خَبُثَ لَا یَخۡرُجُ اِلَّا نَکِدًا ؕ
کَذٰلِکَ نُصَرِّفُ الۡاٰیٰتِ لِقَوۡمٍ یَّشۡکُرُوۡنَ ﴿۵۸﴾

और वही है जो अपनी रहमत से हवाओं को भेजता है जो ख़ुशख़बरी देती हैं बारिश की यहां तक के जब वो हवायें भारी बादलों को उठा लेती हैं तो हम उसको किसी सूखी ज़मीन की तरफ़ चला देते हैं, फिर उस बादल से पानी बरसाते हैं, फिर उस पानी से तरह तरह के फल निकालते हैं, इसी तरह हम मुर्दों को निकाल खड़ा करेंगे, ताकि तुम समझो। और जो ज़मीन अच्छी होती है तो उसकी पैदावार भी अल्लाह के हुक्म से अच्छी निकलती है, और जो ख़राब होती है उसकी पैदावार भी बहुत कम निकलती है, इसी तरह हम अपनी आयतें तरह तरह से बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो शुक्र करते हैं।

(7:57-58)

اَوَ لَمۡ يَرَوۡا اَنَّا نَسُوۡقُ الۡمَآءَ اِلَى الۡاَرۡضِ الۡجُرُزِ فَنُخۡرِجُ بِهٖ زَرۡعًا تَاۡكُلُ مِنۡهُ اَنۡعَامُهُمۡ وَ اَنۡفُسُهُمۡ ؕ اَفَلَا يُبۡصِرُوۡنَ ۝

क्या उन्होंने नहीं देखा के हम बंजर ज़मीन की तरफ़ पानी रवां करते हैं, फिर उससे खेती पैदा करते हैं जिससे उनके चौपाये भी और वो ख़ुद भी खाते हैं, क्या ये लोग देखते नहीं। (32:27)

सृष्टि में मौजूद अल्लाह की निशानियां क़ुरआन में केवल वैज्ञानिक तथ्यों के तौर पर पेश नहीं की गयी हैं, बल्कि इस विशाल बृह्माण्ड और उसकी व्यवस्था के बनाने वाली हस्ती की ओर ध्यान दिलाने के लिए बयान हुई हैं और इस बात को समझाने के लिए कि यह जीवन आख़रिकार समाप्त हो जाएगा और इसके बाद एक अनन्त जीवन सामने आने वाला है। ऊपर दर्ज पहली आयत में सूखी धरती के फिर से जलमग्न हो कर उपजाऊ बन जाने और उस पर हरियाली आ जाने और फल फूल उगने का ज़िक्र किया गया है और इस सच्चाई को इस अक़ीदे के समर्थन में एक मिसाल बनाया गया है कि मौत के बाद एक दूसरा जीवन मिलने वाला है अर्थात यह अक़ीदा कि मरे हुए इंसानों को फिर से पैदा किया जाएगा। अगली आयत इस सच्चाई की तरफ़ ध्यान दिलाती है कि केवल बीज को पानी मिल जाने से ही पेड़ पौधे उग आने की आशा नहीं की जा सकती, बल्कि उसके उगने के लिए पानी के साथ साथ धरती का उपजाऊ होना, एक अनुकूल वातावरण और लगातार इंसानी निगरानी की ज़रुरत होती है। इस तरह यह समझाया गया है कि जिस तरह किसी पौधे की उत्पत्ति के लिए एक अनुकूल वातावरण की ज़रूरत होती है जिसमें बीज और पानी के मिलने से जीवन की उत्पत्ति होती है और पौधा विक्सित होता है इसी तरह अल्लाह की तरफ़ से आने वाले अध्यात्मिक और नैतिक मार्गदर्शन के लिए भी एक उपयुक्त, मानसिक, बौद्धिक और सामाजिक वातावरण की ज़रूरत होती है जो उसे स्वीकार करने की क्षमता प्रदान करता है और इन कारकों के बीच सकारात्मक आपसी क्रयाओं का माध्यम बनता है। यह लोगों के मन व मस्तिष्क ही हैं जो किसी विशेष युग में और विशेष स्थान पर उत्पत्ति और विकास का संदेश अपनाने का माध्यम बन सकते हैं या फिर इस अवसर को गंवा देते हैं और मर जाते हैं।

وَ فِى الۡاَرۡضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّ جَنّٰتٌ مِّنۡ اَعۡنَابٍ وَّ زَرۡعٌ وَّ نَخِيۡلٌ صِنۡوَانٌ وَّ غَيۡرُ صِنۡوَانٍ يُّسۡقٰى بِمَآءٍ وَّاحِدٍ ۫ وَ نُفَضِّلُ بَعۡضَهَا عَلٰى بَعۡضٍ فِى الۡاُكُلِ ؕ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوۡمٍ يَّعۡقِلُوۡنَ ۝

और ज़मीन में क़िस्म क़िस्म के टुकड़े हैं जो एक दूसरे से मिले हुए हैं, और अंगूर के बाग़ हैं, और खेती और खजूर के पेड़ हैं कुछ में बहुत सी शाखें होती हैं, और कुछ में कम। (हालांकि) पानी सबको एक ही मिलता है, और हम एक को दूसरे पर फलों में बरतरी देते हैं बेशक इसमें अक़्ल वालों के लिये बहुत सी निशानियां हैं। (13:4)

इससे पहले दर्ज की गयी आयतें (6: 99, 141) वनस्पति जगत में विविधता को रेखांकित करती हैं इसके बावजूद कि उनके मौलिक वनस्पतीय गुण एक ही हैं, और विभिन्न प्रकार के फलों की विविधता को जताती हैं इसके बावजूद कि वे एक ही पेड़ के फल हों, या एक ही तरह के फल हों। यहाँ क़ुरआन मिट्टी या ज़मीन की विविधता को भी बयान करता है और इस बात को कि भूखण्डों के अंतर से वहां पैदा होने वाले फलों के स्वाद किस तरह अलग अलग हो जाते हैं, हालांकि पेड़ एक ही होता है और एक ही पानी से उसकी सिंचाई होती है। बीजों की विविधता, मौसम की विविधता और पूरे वातावरण का अन्तर अलग अलग तरह के फल देता है। समानता में विविधता और सामान्यता में विशेषता से जीवन और जीवित प्राणियों के प्राकतिक नियम की निशानदेही होती है, ख़ास तौर से ऊंचे स्तर पर।

وَ الْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّ
مَنَافِعُ وَ مِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝٥ وَ لَكُمْ فِيْهَا
جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَ حِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ۝٦
وَ تَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا
بٰلِغِيْهِ اِلَّا بِشِقِّ الْاَنْفُسِ ؕ اِنَّ رَبَّكُمْ
لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝٧ وَّ الْخَيْلَ وَ الْبِغَالَ وَ
الْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَ زِيْنَةً ؕ وَ يَخْلُقُ مَا لَا
تَعْلَمُوْنَ ۝٨ وَ عَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَ
مِنْهَا جَآئِرٌ ؕ وَ لَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ
اَجْمَعِيْنَ ۝٩ هُوَ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ
مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ وَّ مِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ
تُسِيْمُوْنَ ۝١٠ يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَ
الزَّيْتُوْنَ وَ النَّخِيْلَ وَ الْاَعْنَابَ وَ مِنْ كُلِّ
الثَّمَرٰتِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ
يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝١١

और चौपाये भी उसने पैदा किये, उसमें तुम्हारे लिये जाड़े का सामान है और दूसरे फ़ायदे हैं, और उनमें कुछ को तुम खाते भी हो। और तुम्हारे लिये उसमें रौनक है जब शाम को उन्हें जंगल से घर लाते हो और जब सुबह को घर से चराने के लिये जंगल ले जाते हो। और वो तुम्हारे बोझ उठा कर ले जाते हैं ऐसे स्थानों पर जहाँ तुम नहीं पहुंच सकते बड़ी ज़हमत और तकलीफ़ के बग़ैर, बेशक तुम्हारा रब बड़ी शफ़्क़त वाला और बड़ी रहमत वाला है। और उसने घोड़े, खच्चर और गधे पैदा किये ताकि तुम उन पर सवार हो, और सजावट के लिये भी। और वो चीज़ें पैदा करता है जो तुम जानते भी नहीं हो। और सीधा रास्ता अल्लाह तक जा पहुंचता है और कुछ रास्ते टेढ़े हैं, और अगर वो चाहता तो तुम सब को सीधे रस्ते पर चला देता। और वही तो है जिसने तुम्हारे लिये आसमान से पानी बरसाया, जिसे तुम पीते हो और उससे पेड़ भी हरे भरे होते हैं जिसमें तुम अपने चौपायों को चराते हो। और उस पानी से वो तुम्हारे लिये खेती और ज़ैतून और खजूर और अंगूर और हर क़िस्म के फल उगाता है, बेशक उसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो सोचते हैं। (16:5-11)

اَوَ لَمۡ یَرَوۡا اَنَّا خَلَقۡنَا لَهُمۡ مِّمَّا عَمِلَتۡ اَیۡدِیۡنَاۤ اَنۡعَامًا فَهُمۡ لَهَا مٰلِكُوۡنَ ﴿۷۱﴾ وَ ذَلَّلّٰنٰهَا لَهُمۡ فَمِنۡهَا رَكُوۡبُهُمۡ وَ مِنۡهَا یَاۡكُلُوۡنَ ﴿۷۲﴾ وَ لَهُمۡ فِیۡهَا مَنَافِعُ وَ مَشَارِبُ ؕ اَفَلَا یَشۡكُرُوۡنَ ﴿۷۳﴾

क्या उन्होंने नहीं देखा के हमने अपने हाथ की बनाई चीज़ों से चौपाये पैदा किये, फिर ये उनके मालिक बन रहे हैं। और हमने उनको आधीन कर दिया तो कुछ तो उनमें से उनकी सवारियां हैं और कुछ को ये खाते हैं। और उनको बड़े फ़ायदे हैं और पीने की चीज़ें हैं, तो क्या ये शुक्र नहीं करते। (36:71-73)

اَللّٰهُ الَّذِیۡ جَعَلَ لَكُمُ الۡاَنۡعَامَ لِتَرۡكَبُوۡا مِنۡهَا وَ مِنۡهَا تَاۡكُلُوۡنَ ﴿۷۹﴾ وَ لَكُمۡ فِیۡهَا مَنَافِعُ وَ لِتَبۡلُغُوۡا عَلَیۡهَا حَاجَةً فِیۡ صُدُوۡرِكُمۡ وَ عَلَیۡهَا وَ عَلَی الۡفُلۡكِ تُحۡمَلُوۡنَ ﴿۸۰﴾ وَ یُرِیۡكُمۡ اٰیٰتِهٖ ۟ فَاَیَّ اٰیٰتِ اللّٰهِ تُنۡكِرُوۡنَ ﴿۸۱﴾

अल्लाह ही ने तुम्हारे लिये चारपाये पैदा किये, ताकि उनमें कुछ पर सवारी करो, और उनमें कुछ को खाते हो। और तुम्हारे लिये उनमें और भी बहुत से फ़ायदे हैं, और ताकि तुम उन पर अपने मक़सद तक पहुंचो जो तुम्हारे दिलों में है, और उन पर और कश्तियों पर तुम सवार होते हो। और वो तुमको अपनी निशानियां दिखाता है तो तुम अल्लाह की किन किन निशानियों का इन्कार करोगे। (40:79-81)

ऊपर की आयतों में एक बार फिर इंसानी जीवन के लिए पशुओं के फ़ायदे जताए गए हैं। यह पशु भार ढोने और सवारी के काम आते हैं और आदि काल से इस उद्देश्य के लिए इस्तेमाल होते रहे हैं। इस चीज़ ने इंसान को अपनी प्रतिभाओं व क्षमताओं को काम में लाने में भी मदद दी है, जैसे एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाना *"और हमने आदम की संतान को इज़्ज़त दी है और उनको थल व जल में सवारी दी है और पाकीज़ा रोज़ी दी है और अपने बहुत से जन्तुओं पर बरतरी दी है।"* (17:70), तथा इन जानवरों से प्राप्त होने वाले ऊन, बाल और चमड़े से इंसान अपने शरीर और अपने ठिकानों को गरम रखता है। इसके अलावा, मवेशियों का दूध एक स्वादिष्ट और पौष्टिक आहार है, फिर इसी से पनीर, क्रीम और मक्खन जैसे खाद्य पदार्थ हम बनाते हैं। मवेशियों के आम फ़ायदों के अलावा क़ुरआन उनकी सौन्दर्य शोभा को भी रेखांकित करता है और ईमान वालों की कल्पना शक्ति और सौन्दर्य भाव को ऊपर उठाता है ताकि इंसान भौतिक लाभ से ऊपर उठ कर इन मवेशियों के मनमुग्ध करने वाले सौन्दर्य को भी महसूस करे और पशुओं पर सवारी करने के आनन्द व लाभ को भी देखे। इसके अलावा अल्लाह की सृजन शक्ति और उसकी सृष्टि का फैलाव इंसान के ज्ञान की सीमाओं से बहुत आगे है, लेकिन प्रकृति और उसमें सक्रिय शक्तियों व क़ानूनों के बारे में इंसान की इन्द्रियों और मस्तिष्क को कुछ नई जानकारियां प्राप्त होती रहती हैं। आधुनिक युग में यातायात के साधनों

का विकास, यानि ऐसे साधनों की खोज जिनके बारे में पहले इंसान को बहुत ही कम जानकारी थी, इन नई खोजों व शोध की लगातार चलती रहने वाली प्रक्रिया की एक मिसाल है, साथ ही साथ यह भविष्य में नई खोजों के लिए इंसान के अन्दर जिज्ञासा व प्रेरणा पैदा करने का साधन है।

अल्लाह की कृपा से फ़ायदा उठाने वाले किसी भी व्यक्ति को, उदाहरण के तौर पर जानवर की सवारी से फ़ायदा उठाने वाले को, इसके नैतिक पहलू को समझना चाहिए। इंसान अल्लाह की कृपा को उसके न्याय व उपकार की शिक्षा के तहत स्वीकार करे न कि केवल व्यक्तिगत स्वार्थ और कम नज़री के साथ; *"हिदायत (सीख) तो अल्लाह की ही हिदायत है।"* (और देखें: 91:7-10; 92:5-13)। यह इंसान की ज़िम्मेदारी है कि अल्लाह की रहनुमाई से फ़ायदा उठाने और अपना उद्देश्य व लक्ष्य तय करने के लिए सभी सम्भव प्रयास करे, क्योंकि उसकी मंशा यह है कि हर व्यक्ति स्वतंत्रता के साथ अपने रास्ते का चयन करे और उसकी जवाबदेही उसी पर लागू हो: *"अगर अल्लाह चाहता तो वह तुम सब को एक जैसा बना देता।"*

ऊपर उल्लिखित आख़री दो आयतों में पानी का हवाला दिया गया है जिन पर सभी जीवों का अस्तित्व निर्भर है। यह पानी अल्लाह तआला सभी जीव जन्तुओं को उपलब्ध कराता है और इसी के माध्यम से पेड़ पौधों को फलने व पूलने लायक़ बनाता है और इंसानों व पशुओं के आहार के लिए उन्हें तैयार करता है।

وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿۶۵﴾ وَ اِنَّ لَكُمْ فِی الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِیْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّ دَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿۶۶﴾ وَ مِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَ الْاَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّ رِزْقًا حَسَنًا ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۶۷﴾

और अल्लाह ही ने आसमान से पानी बरसाया, फिर उससे ज़मीन को उसके मरने के बाद ज़िन्दा किया, बेशक सुनने वालों के लिये इसमें बड़ी निशानी है। और बेशक तुम्हारे लिये मवेशियों में भी इबरत है, उनके पेट में जो गोबर और लहू है उसके दरमियान में से ख़ालिस दूध तुमको पिलाते हैं जो पीने वालों के लिये स्वादिष्ट है। और तुम खजूर और अंगूर से नशे की चीज़ें भी तैयार करते हो, और उम्दा खाने की चीज़ें तैयार भी करते हो, बेशक जो लोग अक़्ल रखते हैं उनके लिये इसमें बड़ी निशानी है। (16:65-67)

क़ुरआन इंसान को बार बार याद दिलाता है कि अल्लाह तआला धरती पर जीवन और जीवित प्राणियों को बनाए रखने के लिए किस तरह पानी बरसाता है और इस तरह वह देख सकते हैं कि इंसान के अध्यात्मिक और नैतिक जीवन के लिए भी अल्लाह तआला अपना संदेश

भेजता है। उपरोक्त आयत में ख़ास तौर से मवेशियों से प्राप्त होने वाले दूध का हवाला दिया गया है जो उनके शरीर के अन्दर उनकी आंतों और शिराओं के बीच से एक शुद्ध और स्वादिष्ट आहार बन कर निकलता है। यह इतनी मात्रा में पैदा होता है कि ख़ुद उस पशु के अपने बच्चों की आवश्यकता से अधिक होता है और इस तरह इंसान को यह अवसर मिलता है कि वह इस पौष्टिक द्रव और उससे बनने वाली दूसरी पोष्टिक वस्तुओं से फ़ायदा उठाए। फल भी, ख़ास तौर खजूर और अंगूर, स्वास्थ दायक और नशीले दोनों तरह के पेय पदार्थ बनाने में काम आते हैं, और क़ुरआन नशा लाने वाले और स्वास्थ बनाने वाले दोनों तरह के पेय पदार्थों के अन्तर को रेखांकित करता है और नशा चढ़ाने वाले पेय पदार्थों को क़ानूनी रूप से निषेध रखने के लिए मस्तिष्क को तैयार करता है।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَلَكَهٗ يَنَابِيْعَ فِى الْاَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهٗ حُطَامًا ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ ﴿۲۱﴾

क्या तूने नहीं देखा के अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया, फिर उसको ज़मीन में चश्मे बनाकर जारी करता है, फिर उससे खेती उगाता है जिसके विभिन्न रंग हैं, फिर वो सूख जाती है, तो तुम उसको पीला देखते हो, फिर वो उसको चूरा चूरा कर देतो है, बिला बेशक इसमें अक़्ल वालों के लिये नसीहत है। (39:21)

यह आयत इस बात को उजागर करती है कि ऊपर से बरसने वाली बारिश किस तरह ज़मीन के अन्दर पानी को जारी करती है, और फिर पौधों के जीवन चक्र का हवाला देती है यानि उनके उत्पन्न होने और फिर फलने व फूलने और फिर पूरी तरह खिल कर मुर्झा जाने, पीला पड़ जाने और आख़िरकार चूर चूर होकर बिखर जाने का मंज़र पेश करती है। एक तरफ़ इंसान है जो पके हुए अनाज, फल और दूसरे उत्पादों से जिन्हें वह उगाता है, फ़ायदा उठाता है, दूसरी तरफ़ पशु हैं जो हरी और सूखी दोनों तरह की वनस्पति खाते हैं।

बार बार और दिलकश तरीक़े से जीवन के हवाले देने के अलावा क़ुरआन इंसान का ध्यान मौत और इस दुनिया में जीवन के ख़ात्मे की तरफ़ भी दिलाता है ताकि वह इस भ्रम से बचा रहे कि इस धरती पर हमेशा रहना है। यह इंसान का ध्यान इस सच्चाई की तरफ़ भी दिलाता है कि जीवन को शून्य से फिर अस्तित्व में लाया जा सकता है ताकि मरने के बाद फिर पैदा किए जाने और आगे आने वाले जीवन के बारे में जो भी शक और इंकार इंसान के दिमाग़ में हो, उसे निकाल दिया जाए। जीवन और मृत्यू के बीच आपसी सम्बंध और इन दोनों परिस्थितियों के आपसी विरोधाभास से इंसानी दिमाग़ रोशन होता है और यह चीज़ उसे भौतिक व बौद्धिक सक्रियता और परिवर्तन की एक व्यापक और गहरी समझ देती है।

وَ مِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَ رَبَتْ ؕ اِنَّ الَّذِيْۤ اَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ؕ اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۳۹﴾

और उसकी निशानियों में से ये है के तुम ज़मीन को देखते हो के वो दबी हुई (यानी सूखी) है, फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो हरीभरी हो जाती है, और फूलने लगती है, तो जिसने इस ज़मीन को ज़िन्दा किया, वो ही मुर्दों को ज़िन्दा करेगा, बेशक वो हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (41:39)

पिछली आयत (39:21) में जिस तरह एक पौधे के मरने या मुर्झा जाने के चरण और संकेतों का प्रभावी ढंग से नक़शा खींचा गया था, उसी तरह इस आयत (41:39) में मुर्दा ज़मीन के जीवित कर देने को बयान किया गया है। जब ज़मीन सूख जाती है तो वह वीरान और उजाड़ दिखाई पड़ती है, लेकिन जैसे ही अल्लाह उस पर पानी बरसाता है तो यह भभक उठती है और जीवन की ऊर्जा से फूल जाती है। इसी तरह इंसान को अध्यात्मिक रूप से नया जीवन मिलता है जब अल्लाह का पैग़ाम उसके पास पहुंचता है और जब आख़िरत होगी तो इंसान शरीरिक रूप से फिर जी उठेंगे और उनका कभी समाप्त न होने वाला जीवन शुरू हो जाएगा।

وَ الَّذِيْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ ۚ فَاَنْشَرْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿۱۱﴾ وَ الَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا وَ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْفُلْكِ وَ الْاَنْعَامِ مَا تَرْكَبُوْنَ ﴿۱۲﴾ لِتَسْتَوٗا عَلٰى ظُهُوْرِهٖ ثُمَّ تَذْكُرُوْا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ اِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَ تَقُوْلُوْا سُبْحٰنَ الَّذِيْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَ مَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ ﴿۱۳﴾ وَ اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ﴿۱۴﴾

और जिसने आसमान से एक अंदाज़े से पानी बरसाया, फिर हमने उससे ख़ुश्क ज़मीन को ज़िन्दा किया, और इसी तरह निकाले जाओगे। और जिसने हर चीज़ के जोड़े पैदा किये और तुम्हारे लिये कश्तियां बनाईं और चौपाये पैदा किये जिन पर तुम सवार होते हो। ताकि तुम उसकी पीठ पर जमकर बैठो, फिर जब तुम बैठ चुके तो अपने रब की नेमत को याद करो और कहो के वो ज़ात पाक है जिसने इन चीज़ों को हमारे लिये नियंत्रित कर दिया, और हम ऐसे नहीं थे के उनको अपने बस में कर लेते। और हम सबको अपने रब की तरफ़ लौट कर जाना है। (43:11-14)

ऊपर की पहली आयत में मृत ज़मीन पर आसमान से पानी बरसने का और उसके बाद फिर से उसके जीवित हो जाने का हवाला दिया गया है। यहाँ एक महत्वपूर्ण बात यह कही गयी है कि बारिश या बर्फ़बारी क़ुदरत के नियमों और सृष्टि की व्यवस्था के अनुसार एक निर्धारित मात्रा में होती है। आख़िरत (मरने के बाद के जीवन) की अनन्त ज़िन्दगी भी अल्लाह ने अपने

ज्ञान, हिकमत और न्याय के अनुसार सोच समझ कर व्यवस्थित की है। अगली आयत में एक और महत्वपूर्ण हवाला समानान्तर जौड़े पैदा करने का दिया गया है जो एक दूसरे के विपरीत लिंग होने के बावजूद एक दूसरे के पूरक बनते हैं, और यह वह बात है जो न केवल पेड़ पौधों और इंसानों व पशुओं के नर व मादा में दिखाई देती है बल्कि चुम्बक और बिजली में, और हवा व पानी के ऊंचे व नीचे दबाव में भी होती है जिसके नतीजे में हवाएं ज़ोर भरती हैं और पानी की लहरें हरकत करती हैं। यहाँ तक कि परभाणु (ऐटम) की बनावट में भी हम प्रोटोन और इलैक्ट्रान पर ÷ve और -ve चार्ज देखते हैं (और देखें इससे पहले ज़िक्र हो चुकी आयत 36:36 और आयत 27:88 की व्याख्या)।

ऊपर की अन्तिम दो आयतों में भौतिक और अध्यात्मिक तत्वों के बीच समन्वय और संतुलन को रेखांकित किया गया है जिसका नज़ारा इंसान इस दुनिया में करता है। इंसान इस सृष्टि के भौतिक फ़ायदों को समेटने की कोशिश कर सकता है लेकिन उसे इन नेअमतों को देने वाली हस्ती को नहीं भूलना चाहिए जो इस पूरी सृष्टि की रचियता है और जो इंसान को बुद्धि देकर इस लायक बनाता है कि वह इस सृष्टि से फ़ायदा उठाए। भौतिकता और अध्यात्मिकता के बीच यही वह संतुलन है जो पूरी इंसानियत और सृष्टि के संसाधनों के बीच संतुलन और भरपूर विकास को सुनिश्चित करता है। विकास की इस प्रक्रिया में कामयाबी या नाकामी ईमान वालों के लिए इंसानों और दुनिया को बहतर बनाने के लिए निरन्तर कठिन संघर्ष करते रहने में रुकावट का कारण नहीं बनना चाहिए, क्योंकि मोमिन का यह ईमान होता है कि सारे काम अल्लाह की तरफ़ से हैं जिनके ज़रिए वह उसे आज़माता है, और किसी व्यक्ति के जीवन में कोई मौक़ा आख़री नहीं है बल्कि जीवन के बहुत से उतार चढ़ाव के बीच एक ठहराव है। जीवन की इस यात्रा का अंत अल्लाह के हाथ में है, और जो चीज़ वास्तव में महत्व रखती है वह आने वाले जीवन में इंसान का अंजाम है।

فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖۤ ﴿۲۴﴾ اَنَّا
صَبَبْنَا الْمَآءَ صَبًّا ﴿۲۵﴾ ثُمَّ شَقَقْنَا الْاَرْضَ
شَقًّا ﴿۲۶﴾ فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا حَبًّا ﴿۲۷﴾ وَّ عِنَبًا وَّ
قَضْبًا ﴿۲۸﴾ وَّ زَيْتُوْنًا وَّ نَخْلًا ﴿۲۹﴾ وَّ حَدَآئِقَ
غُلْبًا ﴿۳۰﴾ وَّ فَاكِهَةً وَّ اَبًّا ﴿۳۱﴾ مَّتَاعًا لَّكُمْ وَ
لِاَنْعَامِكُمْ ﴿۳۲﴾

इन्सान को चाहिये के अपने खाने की तरफ़ नज़र करे। हमने अजीब तरीक़े से पानी बरसाया। फिर हमने अजीब तरीक़े से ज़मीन को फ़ाड़ा। फिर हम ने उसमें अनाज उगाया और अंगूर और तरकारी। और ज़ैतून और खजूरें। और गुंजान बाग़ात। और मेवे और चारा पैदा किया। (ये सबकुछ) तुम्हारी और तुम्हारे मवेशियों के लिये बनाया। (80:24-32)

यह आयत ख़ुराक (आहार) की पैदावार को बयान करती हैं और इस बात को उजागर

करती हैं कि इस उत्पादन प्रक्रिया में कितने चरण एक दूसरे के बाद आते हैं, जो अल्लाह की कृपा से बहतरीन तरीक़े से संगठित और समन्वयित हैं, ताकि इंसान का अपना जीवन भी सुरक्षित रहे और उसके उन मवेशियों का भी जिन्हें वह आवागमन और अपने आहार के लिए इस्तेमाल करता है। यह आयतें इस बात को भी स्पष्ट करती हैं कि किस तरह आसमान से ज़मीन पर पानी बरसता है और फिर इस पानी, मिट्टी, बीज (या पौद फूटने के दूसरे स्रोतों) की परस्पर क्रया से और कभी कभी इंसानी कोशिश से विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां उगती हैं। जब ज़मीन पानी पीती है और यह पानी मिट्टी से हो कर बीजों तक, या वनस्पति के दूसरे स्रोतों तक पहुंचता है, तो उत्पादन की प्रक्रिया शुरू हो जाती है और उगने वाले पौधे बीज के अन्दर से निकल कर ज़मीन को फाड़ कर ऊपर आ जाते हैं। इंसान, जिसे बुद्धि जैसी महान नेअमत से अलंकृत किया गया है, ज़मीन को जोत कर उसे फटने के लिए तैयार करता है। जोतने की यह प्रक्रिया पहले पहल हल चला कर शूरू की गयी थी जो जानवरों को हांक कर चलाया जाता है, और कुछ स्थानों पर अभी तक इसी तरह होता है, लेकिन अब आम तौर से इसके लिए मशीनों का उपयोग होने लगा है।

क़ुरआन की इन आयतों में पौधों के विभिन्न रूपों का ज़िक्र किया गया है, ख़ास तौर से उन पौधों का जो क़ुरआन के अवतरित होने के युग में दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में जाने जाते थे। इनमें अनाज के वे पौधे भी शामिल हैं जो अपेक्षाकृत कम समय में और सीमित प्रयासों से ही उग आते हैं और अंगूर की बेलें भी शामिल हैं जिनके फलने फूलने के लिए फलेज बनाने की ज़रूरत होती है, और ज़ैतून व खजूर के पेड़ भी शामिल हैं जिनमें से हर एक अपने फल पैदा करने के लिए लम्बा समय और लगातार कठिन परिश्रम लेता है। दूसरी तरह के पेड़ पौधे घने बाग़ों और उनके फलों और नर्म व नाज़ुक पौधों की श्रेणी में आते हैं। अल्लाह की क़ुदरत, निगहबानी और फ़ज़ल से कुदरती संसाधनों से और इंसान की शरीरिक व बौद्धिक कोशिशों के ज़रिए इंसान और उसके चौपायों की तथा तमाम तरह के पक्षियों व पशुओं की ख़ुराक का इंतेज़ाम होता है। *"और उसी ने ज़मीन में उसके ऊपर पहाड़ बनाए और ज़मीन में बरकत रखी और उसमें सब सामान-ए-मईशत (जीविका के साधन) रख दिए चार दिन में (और तमाम) तलबगारों के लिए एक समान रूप से।"* (41:10)

وَ اللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْۢ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَ يَوْمَ اِقَامَتِكُمْ ۙ وَ مِنْ اَصْوَافِهَا وَ اَوْبَارِهَا وَ

और अल्लाह ने तुम्हारे लिये तुम्हारे घरों को रहने की जगह बनाई और उसी ने तुम्हारे लिये जानवरों की खाल के घर बनाये, जो यात्रा के दौरान और ठहरने (बसने) के समय हलके फुलके पाते हो, और उनकी ऊन और उनके रूओं और उनके बालों से घर का सामान और फ़ायदे

اَشْعَارِهَآ اَثَاثًا وَّمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ۝٨٠

की चीज़ें एक मुद्दत तक के लिये बनाईं। (16:80)

अल्लाह इंसानों को ज़मीन पर घर उपलब्ध कराता है जिसका उल्लेख ऊपर की आयत में विशेष रूप से किया गया है कि इन घरों में उनके निवासियों को आराम और शान्ति मिलती है जो इंसान की एक अनिवार्य आवश्यकता है और यह आवश्यकता घर से पूरी होती है। इस से अभिप्राय तमाम भौतिक और मानसिक आवश्यकताएं है जिनमें ज़रूरी चीज़ें, फर्नीचर, आराम, सुरक्षा और पर्दापोशी शामिल हैं। जो लोग ख़ाना बदोश (घुमंतू) जीवन जीते हैं वे अपने चलते फिरते घर (शिविर) अपने साथ लेकर चलते हैं जो आसानी से तान कर खड़े कर लिए जाते हैं और समेट कर लपेट लेते हैं, इन घरों (ख़ेमों) को बनाने और उनकी साज सज्जा के लिए जानवरों की खाल, ऊन और बालों का उपयोग होता है, दूसरी तरफ़ स्थायी निवास करने वाले लोग अपने घर बनाने में विभिन्न प्रकार का सामान इस्तेमाल करते हैं। यह एक ध्यान देने वाली और गहरे अर्थ रखने वाली बात है कि इससे पहले वाली आयत (16:79) में उड़ती चिड़ियों का ज़िक्र है, और अगली आयत में बंजारों (घुमंतू) लोगों के सम्बंध में बात कही गयी है, यह चीज़ दोनों वर्गों की चलत फिरत प्रवृत्ति को उजागर करती है।

## पक्षी

اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِىْ جَوِّ السَّمَآءِ ؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا اللّٰهُ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝٧٩

क्या लोगों ने नहीं देखा परिन्दों को कि आसमान में नीचे हवाके अन्दर नियंत्रित हैं, उनको अल्लाह के सिवा कोई नहीं थामता, उनमें भी चन्द निशानियां हैं उन लोगों के लिये जो अल्लाह पर ईमान लाते हैं। (16:79)

ऊपर की आयत में पक्षियों का हवाला दिया गया है और इस बात की ओर ध्यान दिलाया गया है कि वे हवा में किस तरह अपना संतुलन बनाए रखते हैं, जो कि अल्लाह के बनाए हुए प्राकृतिक नियमों के अन्तर्गत और उन गुणों के रहते सम्भव होता है जो अल्लाह ने उनकी शरीरिक बनावट, परों और बाज़ुओं में पैदा की है और जिन से पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण बल को अप्रभावी करने में उन्हें मदद मिलती है। न्यू कोलम्बिया एन्साइक्लोपीडिया के अनुसार "पक्षियों के पास अपेक्षाकृत बड़ा दिमाग़, तेज़ नज़र और सुनने की बहुत अधिक शक्ति होती है, लेकिन उनके पास सूंघने की शक्ति बहुत कम होती है चिड़ियों की शरीरिक बनावट उड़ने के लिए बहुत उपयुक्त है। उनकी बनावट में हल्कापन और मज़बूती दोनों हैं। उनके शरीर का भार भारी जबड़ों और दांतों के बजाए उनकी चोंच होने की वजह से और खोखली हड्डियों व शरीर के दूसरे

अंगों में हवा की थेलियां होने की वजह से कम हो जाता है। शरीर के भारी अंग संगदाना, आंतें, बाज़ुओं की रगें और टांगों की रगें यह सब चीज़ें उडने के दौरान संतुलन बनाए रखने के लिए बहुत कारगर तरीक़े से अपनी अपनी जगह पर होती हैं। पर, हल्के होने के बावजूद, सर्दी लगने और भीगने से बचाने का काम करते हैं। ख़ास तौर से उड़ान भरने वाले बाज़ुओं में बहुत शक्ति होती है।'' ऐसी अचम्भित करने वाली रचना और बनावट से ''पक्षी आसमान में हवा के अन्दर लटकते रहते हैं।'' (16: 79), ''पर फैलाए और अपनी क्रियाओं से हकीम व शक्तिशाली रचनाकार की वन्दना करते हुए'', कि हर एक यह जानता है कि ''वह उसकी वन्दना किस तरह करे।'' (24:41) इंसान पक्षियों से जिन्हें वह शिकार करता है, आहार प्राप्त करता है: "और वह शिकार (भी) हलाल है जो तुम्हारे लिए उन शिकारी जानवरों ने पकड़ा हो जिन्हें तुमने सधा रखा हो और जिस (तरह) से अल्लाह ने तुम्हें (शिकार करना) सिखाया है (उस तरह से ) तुमने उनको सिखाया हो तो जो शिकार वह तुम्हारे लिए पकड़ रखें उस को खा लिया करो और (शिकारी जानवरों को छोड़ते समय) अल्लाह का नाम ले लिया करो, और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।'' (5:4)।

## जलीय जन्तु

وَ مَا ذَرَاَ لَكُمْ فِی الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّقَوْمٍ یَّذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۳﴾ وَ هُوَ الَّذِیْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِیًّا وَّ تَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْیَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَ تَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِیْهِ وَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۴﴾

वो चीज़ें जो उसने तुम्हारे लिये इस तौर से पैदा की हैं के उनके रंग मुख़्तलिफ़ हैं, बेशक उसमें निशानी है उन लोगों के लिये जो नसीहत हासिल करते हैं। और वो ही है जिसने आधीन कर दिया दरिया ताकि तुम ताज़ा गोश्त उसमें से खाओ और उसमें से ज़ेवर निकालो, जिस को तुम जानते हो, और तू देखता है कश्तीयों को कि उसमें पानी को चीरती हुई जाती हैं ताकि तुम अल्लाह की तरफ़ से रोज़ी तलाश करो, और ताकि शुक्र अदा करो। (16:13-14)

यह ज़मीन पर अल्लाह की रचनाओं का एक ओर प्रसंग है जिनके अलग अलग रंग व रूप हैं और अलग अलग गुण हैं, चाहे वे प्राण रखने वाले जीव हों या निर्जीव हों, गैस के रूप में हों या द्रव के रूप में हों या ठोस हों, कीड़ें मकोड़े या पक्षी हों, ज़मीन पर रहने वाले हों या पानी में, या छोटी बड़ी दूसरी रचनाएं हों। यहाँ क़ुरआन अल्लाह की रचनाओं के भौतिक लाभ और उनसे प्राप्त होने वाले सौन्दर्य सुख दोनों को बयान करता है कि ईमान रखने वाला बन्दा या

बन्दी उनकी बनावट के सौन्दर्य को भी महसूस करे और इस सौन्दर्य व ख़ूबसूरती को जीवन में भी बनाए रखे, तथा उसे विक्सित करे। समुद्र से इंसान अपनी जैविक और मानसिक व बौद्धिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ख़ुराक और आभूषण दोनों प्राप्त करता है। इसके अलावा, यहाँ जहाज़ों का भी हवाला है जो आवागमन का साधन हैं जो अल्लाह ने पूरी दुनिया के जलक्षेत्रों में उपलब्ध कराए हैं, और जिन से इंसान अपने वैश्विक चरित्र को पूरा करने योग्य बनता है: ''और हमने आदम की संतान को इज़्ज़त दी है और उनको जंगल व दरिया में सवारी दी है।'' (17:70)।

## कीड़े

إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَحْيِۦٓ أَن يَضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوضَةً فَمَا فَوْقَهَا ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ ءَامَنُوا فَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّهِمْ ۖ وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَيَقُولُونَ مَاذَآ أَرَادَ اللَّهُ بِهَٰذَا مَثَلًا ۘ يُضِلُّ بِهِۦ كَثِيرًا وَيَهْدِى بِهِۦ كَثِيرًا ۚ وَمَا يُضِلُّ بِهِۦٓ إِلَّا الْفَٰسِقِينَ ﴿٢٦﴾

अल्लाह नहीं शर्माता इस बात से कि वो कोई मिसाल बयान करे मच्छर की या इससे भी बढ़कर किसी और चीज़ की सो जो ईमान ला चुके हैं वो तो यही यक़ीन करेंगे के वो मिसाल यक़ीनन हक़ है और जो लोग काफिर हैं यही कहते रहेंगे के अल्लाह का इस मिसाल से मतलब क्या था। इससे वो बहुत सों को गुमराह करता है, और बहुत सों को राह दिखाता है और इससे तो वो बदकारों ही को गुमराह करता है। (26:2)

मच्छर देखने में एक बहुत छोटा और तुच्छ जीव है, लेकिन वह भी अपने अंदर प्राण रखता है जिसमें शक्ति के विभिन्न आयाम हैं। उसके छोटे से शरीर में जीवन को बनाए रखने और अपनी प्रजाति को जनने का अनिवार्य तंत्र मौजूद होता है, और यह अपने सूक्ष्म अस्तित्व के बावजूद इंसान को डस सकता है। अल्लाह तआला मच्छर, मक्खी, चूंटी यहाँ तक मकड़ी की मिसाल भी देता है कि ये सारी चीज़ें उसकी पैदा की हुई हैं, और उनमें से हर एक अल्लाह की तरफ़ मार्गदर्शन करने के लिए शरीरिक या नैतिक रूप से अपना महत्व रखता है। उनके साइंसी, सौन्दर्यपूर्ण और नैतिक महत्व को समझने से कुछ लोग वंचित हो सकते हैं, लेकिन अल्लाह पर ईमान रखने वाले लोग अल्लाह की रचना को उसके हर पहलू से इस तरह देखते हैं कि यह अल्लाह का करिशमा है, और अल्लाह के पैग़ाम को अपार बौद्धिकता का एक नमूना समझते हैं। अल्लाह की रचना की ऐसी मिसालें उन लोगों के लिए अल्लाह के पैग़ाम का मज़ाक़ बनाने और उस पर टीका टिप्पणी करने का विषय बन जाती हैं जो बात को सकारात्मक रूप से नहीं लेते हैं और जिनकी प्रवृत्ति ग़लत ढंग से सोचने व करने की होती है, ऐसे लोगों ने अपनी इन्द्रियों और सूझबूझ पर ताले डाल रखे होते हैं और जानबूझ कर सत्य को झुटलाते हैं।

وَ اَوۡحٰی رَبُّكَ اِلَی النَّحۡلِ اَنِ اتَّخِذِیۡ مِنَ الۡجِبَالِ
بُیُوۡتًا وَّ مِنَ الشَّجَرِ وَ مِمَّا یَعۡرِشُوۡنَ ﴿۶۸﴾ ثُمَّ كُلِیۡ
مِنۡ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسۡلُكِیۡ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ؕ
یَخۡرُجُ مِنۡۢ بُطُوۡنِهَا شَرَابٌ مُّخۡتَلِفٌ اَلۡوَانُهٗ
فِیۡهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ؕ اِنَّ فِیۡ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّقَوۡمٍ
یَّتَفَكَّرُوۡنَ ﴿۶۹﴾

और आपके रब ने शहद की मक्खी के दिल में ये बात डाली के तू पहाड़ों में और पेड़ों में, और लोग जो इमारतें बनाते हैं उनमें घर बना। फिर हर तरह के मेवे खा, और अपने रब के बनाए रस्ते पर सरलता से चली जा। उसके पेट से पीने की चीज़ निकलती है जिसके विभिन्न रंग हैं, उसमें लोगों के लिये शिफ़ा है, और सोचने वालों के लिये उसमें बड़ी निशानी है। (16:68-69)

अल्लाह तबारक व तआला की रचनाओं में उसके चमत्कारों को ज़ाहिर करने वाली ऐसी चीज़ों में जिन से इंसान को ज़बरदस्त फ़ायदे हासिल होते हैं एक चीज़ शहद है जो मक्खी बनाती है। इस मक्खी को अल्लाह की तरफ़ से यह काम मिला हुआ है कि वह पहाड़ियों और पेड़ों पर या ऐसे भवनों पर जो मक्खियों के आने के लिए लोग बनाएं अपनी स्वभाविक विशेषता से शहद के छत्ते बनाए जिन्हें देख कर इंसान हैरत में पड़ जाता है, फिर इन मक्खियों को यह भी सीख दी गयी है कि अलग अलग तरह के पेड़ों और फूलों से रस चूस कर लाए और तरह तरह के फूलों का शहद उपलब्ध कराए। शहद खाने और उससे दवाएं बनाने का ज्ञान इंसान को प्राचीन काल से है और आधुनिक शोधकर्ताओं ने शहद के गुणों और विशेषताओं को ख़ास तौर से खोल कर रख दिया है।

یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسۡتَمِعُوۡا لَهٗ ؕ
اِنَّ الَّذِیۡنَ تَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ لَنۡ
یَّخۡلُقُوۡا ذُبَابًا وَّ لَوِ اجۡتَمَعُوۡا لَهٗ ؕ وَ اِنۡ
یَّسۡلُبۡهُمُ الذُّبَابُ شَیۡـًٔا لَّا یَسۡتَنۡقِذُوۡهُ
مِنۡهُ ؕ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَ الۡمَطۡلُوۡبُ ﴿۷۳﴾ مَا
قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدۡرِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِیٌّ
عَزِیۡزٌ ﴿۷۴﴾

लोगों! एक मिसाल बयान की जाती है उसे ग़ौर से सुनो, बेशक जिनको तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, वो एक मक्खी भी नहीं पैदा कर सकते, चाहे उसके लिये सबके सब जमा हो जायें, और अगर उनसे मक्खी कोई चीज़ छीन ले जाये तो उससे उसको छुड़ा नहीं सकते, मांगने वाला और मांगा जाने वाला (यानी आबिद व माबूद) दोनों ही कमज़ोर हैं। उन लोगों ने अल्लाह की क़द्र ना की जैसी करना चाहिये थी, अल्लाह यक़ीनन ज़बरदस्त क़ुव्वत वाला ग़ल्बे वाला है। (22:73-74)

यहाँ अल्लाह अपनी इस बात को कि "अल्लाह तआला इस बात से संकोच नहीं करता कि मच्छर या उससे भी तुच्छ किसी चीज़ (जैसे मक्खी या मकड़ी) की मिसाल बयान करे" ज़ाहिर

और पूरा करने के लिए एक बहुत ही महीन और कमज़ोर प्राणी की मिसाल बयान कर रहा है। जो लोग अल्लाह को छोड़ कर देवी देवताओं में विश्वास रखते हैं उन्हें यह आयतें इस बात की तरफ़ ध्यान दिलाती हैं कि जिन को उन्होंने पूज्य बना रखा है वे पैदा करने वाले (सृष्टा) नहीं हैं क्योंकि ये लोग तो मक्खी जैसी एक छोटी सी चीज़ भी नहीं पैदा कर सकते। इसके अलावा, यह तथाकथित देवी देवता अपनी कोई चीज़ भी मक्खी जैसे तुच्छ प्राणी से बचा नहीं सकते, अगर वह उनके ऊपर चढ़ाई गयी कोई चीज़ ले उड़े तो उससे छीन भी नहीं सकते। कितने कमज़ोर हैं यह!

अल्लाह की योजना में उसकी हर रचना और जनतु का एक स्थान और भूमिका है जिसे पूरी सृष्टि की सामूहिक और जटिल व्यवस्था के परिदृश्य में समझा जा सकता है। महीन कीड़े मकोड़े ठीक उसी तरह अल्लाह की शक्ति को ज़ाहिर करते हैं जिस तरह बड़े डील डोल वाले भारी भरकम जानवर करते हैं इस तरह कि यह अपने छोटे से शरीर में जीवन और अस्तित्व बने रहने का पूरा ज़रूरी तंत्र रखते हैं। यह कीड़े मकोड़े जितने हानिकारक लगते हैं उतने ही इंसान के लिए फ़ायदेमन्द भी हो सकते हैं और इसमें इंसान और उसकी बौद्धिकता की परीक्षा है कि वह यह देखे कि उनकी उपयोगिता क्या है और उनके नुक़सान से किस तरह बचा जाए। हमें यह बात अब मालूम है कि एक मक्खी इंसान से उसका स्वास्थ्य छीन सकती है और अपने कीटाणु और वायरस इंसान के शरीर में दाख़िल कर सकती है।

مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ ۚ اِتَّخَذَتْ بَيْتًا ؕ وَ اِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۴۱﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ؕ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۴۲﴾ وَ تِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا يَعْقِلُهَآ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ﴿۴۳﴾

जिन लोगों ने अल्लाह के सिवा और कारसाज़ बना रखे हैं, उनकी मिसाल मकड़ी का मानिंद है जिसने एक घर बनाया, बिला शुबह सब घरोंदों में कमज़ोर घर मकड़ी का होता है, काश ये लोग इस बात को समझ सकते। बेशक अल्लाह जानता है उन सब चीज़ों को जिनको ये अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, और वो ज़बरदस्त और हिकमत वाला है। और ये मिसालें हम लोगों (को समझाने) के लिये बयान करते हैं, और इसको तो अक़्ल वाले ही जानते हैं। (29:41-43)

मकड़ी बहुत महनत और लगातार प्रयास से और बहुत समय लगा कर अपना विशेष घर (जाला) बुनती है। यह एक धागे को कात कात कर अपना जाला बुन्ना शुरू करती है जो हवा से किसी डाली, दीवार या किसी ओर चीज़ पर चिपक जाता है, यह मकड़ी के मकान की ब्रिज लाइन होती है। फिर मकड़ी अपने मकान की फ़ाउण्डेशन लाइनें बनाती है, यह किरण धागे एक दूसरे जुड़े होते हैं और जाले के बीचों बीच में एक अटेचमेण्ट ज़ोन होता है। इसके बाद

मकड़ी एक मचान जैसा सहारा बनाती है जहां से किरण धागे निकलते हैं। अलग अलग तरह के कीड़ों के रेशमी गुदूदों और तारकश अंगों से अलग अलग तरह के रेशम पैदा होते हैं, कुछ रेशम ख़ोल (केचली) बनाते हैं, कुछ रेशमों से अण्डों की झिल्ली, शिकार पकड़ कर रखने का काम लिया जाता है. (दि न्यू कोलम्बिया इन्साइक्लोपीडिया, पेज 2595)।

मकड़ी का घर उसके मक़सद और उसकी ज़रूरत के हिसाब से पूरी तरह फ़िट मालूम होता है, लेकिन प्रकृति की व्यवस्था में मौजूद उसकी सभी शक्तियों और अन्य प्राणियों की अपेक्षा मकड़ी का घर सबसे कमज़ोर होता है। लेकिन फिर भी मकड़ी अपनी दुनिया में मगन और मस्त रहती है और अपनी स्वभाविक प्रवृत्ति के तक़ाज़ों को पूरा करती रहती है और अपनी प्रजाति प्रजनन के लिए उसे जो कुछ बनाने पर लगा दिया गया है उसे बदल नहीं सकती। जो लोग अपने पूर्वजों की मान्यताओं का अनुसरण करते हुए अल्लाह के बजाए देवी देवताओं से मदद मांगने में लगे रहते हैं वे इसी तरह जाल में फंसे हुए हैं। वे अपनी परम्परागत मान्यताओं से हट कर, और पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही आदत पर चलते रहने के अलावा कुछ नहीं देख सकते हालांकि वे इंसान हैं और उनके पास दिमाग़ और बुद्धि है। इस तरह वे इन तुच्छ कीड़ों से कुछ बहतर नहीं हैं जो कोई नई कोशिश और नया अनुभव नहीं कर सकते और उनके जन्मजात स्वभाव उन्हें जहां तक ले जाते हैं उससे आगे वे नहीं जा सकते। ऐसी रोशन मिसालें अल्लाह ने दी हैं जो ''इस बात से संकोच नहीं करता कि मच्छर या उससे भी तुच्छ किसी चीज़ (जैसे मक्खी, मकड़ी वग़ैरह) की मिसाल दे।'' (2:26)। लेकिन इन मिसालों से वही लोग फ़ायदा उठाते हैं जो अपनी अक़ल का इस्तेमाल करते हैं लेकिन "जो लोग काफिर हैं वह कहते हैं कि इस मिसाल से अल्लाह क्या चाहता है?'' (2:26)

# इंसान (मानव जाति)

## (उत्पत्ति)

और जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा, मैं ज़मीन में अपना ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) बनाऊंगा। उन्होंने कहा क्या तू उसको ख़लीफ़ा बनाएगा जो ज़मीन में फ़साद करेगा, और ख़ून ख़राबा करेगा, और हम तेरी महिमा बयान करते हैं। तेरी हम्द (हम्द) के साथ और तेरा नाम जपते हैं, अल्लाह तआला ने फ़रमाया, यक़ीनन मैं वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। और अल्लाह ने आदम को कुल चीज़ों के नाम सिखा दिये, फिर उनको फ़रिश्तों के सामने पेश किया, फिर कहा अब तुम बताओ मुझ को इन चीज़ों के नाम अगर तुम सच्चो हो। तो वो बोले, तू पाक ज़ात है, हम तो कुछ नहीं जानते, बस जो तूने हमें सिखा दिया है, बेशक तू ही ख़ूब जानने वाला हिकमतों वाला है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, ऐ आदम तुम बता दो इन चीज़ों के नाम! फिर जब आदम ने उन चीज़ों के नाम बता दिये तो अल्लाह ने फ़रमाया, कि क्या मैंने तुम से कहा न था कि मैं आसमानों और ज़मीन की गुप्त चीज़ों को जानता हूँ और जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो वो सब जानता हूँ। और जब हमने फ़रिश्तों से कहा के तुम आदम के सामने सज्दा करो, तो वो सब सज्दे में गिर पड़े मगर इब्लीस ने ना किया, और वो काफ़िरों में से हो गया। और हमने कहा, ऐ आदम! तुम और तुम्हारी बीवी बहिश्त में रहो (सहो) और ख़ूब खाओ (पियो) जहाँ से तुम चाहो, और उस पेड़ के पास न जाना, वरना तुम ज़ालिमों में से हो जाओगे। फिर शैतान ने दोनों को डगमगा दिया फिर वहाँ से निकलवा दिया जहाँ वह थे। और हमने कहा, उतर जाओ तुम आपस में एक दूसरे के दुश्मन हो, एक मुद्दत तक तुम्हारा

وَ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّیْ جَاعِلٌ فِی
الْاَرْضِ خَلِیْفَةً ؕ قَالُوْۤا اَتَجْعَلُ فِیْهَا مَنْ
یُّفْسِدُ فِیْهَا وَ یَسْفِكُ الدِّمَآءَ ۚ وَ نَحْنُ نُسَبِّحُ
بِحَمْدِكَ وَ نُقَدِّسُ لَكَ ؕ قَالَ اِنِّیْۤ اَعْلَمُ مَا
لَا تَعْلَمُوْنَ ۝۳۰ وَ عَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ
عَرَضَهُمْ عَلَی الْمَلٰٓئِكَةِ ۙ فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِیْ بِاَسْمَآءِ
هٰۤؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ۝۳۱ قَالُوْا
سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَاۤ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ
الْعَلِیْمُ الْحَكِیْمُ ۝۳۲ قَالَ یٰۤاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ
بِاَسْمَآئِهِمْ ۚ فَلَمَّاۤ اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ ۙ قَالَ
اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّیْۤ اَعْلَمُ غَیْبَ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضِ ۙ وَ اَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَ مَا كُنْتُمْ
تَكْتُمُوْنَ ۝۳۳ وَ اِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ
فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِیْسَ ؕ اَبٰی وَ اسْتَكْبَرَ ۫ وَ كَانَ
مِنَ الْكٰفِرِیْنَ ۝۳۴ وَ قُلْنَا یٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ
وَ زَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَ كُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَیْثُ
شِئْتُمَا ۪ وَ لَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ
الظّٰلِمِیْنَ ۝۳۵ فَاَزَلَّهُمَا الشَّیْطٰنُ عَنْهَا
فَاَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِیْهِ ۪ وَ قُلْنَا اهْبِطُوْا
بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَ لَكُمْ فِی الْاَرْضِ
مُسْتَقَرٌّ وَّ مَتَاعٌ اِلٰی حِیْنٍ ۝۳۶ فَتَلَقّٰۤی اٰدَمُ مِنْ
رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَیْهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ

الرَّحِيْمُ ﴿٣٧﴾ قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ فَإِمَّا
يَأْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَايَ فَلَا
خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِيْنَ
كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ
هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٣٩﴾

ठिकाना और ज़िन्दगी की पूँजी ज़मीन पर है। फिर आदम ने अपने ही रब से तौबा के कुछ अल्फ़ाज़ सीख लिये (और तौबा की) तो अल्लाह ने उनकी तौबा क़ुबूल कर ली, वह तो है ही तौबा क़ुबूल करने वाला (और) बड़ा ही रहम करने वाला। हमने हुक्म दिरया कि तुम यहाँ से उतर जाओ, फिर अगर तुम को मेरी जानिब से कोई हिदायत पहुँचे तो जो कोई मेरी हिदायत पर चलता रहेगा, तो उसको ना कोई डर होगा और न कोई पछतावा। और जो इंकार करेंगे और हमारी आयतों को झूठ जानेंगे, सो वो ही दोज़ख़ी होंगे और उसमें हमेशा पड़े रहेंगे।

(2:30-39)

क़ुरआन में इंसान की पैदाइश यानि पहले इंसान हज़रत आदम और उनकी पत्नि के पैदा होने, जन्नत में उनके निवास और धरती पर उनके आने का जो वर्णन दिया गया है उससे इंसान की प्रकृति के बहुत से महत्वपूर्ण भौतिक व बौद्धिक एवं मानसिक, अध्यात्मिक व नैतिक आयामों का दर्शन होता है। क़ुरआन केवल पूर्व काल का कोई क़िस्सा बयान नहीं कर रहा है बल्कि यह सभी युगों और सभी स्थानों के हर इंसान को स्वयं उसके अपने बारे में उसके इंसानी व्यक्तित्व के सभी पहुलुओं के संदर्भ में, और उसकी समस्त शक्तियों व कमज़ोरियों के हवाले से एक मुस्तक़िल सीख दी रहा है। क्योंकि यह सीख मनुष्य जाति के लिए ज़रूरी है। यह मार्गदर्शन क़ुरआन की 6 सूरतों (अध्यायों) में दिया गया हैः (2:30-39; 3:59; 7:11-27, 172-173; 17:61-65; 18:50; 20:15-127).

हज़रत आदम के पैदा होने की कहानी इंसान के सबसे ख़ास गुण यानि अपनी मर्ज़ी में उसके आज़ाद होने को ज़ाहिर करती है। इंसान की यह क्षमता उसकी अक़ल के इस्तेमाल से क्रियान्वित होती है। इंसान की अक़ल इंसान को किसी मामले में एक से ज़्याद विकल्पों में से किसी एक विकल्प को चुनने का रास्ता सुझाती है, और उसकी क्षमता उस विकल्प को चुन कर उस पर अमल करने का निर्णय लेती है। इस तरह, इंसान के रवैये पर न तो केवल उसकी स्वभाविक प्रवृत्ति और जैविक नियमों को ज़ोर चलता है और न भौतिक नियमों का ही जैसा कि पदार्थ की विशेषता है। फिर यह कि इंसान फ़रिश्तों की तरह भी नहीं है जो अल्लाह के आदेश की पाबन्दी करने पर मजबूर हैं (6:66), क्योंकि इस तरह की मजबूरी इंसान की मर्ज़ी व आज़ादी के विपरीत है। अतः, इंसान के अंदर नेक (सदाचारी) होने और बद (दुराचारी) होने दोनों की सम्भावनाएं मौजूद हैं।'' और इंसानी नफ़्स की क़सम, और उस हस्ती की क़सम जिसने उसको (नफ़्स को) एकसार किया, फिर उसको दुराचार (से बचने) और परहेज़गारी

(करने की) समझ दी'' (91:7-8)।

यह देखने के बाद कि इंसान को किस तरह फ़रिश्तों से भिन्न पैदा कि गया है जिसकी वजह से वह अपनी चयन की आज़ादी की बदौलत सही और ग़लत कुछ भी कर सकता है, फ़रिश्तों की इस चिंता को समझा जा सकता है जो उन्होंने आदम के पैदा होने के समय अल्लाह तआला के सामने सवाल के रूप में इस बात पर व्यक्त की थी कि उसे आज़ाद मर्ज़ी के साथ ज़मीन पर भेजा जा रहा है। कहने लगे कि ''ज़मीन में आप उसे ख़लीफ़ा बनाएंगे जो वहां फ़साद करेगा और ख़ून बहाएगा?'' इस बात को जताने के लिए कि वे केवल मालूम कर रहे हैं, इस इरादे पर कोई आपत्ति नहीं कर रहें हैं कि ऐसा करना उनका काम ही नहीं है, वे अपने सवाल के साथ अपने समपर्ण का भी इज़हार करते हैं कि ''हम आपकी हम्द (वन्दना) के साथ आपका गुणगान करते हैं और आपके पवित्र होने का जाप करते रहते हैं''।

क़ुरआन *नफ़्स लव्वामा* (12:53) *नफ़्स अम्मारा* (89:27), और *नफ़्स मुतमइन्ना* (75:2) का हवाला भी देता है। नफ़्स लव्वामा का अर्थ है मलामत या ग्लानि की आत्म भावनाऐं, *नफ़्स अम्मारा* मतलब है उक्साने वाली आन्तरिक भावना और *नफ़्स मुतमइन्ना* का मतलब है आत्मसंतोष की भावना। क़ुरआन के इन हवालों से इंसान के अन्दर परस्पर विपरीत शक्तियों की मौजूदगी की तरफ़ इशारा होता है, उनमें से किसी को भी कोई व्यक्ति अपने लिए चुन सकता है, और अगर वह अल्लाह के मार्गदर्शन से रोशनी लेता है तो उसे संतोष व शान्ति मिलेगी क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया है कि ''मेरे पास से तुम्हारे पास हिदायत आएगी, तो जो लोग इस हिदायत का अनुसरण करेंगे उन्हें ने कोई डर होगा और न वे दुखी होंगे''। सिग्मण्ड फ्राइड (मृ. 1939) इंसान के अन्दर के इन परस्पर विपरीत बलों के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के संदर्भ में एक दूसरे ढंग से बयान करता है, जिसे मैं यहाँ स्पष्ट करने के मक़सद से बयान कर रहा हूं, तुलना या समानता को बताने के लिए नहीं। सिग्मण्ड फ़्रराइड ने इंसान के व्यक्तित्व को तीन भागों में बांटा हैः ईगो (''ego''), सुपर ईगो (''super ego'') और आईडी (''id'')। आईडी स्वभाविक प्रवृत्तियों का भण्डार है जो इंसान के अवचेतन मन (subconscious) की गहराइयों में मौजूद है और आनन्द के भाव (pleasure principle -आनन्द के सिद्धांत) इस पर छाए हुए होते हैं, यह एक ऐसी चीज़ है जो स्वभाविक शक्तियों से प्राप्त होने वाला सबसे पहला आनन्द या संतोष का भाव है। इसकी एक अति (अन्तिम किनारा) सुपर ईगो है जो घर और समाज और समाज से मिलने वाली शिक्षा व प्रिशक्षण से विक्सित होता है, और एक निगराँ का काम करता है, यह अन्तरात्मा है। फिर ईगो है जिसे फ़्राइड ने आईडी का अंग बताया है जो व्यक्तित्व के बाहर के कारकों के सम्पर्क में आने से हरकत में आता (क्रियाशील होता) है, और उन भावनाओं का जमावड़ा होता है जिसे आम तौर से जागरूकता और बुद्धिमानी कहा जाता है, और तीन परस्पर विरोधी बलों - व्यक्ति के बाहर सामाजिक वातावरण

का दबाव या तथ्यों, यौन इच्छाओं जिन का सम्बंध ''यौन प्रवृत्ति'' से है जिसे फ़्राइड ने विशेष रुप से काम भावना बताया है, लेकिन वह विभिन्न मानवीय स्वभावों से प्रेरित है, और ''सुपर ईगो'' के बीच संतुलन बनाए रखने वाला मानसिक कारक होता है [दि न्यू कालम्बिया ऐन्साइक्लोपीडिया, पेज 2235]। फ़्राइड ने उत्तेजना पर जो इतना अधिक ज़ोर दिया है उसके चलते मनोवैज्ञानिक विशलेषण (psychoanalysis) के अध्ययन में फ़्राइड के इस दर्शन का विरोध और उसे चुनौती दिए जाने के बावजूद उसकी थ्योरियों का गहरा असर मनोविज्ञान शास्त्र, शिशुपालन, शिक्षा, संस्कृति और सामाजिक विज्ञान, औषधि विज्ञान (मेडिकल साइंस) तथा कला के मैदानों पर भी पड़ा है।

इच्छा और चयन की आज़ादी इंसानी अक़्ल के इस्तेमाल से हरकत मे आती है जो बोलने में भी इस्तेमाल होती है और यह बोलना इंसानी क्षमता का एक और गुण है जिसके चलते पूरी दुनिया में अलग अलग तरह की बोलियां और भाषाएं विक्सित हुईं। आदम की पैदाइश के बारे में क़ुरआन ने जो ख़बर दी है उससे इंसान की इस बोलने की क्षमता का हवाला मिलता है कि ''अल्लाह ने आदम को चीज़ों के नाम बताए''। न्यू कोलम्बिया एन्साइक्लोपीडिया के अनुसार, भाषा ''ध्वनि प्रतीकों के एक व्यसवस्थित संचार का नाम है जो इंसान का एक सार्वभौमिक गुण है।''(पेज 1527)। एक लम्बा समय बीत गया जब इंसान ने लिखने का काम शुरू किया था। यह अधिक से अधिक 7900 वर्ष पहले की बात है, लेकिन यह अवधि उस अवधि से बहुत कम है जब से इंसानी बोलियां इस ज़मीन पर बोली जा रही हैं। प्राचीन संस्कृतियों वाले लोग आज भी जो बोलियां बोलते हैं और जिस जिस तरह की बोलियां अब हमारी जानकारी में हैं या पहले ज़माने के रिकॉर्ड से मालूम होती हैं, जिन्हें फर्ज़ी तरीक़े से नई पहचान दे दी गयी है, वह बहुत जटिल संस्कृतियों वाले लोगों की तरह ही बहुत कठिन हैं और स्वभाविक रूप से ही प्रयोग होती हैं। इंसानी बोली एक ऐसी प्रक्रिया है जो जानवरों की तरह केवल मुंह से आवाज़ निकालने से बिल्कुल भिन्न है। बोली या बातचीत में सुर बनाने और आवाज़ को फैलाने, गूंज पैदा करने वाले एक तंत्र की, और ध्वनि को इस तरह क्रम में रखने की एक प्रक्रिया की ज़रूरत होती है जो किसी विशेष इंसानी समूह के लिए विशेष अर्थ देने वाले उन ध्वनि प्रतीकों में ढल जाए जिनसे उनकी बोली बनती है। भाषा का उपयोग मस्तिष्क की कुछ निर्धारित क्रियाओं से सम्भव होता है जैसे विचार का पैदा होना, बोध करना, शब्दों को सुरक्षित रखना और उनका मौजूद होना, विचार व्यक्त करने के लिए अक्षर चुनना और उन अक्षरों को एक क्रम के साथ व्यक्त करना जिससे संचार का उद्देश्य पूरा हो (Academic American Encyclopedia] ( "Speech"), Vol. 18] P. 173).

अतः, इंसानी अक़्ल इंसानी बातचीत और अभिव्यक्ति के लिए एक अनिवार्य अंग है। आत्म अभिव्यक्ति की क्षमता इंसान की भौतिक और मानसिक शक्ति को दर्शाती है, और यह क्षमता

लिखने लिखाने से और ज़्यादा बढ़ती है। क़ुरआन यह बताता है कि "अल्लाह ने इंसान को पैदा किया और उसे बोलना सिखाया।" (55: 3-4)। आम तौर से यह कहा जाता है कि भाषा का उत्पादन (बोलने की प्रक्रिया) तीन तत्वों पर आधारित है: चयन, संतुलन और क्रम (लैंग्वेज एण्ड लिट्रेचर, एकेडमिक अमेरिकन एन्साइक्लोपीडिया, खण्ड 12, पेज 196-197)

ऐसी शरीरिक, बौद्धिक और मानसिक व नैतिक योग्यताओं और उनके बीच आपसी तालमेल से इंसानी व्यक्तित्व सम्पूर्ण रूप से सामने आता है, और अल्लाह की रचनाओं में इंसान का सबसे प्रतिष्ठित होना ज़ाहिर है। अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को आदम के आगे झुक जाने का आदेश देकर इंसान की इस प्रतिष्ठा को उजागर किया था। लेकिन इबलीस यानी शैतान के ज़रिए ना फ़रमानी किए जाने के कारण इंसान से उसकी हमैशा की दुशमनी शुरू हो गयी और इंसान की प्रतिष्ठा से जलन के चलते उसकी प्रतिष्ठा को ख़त्म करने के लिए वह हमैशा सक्रिय रहता है, और इस प्रयास में वह इंसान की उन कमज़ोरियों और नैतिक कमियों को निशाना बनाता है जो इंसान के अंदर उसकी योग्यताओं और सदाचार के साथ साथ डाल दी गयी हैं (इंसान को ज़लील करने के लिए शैतान के लगातार प्रयासों का नमूना देखने के लिए देखें आयतें 7:16-18; 17:61-65; 38:79-85)

बुराई की तरफ़ लेजाने की शैतान की प्रेरणा पहले इंसानी जोड़े (आदम व हव्वा) से शुरू हुई जिसे जन्नत के सभी पेड़ों के फल खाने की इजाज़त दी गयी थी, सिवाय एक के: *"तो शैतान दोनों को बहकाने लगा ताकि उनके सतर (छुपाने के अंग) को जो उनसे गुप्त रखी गयी थी, खोल दे और कहने लगा कि तुम्हें तुम्हारे रब ने इस पेड़ से केवल इस लिए मना किया है कि तुम फ़रिश्ते न बन जाओ या हमैशा जीते न रहो। और उनसे क़सम खाकर कहा कि मैं तो तुम्हारा भला चाहने वाला हूं। ग़रज़ धोखा देकर उनको (नाफ़रमानी की तरफ़) खींच लिया फिर जब उन्होंने उस पेड़ (के फल) को खा लिया तो उनके सतर के अंग खुल गए और वे जन्नत (के पेड़ों) के पत्ते (तोड़ तोड़ कर) अपने ऊपर चिपकाने लगे और सतर छिपाने लगे। तब उनके रब ने उन को पुकारा कि क्यां मैं ने तुम्हें इस पेड़ के पास जाने से मना नहीं किया था और बता नहीं दिया था कि शैतान तुम्हारा खुला दुशमन है। कहने लगे कि पालनहार हमने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया और अगर तू हमें नहीं बख़्शेगा और हम पर रहम नहीं करेगा तो हम तबाह हो जाएंगे। अल्लाह ने फ़रमाया कि तुम सब जन्नत से उतर जाओ अब से तुम एक दूसरे के दुशमन हो और तुम्हारे लिए एक निर्धारित समय तक ज़मीन पर ठिकाना और जीवन का सामान कर दिया गया है। कहा कि इसी में तुम्हारा जीना होगा और इसी में मरना और इसी में क़ियामत को ज़िन्दा करके निकाले जाओगे।"* (7: 20-25)। *"और हमने पहले आदम की संतान से शपथ ली थी मगर वे उसे भूल गए और हमने उनमें सब्र और टिकाऊपन नहीं देखा।"* (20:115)

"फिर हमने फ़रमाय कि आदम, यह तुम्हारा और तुम्हारी पत्नि का दुशमन है तो यह कहीं तुम दोनों को जन्नत से न निकलवा दे कि फिर तुम तकलीफ़ में पड़ जाओ। यहाँ तुम को यह (सहूलत) है कि न भूखे रहोगे, न नंगे (और यह कि) न प्यासे रहो और न धूप खाओ। तो शैतान ने उनके दिल में वसवसा (बुरा विचार) डाला (और) कहा कि आदम भला मैं तुम्हें पेड़ बताऊं अमर जीवन का और कभी समाप्त न होने वाली बादशाहत। तो दोनों ने उस पेड़ का फल खा लिया तो उन पर उनके सतर खुल गए और वे अपने (शरीर) पर जन्नत के पत्ते चिपकाने लगे और आदम ने अपने रब के आदेश के ख़िलाफ़ किया तो वे भटक गए। फिर उनके रब ने उन पर महरबानी की और सीधी राह बताई। फ़रमाया कि तुम दोनों यहाँ से नीचे उतर जाओ तुम में कुछ लोग कछु लोगों के दुशमन (होंगे) फिर अगर मेरी तरफ़ से तुम्हारे पास हिदायत आए तो जो कोई मेरी हिदायत पर चलेगा वह न गुमराह होगा और न तकलीफ़ में पड़ेगा। और जो मेरी नसीहत से मुंह फेरेगा उसका जीवन तंग हो जाएगा और क़ियामत को हम उसे अंधा करके उठाएंगे। वह कहेगा कि मेरे रब तू ने मुझे अंधा क्यों उठाया, मैं तो देखता भालता था। अल्लाह फ़रमाएगा कि ऐसा ही (होना था) तेरे पास हमारी आयतें आईं तो तूने उनको भुला दिया, इसी तरह आज हम तुझे भुला देंगे।" (20: 117-126)।

क़ुरआन में आदम और उनकी पत्नि दोनों को अल्लाह ने ज़िम्मेदार इंसान के रूप में बराबर से सम्बोधित किया है "और हमने आदम से कहा कि तुम और तुम्हारी पत्नि जन्नत में रहो सहो और जहां से चाहो खाओ मगर उस पेड़ के पास न जाना वरना पापी हो जाओगे"(19:7)। इस तरह शैतान के बहकावे में आ जाने और वर्जित पेड़ का फल खाने के ज़िम्मेदार दोनों हुए: "तो शैतान दोनों को बहकाने लगा कि उनके सतर के अंग जो उनसे छिपे थे खोल दे " (7:20) लेकिन फिर दोनों ने ही तौबा की और दोनों की तौबा क़ुबूल कर ली गयी। इसलिए इस्लामी अक़ीदे में कथित असली ग़लती के लिए कोई जगह नहीं है: "उन दोनों ने जवाब दिया कि पालनहार हमने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया और अगर तू हमें नहीं बख़्शेगा और हम पर रहम नहीं करेगा तो हम तबाह हो जाएंगे"। (7: 23)

आदम को यह सिखाया गया कि वह अल्लाह से किस तरह मआफ़ी मांगें कि उनकी तौबा क़ुबूल हो और तौबा क़ुबूल करने वाले महरबान व दयाशील रब ने यह स्पष्ट कर दिया कि इंसान से जिसके अंदर उसकी ख़ूबी और बुराई डाल दी गयी है। (91:8), ग़लती होना स्वभाविक है, लेकिन ग़लती करने वाले इंसान को चाहिए कि वह तौबा करे और अपनी ग़लती मआफ़ कराने के लिए ग़लत काम से रुक जाए और अल्लाह ही तौबा क़ुबूल करने वाला है। पहले इंसानी जोड़े के बारे में यह जानकारी देकर हमें यह सिखाया गया है कि इंसान से ग़लती हो सकती है और उसके के लिए तौबा का दरवाज़ा खुला है, और यह कि अल्लाह मआफ़ करने वाला है। अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक हदीस से पता चलता है कि

तमाम इंसान ग़लती करने वाले हैं और सबसे अच्छा ग़लती करने वाला वह है जो तौबा करे
(हवालाः इब्ने हंबल, तिरमिज़ी, इब्ने माजा और अल्हाकिम)

पहले दो इंसानों के बारे में जिनसे इंसानी प्रजाति का सिलसिला चला हैं, क़ुरआन के ये बयान इंसान के अन्दर अज्ञात को जानने की जिज्ञासा, अमर जीवन प्राप्त करने की इंसान की लालसा और अपना ज़ोर चलाने की भावना को बहुत बारीकी के साथ उजागर करते हैं। यह स्वभाविक प्रवृत्तियां वे कमज़ोर बिन्दू हैं जिन के कारण इंसान ठोकर खा सकता है और शैतान की प्रेरणा अपना काम कर सकती है, उन ग़लतकार इंसानों की कोशिशों से जो शैतानी ताक़तों के साथ मिल कर बुराई का गठजोड़ क़ायम करते हैं। "और इसी तरह हमने शैतानी (स्वभाव वाले) इंसानों और जिनों को हर पैग़म्बर का दुश्मन बना दिया था, वो धोखा देने के लिए एक दूसरे के दिल में लालसा की बातें डालते रहते थे, और अगर तुम्हारा रब चाहता तो वो ऐसा न करत" (6:112, तथा देखें 6:128; 72:6)। अल्लाह तआला के मार्गदर्शन में मानसिक, बौद्धिक और सामाजिक रूप से इंसान की कमज़ोरियों की रिआयत की गयी है क्योंकि इस मार्गदर्शन के द्वारा इंसानी स्वभाव ख़ास तौर से इंसान के अध्यात्मिक वजूद का सही ज्ञान दिया गया है, इस दुनिया के लिए भी और आने वाले वास्तविक कभी समाप्त न होने वाले जीवन के लिए भी। इंसान को अपनी प्रतिष्ठा और विशिष्टता प्राप्त करने के लिए जो मौक़ा दिया गया है उसका मार्गदर्शन भी दिया गया है, और उस मार्गदर्शक शिक्षा का मक़सद एक ऐसा समाज बनाना है जहां इंसान को अपनी कमज़ोरियों और शैतानी प्रेरणा से लड़ने के लिए एक दूसरे की नैतिक सहायता प्राप्त हो। *"और जो आगे बढ़ने वाले हैं (उनका क्या कहना) वह आगे ही बढ़ने वाले हैं, वही (अल्लाह के) क़रीबी हैं, नेअमत की जन्नतों में।"* (56:10-12); *"और आपस में (एक दूसरे को) हक़ (बात) की ताकीद करते हैं और सब्र की प्रेरणा देते हैं।"* (103:3)।

हर इंसान को अपनी स्वभाविक इच्छाओं को उचित ढंग से पूरा करने के लिए अपनी पसन्द तय करने में अपनी अक़ल को इस्तेमाल करना होता है। इंसान को ज़मीन पर लाकर बसाया गया है और स्वयं को तरक़्क़ी देने लिए ज़िम्मेदार बनाया गया है, न केवल अपने आप को तरक़्क़ी देने बल्कि ज़मीन और उसके चारों तरफ़ फैली हुई सृष्टि को अपनी बौद्धिक योग्यताओं से विक्सित करने का ज़िम्मेदार बनाया गया है। इंसान की बुद्धिमता (अक़लमन्दी) और चयन की आज़ादी, उसकी अध्यात्मिक, मानसिक व नैतिक क्षमताओं और जानने व प्रतिष्ठा प्राप्त करने की स्वभाविक प्रवृत्तियों के लिए मार्गदर्शन करती है। इंसान की यह व्यक्तिगत ख़ूबियां ही हैं जिनके रहते इंसान की भावी पीढ़ियों को ज़मीन का वारिस बनाया गयाः *"उसी ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया और उसमें आबाद किया।"* (11:16)।

इस भारी ज़िम्मेदारी और उसके तक़ाज़ों के आधार पर इंसान को उसकी सभी सकारात्मक और नकारात्मक योग्यताओं और ऊंचाइयों व गहराइयों के साथ अपनी मर्ज़ी और पसन्द को काम में लाने का मौक़ा हमैशा मिला हुआ है। क़ुरआन यह बताता है कि यौन उत्तेजना किस तरह इंसान को ग़लत काम की तरफ़ ले जा सकती है, और इंसान की इन कमज़ोरियों को शैतान किस तरह इंसान के अहम को क्षति पहुंचाने के लिए इस्तेमाल करता है: *"ऐ बनी आदम (आदम की संतानों) शैतान तुम्हें बहका न दे जिस तरह तुम्हारे मां बाप को (बहकाकर) जन्नत से निकलवा दिया और उन से उन के कपड़े उतरवा दिए ताकि उनके सतर उनको खोल कर दिखा दे, वह और उसके भाई तुम्हें ऐसी जगह से देखते रहते हैं जहां से तुम उनको नहीं देख सकते। हमने शैतानों को उन्ही लोगों का साथी बनाया है जो ईमान नहीं रखते।"* (7:27)

महिलाओं और पुरुषों के बीच शरीरिक आकर्षण, और फिर उसके साथ यौन क्रियाओं का उक्सावा इंसानों को बुराई में लिप्त कर देता है: *"और ऐ मुहम्मद सल्ल. इन को आदम के दो बेटों का हाल पढ़ कर सुना दो कि जब उन दोनों ने (अल्लाह के सामने) कुछ नज़राने पेश किए तो एक का नज़राना तो क़ुबूल हो गया और दूसरे का क़ुबूल न हुआ तो कहने लगा कि मैं तुझे क़त्ल कर दुंगा, उसने कहा कि अल्लाह परहेज़गारों (अल्लाह से डरने वालों) का ही नज़राना क़ुबूल करता है। और अगर तू मुझे क़त्ल करने के लिए मुझ पर हाथ चलाएगा तो मैं तुझे क़त्ल करने के लिए तुझ पर हाथ नहीं चलाउंगा, मुझे तो अल्लाह सारे जहानों के पालनहार से डर लगता है। मैं चाहता हूं कि तू मेरे और अपने गुनाह समेट ले फिर नरक वालों में मिल जा और ज़ालिमों की यही सज़ा है। मगर उसके अहं ने उसे भाई की हत्या करने पर ही उक्साया तो उसने हत्या कर दी और नुक़सान उठाने वालों में हो गया। अब अल्लाह ने एक कौवा भेजा जो ज़मीन कुरेदने लगा ताकि उसे दिखाए कि अपने भाई का शव कैसे छिपाए। कहने लगा अफ़सोस मुझ से इतना भी न हो सका कि इस कौवे के समान ही होता ताकि अपने भाई के शव को छिपा देता, फिर वह शर्मिंदा हुआ।"* (5: 27-31)।

अल्लाह पर और आख़िरत के अनन्त जीवन पर ईमान और अल्लाह की हिदायत को अपनाने से इंसान को दुनिया के इस जीवन में काम करने में सहायता मिलती है और फिर अल्लाह का और नैतिकता में यक़ीन रखने वाले इंसानों का साथ भी उसे प्राप्त होता है, क्योंकि हर आदमी को मरने के बाद के जीवन की चिंता होती है और दूसरों के साथ अपने सम्बंधों की रोशनी में वह अल्लाह से अपने सम्बंध की समीक्षा करता रहता है। इन ईमान वालों के लिए इंसानी और प्राकृतिक संसाधनों का विकास कामयाबी के घमण्ड या नाकामी की निराशा से प्रभावित हुए बिना जारी रहता है: *"ऐ ईमान वालो डटे रहो और जमे रहो और अल्लाह से डरते रहो ताकि फ़लाह प्राप्त हो।"* (3:200)।

और हम ने तुमको पैदा किया, फिर हमने ही तुम्हारी सूरत बनाई, फिर हम ही ने फ़रिश्तों से कहा के आदम को सज्दा करो, सो सब ने सज्दा किया, मगर इबलीस ने ना किया, वो सज्दा करने वालों में ना हुआ। अल्लाह ने पूछा, तुझको किस ने रोका के सज्दा ना किया जबकि मैं तुझको हुक्म दे चुका था, उसने कहा, मैं इससे बेहतर हूं, आपने मुझको आग से पैदा किया और इसको आपने मिटटी से पैदा किया। अल्लाह ने कहा तू आसमान से उतर जा, तुझको कोई हक़ हासिल नहीं कि तू घमण्ड करे, आसमान में रह कर, सो निकल जा, बेशक तू ज़लीलों में शुमार होगा। तो उसने कहा, मुझे मोहलत दीजिये क़ियामत तक। अल्लाह ने कहा के तुझ को मोहलत है। उसने कहा के इस वजह से कि आपने मुझको गुमराह किया है मैं क़सम खाता हूं कि मैं उनके लिए आपकी सीधी राह पर बैठूंगा। फिर मैं उन पर हमला करूंगा उनके आगे से भी पीछे से भी, और उनके दाहिनी ओर से भी और बायें ओर से भी, और उनमें अधिकतर को आप आभारी नहीं पायेंगे। अल्लाह ने कहा के तू यहां से निकल जा ज़लीलों ख़्वार, जो उनमें से तेरा कहना मानेगा तो मैं ज़रूर तुम सबसे जहन्नुम को भर दूंगा। और ऐ आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी जन्नत में रहो, फिर जिस जगह से चाहो तुम दोनों खाओ, लेकिन उस पेड़ के पास मत जाना, वरना तुम ज़ालिमों में से हो जाओगे। फिर शैतान ने उन दोनों के दिल में वसवसा डाला, ताकि उनके पर्दे का बदन दोनों के सामने ज़ाहिर कर दे जो एक दूसरे से छिपा हुआ था, और कहने लगा के तुम्हारे रब ने तुम दोनों को उस पेड़ से मना न किया था केवल इसलिए के तुम फ़रिश्ते बन जाओ या हमेशा ज़िन्दा रहने वालों में हो जाओ। और उन दोनों से क़समें खाईं के यक़ीन जानिये के मैं तुम दोनों का ख़ैर ख़्वाह हूं। फिर उन दोनों को धोके से नीचे ले आया,

وَ لَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا
لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ۖ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ
اِبْلِيْسَ ؕ لَمْ يَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿۱۱﴾
قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ؕ
قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِيْ مِنْ
نَّارٍ وَّ خَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ﴿۱۲﴾ قَالَ
فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ اَنْ تَتَكَبَّرَ
فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿۱۳﴾
قَالَ اَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿۱۴﴾
قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿۱۵﴾ قَالَ فَبِمَآ
اَغْوَيْتَنِيْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ
الْمُسْتَقِيْمَ ﴿۱۶﴾ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ
اَيْدِيْهِمْ وَ مِنْ خَلْفِهِمْ وَ عَنْ
اَيْمَانِهِمْ وَ عَنْ شَمَآئِلِهِمْ ؕ وَ لَا
تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ﴿۱۷﴾ قَالَ اخْرُجْ
مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ؕ لَمَنْ
تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ
اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۸﴾ وَ يٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَ
زَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَ
لَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ
الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۹﴾ فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ
لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ
سَوْاٰتِهِمَا وَ قَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا
عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّآ اَنْ تَكُوْنَا
مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ﴿۲۰﴾

وَ قَاسَمَهُمَآ اِنِّیْ لَكُمَا لَمِنَ
النّٰصِحِیْنَ ﴿۲۱﴾ فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا
ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَ
طَفِقَا یَخْصِفٰنِ عَلَیْهِمَا مِنْ وَّرَقِ
الْجَنَّةِ ؕ وَ نَادٰىهُمَا رَبُّهُمَآ اَلَمْ
اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَ اَقُلْ
لَّكُمَآ اِنَّ الشَّیْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ
مُّبِیْنٌ ﴿۲۲﴾ قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ۖ
وَ اِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَ تَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ
مِنَ الْخٰسِرِیْنَ ﴿۲۳﴾ قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ
لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَ لَكُمْ فِی الْاَرْضِ
مُسْتَقَرٌّ وَّ مَتَاعٌ اِلٰی حِیْنٍ ﴿۲۴﴾ قَالَ فِیْهَا
تَحْیَوْنَ وَ فِیْهَا تَمُوْتُوْنَ وَ مِنْهَا
تُخْرَجُوْنَ ﴿۲۵﴾ یٰبَنِیْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا
عَلَیْكُمْ لِبَاسًا یُّوَارِیْ سَوْاٰتِكُمْ وَ
رِیْشًا ؕ وَ لِبَاسُ التَّقْوٰی ۙ ذٰلِكَ خَیْرٌ ؕ
ذٰلِكَ مِنْ اٰیٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ
یَذَّكَّرُوْنَ ﴿۲۶﴾ یٰبَنِیْٓ اٰدَمَ لَا یَفْتِنَنَّكُمُ
الشَّیْطٰنُ كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَیْكُمْ مِّنَ
الْجَنَّةِ یَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِیُرِیَهُمَا
سَوْاٰتِهِمَا ؕ اِنَّهٗ یَرٰىكُمْ هُوَ وَ قَبِیْلُهٗ
مِنْ حَیْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا
الشَّیٰطِیْنَ اَوْلِیَآءَ لِلَّذِیْنَ لَا
یُؤْمِنُوْنَ ﴿۲۷﴾ وَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً
قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَیْهَآ اٰبَآءَنَا وَ اللّٰهُ

फिर उन दोनों ने जो पेड़ को चखा तो दोनों के पर्दे का बदन एक दूसरे के सामने खुल गया, और दोनों जन्नत के पत्ते जोड़ जोड़ कर अपने ऊपर रखने लगे, और उनके रब ने उनको पुकारा क्या मैंने तुम दोनों को उस पेड़ से मना ना किया था, और ये ना कह चुका था के ये शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है। दोनों ने कहा के ऐ हमारे रब! हमने अपने ऊपर जुल्म किया और अगर आप हमें ना बख़्शेंगे और हम पर रहम ना फ़रमायेंगे तो हम तो फिर ज़रूर तबाह हो जायेंगे। अल्लाह ने फ़रमाया कि तुम ऐसी हालत में नीचे उतर जाओ कि तुम आपस में एक दूसरे के दुश्मन रहोगे, और तुम्हारे लिये ज़मीन पर रहने की जगह है, और एक मुद्दत तक रहने का सामान है। अल्लाह ने फ़रमाया के अब तुमको वहीं ज़िन्दगी गुज़ारनी है और वहीं मरना है, और वहीं से फिर निकाले जाओगे। ऐ आदम की औलाद! हमने तुम्हारे लिये उतारा है लिबास जो तुम्हारे पर्देदार बदन को ढांकता है, और साज सज्जा की चीज़ है और तक़वे का लिबास उससे बढ़ कर है, ये अल्लाह की निशानियों में से है ताकि लोग अल्लाह को याद रखें। ऐ औलादे आदम! शैतान तुम को कहीं किसी फ़ितने में न डाल दे जैसे उसने तुम्हारे दादा और दादी को जन्नत से निकलवा दिया था इस हालत में कि उनका लिबास भी उनसे उतरवा दिया, ताकि उनके पर्दे का बदन भी उनको दिखाई देने लगे, वो और उसका लश्कर तुमको इस तरह देखता है के तुम उनको नहीं देखते हो, हम शैतानों को उन ही लोगों का दोस्त होने देते हैं जो ईमान नहीं लाते। और जब ये कोई घटिया काम करते हैं तो कहते हैं के हमने अपने बाप दादा को इसी तरीक़े पर देखा है, और अल्लाह ने भी हमको इसी का हुक्म दिया है, आप फ़रमा दीजिये के अल्लाह घटिया बात की तालीम नहीं दिया करता। क्या तुम अल्लाह के ज़िम्मे ऐसी बात लगाते हो जिसकी प्रमाण तुम नहीं

اَمَرَنَا بِهَا ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ
بِالْفَحْشَآءِ ؕ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا
تَعْلَمُوْنَ ﴿۲۸﴾ قُلْ اَمَرَ رَبِّىْ بِالْقِسْطِ ۟ وَ
اَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّ
ادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۬ؕ كَمَا
بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ؕ﴿۲۹﴾ فَرِيْقًا هَدٰى وَ
فَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ؕ اِنَّهُمُ
اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
وَ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿۳۰﴾
يٰبَنِىْۤ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ
مَسْجِدٍ وَّ كُلُوْا وَ اشْرَبُوْا وَ لَا تُسْرِفُوْا ۚ
اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ۠﴿۳۱﴾ قُلْ مَنْ
حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِىْۤ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَ
الطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ؕ قُلْ هِىَ لِلَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ
الْقِيٰمَةِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ
يَّعْلَمُوْنَ ﴿۳۲﴾ قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّىَ
الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَ مَا بَطَنَ وَ
الْاِثْمَ وَ الْبَغْىَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَ اَنْ
تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا
وَّ اَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۳﴾
وَ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ
لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّ لَا
يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿۳۴﴾ يٰبَنِىْۤ اٰدَمَ اِمَّا
يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ

रखते। आप ये फ़रमा दीजिये के मेरे रब ने इन्साफ़ करने का हुक्म दिया है, और ये भी हुक्म दिया है कि हर इबादत के वक़्त तुम अपना रुख़ सीधा कर लिया करो और अल्लाह की इबादत भी ख़ालिस अल्लाह ही के लिए किया करो, अल्लाह ने जिस तरह तुमको शुरू में पैदा किया था उसी तरह तुम दोबारा भी पैदा होंगे। कुछ लोगों को अल्लाह ने हिदायत दी है और कुछ पर गुमराही साबित हो चुकी है, उन लोगों ने अल्लाह को छोड़ कर शैतान को अपना दोस्त बनाया है और ख़्याल करते हैं के हम सीधे रास्ते पर हैं। ऐ आदम की संतान! हर नमाज़ के समय अपना परिधान (लिबास) धारण करो और खाने की चीज़ें खाया करो, और पीने की चीज़ें पिया करो, मगर हद से ज़्यादा नहीं। बेशक अल्लाह हद से ज़्यादा (खाने पीने वालों) वालों को पसन्द नहीं करता। आप फ़रमा दीजिये कि अल्लाह का लिबास जो उसने अपने बन्दों के लिए बनाया है, और खाने पीने की हलाल और पाक चीज़ों को किस ने हराम किया है, आप ये भी फ़रमा दीजिये के ये चीज़ें ईमान वालों के लिए हैं इस दुनिया की ज़िन्दगी में, (और) क़यामत के रोज़ ख़ास उनके ही लिए है। इसी तरह हम तमाम आयात समझने वाली के लिए साफ़ साफ़ बयान कर देते हैं। आप फ़रमा दीजिये के मेरे रब ने घटिया बातों को हराम किया है, जो खुली हों वो भी और जो छिपी हैं वो भी, और हर गुनाह को और नाहक़ ज़ुल्म करने को और इस बात को कि तुम अल्लाह के साथ ऐसी चीज़ को शरीक करो जिसकी सनद उसने नहीं उतारी और इस बात को कि ऐसी बात अल्लाह के ज़िम्मे लगा दो जिसका प्रमाण तुम्हारे पास न हो। और हर क़ौम के लिए एक निर्धारित मुद्दत है, सो जब उनका वो समय आ जाए, उस वक़्त एक क्षण भी पीछे हट ना सकेंगे और ना आगे बढ़ सकेंगे। ऐ औलादे आदम! जब तुम्हारे पास तुम ही में से रसूल आयें जो

عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ ۙ فَمَنِ اتَّقٰى وَ اَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ لَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَ اسْتَكْبَرُوْا عَنْهَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٣٦﴾

मेरी आयतें तुम्हें सुनाएँ तो जो कोई अल्लाह से डरे और अपना सुधार कर ले तो ना तो उनको डर होगा और ना वो दुखी होंगे। और जो लोग हमारे अहकाम को झूटा कहेंगे और उससे घमण्ड करेंगे तो वो दोज़ख वाले होंगे हमेशा हमेशा उसमें रहेंगे। (17:11-36)

इन आयतों में से पहली पन्द्रह आयतें आदम की पैदाइश के उस बयान से सम्बंधित हैं जो इससे पहले दी गयी आयतों (2: 30-39) में आया था, लेकिन यहाँ इस मामले के दूसरे पहलू पर ज़ोर दिया गया है। पिछली आयतों में इंसान के वजूद व व्यक्तित्व पर रोशनी डाली गयी थी, जबकि इन आयतों में शैतान के बहकावों और फुसलावों के बारे में और अधिक जानकारियां दी गयी हैं, कि शैतान ने किस तरह हज़रत आदम व हव्वा को बहकाया और इस पहले इंसानी जोड़े और उसके साथ शैतान व उसकी पीढ़ी को ज़मीन पर भेजे जाने के बाद इंसानी प्रकृति और इंसानी जीवन पर शैतान की इन प्रेरणाओं के क्या प्रभाव पड़े। इन आयतों (7:11-25) की तफ़सीर के लिए पिछली आयतें (2:30-39) की तफ़सीर देखें)।

इंसान की योग्ताओं और उसकी नाकामियों के बारे में हज़रत आदम के क़िस्से से जो सीख मिलती है वह क़ुरआन में बयान किए गए इस क़िस्से के विभिन्न पहलुओं में देखी जा सकती हैं। सबसे पहले यह कि उपरोक्त आयतें जुनून और ख़ब्त, और शरीरिक व मानसिक रूप से यौन छेड़छाड़ की कोशिशों के बारे में होशयार करती हैं ख़ास तौर से शरीर के यौन आकर्षण को प्रदर्शित करके यौन उत्तेजना पैदा करने की हरकत के बारे में ख़बरदार करती हैं। मर्दों व औरतों दोनों को ख़बरदार किया गया है कि *"ऐ आदम की संतान, शैतान तुम्हें बहका न दे, जिस तरह तुम्हारे मातापिता को (बहकाकर) जन्नत से निकलवा दिया और उनसे उनके कपड़े उतरवा दिए ताकि उनके सतर उन को खोल कर दिखा दे"* (7:27)। दूसरे यह कि क़ुरआन इस सच्चाई को उजागर करता है कि शैतान ऐसा दुशमन नहीं है जो इंसान को ज़ाहिरी तौर पर और पूरी तरह नज़र आए, बल्कि वह छुपा हुआ दुशमन है और उसकी योजनाएं ख़ुद इंसान की अपनी कमज़ोरियों और ज़िम्मेदारियों के माध्यम से पूरी होती हैं। इसका मतलब यह है कि वह इंसान की नफ़्स के अन्दर से काम करता है और यह किसी के ख़िलाफ़ लड़ने का सब से ख़तरनाक तरीक़ा है: *"वह और उसके भाई तुम को ऐसी जगह से देखते रहते हैं जहां से तुम उनको नहीं देख सकते। हमने शैतानों को उन्ही लोगों का साथी बनाया है जो ईमान नहीं रखते।"* (7: 27)।

नज़र आने वाला इंसान और दिखाई न देने वाले शैतान दोनों ही व्यक्ति को इस धोखे में डालते हैं कि मेरी ख़ताएं अल्लाह की मर्ज़ी से हैं क्योंकि अल्लाह ने ही ख़ताएं होने की सम्भावना खुली रखी है। लेकिन क़ुरआन इस बात पर ज़ोर देता है कि व्यक्ति को कर्म की आज़ादी और आम सूझबूझ प्राप्त है इसलिए सही या ग़लत काम करने का फ़ैसला करने की ज़िम्मेदारी व्यक्ति की अक़ल पर है। अन्धी नक़्क़ाली करने के लिए कोई बहाना नहीं है क्योंकि दूसरों के पीछे चलने का रुजहान व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी के मक़सद को समाप्त कर देता है जिसके आधार पर ही फ़ैसले वाले दिन व्यक्तियों का फ़ैसला होगा (देखें आयतें 6:94; 19:80,95; 52:21; 74:38;2:6,16,167,170; 14:21; 33:67,68; 34:31-33; 40:47,48;)। अल्लाह तआला अपनी कृपा से और हर त्रुटि से मुक्त होने के आधार पर किसी भी तरह से ग़लतकारी या ख़ताकारी की ताकीद नहीं करता, इस तरह की बातें अल्लाह के संदर्भ में इंसान की जिहालत और मूर्खता को साबित करती हैं। अल्लाह तआला तो इंसाफ़ और नेकी और अपनी इबादत का हुक्म देता है, इसलिए इंसान को नुक़सान में पड़ने से बचना चाहिए और झूठे ख़ुदाओं और इंसानी व जिन्नी शैतानों के धोखे से बचना चाहिए। आख़िरत की ज़िन्दगी में हर एक को उन्हीं कामों का बदला मिलेगा जो उसने दुनिया के इस जीवन में किए होंगे। अल्बत्ता, अल्लाह की हिदायत का मक़सद इंसान को इस दुनिया की ख़ुशियों से वंचित करना नहीं है, जब तक वह नुक़सान का कारण न बनें या बे शर्मी की हरकतों से प्राप्त होने वाला आनन्द न हो, किसी नाइंसाफ़ी वाले काम से हासिल न हों या अनुचित न हों, क्योंकि अल्लाह तआला की हिदायत इंसान के फ़ायदे और सकरात्मक विकास के लिए है, न कि उनकी स्वभाविक प्रवृत्तियों को दबाने के लिए और दुनिया के इस जीवन से उन्हें अलग थलग कर देने के लिए। इस दुनिया की जायज़ ख़ुशियों को इंसान के लिए अल्लाह ने कभी हराम नहीं किया, क्योंकि वही तो है जिसने इन नेअमतों को प्राथमिकता के साथ इंसान के लिए ही पैदा किया है और इसानों के लिए उन्हें जायज़ किया है (2:229; 45:13)। ख़ूबसूरत लिबास और मज़ेदार खाने व पीने की चीज़ें इंसान के लिए जायज़ है अगर वे फ़ायदेमन्द और स्वास्थदायक हों और उन्हें व्यर्थ किए बिना ही इस्तेमाल किया जाए। लेकिन इस दुनिया की ख़ुशियों और नेअमतों के समेटने में तो सभी लोग शरीक हैं (11:15; 17:18-20), मगर आख़िरत के जीवन में यह नेअमतें केवल उन्ही लोगों को मिलेंगी जो इन पर ईमान लाए होंगे और दुनिया में अच्छे काम किए होंगे।

इंसानों को यह भी याद दिलाया गया है कि व्यक्तियों की तरह सभ्यताएं भी वजूद में आती हैं, फलती फूलती हैं और लुप्त हो जाती हैं, वह तब तक ही बाक़ी रहती हैं जब तक उनके अन्दर बने रहने की क्षमता और योग्यता रहती है, और जब उनकी असफ़लताएं घातक बन जाती हैं तो वे मुरझा जाती हैं और आख़रिकार फ़ना हो जाती हैं। अल्लाह तआला उन्हें

उनकी अपनी कमज़ोरियों से बचाने के लिए और उन कमज़ोरियों, ख़ास तौर से यौन आकर्षण और तकब्बुर व बड़प्पन की भावनाओं से, फ़ायदा उठा कर शैतान जो प्रलोभन उनके अन्दर पैदा करके उन्हें अपने प्रभाव में लेता है उनसे बचाने के लिए अपनी हिदायत भेजता है। जो लोग अल्लाह की हिदायत की पैरवी करते हैं वो अपनी आस्था की बदौलत इस जीवन के उतार चढ़ाव के झटकों से सुरक्षित रहते हैं, और अल्लाह की हिदायत पर चलने का उनका जज़्बा आख़िरत के अनन्त जीवन में उनके काम आता है। दूसरी तरफ़ वे लोग जो केवल दुनिया के फ़ायदों के पीछे पड़े रहते हैं और अपनी स्वार्थपूर्ति, अदूरदर्शिता और घमण्ड के कारण अल्लाह की हिदायत को रद्द करते हैं वे अपनी शरीरिक और मानसिक योग्यताओं पर छोड़ दिए जाएंगे जो इस दुनिया की भलाइयों और बुराइयों के ढेर में दब जाएंगे और भ्रम में ही रहेंगे।

وَ لَقَدۡ عَهِدۡنَاۤ اِلٰۤى اٰدَمَ مِنۡ قَبۡلُ
فَنَسِىَ وَ لَمۡ نَجِدۡ لَهٗ عَزۡمًا ﴿۱۱۵﴾ وَ اِذۡ قُلۡنَا
لِلۡمَلٰٓئِكَةِ اسۡجُدُوۡا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوۡۤا اِلَّاۤ
اِبۡلِيۡسَ ؕ اَبٰى ﴿۱۱۶﴾ فَقُلۡنَا يٰۤاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا
عَدُوٌّ لَّكَ وَ لِزَوۡجِكَ فَلَا يُخۡرِجَنَّكُمَا
مِنَ الۡجَنَّةِ فَتَشۡقٰى ﴿۱۱۷﴾ اِنَّ لَكَ اَلَّا
تَجُوۡعَ فِيۡهَا وَ لَا تَعۡرٰى ﴿۱۱۸﴾ وَ اَنَّكَ لَا
تَظۡمَؤُا فِيۡهَا وَ لَا تَضۡحٰى ﴿۱۱۹﴾ فَوَسۡوَسَ
اِلَيۡهِ الشَّيۡطٰنُ قَالَ يٰۤاٰدَمُ هَلۡ اَدُلُّكَ
عَلٰى شَجَرَةِ الۡخُلۡدِ وَ مُلۡكٍ لَّا يَبۡلٰى ﴿۱۲۰﴾
فَاَكَلَا مِنۡهَا فَبَدَتۡ لَهُمَا سَوۡاٰتُهُمَا وَ
طَفِقَا يَخۡصِفٰنِ عَلَيۡهِمَا مِنۡ وَّرَقِ
الۡجَنَّةِ ؕ وَ عَصٰۤى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ﴿۱۲۱﴾
ثُمَّ اجۡتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيۡهِ وَ
هَدٰى ﴿۱۲۲﴾ قَالَ اهۡبِطَا مِنۡهَا جَمِيۡعًا
بَعۡضُكُمۡ لِبَعۡضٍ عَدُوٌّ ۚ فَاِمَّا يَاۡتِيَنَّكُمۡ

और हमने इससे पहले आदम को एक हुक्म दिया था, मगर वो उसे भूल गए, और हम ने उनमें पक्कापन नहीं पाया। और जब हमने फ़रिश्तों से कहा, आदम को सज्दा करो तो सब फ़रिश्तों ने सज्दा किया, सिवाय इब्लीस के, उसने इन्कार किया। फिर हमने कहा, ऐ आदम! ये तुम्हारा और तुम्हारी बीवी का दुश्मन है, तो कहीं ये तुम दोनों को जन्नत से ना निकलवा दे, फिर तुम मुसीबत में ना फस जाओ। यहाँ तुम को ये (आराम) है कि ना भूके रहोगे और ना नंगे। और यहां ना प्यासे होगे, और ना धूप खाओगे। फिर उनको शैतान ने बहकाया और कहा, ऐ आदम! तुमको अमर कर देने वाला पेड़ बता दूं, और ऐसा राज जो कभी ख़त्म ना हो। तो दोनों ने उस पेड़ का फल खा लिया, तो उन पर दोनों के गुप्तांग खुल गए और वो अपने बदन पर जन्नत के पत्ते चिपकाने लगे और आदम ने अपने रब की नाफ़रमानी की और ग़लती में पड़ गए। फिर उनके रब ने उनको अपना लिया और उनकी तौबा क़बूल की, और सीधी राह बताई। अल्लाह ने कहा, तुम दोनों जन्नत से उतर जाओ, तुम में कुछ लोग कुछ लोगों के दुश्मन होंगे फिर अगर मेरी तरफ़ से तुम्हारे पास कोई हिदायत आए, तो जो मेरी हिदायत

(शिक्षा) की पैरवी करेगा तो वो ना गुमराह होगा और ना तकलीफ़ में पड़ेगा। और जो मेरी नसीहत से मुंह मोड़ेगा तो उसकी ज़िन्दगी तंग हो जाएगी, और क़यामत के दिन हम उसको अंधा करके उठायेंगे। वो कहेगा के ऐ मेरे रब! तूने मुझे अंधा करके क्यों उठाया, मैं तो देखता भालता था। अल्लाह फ़रमायेगा के ऐसा ही करना चाहिये था, तेरे पास हमारी आयतें आईं तो तूने उनको भुला दिया, इसी तरह आज तुझको भुलाया जाएगा। और इसी तरह जो हद से निकल जाए, और ईमान ना लाये अपने रब की आयात पर हम उसको ऐसा ही बदला देते हैं, और आख़िरत का अज़ाब बहुत सख़्त और बहुत देर रहने वाला होगा। क्या ये बात उनके लिए सीख लेने की ना हुई कि हम उनसे पहले लोगों को हलाक कर चुके हैं, जिनके रहने की जगहों पर ये चलते फिरते हैं, उसमें अक़्ल वालों के लिये बहुत सी निशानियां हैं।

(20:115-128)

مِّنِّيْ هُدًى ۙ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا
يَضِلُّ وَ لَا يَشْقٰى ﴿١٢٣﴾ وَ مَنْ اَعْرَضَ
عَنْ ذِكْرِيْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّ
نَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ﴿١٢٤﴾ قَالَ
رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْٓ اَعْمٰى وَ قَدْ كُنْتُ
بَصِيْرًا ﴿١٢٥﴾ قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا
فَنَسِيْتَهَا ۚ وَ كَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ﴿١٢٦﴾
وَ كَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ اَسْرَفَ وَ لَمْ
يُؤْمِنْۢ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ؕ وَ لَعَذَابُ
الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَ اَبْقٰى ﴿١٢٧﴾ اَفَلَمْ يَهْدِ
لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ
الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ﴿١٢٨﴾

इंसानों के परम पिता हज़रत आदम और उनकी पत्नि का क़िस्सा क़ुरआन में कई जगह अलग अलग अंदाज़ से आया है, जिनमें से हर एक में इंसानी स्वभाव के किसी न किसी तत्व पर ज़ोर दिया गया है। उपरोक्त आयतों में से पहली आयत में इंसान की एक महत्वपूर्ण कमज़ोरी की तरफ़ इशारा किया गया है, यानी भूल जाने और अपनी प्रतिज्ञा से फिर जाने की कमज़ोरी। यह भूलचूक कभी कभी अनजान पन में याददाश्त के भटक जाने से होती है, और ऐसी भूलचूक अल्लाह की तरफ़ से मआफ़ है क्योंकि जवाबदेही और फ़ैसला उन कामों का होगा जो इंसान जानबूझ कर करता है या छोड़ता है। गम्भीर भूल वह है जो इंसान जानबूझ कर करे। जब कोई व्यक्ति किसी प्रतिज्ञा को अपनी इच्छा से भुला दे या उसका लिहाज़ न करे इसलिए कि ऐसा करने से उसे किसी राहत या आनन्द को छोड़ देना पड़ेगा। अल्लाह ने इंसान को सही तरीक़े से आज़माने के लिए इरादे की स्वतंत्रता दी है और इंसान को विभिन्न प्रकार के दबावों का जहां तक हो सके सामना करने और किसी कड़ी प्रतिज्ञा को किसी भी वजह से न भुला देने का प्रशिक्षण प्राप्त करना होगा।

बाद की आयतें इस बात को उजागर करती हैं कि जब शैतान ने आदम के आगे झुकने से इंकार कर दिया तो उसके बाद जन्नत में आदम अलैहिस्सलाम का रवैया अडिगता और दृढ़

संकल्प की इस कमी से ही प्रभावित हुआ। अतः, जैसा कि इन आयतों में इशारा हुआ है, इंसान जानने की जिज्ञासा रखता है और लुप्त न होने तथा अपना ज़ोर चलाने की इच्छा रखता है, और इंसान के इन रुजहानों की बदौलत शैतान दोनों को अल्लाह की ना फ़रमानी के लिए उक्साने में कामयाब हुआ। आदम और हव्वा को अपनी मर्ज़ी और चयन की आज़ादी से काम लेना था, लेकिन अवास्तविक शक्ति प्राप्त हो जाने की उनकी उम्मीद ने इस पहले इंसानी जोड़े को उस ऐश व आराम को दांव पर लगाने के लिए आमादा कर दिया जो उन्हें जन्नत में हासिल था। इस तरह, अल्लाह से किए हुए अपने वायदे को भुला देने से न तो उनकी आकांक्षाएं पूरी हुईं और न वो अपनी पिछली हालत के फ़ायदों को ही जारी रख पाए।

इसके अतिरिक्त, जन्नत से आदम व हव्वा का निकलना और ज़मीन पर उनका आगामी जीवन कामोक्ति और जीवन की आवश्यकताओं के दबाव का ज़रिया बना और फिर यहाँ शैतान से आदम की नस्लों की कशमकश का सिलसिला शुरू हुआ। आदम की संतान को अपनी रोज़ी कमाने और ज़मीन को विक्सित करने और परिवार बनाने के लिए सन्तानोत्पत्ति का संघर्ष करना था, और साथ ही साथ उसे अपनी जीवन शैली के लिए अल्लाह की हिदायत को समझना था। अल्लाह ने इस संघर्ष में इंसान की मदद करने का वायदा किया था जबकि शैतान को इंसान के उक्साने और बहकाने के लिए इस्तेमाल करना था, और यह इंसान की अक़ल और उसक इरादे की आज़ादी पर निर्भर है कि वह ख़ुद यह फ़ैसला करे कि उसे क्या करना है। अल्लाह का पैग़ाम इंसानों का मार्गदर्शन करना है कि वह ज़मीन पर अपनी और अपने चारों तरफ़ फैली दुनिया की भलाई के लिए अल्लाह के अहसानों से किस तरह फ़ायदा उठाए। जो लोग अल्लाह की रहनुमाई से फ़ायदा उठाएंगे वह इस दुनिया में ख़ुश रहेंगे, इस तरह कि वे अपने अंदर एक शान्ति महसूस करेंगे और दूसरों के साथ अपने सम्बंधों में इंसाफ़ व महरबानी को बरतेंगे। और आख़िरत के अनन्त जीवन में वो इसका बदला पाएंगे। जो लोग अपनी स्वार्थपूर्ति में पड़े रहेंगे और अदूरदर्शिता से काम लेंगे वे इस दुनिया में तंगी का जीवन जिएंगे, इस तरह कि वे हमैशा उसके उतार चढ़ाव से लरज़ते रहेंगे और दूसरों के साथ ना इंसाफ़ी के नतीजों और प्रतिक्रिया की पीड़ा से दो चार होंगे। इस दुनिया में इस अध्यात्मिक और नैतिक अंधेपन की तरह आख़िरत के जीवन में इन कुकर्मियों के लिए एक दूसरा अंधापन मुक़द्दर बनेगा, जहां उनकी पीड़ा, जो उनके कुकर्मों का और अल्लाह की रहनुमाई को रद्द करने का नतीजा होंगी, और अधिक कड़ी होंगी और उसका कोई अन्त नहीं होगा।

# इंसान

## भौतिक, मनोवैज्ञानिक और अध्यात्मिक पहलुओं से

وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا
بَلْ نَتَّبِعُ مَآ اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَ لَوْ
كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْـًٔا وَّ لَا
يَهْتَدُوْنَ ۝ وَ مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا كَمَثَلِ
الَّذِيْ يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ اِلَّا دُعَآءً وَّ
نِدَآءً ؕ صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا
يَعْقِلُوْنَ ۝

और जब उनसे कहा जाता कि अल्लाह के हुक्म पर चलो तो कहते हैं, नहीं, बल्के हम तो उसी पर चलेंगे जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया है, क्या अगर उनके बाप दादा कोई अक़्ल ही ना रखते हों, और ना कोई आसमानी हिदायत ही रखते हों। और काफ़िरों की मिसाल उस शख़्स से मिलती है जो ऐसी चीज़ को आवाज़ दे जो पुकार और आवाज़ के सिवा कुछ सुन ना सके, ये बहरे हैं, गूँगे हैं और अंधे हैं, वो कुछ अक़्ल ही नहीं रखते जो समझ सकें। (2:170-171)

क़ुरआन में बार बार व्यक्तिगत ज़िम्मेदारियों पर ज़ोर दिया गया है और दूसरों पर निर्भरता या दूसरों की अंधी पैरवी की निन्दा की गयी है। जो कोई अपने पूर्वजों की आस्थाओं और कर्मों की पैरवी करता है और इसके ख़िलाफ़ हर उस बात पर ग़ौर करने से मुंह मोड़ता है जो उसके सामने पेश की जाए वह ऐसा/ऐसी इंसान है जो अपनी अक़ल को काम में नहीं लाता या लाती और अपने पूर्वजों या समुदाय की परम्पराओं पर ही इस बात को छोड़े रखता या रखती है कि उसके बारे में वही सोचें। ऐसा इंसान जो अपनी इन्द्रियों और अक़ल को बांध कर रखता/रखती है जानवरों की तरह है जो कुछ नहीं समझते सिवाय अपने चरवाहे की हांक पुकार के। जो लोग बिला सोचे समझे अल्लाह के पैग़ाम का इंकार करते हैं और अपने पूर्वजों की अंधी पैरवी करते रहते हैं, वे अपनी अक़ल और अपनी इन्द्रियों पर पहरा बैठाते हैं। वे केवल अपने पूर्वजों की आवाज़ों को सुनते हैं, केवल उन्ही को देखते हैं और इस बारे में किसी और से कोई वार्ता नहीं करना चाहते। ऐसे लोग अपने आप को जान बूझ कर बहरा, गूंगा और अंधा बनाए रखते हैं। कितने दुख की बात है कि कोई इंसान अपनी इन महान शक्तियों का और उत्तम योग्यताओं का इस्तेमाल न करे जो उसे बख़्शी गयी हैं: *"उनके दिल हैं लेकिन उनसे समझते नहीं और उनकी आंखें हैं मगर उनसे देखते नहीं और उनके कान हैं पर उनसे सुनते नहीं, ये लोग जानवरों की तरह हैं बल्कि उनसे भी गये गुज़रे। यही वो लोग हैं जो ग़फ़लत में पड़े हुए हैं।"* (7:179)।

فَإِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا ۗ فَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۝ وَمِنْهُم مَّن يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ أُولَٰئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبُوا ۚ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

और जब तुम अपने सारे अरकान (क्रियाएँ) पूरे कर लो, तो अल्लाह का ज़िक्र किया करो जैसा के तुम अपने बाप दादा का करते आए हो, बल्के उससे भी ज़्यादा। और कुछ लोग हैं जो यह दुआ करते है कि ऐ हमारे रब! हम को इस दुनिया में (ही) दे दीजिये, ऐसे लोगों का आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं है। और उनमें से कुछ इस तरह दुआ करते हैं के ऐ हमारे रब! तू हमें अपनी नेअमत से इस दुनिया में भी नवाज़ दे और आख़िरत में भी अपनी मेहरबानी से अता फ़रमा और दोज़ख़ के अज़ाब से भी हमें बचा। इन लोगों के लिए उनके नेक कामों का बड़ा हिस्सा तैयार है, और अल्लाह तो बहुत जल्दी हिसाब लेने वाला है। (2:200-1202)

ये आयतें हज के संदर्भ में शुरू होती हैं लेकिन उस बात पर पूरी होती हैं जो ईमान वालों का लक्ष्य है और वह लक्ष्य हज की इबादत अदा करने के बाद और स्पष्ट हो जाता है और ईमान वालों की निगाहों का केन्द्र बन जाता है और उसे प्राप्त करने के लिए मोमिन दुआ करता रहता है। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो केवल उन भलाइयों के ही तलबगार होते हैं जो इस दुनिया में हैं इस बात की परवाह किए बिना कि भविष्य में प्राप्त होने वाली इनसे ज़्यादा क़ीमती भलाइयों से वे महरूम हो सकते हैं। लेकिन सच्चा मोमिन क़ुरआन की शिक्षाओं के अनुसार, इस दुनिया को त्यागता नहीं है न वह इसमें इतना लीन होता है कि भविष्य को ही भूल जाए, असिल में तो उसका लक्ष्य यह होता है कि उसे इस दुनिया में भलाई मिले लेकिन साथ ही साथ वह आने वाले जीवन में इससे बहतर बदला पाने की फ़िक्र रखता है। इस तरह मोमिन बन्दा या बन्दी इस दुनिया के फ़ायदों को जायज़ तरीक़े से बग़ैर किसी ज़ुल्म और बग़ैर किसी धोखेबाज़ी व धांधली के प्राप्त करता है/करती है और इस तरह उसके नेक अमल का फल उसे इस दुनिया में भी मिलता है और आख़िरत के जीवन में भी, *"तो अल्लाह ने उनको दुनिया में भी बदला दिला और आख़िरत में भी बहुत अच्छा बदला (देगा) और अल्लाह तआला नेक लोगों को पसन्द करता है।"* (3:148)

आख़िरत के जीवन को नज़र में रख कर इस दुनिया में अच्छे काम करने वाला बन्दा या बन्दी अपने काम में निरन्तरता रखने वाला होता या होती है, वह उतार चढ़ाव में डगमगाता /डगमगाती नहीं है, न वह कामयाबी के घमण्ड में या नाकामी की निराशा में अपनी ऊर्जाओं को व्यर्थ करता है/करती है। आख़िरत के वास्तविक लक्ष्य को पाने की जिज्ञासा इस दुनिया की

घटनाओं को इंसान की इच्छाओं और प्रयासों के लिए केवल एक इम्तेहान बना देती है और उसे यक़ीन दिलाती है कि उसका वास्तविक बदला आख़िरत के जीवन में अल्लाह के पास सुरक्षित है, अगर मोमिन बन्दा या बन्दी इस दुनिया में अपना सदकर्म जारी रखता या रखती है चाहे उसे अपने उद्देश्य से भटकाने वाले कैसे ही दबावों और प्रेरणाओं का सामना करना पड़े।

وَ مِنَ النَّاسِ مَنۡ يُّعۡجِبُكَ قَوۡلُهٗ فِى
الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا وَ يُشۡهِدُ اللّٰهَ عَلٰى مَا فِىۡ
قَلۡبِهٖ ۙ وَ هُوَ اَلَدُّ الۡخِصَامِ ﴿۲۰۵﴾ وَ اِذَا
تَوَلّٰى سَعٰى فِى الۡاَرۡضِ لِيُفۡسِدَ فِيۡهَا وَ
يُهۡلِكَ الۡحَرۡثَ وَ النَّسۡلَ ؕ وَ اللّٰهُ لَا
يُحِبُّ الۡفَسَادَ ﴿۲۰۶﴾ وَ اِذَا قِيۡلَ لَهُ اتَّقِ
اللّٰهَ اَخَذَتۡهُ الۡعِزَّةُ بِالۡاِثۡمِ فَحَسۡبُهٗ
جَهَنَّمُ ؕ وَ لَبِئۡسَ الۡمِهَادُ ﴿۲۰۷﴾ وَ مِنَ
النَّاسِ مَنۡ يَّشۡرِىۡ نَفۡسَهُ ابۡتِغَآءَ
مَرۡضَاتِ اللّٰهِ ؕ وَ اللّٰهُ رَءُوۡفٌۢ
بِالۡعِبَادِ ﴿۲۰۸﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا ادۡخُلُوۡا
فِى السِّلۡمِ كَآفَّةً ۪ وَّ لَا تَتَّبِعُوۡا خُطُوٰتِ
الشَّيۡطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمۡ عَدُوٌّ مُّبِيۡنٌ ﴿۲۰۹﴾
فَاِنۡ زَلَلۡتُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ مَا جَآءَتۡكُمُ
الۡبَيِّنٰتُ فَاعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيۡزٌ
حَكِيۡمٌ ﴿۲۱۰﴾

और कोई इंसान ऐसा है कि पसंद आती है तुम को उसकी बात दुनिया की ज़िन्दगी के कामों में और वो अपने दिल की बात पर अल्लाह को गवाह बनाता है, हालाँके वो ही सबसे बड़ा झगड़ालू है। और जब यही झगड़ालू पीठ फेर कर चला जाता है तो दौड़ता फिरता है ज़मीन में ताकि उसमें फ़ितना बरपा करे खेती को बर्बाद करे और इन्सानों और हैवानों की नस्ल को हलाक कर दे, और अल्लाह तो फ़ितना अंगेज़ी को पसंद नहीं करता। और जब उससे कहा जाता है के अल्लाह से डर तो उसका घमण्ड उसको गुनाह में गिरफ़्तार कर देता है तो उसको दोज़ख़ का अज़ाब काफ़ी है, और ये बहुत ही बुरा ठिकाना है। और कोई ऐसा भी है कि अल्लाह की ख़ुशी हासिल करने के लिए अपनी जान भी दाँव पर लगा देता है, और अल्लाह तो है ही अपने बन्दों पर बड़ा ही मेहरबान ऐ मोमिनो! तुम इस्लाम में पूरे-पूरे दाख़िल हो जाओ, और शैतान की पैरवी न करो, वो तो तुम्हारा खुला दुश्मन है। फिर अगर खुले अहकाम तुम्हारे पास पहुँच जाने के बाद तुम डगमगा जाओ तो जान लो के अल्लाह तो है ही बड़ा ज़बरदस्त और हिकमत वाला।

(2:204-209)

किसी व्यक्तित्व में टिकाऊपन और ठोसपन मनोवैज्ञानिक लिहाज़ से लाभदायक होता है और नैतिक रूप से यह एक अच्छी बात है। अगर किसी की बातें तो प्राभावित करने वाली हों लेकिन कर्म घृणात्मक हों तो यह बात व्यक्तित्व में बिखराव और अस्थिरता का प्रतीक होती हैं और ऐसे व्यक्तित्व को दर्शाती हैं जिसके अन्दर यह साहस नहीं होता कि वह जो कुछ करता है उसे खुल कर बयान भी करे न उसे अपने ऊपर इतना नियंत्रण होता है कि जो कुछ कहता है उसे व्यवहार में भी बरते। ऐसा व्यक्ति बातें तो हमैशा अच्छी करता है, भलाई, नेकी और

मददगारी की बात करता है लेकिन व्यवहार से धरती पर फ़साद करता है और फ़सलों व जानवरों को बर्बाद करता है। ऐसे लोग मुंह से तो अल्लाह से डरने और अच्छे काम करने की बात करते हैं लेकिन उनके कर्म उन चीज़ों की ख़राबी और बर्बादी का कारण बनते हैं जो उन्हें मंज़ूर नहीं होते। जब उन्हें कोई ऐसा आदमी नसीहत करता है जो उनके कर्मों की तारीफ़ करता है तो वह गर्व से फूल जाते हैं और ख़ुद को आख़िरत के जीवन में भी बदले का अधिकारी समझते हैं। दूसरी तरफ़ ऐसे भी लोग हैं जिनके कहने और करने में समानता और स्थिरता होती है, क्योंकि उनका लक्ष्य अल्लाह की रज़ामन्दी प्राप्त करना होता है, और अल्लाह हर बात को जानता और सुनता है और आदमी के कर्मों को भी वह देखता रहता है। ऐसा ईशभक्त आदमी ख़ुद को ईश्वर (अल्लाह) की रज़ामन्दी हासिल करने में लगा देता है हालांकि अल्लाह को कोई ऐसी चीज़ नहीं चाहिए जो इंसान की आम क्षमता से परे हो, क्योंकि अल्लाह महरबान व रहीम है और अपने बन्दों के लिए बहुत दयाशील है।

ऊपर की आख़री दो आयतों में, क़ुरआन ईमान वालों को ख़ुद अपने लिए भी और दूसरों के लिए भी इस्लाम की छत्रछाया में शान्ति प्राप्त करने की दावत देता है, और इस टकराव और फूट से बचने को कहता है जो शैतान के उक्सावों से जन्म लेने वाली स्वार्थसिद्धि और अदूरदर्शिता का नतीजा होती है। जो लोग ईमान लाते हैं वो हमैशा अल्लाह से डरते हैं और शैतान की चालों में मददगार बनने वाली वाली इंसानी कमज़ोरियों के प्रति हमैशा संवेदनशील रहते हैं। इस तरह अगर अल्लाह की हिदायत और ख़बरदारी के बावजूद भी वे ठोकर खाएं तो फिर अल्लाह की ताक़त और इन्साफ़ का सामना करेंगे, जब कि वो लोग जो अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए ख़ुद को पूरी तरह खपा दें, अल्लाह की रहमत और फ़ज़ल को पाएंगे।

يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَ يَهْدِيَكُمْ
سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَ يَتُوْبَ
عَلَيْكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٦﴾ وَاللّٰهُ
يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۗ وَ يُرِيْدُ
الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ اَنْ تَمِيْلُوْا
مَيْلًا عَظِيْمًا ﴿٢٧﴾ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّخَفِّفَ
عَنْكُمْ ۚ وَخُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا ﴿٢٨﴾

और अल्लाह तो ये चाहता है के वो अपने अहकामात तुम को खोल कर बयान कर दे, और तुम से पहले के लोगों के तरीक़े तुम्हें बता दे, और तुम पर नज़रे करम करे, और अल्लाह तो ख़ूब जानने वाला है, और बड़ी हिकमतों वाला है। और अल्लाह तो तुम पर मेहरबानी करना चाहता है, और जो अपनी इच्दाओं के पीछे चलते हैं वो ये चाहते हैं के तुम भी सीधे रास्ते से बहुत दूर चले जाओ। अल्लाह तो तुम्हारे बोझ को हल्का करना चाहता है, और इन्सान तो पैदा ही हुआ है कमज़ोर।

(4:26-28)

इंसान को जो कुछ भी शरीरिक, बौद्धिक और मनोवैज्ञानिक शक्तियां प्राप्त हैं उनके आधार पर वह हमैशा बिल्कुल सही तरीक़ा चुनने में सफ़ल नहीं हो सकता। इसलिए अल्लाह ने लोगों की तरफ़ पैग़म्बरों के द्वारा अपनी हिदायत भेजी जिनमें मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी शामिल हैं। क़ुरआन एक के बाद एक आने वाले नबियों के द्वारा आने वाले अल्लाह के पैग़ाम के मूल तत्व पर बार बार ज़ोर देता है, यानि अल्लाह के एक होने पर ईमान लाना, और यह ईमान लाना इस बात से साबित होता है कि इंसान दूसरों के साथ मामला करने में अल्लाह के सिखा गये नैतिक मूल्यों पर अमल करता है। अल्लाह की हिदायत दिमाग़ को रोशन करती है और सही फ़ैसला लेने में मदद करती है और सही रास्ते पर चलने की इंसानी इच्छा को मज़बूत करती है, और वक़्ती फ़ायदे के लिए सही रास्ते से हटने की किसी भी प्रेरणा या प्रलोभन से प्रभावित होने से बचाती है।

मस्तिष्क और नैतिकता के लिए अल्लाह का मार्गदर्शन अनिवार्य है क्योंकि यह एक सीमा खींच देता है और भ्रम व संदेहों के मैदान में क़दम रखने से इंसान को रोक देता है। अल्लाह किसी से कोई बैर नहीं रखता। उसका मार्गदर्शन तमाम लोगों के लिए उसकी दया और कृपा पर आधारित है और उसके न्याय का प्रतीक है। ऐसे लोग हमैशा रहे हैं जो अपने गुमान व ख़्याल और हवस की पैरवी करते हैं और दूसरों को भी इसकी प्रेरणा देते हैं और दूसरों के लिए इसे आकर्षक बना कर पेश करते हैं हालांकि अंजाम के लिहाज़ से वे स्वयं को भी और दूसरों को भी नुक़सान पहुंचाते हैं। दूसरी तरफ़ ऐसे भी लोग हैं जो अपने स्वभाविक लगाव का अनुसरण करते हैं और फिर कट्टरता व बृह्मचार पर ज़ोर देतेहैं। अल्लाह का मार्गदर्शन सामूहिक रूप से इन दोनों अतिवादी रुझानों में से किसी का भी समर्थन नहीं करता बल्कि केवल उसी की शिक्षा देता है जो इंसान के लिए बहतर है, उदारवादी है और आम आदमी के बस में है।

एक इंसान कभी कभी सही कर्मशैली से इस वजह से भटक सकता है कि वह अपने निजी स्वभाव में कमज़ोर और निष्क्रिय होता है या होती है, लेकिन जब उसे अपनी कोताही और ग़लती समझ में आती है तो वह अपना कर्म ठीक कर लेता है या कर लेती है और ग़लतियों से तौबा करता है या करती है तो अल्लाह अपनी दया और कृपा से उसकी तरफ़ ध्यान करता है क्योंकि किसी के ग़लती करने और उस पर खेद करने से पहले ही वह हर व्यक्ति की तरफ़ अपने मार्गर्दशन के द्वारा ध्यान रखे होता है। अल्लाह का मार्गदर्शन इंसानी सच्चाइयों के लिए नैतिक आदर्श तय करने में बिल्कुल सटीक दृष्टिकोण देता है। *"अल्लाह तआला तुम्हारे बोझ हल्के करना चाहता है"*, इंसान को कमज़ोरियों के साथ पैदा किया गया है, जैसा कि क़ुरआन में एक और जगह कहा गया है कि *"क्या वही न जानेगा जिसने पैदा किया है, वह तो पैनी नज़र रखने वाला और ख़बरदार है।"* (67:14)

لَا خَيْرَ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ مَعْرُوْفٍ اَوْ اِصْلَاحٍۢ بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَ مَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿۱۱۴﴾

आम लोगों की अक्सर काना फूसियों में भलाई नहीं होती, सिवाए इसके कि कोई किसी को दान देने या नेक बात कहने या लोगों के बीच कोई मेल-मिलाप कराने के लिए ऐसा करे और जो ये काम करेगा अल्लाह की रज़ा प्राप्त करने के लिये सो हम बहुत जल्द उसको इसका बड़ा फल अता फ़रमायेंगे। (4:14)

बातों को गुप्त रखना या कानाफूसी के अंदाज़ में बातें करना आम तौर से बुरी बातों और संदिग्ध उद्देश्यों के लिए होता है जबकि खुलेपन से विश्वास और भरोसा पैदा होता है। अलबत्ता कोई व्यक्ति अगर किसी के साथ कोई भलाई का मामला करने में इसलिए राज़दारी से काम ले कि यह बात अगर सार्वजनिक होगी तो उसकी भावनाएँ आहत होंगी तो ऐसा करना ज़रूरी और अच्छा है। इसी तरह राज़दारी की ज़रूरत अच्छी नियत के साथ किए जाने वाले दूसरे कई मामलों में भी होती है, जैसे कुछ पक्षों के बीच चाहे वो व्यक्ति हों या समूह, समुदाय हों या राष्ट्र और देश हों, कोई विवाद निपटाने के प्रयास चल रहे हों और उनका पहले से सार्जनिक हो जाने से यह प्रक्रिया रुक जाने या प्रभावित होने की आशंका हो। किसी हमले से सुरक्षित रहने या रखने के लिए भी उससे सम्बंधित वार्ताओं और योजनाओं को राज़दारी में रखना ज़रूरी होता है क्योंकि उन्हें नाकाम होने या उनके दुष्परिणामों से बचने का यही एक रास्ता है। इस तरह के सभी संवेदनशील मामलों में राज़दारी से काम लेना और बातों को गोपनीय रखना ज़रूरी होता है, इस तरह, खुलेपन का आम और आदर्श तरीक़ा बनाए रखने से यह मामलात अपवाद हैं। इन आयतों में अल्लाह ने एक बार फिर इंसानी जीवन की सच्चाइयों के लिए नैतिक आदर्श निर्धारित कर दिए हैं।

وَ اَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَ مُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَ لَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ مِنَ الْحَقِّ ؕ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّ مِنْهَاجًا ؕ وَ لَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّ لٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَاۤ

48. और हमने आप पर ये किताब उतारी जो सच्ची है और इससे पहले उतरने वाली किताबों का अनुभोद करती है और उनकी मुहाफ़िज़ भी है, तो उनके आपस के मामलात का इसी किताब के अनुसार फैसला फ़रमाया कीजिये, (दीने) हक़ आपकी तरफ़ आया है इससे दूर हो कर उनकी इच्छाओं के अुनसार अमल ना कीजिये। तुम में से हर एक के लिए हमने ख़ास शरीअ़त और ख़ास तरीक़त बना दी है, और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक ही उम्मत बना देता, लेकिन अल्लाह तुम

اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۙ﴿۴۸﴾

को आज़माना चाहता है इस दीन में जो तुम को दिया है, तो अच्छी बातों की तरफ़ दौड़ कर आओ, तुम सबको अल्लाह की तरफ़ लौट जाना है, फिर वो तुमको सब कुछ बता देगा जिनमें तुम मतभेद करते थे।

(5:48)

अल्लाह की रचित सृष्टि में यानी ज़मीन में, पहाड़ों और चट्टानों में, पशुओं में और वनस्पतियों में और स्वंय इंसानों के बीच अल्लाह ने जो विविधता रखी है, उस पर क़ुरआन बार बार ध्यान दिलाता है। इंसानी विविधता न केवल उनके ज़ाहिरी रुप में मौजूद है (30:22; 49:13), बल्कि इंसानों की सूझबूझ में उनकी फैसला लेने की शक्ति में भी रखी गयी है जो उस समय ज़ाहिर होती है जब कोई व्यक्ति या बहुत से व्यक्ति किसी मामले में कोई निर्णय लेते हैं। इसी तरह आस्था के मामलें में भी इंसानों में मतभेद और विविधता एक प्राकृतिक और सम्भावित तथ्य है। और विभिन्न समुदायों के लिए अल्लाह का पैग़ाम यद्यपि यही है कि केवल उसी की इबादत की जाए लेकिन विभिन्न समुदायों के समय व स्थान में अन्तर की दृष्टि से कुछ विशेष मामलों में उनके बीच अन्तर का लिहाज़ रखा गया है, *"हमने तुम में से हर एक के लिए एक विधि और संहिता निर्धारित की है और अगर अल्लाह चाहता तो सब को एक ही शरीअत (नियमावली) पर कर देता मगर जो आदेश उसने तुम्हें दिए हैं उनमें तुम्हारी परीक्षा करना चाहता है"*। क़ुरआन अल्लाह का अन्तिम संदेश है और जैसा कि हम मुसलमानों का ईमान है, *"'नुमोदन करने वाली है उस किताब का जो पहले से आई हुई है"*, तथापि मुसलमान यह नहीं मानते हैं कि दुनिया के सारे ही इंसान उनकी दावत से सहमत हो कर उसे स्वीकार कर लेंगे, क्योंकि ऐसा होना इंसानी स्वभाव में विविधता के तथ्य के विपरीत है, *"और अगर तुम्हारा रब चाहता तो तमाम लोगों को एक ही जमाअत कर देता लेकिन वो हमेशा परस्पर विरोध में लगे रहेंगे, मगर जिन पर तुम्हारा रब महरबानी करे और इसी लिए उनको पैदा किया है और तुम्हारे रब का कहना पूरा हो कर रहेगा कि मैं नरक को जिनों व इंसानों से भर दुंगा।"* (11 118-119)

जो लोग अल्लाह की कृपा से फ़ायदा उठाते हैं वे अपने इंसानी स्वभाव में अन्तर को बदलते नहीं हैं बल्कि अपने स्वभाव और प्रकृति के अन्तर को बरतने के लिए अल्लाह की हिदायत की पैरवी करते हैं। लोगों को स्वभाविक मतभेद के साथ पैदा किया गया ताकि वे इन विविधताओं से काम लेकर अपनी बहतरीन योग्यताओं को काम में लाएं और इस बात को तय करें कि रंग व नस्ल और स्वभाव के तथा आस्थाओं व मान्यताओं के मतभेद को कैसे हल करें, ताकि टकराव के बजाए आपसी समझ के द्वारा नतीजे तक पहुंचें। क़ुरआन की आयतों (9:33;

48:28; 61:9) में जिस सच्चाई को बार बार दोहराया गया है उसके बावजूद इन आयतों का अर्थ अनिवार्य रूप से यह नहीं है कि तमाम के तमाम इंसान मुसलमान हो जाएंगे, क्योंकि भौगोलिक, मनोवैज्ञानिक और सास्कृतिक रुकावटें पूरी तरह समाप्त नहीं हो जाएंगी। इसलिए इंसानी स्वभाव की विविधता बनी रहेगी। यह आयतें जिस बात को उजागकर करती हैं वह यह कि एक अल्लाह की इबादत ही सत्य है, यह बात अन्तः अधिकतर लोग स्वीकार कर लेंगे लेकिन विभिन्न कारणों से वे इसे अपनाने के लिए मनोवैज्ञानिक रूप से राज़ी नहीं होंगे। जब तक हर इंसान अपनी मर्ज़ी से फ़ैसला लेने के लिए आज़ाद रहेगा तब तक इंसानों की बीच मतभेद चलते रहेंगे और उनके मनोवैज्ञानिक व बौद्धिक व्यवहार में विविधता रहेगी। मुसलमानों को इस बात से मना किया गया है कि वह किसी पर ज़ोर ज़बरदस्ती से अपना अक़ीदा थोपें क्योंकि अक़ीदे के मामले में कोई ज़बरदस्ती (सही) नहीं है (2:256), और अल्लाह किसी ऐसे इंसान के बन्दगी के वचन को स्वीकारता नहीं है जिसे उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ इस अक़ीदे के इज़हार के लिए मजबूर किया गया हो। चुनांचि, इंसान के सभी वैचारिक मामलों में बहुलता प्राकृतिक व स्वभाविक है और इस दुनिया में अल्लाह की *सुन्नत* (नियम) है। मुसलमानों के लिए यह बात समझने की है कि इस दुनिया में कौन सही है और कौन ग़लत इसका फ़ैसला उस जानने और ख़बर रखने वाली हस्ती के ऊपर छोड़ देना है जो हर व्यक्ति की परिस्थिति से वाक़िफ़ है। इसके बजाए इस दुनिया में अच्छे काम करने के लिए लोगों को एक दूसरे से सहयोग करना चाहिए, एक दूसरे की कमियों को पूरा करना चाहिए और एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा (मुक़ाबला) करते रहना चाहिए: *"हमने तुम में से हर एक के लिए एक संहिता रखी है और अगर अल्लाह चाहता तो सब को एक ही शरीअत पर कर देता मगर जो आदेश उसने तुम्हें दिए हैं उनमें वह तुम्हारी जांच करना चाहता है।"*

وَ اِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِیْۤ اٰدَمَ مِنْ
ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّیَّتَهُمْ وَ اَشْهَدَهُمْ
عَلٰۤى اَنْفُسِهِمْ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ؕ قَالُوْا
بَلٰى ۛۚ شَهِدْنَا ۛۚ اَنْ تَقُوْلُوْا یَوْمَ
الْقِیٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِیْنَ ۙ﴿۱۷۲﴾ اَوْ
تَقُوْلُوْۤا اِنَّمَاۤ اَشْرَكَ اٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَ
كُنَّا ذُرِّیَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ اَفَتُهْلِكُنَا
بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿۱۷۳﴾ وَ كَذٰلِكَ
نُفَصِّلُ الْاٰیٰتِ وَ لَعَلَّهُمْ یَرْجِعُوْنَ ﴿۱۷۴﴾

और जब आपके रब ने आदम की पीठ से उनकी औलाद को निकाला और उनसे उन्हीं की बाबत इक़रार लिया के क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ, सबने कहा, क्यों नहीं, हम सब इसके गवाह हैं, ताकि तुम क़यामत के दिन ये ना कहो, के हम तो इससे बेख़बर थे। या यूं कहो के शिर्क तो हमारे बड़ों ने किया था इससे पहले, और हम तो उनके बाद इनकी नस्ल में हुए सो क्या आप हम को उन ग़लत राह वालों के काम पर हलाकत में डालते हैं। और हम तो इसी तरह आयात को साफ़ बयान कर देते हैं और ताकि वो कुछ आ जायें। (7:172-174)

यहाँ एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात कही गयी है जिसे अध्यात्मिक क़ुतुबनुमा कहा जा सकता है जो हर जाति व समूह के इंसानों के अन्दर मौजूद है। यह क़ुतुबनुमा कहां है और यह किस तरह काम करता है?, क्या यह दिमाग़ में है? क्या वह दिल जिसे क़ुरआन की कई आयतों में अध्यात्मिक भावनाओं का केन्द कहा गया है, कोई सांकेतिक रूपक है या इन आयतों का कोई ठोस मतलब है? (जैसेः 2:7,10; 97,225; 3:451; 6:110,113; 7:100,179; 9:45, 64, 77, 87, 110, 125,127; 13:28; 14:43; 16:22,78,106,108; 17:36,46; 18:28,57; 22:46,53,54; 23:78; 26:89; 40:35; 41:54; 42:24; 45:23; 46:26; 47:16,20,24,29; 48:18,26; 49:3; 50:33,37; 53:11; 57:16; 58:22; 59:14; 61:5; 64:11; 67:23; 83:14) इसका कोई निर्धारित उत्तर नहीं दिया जा सकता है। जो कुछ हम जानते हैं वह यह कि हमारे अन्दर एक रूहानी बल होता है यहाँ तक कि इंसानी जीवन के उन प्राचीन धरोहरों में भी जो बाक़ी बचे हैं और जिन्हें तलाश किया जा सकता है यह चीज़ पाई गयी है। इंसानी वजूद का जो अध्यात्मिक तत्व है उसके सोत्र के रूप मे क़ुरआन ख़ुदा का हवाला देता हैः *"जब उसको (इंसानी रूप में) ठीक कर दूं और उसमें अपनी रूह फूंक दूं तो इसके आगे सिजदे में गिर पड़ना।"* (15:29; 38:72)।

चुनांचे, इंसान की आत्मीयता इंसान के ज़ाहरी वजूद के साथ जुड़ी हुई और उसके साथ समन्वयित एक भावनात्मक शक्ति होने के रूप में इंसान की बौद्धिक और मनोवैज्ञानिक क्षमताओ के क्रयान्वित होने में सहायक बनती है। अल्लाह तआला के संदेश इंसान के इस स्वभाविक व अध्यात्मिक तत्व को पूर्ण विक्सित (मुकम्मल) करने के लिए आए। अब यह इंसान की अपनी ज़िम्मेदारी है कि वह अपने अध्यात्मिक कुतुबनुमा की कारकर्दगी को दुरूस्त रखे, और जिस तरह अपनी शरीरिक और बौद्धिक योग्यताओं को बढ़ाता है इसी तरह अपनी रूहानियत को लगातार विक्सित करते हुए ऊंचाइयों की तरफ़ ले जाए। चूंकि अल्लाह ने इंसान को सामूहिक रूप से समन्वयित वजूद बख़्शा है और इस वजूद के विभिन्न तत्व एक दूसरे से अलग और विपरीत नहीं हैं, इसलिए अल्लाह का मार्गदर्शन इंसान को सामूहिक रूप से संतुलित विकास देने के प्रारूप के अन्तर्गत उसके आत्मिक विकास को भी गति देता है।

سَآءَ مَثَلًا ۨ الْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَ
اَنْفُسَهُمْ كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ۝ مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ
فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ وَ مَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْخٰسِرُوْنَ ۝ وَ لَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا
مِّنَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ ۖ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا

उन लोगों की हालत भी बुरी है जो हमारी आयात को झुटलाते हैं और वो दरअसल अपनी ज़ात ही का नुक़सान करते हैं। जिसको अल्लाह हिदायत करता है दरहक़ीक़त वो ही हिदायत पाने वाला होता है, और जिसे वो गुमराह कर दे वो लोग घाटे में पड़ जाते हैं। और हमने दोज़ख़ के लिये जिन्नो व इंसानों में से बहुत से ऐसे लोग पैदा

يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۫ وَ لَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۫ وَ لَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿۱۷۹﴾

किये हैं जिनके दिल ऐसे हैं जिनसे समझते नहीं और जिनकी आंखें ऐसी हैं जिनसे देखते नहीं, और जिनके कान ऐसे हैं जिनसे सुनते नहीं, ये लोग चौपायों की तरह हैं बल्के ये ज़्यादा गुमराह हैं, ये लोग ग़फ़्लत में पड़े हैं। (7:177-179)

जो इंसान बिना सोचे समझे आंख बन्द करके दूसरों के पीछे चलता (या चलती) है वह ख़ुद अपने अस्तित्व के साथ अन्याय करता (या करती) है, क्योंकि वह अपनी इन्द्रियों और बुद्धि को इस्तेमाल नहीं करता (या करती) है और इन शक्तियों की मौजूदगी व उनकी ज़रूरत की अनदेखी करता (या करती) है। दूसरे सभी इंसानों की तरह उसके पास भी आंखें, कान, दिल और दिमाग़ होते हैं लेकिन उसको मिली यह सारी नेअमतें (वरदान) उसके लिए बेकार होती हैं, क्योंकि वह इनका इस्तेमाल ही नहीं करता (या करती)। अगर इंसान और हैवान (पशु) के बीच विशेष अन्तर यही है कि इंसान के पास बुद्धि और आत्मीयता है तो इन महान शक्तियों को जानबूझ कर निष्क्रिय रखने से इंसान हैवानों से भी गया गुज़रा (बदतर) हो जाता है।

هُوَ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ اِلَيْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا فَمَرَّتْ بِهٖ ۚ فَلَمَّاۤ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ اٰتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۸۹﴾ فَلَمَّاۤ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَاۤ اٰتٰىهُمَا ۚ فَتَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۱۹۰﴾ اَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْـًٔا وَّ هُمْ يُخْلَقُوْنَ ﴿۱۹۱﴾ وَ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّ لَاۤ اَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ ﴿۱۹۲﴾

वो अल्लाह ऐसा है जिसने तुम को एक जान (आदम) से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा बनाया ताकि वो उस जोड़े से सुकून हासिल करे, फिर जब (पति ने) उसे (पत्नी को) ढाँप लिया तो उसको गर्भ रह गया, हल्का सा, वो उसको लिये हुए फिरती रहीं फिर जब वो बोझल हो गईं तो दोनों ने अल्लाह से दुआ की जो उनका मालिक है के अगर आपने हमको सही सालिम औलाद दी तो हम शुक्रगुज़ारी करेंगे। सो जब अल्लाह ने उन दोनों को सही व सालिम औलाद दे दी तो वो अल्लाह की दी हुई चीज़ में अल्लाह के शरीक क़रार देने लगे, सो अल्लाह पाक है उनके शिर्क से। क्या वो ऐसों को शरीक ठहराते हैं जो किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते और वो ख़ुद ही पैदा किए गए हैं। और वो उनको किसी क़िस्म की मदद भी नहीं दे सकते, और वो ख़ुद अपनी भी मदद नहीं कर सकते। (7:189-192)

मर्द और औरतें जो एक ही जीवित अस्तित्व से पैदा हुए हैं, एक दूसरे के प्रति स्वभाविक और मनोवैज्ञानिक आकर्षण रखते हैं और यह दोनों एक दूसरे के पूरक बनते हैं यानी एक दूसरे से मिल कर पूर्ण होते हैं और एक दूसरे के साथ राहत व आनन्द महसूस करते हें। इसी लैंगिक आकर्षण के द्वारा एक परिवार बनता और विक्सित होता हे। एक जोड़े से बच्चे पैदा होते हैं जो मातापिता के लिए मनोवैज्ञानिक संतुष्टि का माध्यम बनते हें। यह उत्पादन प्रक्रिया अपने सभी भौतिक और भावनात्मक पहलुओं के लिहाज़ से उन लोगों के लिए एक दैनिक आश्चर्य व अजूबा यानि चमत्कार है जो इस प्रक्रिया पर ध्यान देते और चिंतन करते हैं। मातापिता चाहते हैं कि उनका बच्चा स्वस्थ और चुस्त दुरुस्त हो, इसके लिए वह अल्लाह से दुआ करते हैं कि उनकी आकांक्षाएं व अभिलाषाएं पूरी हों, और वे प्रतिज्ञा करते हैं कि वे अल्लाह की इस महरबानी पर उसके आभारी होंगे और धन्यवाद करेंगे। लेकिन जब अल्लाह उनकी दुआएं सुन लेता है और उन्हें सन्तान से धनी करता है तो मातापिता अपने रब से किया हुआ वायदा भूल जाते हैं और उसका धन्यवाद करने का उन्हें घ्यान ही नहीं आता। वे या तो बच्चा पैदा करने का कारण ख़ुद को मान लेते हैं या उन लोगों को जिन्होंने गर्भावस्था में माँ की देखभाल की होती है और प्रसव के समय सहायक बनते हें। कुछ लोग किसी मृत महापुरुष के या किसी जीवित अध्यात्मिक गुरू के बारे में भी यह सोच लेते हैं कि उसकी दुआ से या उसके कहने से अल्लाह ने उन्हें बच्चा दिया है और फिर वह उसी की आराधना करने में लग जाते हैं। उपरोक्त आयतों में जो चीज़ ख़ास तौर से उजागर की गयी है वह यह है कि ज़रूरत के समय तो बन्दा (या बन्दी) अल्लाह से वायदा करता (या करती) है लेकिन जब ज़रूरत पूरी हो जाती है तो वह बन्दा या बन्दी अल्लाह से किए हुए वायदे को भूल जाता या भूल जाती हे। क़ुरआन बार बार इस बात पर ज़ोर देता है कि अल्लाह पर ईमान रखने वाले बन्दे (या बन्दी) को अपनी व्यक्तिगत जवाबदेही के बारे में दूसरों से ज़्यादा सावधान रहना चाहिए और अल्लाह से या अपने जैसे इंसानों से किए हुए वायदे को हमैशा पूरा करना चाहिए चाहे परिस्थितियां अनुकूल हों या प्रतिकूल हों। (2:40,177; 3:76; 6:125' 13:20; 16:91; 17:34; 23:8; 33:23; 70:32)।

إِنَّ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَ رَضُوا
بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ اطْمَاَنُّوا بِهَا وَ الَّذِينَ
هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُونَ ۝ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمُ
النَّارُ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ اِنَّ الَّذِينَ
اٰمَنُوا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُمْ
بِاِيْمَانِهِمْ ۚ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِي

बेशक जो हम से मिलने की उम्मीद नहीं रखते और दुनिया की ज़िन्दगी पर ख़ुश हो गए और उससे मुतमईन हैं और जो हमारी आयात से ग़ाफ़िल हैं। यही हैं जिनका ठिकाना दोज़ख़ है, उनके करतूत के सबब जो वो करते रहे हैं। ये बात यक़ीनी है के जो ईमान लाये और नेक काम किये, तो उनका रब उनको उनके ईमान की वजह से उनके मक़सद तक पहुंचा देगा, उसके नीचे नहरें बह

جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝٩ دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ
اللّٰهُمَّ وَ تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَ اٰخِرُ
دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٠ وَ
لَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ
بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ؕ فَنَذَرُ
الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِيْ طُغْيَانِهِمْ
يَعْمَهُوْنَ ۝١١ وَ اِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ
دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖۤ اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا ۚ فَلَمَّا
كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَاۤ اِلٰى
ضُرٍّ مَّسَّهٗ ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا
كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١٢ وَ لَقَدْ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ
قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا ۙ وَ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ
بِالْبَيِّنٰتِ وَ مَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا ؕ كَذٰلِكَ
نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ۝١٣ ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ
خَلٰٓئِفَ فِي الْاَرْضِ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ
كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ۝١٤

रही होंगी नेअमतों से भरे बाग़ों में। उनके मुंह से ये ही दुआ निकलेगी के सुबहान अल्लाह! और वहाँ उनका आपसी व्यवहार सलामती का होगा और उनकी आख़री बात ये होगी के सारी ख़ूबियां अल्लाह ही के लिये हैं, जो तमाम जहानों का मालिक है। और अगर अल्लाह उनकी बुराई में जल्दी करता जिस तरह वो नेक काम में जल्दी चाहते हैं तो उनकी उम्र की मुद्दत पूरी हो चुकी होती, सो जो हमसे मिलने की उम्मीद नहीं करते के अपनी सरकशी में बहकते रहें। और जब इन्सान को तकलीफ़ पहुंचती है तो वो लेटता बैठता और खड़ा हर तरह हमको पुकारता है, फिर जब उसकी वो तकलीफ़ हम उससे दूर कर देते हैं तो वो ऐसा बेहिस हो जाता है, के गोया उसने उस तकलीफ़ में जो उसको पहुंची थी हमको पुकारा ही नहीं था, इस तरह हद से आगे निकल जाने वालों को उनके आमाल अच्छे मालूम होते हैं। और हम तुम से पहले कई उम्मतों को हलाक कर चुके हैं जब उन्होंने ज़ुल्म किया, हालांकि उनके पास उनके पैग़म्बर खुली निशानियां लेकर पहुंचे, मगर वो ईमान लाने वाले ना थे, हम मुजरिमों को इसी तरह बदला देते हैं। फिर हमने तुम को उनके बाद मुल्क में आबाद किया के देखें तुम कैसे काम करते हो। (10:7-14)

दुनिया में ऐसे बहुत से लोग हैं जो इस जीवन के आनन्द में पूरी तरह मगन हैं और इस के आगे कुछ नहीं देखते। ऐसे लोग वक़्ती तौर से तो संतुष्ट रह सकते हैं लेकिन वह इस सच्चाई से बे-परवाह हैं कि यह जीवन कभी भी समाप्त हो सकता है, इससे पहले ही कि व्यक्ति की सारी इच्छाएं यहाँ पूरी हो जाएं, और कभी कभी इन इच्छाओं की पूर्ति दूसरों के अधिकारों का हनन करके और अन्याय पूर्ण तरीक़े से होती है। ऐसे अदूरदर्शी लोग केवल अपनी सम्पन्नता और समृद्धि की चिंता में ही रहते हैं इस बात को भूल कर कि यह समपन्नता और राहत व ऐश उन्हें सच्चाई के साथ प्राप्त हो रहे हैं या दूसरों के अधिकारों का हनन करके। अगर यह जीवन और इसकी ख़ुशियां एक दिन समाप्त ही हो जाना हैं तो हर वह तरीक़ा जिससे यह आनन्द और प्रसन्नता प्राप्त हुई हो तभी स्वीकार्य हो सकता है जब आदमी क़ानून तोड़ने

के नतीजे से बच निकले। लेकिन यह अदूरदर्शी लोग निश्चित रूप से मृत्यू का मज़ा चखेंगे और तब इस बात को समझने में बहुत देर हो चुकी होगी कि यह जीवन और इसके ऐश तो बहुत सीमित थे और आने वाले अनन्त जीवन में जिसको उन्होंने पूरी तरह भुला रखा था, वे वंचित रहेंगे। अल्लाह तआला हर इंसान को चाहे वह अच्छे काम करने वाला हो या बुरे काम करने वाला हो इस बात का मौक़ा देता है कि वह अपनी आत्म-समीक्षा और आत्म-अवलोकन करे और अपने अन्दर जो कमी पाए उसे दूर करे। जो लोग इस जीवन में बीतते हुए समय पर कोई ध्यान नहीं देते और अल्लाह के क़ानूनों व निशानियों पर ध्यान नहीं देते वे इस ला परवाही का तब ख़ुमियाज़ा भुगतेंगे जब अनिवार्य रूप से मौत का सामना करेंगे।

उपरोक्त आयतें इस बात पर ज़ोर देती हैं कि इंसान कितना अदूरदर्शी और जल्दबाज़ है कि वह अल्लाह की निशानियों और उसके पैग़ाम के प्राकृतिक परिदृश्य को नहीं देखता। फिर भी अल्लाह अपनी हिकमत, दया और महरबानी से ऐसे लोगों को तौबा और सुधार का एक मौक़ा देता है और उनके गुनाहों की सज़ा देने में जल्दी नहीं करता। इंसान की कम-नज़री और छिछलापन एक ऐसे व्यक्ति के मामले में भी देखा जा सकता है जो दिक़्क़त के समय तो अल्लाह से बहुत क़रीब होता है लेकिन सुविधा और सरलता के समय में उसे भूल कर बहुत दूर निकल जाता है। यह हैरत की बात है कि कुछ लोग आख़िर इस बात को क्यों नहीं समझते कि इस जीवन के आनन्द अन्तः समाप्त हो जाएंगे, जिस तरह पिछले लोग दुनिया में आकर यहाँ से जा चुके।

जो लोग पाप और बुराइयों को पसन्द करते हैं और उनमें ही लगे रहते हैं वो इस जीवन में किसी न किसी रूप में अपनी करनी का अंजाम भुगतते हैं और आने वाले जीवन मे उन्हें उनके पापों व अपराधों की कड़ी सज़ा मिलने वाली है। मौजूदा पीढ़ी को उन लोगों के अंजाम से सबक़ लेना चाहिए जो उनसे पहले गुज़र चुके और इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि हर व्यक्ति और हर समाज को इस दुनिया में किसी न किसी निर्धारित ढंग से जांचा जाता हे। बाद वालों के जीवन भी अपने निर्धारित समय पर समाप्त हो जाएंगे जिस तरह उनसे पहले लोगों का जीवन समाप्त हो चुका। लिहाज़ा होशमन्दी की बात यह है कि जांच की इस मुद्दत को सफलतापूर्वक बिताने के लिए और सफ़लता के पुरस्कार जो कभी समाप्त या पुराने नहीं होंगे उन्हें प्राप्त करने की तमन्ना और प्रयास किए जाते रहें।

هُوَ الَّذِیْ یُسَیِّرُكُمْ فِی الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ ؕ حَتّٰۤی اِذَا كُنْتُمْ فِی الْفُلْكِ ۚ وَ جَرَیْنَ بِهِمْ

वो ही तो है जो तुम को जंगल और दरिया में सैर कराता है, यहां तक के जब तुम कश्ती में सवार होते हो और कश्तियां पाकीज़ा हवाओं से सवारियों को लेकर चलती

بِرِيْحٍ طَيِّبَةٍ وَّ فَرِحُوْا بِهَا جَآءَتْهَا رِيْحٌ
عَاصِفٌ وَّ جَآءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّ
ظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اُحِيْطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا اللّٰهَ
مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ لَئِنْ اَنْجَيْتَنَا مِنْ
هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٢٢﴾ فَلَمَّآ
اَنْجٰىهُمْ اِذَا هُمْ يَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ
الْحَقِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓى
اَنْفُسِكُمْ ۙ مَّتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ ثُمَّ اِلَيْنَا
مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٣﴾
اِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ
السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ مِمَّا
يَاْكُلُ النَّاسُ وَ الْاَنْعَامُ ؕ حَتّٰٓى اِذَآ
اَخَذَتِ الْاَرْضُ زُخْرُفَهَا وَ ازَّيَّنَتْ وَ ظَنَّ
اَهْلُهَآ اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَآ ۙ اَتٰىهَآ اَمْرُنَا
لَيْلًا اَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ
تَغْنَ بِالْاَمْسِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ
لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَ اللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ
السَّلٰمِ ؕ وَ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٥﴾

हैं और वो ख़ुश होते हैं तो अचानक ज़न्नाटे की हवा आ जाती है, और मौजें हर तरफ़ से उन पर आती हैं और वो ख़्याल करते हैं, अब तो मौजें घेरे में लेती हैं तो वो सच्चे मन से अल्लाह ही को पुकारते हैं, और दुआ करते हैं के अगर तू हमको निजात दे तो हम बहुत शुक्रगुज़ार होंगे। फिर जब अल्लाह तआ़ला उनको निजात दे देता है तो धरती में नाहक़ शरारत करने लगते हैं। ऐ लोगों! तुम्हारी शरारतों का वबाल तुम ही को भुगतना होगा, तुम दुनिया की ज़िन्दगी का मुनाफ़ा उठा रहे हो, फिर तुमको हमारे ही पास लौट कर आना है, फिर हम तुम को बता देंगे जो तुम किया करते थे। बेशक दुनिया की मिसाल बारिश की सी है के हमने उसको आसमान से बरसाया, फिर उसके साथ ज़मीन की पैदावार ख़ूब गुंजान हो गई जिसको आदमी और जानवर खाते हैं, यहां तक कोपालिपा ज़मीन ने अपनी रौनक़ और ख़ुशनुमा हो गई, और उसके मालिकों ने समझ लिया के अब हम उस पर बिलकुल क़ाबिज़ हो चुके तो रात को या दिन को हमारा हुक्मे अज़ाब आ पहुंचा के हमने काट कर उसको ऐसा साफ़ कर डाला, जैसा के वो वहाँ थी ही नहीं, इसी तरह हम ग़ौर करने वालों के लिये अपनी क़ुदरत की निशानियां खोल खोल कर बयान कर देते हैं। और अल्लाह तआ़ला सलामती के घर की तरफ़ बुलाता है और जिसको चाहता है सीधा रास्ता दिखाता है। (10:22-25)

इंसान एक विश्वव्यापी जीव है और इस सृष्टि में उसकी चलत फिरत उसका एक महान गुण है। अल्लाह ने इंसान को सक्रिय क़ानूनों से लाभान्वित होने और थल व जल में तथा हवा और अंतरिक्ष में पहुंच बनाने का योग्य बनाया है (45:12,13)। जल, थल, हवा और अंतरिक्ष की यह यात्रा हालांकि सरल नहीं होती और उनके यात्रियों को दिक़्क़तों का सामना करना पड़ता है। जब किसी मरुस्थल (रेगिस्तान) में, हवा में या समुद्र में यात्री आंधी और तूफ़ान में फंस जाते हें तो स्वयं को बचाने के लिए स्वभाविक रूप से अपने पैदा करने वाले रब को विनम्रतापूर्वक पुकारने लगते हैं और यह दुहाई देते हैं कि अगर वे इस विपत्ति से बच गए तो

जीवन भर रब के शुक्र गुज़ार रहेंगे और केवल उसी की उपासना करेंगे और उसकी हिदायत का अनुसरण करेंगे। लेकिन जब वे सुरक्षित हो जाते हैं तो अपना यह वचन भूल जाते हैं या उसे तोड़ देते हें, वे आक्रामकता पर उतारू हो जाते हैं और धरती पर विनाश के काम अंजाम देने लगते हें और दूसरों के अधिकारों का हनन करते हें। इस वचन तोड़ने और उत्पात मचाने में वह यह ध्यान नहीं करते कि उनके यह दुराचार ख़ुद उनके लिए हानिकारक हैं और इस दुनिया में वे इसके पीड़ादायक नतीजे भुगतेंगे, और फिर जब यह छोटा सा व अनिश्चित जीवन तथा उसके लास विलास समाप्त हो जाएंगे और अनन्त जीवन शुरू होगा वे अति पीड़ा दायक और भयंकर सज़ाएं भुगतेंगे।

इस जीवन को सब कुछ समझने और यहाँ के आनन्द समेटने को ही जीवन का उद्देश्य बना लेने से इंसान में स्वार्थपूर्ति की भावना पैदा होती है, दूसरों के अधिकारों का हनन करने की प्रवृत्ति विक्सित होती है और न केवल व्यक्तियों में बल्कि सामूहिक रूप से पूरे समाज में घमण्ड और अहंकार व्याप्त हो जाता है। धरती और उसके संसाधनों पर अपने नियंत्रण से इंसान भ्रमित हो जाता है और तरह तरह की सुन्दरता से सजी इस धरती की साज सज्जा से मुग्ध हो कर और अपनी सम्पन्नता व समृद्धि से मंस्त हो कर इंसान इस भ्रम में पड़ जाते हैं कि उन्हें हर चीज़ पर नियंत्रण प्राप्त हो गया हे। वे यह भूल जाते हैं कि इस विशाल बृह्माण्ड के एक सीमित जगत में वे अल्लाह के बनाए गए प्राकृतिक नियमों के अन्तर्गत ही वे यहाँ काम कर रहे हैं, जहां उन्हें बहुत थोड़ा सा मौक़ा मिला है और इसके बारे में उनका ज्ञान बहुत ही कम हे। संकुचित मानसिकता और अदूरदर्शिता पर आधारित यह घमण्ड समाजों और सभ्यताओं को ख़ुद अपने हाथों अपनी तबाही पर डाल देता है। फिर वे ख़ुद अपने ही हाथों से अपने अंजाम को पहुंच जाते हैं या कोई और शक्ति उन्हें हटा या मिटा कर उनकी जगह ले लेती है। यह संसार अपनी सभी साज सज्जा और सुन्दरता के बावजूद आख़रिकार एक दिन विलुप्त हो जाएगा और फिर एक नई दुनिया आबाद होगी जहां हमैशा के लिए इंसाफ़ होगा और कभी भंग न होने वाली शान्ति मिलेगी। वास्तविक संतोष और आनन्द वाले उस लोक को क़ुरआन में शान्ति का कुंज कहा गया है (6:176)। उस लोक में प्रसन्न लोग ख़ुद भी शान्ति में होंगे, दूसरों के साथ भी शान्तिपूर्ण होंगे और हर जगह शान्ति में ही रहेंगे (6:54; 7:46; 10:10; 13:24; 14:23; 15:46; 16:32; 19:62; 25:75; 33:44; 36:58; 39:73; 50:34; 56:26,91)। आने वाले जीवन में शान्ति की इस अवस्था को पाने का रास्ता अल्लाह के मार्गदर्शन का अनुसरण करना है, और ख़ुद अपने लिए भी और दूसरों के लिए भी सीधे रस्ते पर चलते रहना है, यह एक ऐसा रास्ता है जिसे क़ुरआन शान्ति मार्ग कहता है: *"वही तो है जो तुम्हें थल और जल में चलने फिरने और गमन करने का रास्ता दिखाता है यहाँ तक कि जब तुम किश्तियों में सवार होते हो और किश्तियां पावन हवा (के बल पर) सवारियों को लेकर चलने लगती हैं*

*और सवार मगन होते हैं तो अचानक ज़ोरदार हवा चल पड़ती है और लहरें हर तरफ़ से उन पर आने लगती हैं और वे समझते हैं कि (अब तो) लहरों में घिर गए तो उस समय केवल अल्लाह को पुकारते हैं और कहते हैं कि (ऐ अल्लाह/हे प्रभु) अगर तू हमें बचा लेगा तो हम तेरा बहुत शुक्र अदा करेंगे। लेकिन जब वह उनको बचा लेता है तो धरती में अनर्थ उत्पात मचाने लगते हैं। लोगो! तुम्हारी बुराइयों की फिटकार तुम पर होगी, तुम दुनिया के जीवन को भोगते रहो, (लेकिन) फिर तुम्हें हमारे ही पास पलट कर आना है, तब हम तुम्हें बताएंगे जो कुछ तुम किया करते थे। दुनिया के जीवन का उदाहरण बारिश की तरह है जैसे हम उसे आसमान से बरसाते हैं फिर उससे (उगती है) साग सब्ज़ी जिसे आदमी और जानवर सब खाते हैं, इस हरियाली से धरती सुहानी लगती है। और धरती वाले यह समझते हैं कि वे इस पर पूरा नियंत्रण रखते हैं (मगर) अचानक रात को या दिन में हमारा फ़ैसला (सामने) आ जाता है तो हम उसको ऐसा काट डालते हैं कि मानो कल वहां कुछ था ही नहीं। जो लोग ग़ौर करने वाले हैं उन के लिए हम (अपनी शक्ति जताने वाली यह) आयतों खेल खोल कर बयान करते हैं। और, अल्लाह शान्तिग्रह की ओर बुलाता है और जिसको चाहता है सीधा रस्ता दिखा देता है।''* (5:15-16)

وَ مَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ
وَّ اَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ﴿۱۱۷﴾ وَ لَوْ شَآءَ رَبُّكَ
لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا
يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ﴿۱۱۸﴾ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ
رَبُّكَ ؕ وَ لِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ؕ وَ تَمَّتْ
كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ
وَ النَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ وَ كُلًّا نَّقُصُّ
عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ
فُؤَادَكَ ۚ وَ جَآءَكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ
وَ مَوْعِظَةٌ وَّ ذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۲۰﴾ وَ قُلْ
لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى
مَكَانَتِكُمْ ؕ اِنَّا عٰمِلُوْنَ ﴿۱۲۱﴾ وَ انْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا

और तेरा रब ऐसा ना था कि बस्तियों को ईमान न लाने के सबब हलाक कर देता, जबकि उनके रहने वाले सुधारवादी हों। और तुम्हारा रब चाहता तो तमाम लोगों को एक ही जमात कर देता, और वो तो हमेशा इख़्तिलाफ़ करते रहेंगे। मगर जिन पर तुम्हारा रब रहम करे, और इसीलिये उसने उनको पैदा किया है, और तुम्हारे रब का क़ौल पूरा हो गया, के मैं दोज़ख़ को जिनों और इंसानों सब से भर दूंगा। और हम नबियों के क़िस्सों में से ये सारे हालात आपसे बयान करते हैं जिन से हम आपके दिल को जमाते हैं, और इन क़िस्सों में आपके पास हक़ पहुंच गया, और मोमिनीन के लिये नसीहत और याददाश्त। और उनसे कह दीजिये के जो ईमान नहीं लाते के तुम अपनी जगह अमल किये जाओ, हम अपनी जगह अमल किये जाते हैं। (नतीजा का) तुम भी इन्तिज़ार करो, हम भी (उसी का) इन्तिज़ार कर रहे हैं। आसमानों और ज़मीन की छुपी चीज़ों, का इल्म तो बस अल्लाह ही को

مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٢٢﴾ وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٣﴾

है, और तमाम मामले उसी की तरफ़ पलटाएँ जाएँगे, तो फिर उसी की इबादत करो, और उसी पर भरोसा रखो, और अल्लाह बेख़बर नहीं है उन बातों से जो तुम कर रहे हो। (11:117-123)

उपरोक्त आयतें बहुत ही महत्वपूर्ण दीनी (धार्मिक) और सामाजिक सिद्धांत बयान करती हैं। कुकर्मी आख़रिकार स्वयं अपना विनाश करते हैं। अपनी अदूरदर्शिता और अहंकार के कारण वे स्वयं अपने हितों का नुक़सान करते हैं हालांकि उन्हें दूसरों के साथ मिल कर आपसी हितों के लिए दूसरों के साथ मधुर सम्बंध बनाना चाहिएं। जिन लोगों को इस दुनिया में अल्लाह की तरफ़ से प्रत्यक्ष रूप से दण्डित किया गया (जैसे हज़रत नूह की क़ौम, हज़रत हूद की क़ौम, हज़रत स्वालेह की क़ौम, हज़रत शुऐब की क़ौम, हज़रत लूत की क़ौम वग़ैरह) उन्हें केवल इसलिए सज़ा नहीं दी गयी कि वे अल्लाह पर ईमान न लाए थे बल्कि उनके बुरे करतूतों की वजह से उन्हें दण्डित करके विलुप्त कर दिया गया, जैसा कि क़ुरआन के एक प्रतिष्ठित व्याख्याकार अलराज़ी ने उपरोक्त आयत (11:17) की व्याख्या में लिखा है। ज़ुल्म और कुकर्मों के अलावा उन्होंने अपने नबियों का भी अनादर किया, उन्हें डराया, धमकाया और अपनी बस्तियों से उन्हें निकाल देने या उनकी हत्या कर देने पर उतारू हुए और उन पर ईमान लाने वालों को सताया ( 7:60,66,70,74,7,80-82,85-88,127; 11:27,32,38,53-54,59,78,84-87,91; 19:46; 21:68-70; 26:130,151-154,181-187; 28:4; 44:20-21)। इस्लामी विधि विशेषज्ञों (फ़क़ीहों) का कहना है कि अल्लाह के प्रति इंसान पर जो ज़िम्मेदारियां लागू होती हैं उनका फ़ैसला दया और क्षमा के भाव से होगा लेकिन इंसानों के आपसी मामलों में एक दूसरे के अधिकारों के हनन का फ़ैसला बहुत सूक्ष्म विवेचना के आधार पर और बहुत कठोर होगा।

आगे वाली आयतें एक अनिवार्य सच्चाई को रेखांकित करती है जिसके गम्भीर प्रभाव मुसलमानों के आपसी सम्बंधों पर भी और दूसरों के साथ उनके सम्बंधों पर पड़ते हैं स्वयं उनके अपने देशों में भी और पूरे विश्व में भी। चूंकि हर इंसान अपनी इच्छा और पसन्द में आज़ाद है, इसलिए बौद्धिक फ़ैसलों और नैतिक व्यवहार में अन्तर होना लाज़मी है। अल्लाह पर ईमान और उसकी हिदायत पर चलने से इंसानों के बीच यह अन्तर समाप्त नहीं होता या ईमान वाले लोग कोई फ़रिश्ता नहीं बन जाते हैं। ईमान वाले अपने इंसानी स्वभाव पर ही रहते हैं और उनके आपसी अन्तर भी और दूसरों के साथ मतभेद भी बाक़ी रहते हें। यह वास्तव में अल्लाह की मंशा है कि इंसानों के बीच अन्तर बना रहे ताकि उन्हें आज़माया जा सके कि इन अन्तरविरोधों के बावजूद एक दूसरे के साथ कितनी ईमानदारी और अच्छे बर्ताव से पेश आते हैं। ईमान वालों को अपने अक़ीदे और अल्लाह की हिदायत पर चलते हुए यह सीखने का

अवसर मिला होता है कि एक ही अक़ीदे, क़दरों (मूल्यों) और उसूलों (सिद्धांतों) पर सहमत होते हुए वे अपने आपसी मतभेद को जहाँ तक हो सके तक कम कर सकते हैं, और अपने अन्तर व भेद को एक रचनात्मक ढंग से परिचर्चा का विषय बना सकते हैं यहाँ तक कि वे किसी फ़ैसले तक पहुंच जाएं। इसी तरह इंसानी सोच के किसी भी मैदान में चाहे वे अल्लाह की हिदायेत को समझने और उसको व्यवहार में लाने का मैदान हो, एक से अधिक तरीक़े मुसलमानों के लिए एक अनिवार्य सिद्धांत बन जाते हैं। अगर अल्लाह चाहता तो वह सभी इंसानों को एक ही अंदाज़ से सोचने वाला और समान व्यवहार रखने वाला बना देता ताकि हर एक अच्छा अमल करने वाला होता और इनाम पाने का हक़दार बनता, लेकिन इसके बजाए अल्लाह ने यह चाहा कि इंसान अपनी मर्ज़ी और चुनाव में आज़ाद हों, और अपने फ़ैसले और बर्ताव में भिन्न भिन्न हों। इसके नतीजे में अच्छा अमल करने वालों को अल्लाह की कभी समाप्त न होने वाली नेअमतें (वरदान/पुरस्कार) प्राप्त होंगे, और बुरा अमल करने वाले चाहे वे इंसान हों या नज़र न आने वाले जिन्न हों, दण्ड के भोगी होंगे।

आख़िर में ये आयतें इस बात पर ज़ोर देती हैं कि ऐतिहासिक घटनाओं को वर्तमान से अलग करके नहीं देखना चाहिए, क्योंकि पूरे इंसानी इतिहास में इंसानी तरक़्क़ी के चरणों और क्रियाओं व कारनामों को जोड़ने वाले तार को अनदेखा नहीं किया जा सकता, यही तार है जो इंसानी तरक़्क़ियों में क्रियाशील अल्लाह के नियमों को उजागर करता है। बुरे काम, व्यक्तियों, समाजों और संस्कृतियों के लिए हमैशा से विनाशकारी रहे हैं। जो ईमान ले आए हैं उन्हें इतिहास से सीख लेना चाहिए और उन लोगों को चेताना चाहिए जो ईमान नहीं लाते कि सच्चाई और नेकी ही बाक़ी रहेगी। उन्हें अपने ऊपर पूरा भरोसा रखना चाहिए और अल्लाह पर भरोसा रखना चाहिए कि वही है जिस पर भरोसा किया जाना चाहिए और जिसकी तरफ़ सभी मामले पलटाए जाएंगे।

وَمَآ أُبَرِّئُ نَفْسِيٓ ۚ إِنَّ ٱلنَّفْسَ لَأَمَّارَةٌۢ بِٱلسُّوٓءِ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّيٓ ۚ إِنَّ رَبِّي غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥٣﴾

और मैं अपने आपको पाक साफ़ नहीं कहता क्योंकि नफ़्स तो इन्सान को बुराई ही सिखाता है, मगर जिस पर मेरा रब रहम फ़रमा दे, बेशक मेरा रब बड़ा बख़्शने वाला बड़ा रहम करने वाला है। (12:53)

इस आयत में, उस घटना के संदर्भ में जो पैग़म्बर हज़रत यूसुफ़ औरे तत्कालीन मिस्र के एक उच्च पदाधिकारी की पत्नी से सम्बंध रखती है और क़ुरआन में जिसका वर्णन किया गया है, पदाधिकारी की पत्नि के अन्तिम शब्द बयान हुए हैं। क़ुरआन की कई आयतों में इंसानी नफ़्स (मानवीय स्व अस्तित्वै Human Self) के तीन कारकों या प्रेरकों का बयान हुआ है। एक

उक्साने वाला तत्व जिसे क़ुरआन ने *"अम्मारा"* कहा है जैसा कि ऊपर की आयत में प्रयोग हुआ है, दूसरा मलामत (निन्दा) करने वाला तत्व जिसे क़ुरआन में *"लव्वामा"* कहा गया (2:75) और तीसरा संतुष्टि देने वाला तत्व जिसे क़ुरआन में *"मुतमइन्ना"* कहा गया (89:27)। जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है, इंसानी नफ़्स का इन तीन तत्वों में विभाजन एक अन्य त्रिकोणीय विभाजन (तीन प्रकार के घटकों) की ओर ध्यान आकर्षित करता है, जिसे मनोविज्ञान की शब्दावली में अलग अलग नाम दिए गए है: *"आईडी"*, जो अवचेतना में होती है और मूल प्रवृत्ति से पैदा होने वाली आत्म शक्ति का स्रोत होती है, दूसरा *"सुपर ईगो"* जो आंशिक रूप से चेतना का अंग होती और मनुष्य के स्व-अस्तित्व में विद्दमान अनुवांशिक रूप से और सामाजिक रीतियों से बनने वाली अन्तरात्मा को अभिव्यक्त करती है, और नैतिक मूल्यों के तन्त्र के अनुसार इंसान के कर्मों का समर्थन या विरोध करती है अर्थात या तो उस कर्म पर संतुष्टि का भाव जगाती है या अपराध बोध कराती है, और तीसरा तत्व *"ईगो"* जो मनुष्य और उसके चारों ओर की वास्तविक स्थितियों व तथ्यों के बीच एक सजग प्रहरी की भूमिका अंजाम देती है, ख़ास तौर से वास्तविकता को समझने और उसे अपनाने में अपनी भूमिका निभाती है। यह दोनो त्रिकोणीय कारक इस बात को समझने के लिए मनोवैज्ञानिकों के बीच चर्चा में आ सकते हैं कि उनमें कहां समानता है और कहां अन्तर है, लेकिन इस परिचर्चा का हमारे विषय से यहाँ सम्बंध नहीं है।

سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسَرَّ الْقَوْلَ وَ مَنْ
جَهَرَ بِهٖ وَ مَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۢ بِالَّيْلِ وَ
سَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ ۝١٠ لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ
بَيْنِ يَدَيْهِ وَ مِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ
مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ
حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ؕ وَ اِذَآ اَرَادَ
اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَ مَا
لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ ۝١١

बराबर है कि तुम में से जो चुपके से बात करे और जो पुकार कर करे, और रात को कहीं छुप जाये और जो दिन में चले फ़िरे। हर शख़्स के लिये फ़रिश्ते हैं जो बदलते रहते हैं कुछ उसके आगे और कुछ पीछे के वो अल्लाह के हुक्म से उसकी हिफ़ाज़त करते हैं। अल्लाह किसी क़ौम की हालत को नहीं बदलता जब तक वो ख़ुद अपनी हालत को ना बदले, और जब अल्लाह किसी क़ौम पर मुसीबत डालना चाहे तो उसके हटने की कोई सूरत नहीं और अल्लाह के सिवा कोई उनका मददगार नहीं रहता। (13:10-11)

इन आयतों में यह जताया गया है कि हर कही या की जाने वाली बात की अल्लाह को ख़बर है, चाहे वह रात के अन्धेरे में कही या की जाए या दिन के उजाले में। इंसान के आगे

और पीछे जो निगरानी करने वाले उसकी सुरक्षा में लगे हुए हैं वे फ़रिश्ते भी हो सकते हैं या अल्लाह के बनाए हुए प्राकृतिक नियम भी। लेकिन एक दूसरा विचार, जैसा कि अलराज़ी ने अपनी तफ़सीर में व्यक्त किया है, यह है कि इन निगरानी करने वालों से अभिप्राय वह व्यवस्था है जो इंसान अपनी सुरक्षा के लिए ख़ुद करता है, अल्लाह ही के हुक्म से। लेकिन यह एक इंसानी विचार है जिसका खण्डन इसी आयत के दूसरे हिस्से से हो जाता हैः *"जब अल्लाह किसी समुदाय को मुसीबत में डालने का इरादा करे तो उसके इस इरादे को कोई फेरने वाला नहीं।"* बहरहाल, यह आयत सामाजिक बदलाव के एक अनिवार्य नियम को बयान करती हैः 'अल्लाह तआला लोगों के हालात तभी बदलता है जब वे स्वय अपने अन्दर बदलाव लाते है, चाहे यह बदलाव बहतरी के लिए हो या बदतरी के लिए'। इंसानी व्यक्तित्व की तरह इंसानी बदलाव भी बहु आयामी होता है, इसलिए जब कोई अपने आप को अकेले प्रभु अल्लाह के आगे पेश कर देता है तो इस बदलाव के धारणात्मक, मनोवैज्ञानिक, नैतिक और व्यवहारिक प्रभाव सामने आते हैं। अल्लाह और आख़िरत के जीवन पर ईमान का मतलबत एक व्यापक बदलाव है, ऐसा बदलाव जो स्वार्थपूर्ति के संकीर्णे (तंग नज़र) व्यवहार से निकाल कर इंसान को एक व्यापक, इंसानी और वैश्विक आचार विचार की तरफ़ ले जाता है। लेकिन यह सभी नतीजे कारक और परिणाम (Cause and effect) के प्राकृतिक नियमों से ही सामने आते हैं, और अल्लाह पर ईमान लाने वालों के लिए अल्लाह की तरफ़ से कोई अलग व्यवस्था नहीं की गयी है। हर व्यक्ति और वर्ग को अपने अन्दर बदलाव की इच्छा रखनी चाहिए, और फिर इच्छा को लगातार प्रयास में बदलना चाहिए क्योंकि केवल इच्छा और ख़ाली ख़ोली दावों से कभी कामयाबी नहीं मिलतीः *"और अल्लाह चाहता तो (किसी और तरह से) इनसे बदला ले लेता लेकिन उसने चाहा कि तुम्हारी परीक्षा एक (को) दूसरे से (लड़वाकर) करे।"* (47:4)

अल्लाह पर ईमान वाले व्यक्ति की अन्दरूनी हालत को बदलने के लिए, इंसानी स्वभाव के नकारात्मक और सकारात्मक कारकों को इस दुआ में उजागर किया गया है जो मोमिन को ख़ुद उसके रब की तरफ़ से सिखाई गयी है। इस दुआ में मोमिन बन्दा या बन्दी अल्लाह से अपने अंदर मज़बूती पैदा करने और कमज़ोरियों से बचने के लिए अल्लाह से मदद मांगता है या मांगती है। यह विनम्रता और दुआ मोमिन को जागरूक रखती है और अपने लगातार विकास के लिए प्रेणा देती रहती है। दूसरे वे कमज़ोर पहलू जिनसे बचने के लिए मोमिन बन्दा या बन्दी को याद दिहानी कराई जाती है वह हमें पैग़म्बर सल्ल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस दुआ में मिलते हैः "ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह चाहता हूँ/चाहती हूं दुख व ग़म से, और मैं तेरी पनाह चाहता/चाहती हूं कायरता व काहिली से और मैं तेरी पनाह चाहता/चाहती हूं कंजूसी से और बुज़दिली से और तेरी पनाह चहातींचाहती हूं क़र्ज़ से और लोगों के ग़ज़ब से।

(बुख़ारी, मुस्लिम, तिरमिज़ी, नसई, अबुदाऊद, इब्न हंबल)

इसके मुक़ाबले एक दूसरी दुआ में मोमिन को यह सिखाया गया है कि वह अल्लाह से दुनिया में और दुनिया के बाद के जीवन में सुख व शान्ति मांगेः *अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुकः अलअफ़्वा वल आफ़िया फ़िद दुनिया व फिल आख़िरह* (*"ऐ अल्लाह मैं आप से दुनिया और आख़िरत में मआफी और शान्ति चाहता/चाहती हूं"*) [इब्न हंबल, अबुदाऊद, इब्ने माजा]। इसी तरह क़ुरआन में यह दुआ सिखाई गयी हैः *रब्बना आतिना फ़िद दुनिया हसनह व फिल आख़िरति हसना* (2:102), और इस धारणा से दुनिया और आख़िरत के बीच, जो कि इंसानी जीवन के दो चरण हैं, किसी भी तरह के टकराव या विरोधाभास की धारणा हमारे दिल से निकल जाती है और इन दोनों के बीच एक सामंजस्य और समन्वय की भावना जागृत होती है।

इन दुआओं के माध्यम से मोमिन को यह याद दिहानी कराई जाती है और उसे बताया जाता है कि वह किन चीज़ों को हासिल करने की कोशिश करे और किन चीज़ों से बचने का प्रयास करे। कोई व्यक्ति तब तक अपनी दुआओं का जवाब नहीं पा सकता जब तक कि वह खुद अपने अन्दर के इंसान को ठीक करने पर ध्यान न दे और जो चीज़ वह चाहता है उसे प्राप्त करने के लिए खुद लगातार कोशिश न करे।

وَ اٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ؕ وَ اِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ۝

और तुमको हर वो चीज़ दी जो तुमने मांगी, और अगर शुमार करने लगो अल्लाह की नेमतों को तो शुमार ना कर सकोगे, बेशक इन्सान बड़ा बे इन्साफ़ और नाशुक्रा है। (14:34)

क़ुरआन की कई आयतों में इंसान को उसकी मुख्य कमज़ोरियों से आगाह किया गया है। इंसान की कमज़ोरियों का यह बयान उसे अपमानित करने के लिए नहीं किया गया है, न ही इंसान को जन्मजात रूप से पापी बताने के लिए किया गया है (क्योंकि आदम व हव्वा अलैहुमा अस्सलाम) की ख़ता अल्लाह ने मआफ़ कर दी थी), बल्कि इंसान को यह चेताने के लिए किया गया है कि वह इन कमज़ोरियों पर नियंत्रण पाने की कोशिश करे। उपरोक्त आयत में इंसान की ना-इंसाफी और नाशुक्री (न्याय और कृतज्ञता से हटने की प्रवृत्ति) की कमज़ोरी को रेखांकित किया गया है, खास तौर से पैदा करने वाले रब के उपकारों की नाशुक्री जिसने तमाम इंसानों को ऐसी अपार नेअमतों (वरदानों) से नवाज़ा है जो इंसान के अपने लिए भी और धरती पर इंसानी जीवन के लिए भी ज़रूरी हैं। दूसरी आयतों में इंसान को एक तरफ़ तुरन्त निराश हो जाने वाला और दूसरी तरफ़ ना-शुक्रा बताया गया हैः *"और अगर इंसान को अपने पास से नेअमत बख़्शें फिर उसको उससे छीन लें तो निराश (और) नाशुक्र (हो जाता) है।"* (9:11) झगड़ालू (16:4 व 36:110), जल्दबाज (17:11), और तंग दिल (17:100) बताया गया है।

लेकिन इसके बावजूद इस दुनिया में इंसान के ऊपर अल्लाह की नेअमतों का दरवाज़ा बन्द नही होता चाहे इंसान का रवैया कुछ भी हो (17:20)। तमाम इंसानों पर अल्लाह का एक अहम अहसान यह है कि वह इंसानों के आपसी सम्बंधों को बनाए रखता है और इंसानी जीवन को चलाए रखता है। अल्लाह ने मर्द और औरत के बीच और मातापिता व संतान के बीच जो स्वभाविक आकर्षण रखे हैं उनकी पूर्ति या संतुष्टि विवाह और परिवार बनाने से होती है। दम्पत्ति और संतान वास्तव में आंखों की ठण्डक हैं और परिवार समाज की इकाई होता है (25:75)। ऐसा कोई सम्पन्न व संतुष्ट परिवार अगर अल्लाह की कृपा से जीवन की बहतरीन चीज़ों से लाभान्वित हो (17:70) तो एक समझदार इंसान को चाहिए कि वह इन नेअमतों पर अल्लाह का शुक्र अदा करे जो इन नेअमतों का पैदा करने वाला और देने वाला है। लेकिन ऐसे लोग हमैशा रहे हैं जो इन नेअमतों पर ध्यान नहीं देते और ना शुक्री के साथ उनसे लाभान्वित होते रहते हैं।

وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْۢ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا ۙ وَّ جَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَ الْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝

और अल्लाह ने तुमको तुम्हारी मांओं के पेट में से निकाला इस हालत में के कुछ भी ना जानते थे, और उसने तुमको कान दिये, आंख दी, और दिल दिया ताकि तुम शुक्र अदा करो। (16:78)

किसी नवजात शिशु में अल्लाह तआला जो इन्द्रियां पैदा करता है उनमें बढ़ोतरी और विकास होता रहता है और आस पास के भौतिक और सामाजिक वातावरण से उनका सम्बंध स्थापित हो जाता है। इन सभी चीज़ों से सम्बंध स्थापित करने की क्षमता के बिना इंसान की वह योग्यताएं और गुण जो इंसान को दूसरे जीवों से ऊपर उठाते हैं वह उसके अंदर बाक़ी नहीं रह सकते। लेकिन यह सच्चाई कि जब इंसान पैदा होता है तो हर बात से बे-ख़बर होता है, क़ुरआन के इस बयान से नहीं टकराती कि इंसानी नफ़्स में बुराइयों और नेकियों को डाल दिया गया है (91:18), क्योंकि हर आयत में अलग अलग तरह की बात बताई गयी है और उन्हें हासिल करने के दो अलग अलग रास्ते बताए गए हें। बचपन से लेकर जवानी तक इंसान के अन्दर जो विकास होता है उसमें तमाम इंसानी खूबियां कुल रूप से शामिल हैं चाहे वह शरीरिक हों, बौद्धिक और मनोवैज्ञानिक हों, नैतिक और अध्यात्मिक हों। यह सम्पूर्ण विकास अल्लाह की रचना में गतिशीलता को दर्शाता है और इस बात के लिए तर्क बनता है कि इंसान पर अपनी शक्तियों को अल्लाह के मार्गदर्शन के अनुसार विक्सित करने की ज़िम्मेदारी है, *"(और जान लो कि) कान और आंख और दिल इन सब (इन्द्रियों) से अवश्य पूछगछ होगी।"* (17:36)। क़ुरआन बार बार कान व आंख के बाद दिल का ज़िक्र करता है

(23:78; 32:9; 46:26; 67:23), और इसे एक ऐसे अंग के रूप में पेश करता है जिसका बहुत ध्यान रखा जाना चाहिए (2:88; 6:25,110,113; 7:179; 13:28; 16:22, 108; 17:46; 18:28,57; 22:46; 33:4; 41:5; 45:23; 47:24)। बार बार दिल का यह ज़िक्र क्या केवल एक रूपक (प्रतीक) है या वास्तव में इससे अभिप्राय वह अंग है जो इंसान के सीने में धड़कता है? क्या यह उसी रूप में इस्तेमाल किया गया है जिस तरह अरबी व दूसरी भाषाओं के साहित्य में भावनाओं का केन्द्र दिल को माना गया है, कि जोश और उत्साह का सीधा प्रभाव दिल पर ही होता है, या क़ुरआन में इसका महत्व कुछ अलग ही है? और अगर यह शब्द रूपक के रूप में ही प्रयोग हुआ है तो क्या इसका अर्थ मस्तिष्क से है, या उससे भी अधिक या उससे कम? क्या इंसान के दिल का सम्बंध इंसान की आत्मा से है (15:29; 17:85; 32:9; 38:72) ? यह सभी सवाल भौतिक विज्ञान और मनोविज्ञान के विशेषज्ञों के लिए भी शोध का विषय हैं और अरबी भाषा व साहित्य का ज्ञान रखने वालों, भाषाविदों और मुस्लिम स्कॉलरों पर भी इनका जवाब ढूंढने की ज़िम्मेदारी है।

وَيَدْعُ الْإِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالْخَيْرِ ؕ وَكَانَ الْإِنْسَانُ عَجُوْلًا ۝١١

और इन्सान बुराई के लिये इस तरह प्रार्थना करता है जिस तरह भली बात के लिए प्रार्थना करता है, और इन्सान जल्द कुछ है। (17:11)

इस आयत में इंसान की एक बड़ी कमज़ोरी को उजागर किया गया है और वह है जल्दबाज़ी। इस जल्दबाज़ी के साथ इंसान के ज्ञान की कमी भी जुडी हो, यानि किसी मामले के सभी पहलुओं से अवगत न होना, ख़ास तौर से लोगों के साथ सम्बंध और समय व स्थान के मामले में जानकारी का अभाव, तो इंसान से ग़लत फ़ैसलों की ही अपेक्षा की जाएगी। इसी तरह यह बात है कि कोई व्यक्ति अल्लाह तआला से किसी चीज़ की यह सोच कर दुआ करे कि वह उसके लिए बहतर है हालांकि वह उसके लिए बहतर साबित न हो, जैसा कि क़ुरआन की एक और आयत में कहा गया है: *"अजब नहीं कि एक चीज़ तुम्हें बुरी लगे और वह तुम्हारे लिए बहतर हो और अजब नहीं कि एक चीज़ तुम को भली लगे और वह तुम्हारे लिए नुक़सानदेह हो और (इन बातों को) अल्लाह ही बहतर जानता है और तुम नहीं जानते।"* (2:216)। इसके अलावा, गुस्से की हालत में कभी इंसान अपनी पत्नि, बच्चे या किसी दोस्त को या ख़ुद को कोसते हुए मर जाने की बद दुआ कर बैठता है हालाँकि सुकून की स्थिति में वह ऐसा क़तई नहीं चाहता। अल्लाह से कभी किसी को नुक़सान पहुंचाने की बद दुआ नहीं करना चाहिए सिवाय इसके कि कोई पीड़ित हो। अल्लाह से मदद की दुआ हमैशा की जा सकती है, लेकिन अल्लाह से किसी के लिए बिना किसी ऐसे कारण के जिसके लिए अल्लाह

से न्याय की गुहार करना सही हो, बद-दुआ नहीं करना चाहिए। किसी गुनाह करने वाले को अल्लाह तौबा (पश्चाताप) की सीख भी दे देता है और अपनी पिछली गलतियों के बदले अच्छे कामों का मौका भी दे देता है। अल्लाह तआला दयालू और कृपावान है इसलिए वह ऐसे लोगों को सज़ा देने में जल्दी नहीं करता जो दुनिया में सज़ा के भोगी हों क्योंकि उसने हर इंसान के लिए एक अवधि निर्धारित कर रखी है, और हर इंसान जब अपने मालिक की तरफ़ वापस होगा तो अल्लाह के इंसाफ और बदले के तराजू में तौला जाएगा (10:11; 16:61; 20:129; 29:53,54; 35:45; 12:14)। लेकिन किसी कुकर्मी के कुकर्मों का प्रभाव स्वयं उसके ऊपर पड़ता है और दुनिया के इस जीवन में दूसरों के साथ उसके सम्बंध प्रभावित होते हैं।

وَكُلَّ إِنسَانٍ أَلْزَمْنَٰهُ طَٰٓئِرَهُۥ فِى عُنُقِهِۦ ۖ وَنُخْرِجُ لَهُۥ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ كِتَٰبًا يَلْقَىٰهُ مَنشُورًا ﴿١٣﴾ ٱقْرَأْ كِتَٰبَكَ ۖ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ ٱلْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ﴿١٤﴾

और हमने हर इन्सान का अमल उसके गले का हार बना कर रखा है, और क़यामत के दिन हम उसका कर्मपत्र उसके वास्ते निकाल कर उसके सामने कर देंगे जिसको वो खुला हुआ देख लेगा। अपना कर्मपत्र ख़ुद पढ़े ले, और आज तू ख़ुद अपना आप ही हिसाब करने के लिए काफ़ी है। (17:13-14)

एक सच्चा मोमिन अपने भाग्य का हाल पक्षियों से, फ़ाल खोल कर या सितारों से मालूम नहीं करता जैसा कि अज्ञानता के युग में अरब में प्रचलित था या दूसरी जगहों पर आज भी बहुत से लोग इन अंधविश्वासों में जीते हैं। यह केवल इंसान की जिज्ञासा और उसके कर्म हैं जो इस दुनिया में और दुनिया के बाद आख़िरत के जीवन में उसका भाग्य निर्धारित करते हैं। हमारे ऊपर खुद हमारे कर्मों की जिम्मेदारी है घटनाओं या आपदाओं की नहीं। फ़ैसले के दिन हर इंसान के अच्छे या बुरे कर्मो का हिसाब किताब उसके सामने आ जाएगा और इस तर हर एक को उसके कर्मों का बदला मिलेगा। इस्लाम में व्यक्ति की व्यक्तिगत जवाबदेही का मामला बुनियादी है और क़ुरआन में इसे बार बार जताया गया है (जैसे 52:21; 53:38-41; 74:38), और यह जबाबदेही न केवल इस दुनिया में लोगों के सामने है जहां कोई व्यक्ति स्वयं को दूसरों की नज़रों से छिपा सकता है या तथ्यों को बदल सकता है, बल्कि अल्लाह के सामने भी है जो हर चीज़ की जानकारी रखता है, जहां हर एक का अपना रिकार्ड स्वयं उसी के खिलाफ़ गवाही देगा।

وَإِذَا مَسَّكُمُ ٱلضُّرُّ فِى ٱلْبَحْرِ ضَلَّ مَن تَدْعُونَ إِلَّآ إِيَّاهُ ۖ فَلَمَّا نَجَّىٰكُمْ إِلَى ٱلْبَرِّ

और जब तुमको दरिया में कोई तकलीफ़ होती है तो अल्लाह के सिवा जिनकी तुम इबादत करते हो वो सब

اَعۡرَضۡتُمۡ ؕ وَ كَانَ الۡاِنۡسَانُ كَفُوۡرًا ﴿۶۷﴾
اَفَاَمِنۡتُمۡ اَنۡ يَّخۡسِفَ بِكُمۡ جَانِبَ الۡبَرِّ
اَوۡ يُرۡسِلَ عَلَيۡكُمۡ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوۡا
لَكُمۡ وَكِيۡلًا ﴿۶۸﴾ اَمۡ اَمِنۡتُمۡ اَنۡ يُّعِيۡدَكُمۡ
فِيۡهِ تَارَةً اُخۡرٰى فَيُرۡسِلَ عَلَيۡكُمۡ قَاصِفًا
مِّنَ الرِّيۡحِ فَيُغۡرِقَكُمۡ بِمَا كَفَرۡتُمۡ ۙ ثُمَّ لَا
تَجِدُوۡا لَكُمۡ عَلَيۡنَا بِهٖ تَبِيۡعًا ﴿۶۹﴾

ग़ायब हो जाते हैं फिर जब वो तुम को थल की तरफ़ बचा लाता है तो तुम फिर जाते हो, और इन्सान बड़ा ही नाशुक्रा है। तो क्या तुम बेफ़िक्र हो गए इस बात से के तुम को थल की तरफ़ लाकर ज़मीन में धंसा दे या तुम पर ऐसी तेज़ आंधी भेज दे जो कंकर, पत्थर बरसाने लगे, फिर तुम किसी को अपना कारसाज़ ना पाओ। या तुम इससे निश्चित हो गए हो के अल्लाह तुम को दरया में ही दोबारा ले जाये, फिर तुम पर हवा का सख़्त तूफ़ान भेज दे, फिर तुमको तुम्हारे इंकार के सबब डुबा दे फिर उस पर हमारा पीछा करने वाला तुमको ना मिले।
(17:67-69)

इंसान की कमज़ोरियाँ जीवन की कठिनाइयों में सामने आती है जिनमे इंसान के इरादों और कोशिशों की परीक्षा होती है। लोग आम तौर से कठिनाइयों में अल्लाह को पुकारते हैं और जैसे ही कठिन स्थिति से निकल आते हैं और राहत मिल जाती है तो वो अल्लाह को भूल जाते हैं और अपनी तंग नज़र आत्म इच्छाओं और स्वार्थ के पीछे चलते लगते हैं (10:12; 17:67, 83; 39:8,49; 41:51; 53:16; 96:6-7)। दूसरी तरफ़ ऐसे भी लोग हैं जो कठिनाइयों में निराश हो जाते हैं और यह समझते हैं कि अल्लाह ने उन्हें बे सहारा छोड़ दिया है और उन्हें ज़लील कर दिया है हालांकि वो अल्लाह पर ईमान भी रखते हैं (11:9; 41:49; 42:48; 89:15-16)। अल्लाह पर सच्चा ईमान इंसान को जीवन के उतार चढ़ाव को संयम के साथ झेलने और गर्व या असहाय होने की भावना में बहने के बजाए बीच की स्थिति पर जमे रहने का साहस देता है और इस तरह कठिनाई व सरलता दोनों स्थितियों में अल्लाह की ना शुक्री से बचाता है (11:9-11)। जैसा कि रसूल सल्ल. ने फ़रमाया मोमिन के लिए हर हाल में ख़ैर ही ख़ैर है, अगर उसे सुख और आनन्द मिलता है तो वह अपने रब का शुक्र करता है और उसमें उसके लिए ख़ैर ही ख़ैर है, और अगर उसे कोई दुख और तकलीफ़ पहुंचे और उसने सब्र किया तो इसमे भी उसके लिए ख़ैर और बरकत है।'' (मुस्लिम)

وَ لَقَدۡ كَرَّمۡنَا بَنِىۡۤ اٰدَمَ وَ حَمَلۡنٰهُمۡ فِى
الۡبَرِّ وَ الۡبَحۡرِ وَ رَزَقۡنٰهُمۡ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ
وَ فَضَّلۡنٰهُمۡ عَلٰى كَثِيۡرٍ مِّمَّنۡ خَلَقۡنَا
تَفۡضِيۡلًا ﴿۷۰﴾

और हमने आदम की औलाद को इज़्ज़त बख़्शी और उनको थल और जल में सवारी अता की, और पाकीज़ा रोज़ी इनायत की, और अपने बहुत से जीव जन्तुओं पर उनको प्रतिष्ठ दी। (17:70)

अल्लाह ने इंसान पर जो कृपा और उपकार किए हैं उन्हें क़ुरआन में बार बार दोहराया गया है ताकि इंसान उनको माने, उनका महत्व समझे और उनसे फ़ायदा उठाए और अल्लाह का शुक्र गुज़ार बने। इंसान को शरीरिक, बौद्धिक और अध्यात्मिक रूप से दूसरे बहुत से जीवों पर बरतरी दी गयी है। इंसान की प्रतिष्ठा अल्लाह के पैग़ाम का बुनियादी लक्ष्य है जिसके लिए इंसान के दिल व दिमाग़ की गहराइयों में तौहीद के अक़ीदे, अल्लाह के आज्ञापालन और व्यक्तिगत जवाबदेही में विश्वास के द्वारा मानव अधिकारों और न्याय की भावना जगाना है और इंसानी सम्बंधों में उनके उल्लंघन को रोक देना है। अल्लाह को इस बात की ज़रूरत नहीं है कि इंसान उसकी इबादत करे, बल्कि वह यह चाहता है कि इंसान झूठे ख़ुदाओं से बचे और उनका विरोध करे जो इस दुनिया में उसका शोषण करते हैं, उनका उत्पीड़न करते हैं और इंसानों के साथ जानवरों या मशीनों जैसा व्यवहार करते हैं। इंसानी प्रतिष्ठा और सम्मान अल्लाह ने आदम की हर संतान को समान रूप से प्रदान किया है, चाहे उसका अक़ीदा, लिंग, रंग जाति या प्रजाति कुछ भी हो। इंसानी प्रतिष्ठा अधिकारों और जिम्मेदारियों दोनों पर आधारित है, क्योंकि ज़िम्मेदारियों को छोड़ कर केवल अधिकारों पर ध्यान देने से प्रतिष्ठा सही अर्थों में प्राप्त नहीं हो सकती, न व्यक्ति या समाज को इससे वास्तविक विकास प्राप्त हो सकता है। ज़िम्मेदारियों को पूरा करने पर ही अधिकारों से लाभान्वित होने का नैतिक आधार प्राप्त होता है। इस तरह इंसानी प्रतिष्ठा इन दोनों तत्वों के बिना न प्राप्त हो सकती है और न मुकम्मल हो सकती है।

प्रतिष्ठा व सम्मान प्राप्त इंसान को अपनी शरीरिक, बौद्धिक और अध्यात्मिक क्षमता की रक्षा करने और उसे विक्सित करने के लिए और इस दुनिया में इंसान की कारकर्दगी को बनाए रखने तथा बढ़ाने के लिए पाकीज़ा रोजी दी गयी है। चूंकि इंसान एक चलने फिरने वाला जीव है इसलिए उसके लिए ज़मीन, समुद्र और हवा तथा अंतरिक्ष में आवागमन के साधन उपलब्ध कराए गए है: *"अल्लाह ही तो है जिसने दरिया को तुम्हारे नियंत्रण में कर दिया ताकि उसके हुक्म से इसमें कश्तियां चलें और ताकि तुम उसकी कृपा ( से रोज़ी) तलाश करो और ताकि शुक्र करो। और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब को अपने (हुक्म) से तुम्हारे काम में लगा दिया, जो लोग ग़ौर करते हैं उनके लिए इसमें अल्लाह की क़ुदरत की निशानियां हैं।"* (45:12,13) इस्लामी कानून और इस्लामी राज्य की यह आम ज़िम्मेदारी है कि वह दैनिक जीवन में व्यवहारिक रूप से इंसान की प्रतिष्ठा को बनाए रखने के साधन उपलब्ध कराए, इंसान की शक्तियों व क्षमताओं की रक्षा करे और जिन ऊर्जाओं से अल्लाह ने इंसान को नवाजा है उन्हें विक्सित करे। इंसान की अध्यात्मिक, नैतिक और बौद्धिक क्षमताएं जो कि अल्लाह के महान वरदान हैं इंसान को अल्लाह की अन्य रचनाओं (जीवों) से बुलन्द करती हें। जो लोग अल्लाह पर ईमान रखते हें उन्हें इस बात से पूरी तरह ख़बरदार होना चाहिए

कि हर इंसान के लिए इंसानी प्रतिष्ठा का मतलब क्या है और यह चीज़ उसे किस तरह हर समय व स्थान पर एक अनिवार्य वरदान और ईशवरीय नियम के रूप में शक्ति देती है।

وَ اِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَ نَاٰ
بِجَانِبِهٖ ۚ وَ اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ
يَـُٔوْسًا ﴿٨٣﴾ قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ ؕ
فَرَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ اَهْدٰى سَبِيْلًا ﴿٨٤﴾
وَ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ ؕ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ
اَمْرِ رَبِّيْ وَ مَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ اِلَّا
قَلِيْلًا ﴿٨٥﴾

83. और जब हम इन्सान को कोई नेअमत अता करते हैं तो मुंह मोड़ लेता है और करवट फेर लेता है और जब उसको तकलीफ़ होती है तो निराश हो जाता है। 84. आप फ़रमा दीजिये हर व्यक्ति अपने तौर पर काम कर रहा है, सो तुम्हारा रब ख़ूब जानता है कि कौन ज़्यादा सीधे रास्ते पर है। 85. और ये आपसे रूह (आत्मा) के बारे में मालूम करते हैं आप कह दीजिये के रूह मेरे रब के हुक्म से है, और तुम को बहुत थोड़ा ज्ञान दिया गया है। (17:83-85)

इंसान की बौद्धिक क्षमताओं के बावजूद उसकी सोच केवल वर्तमान स्थिति पर ही केन्द्रित हो जाती है और इस लिए वह राहत व सुविधा की स्थिति में घमण्डी और स्वार्थी नज़र आता है और कठिन स्थिति में निराश और हताश हो जाता है। अल्लाह पर ईमान मोमिन को एक व्यापक दृष्टिकोण देता है ताकि वह जीवन के किसी भी चरण में स्वयं को असहाय न समझे। उतार चढ़ाव अनिवार्य हैं, और कामयाबी व नाकामी का मतलब यह क़तई नहीं होता कि उसके आगे दुनिया ख़त्म है। यह जीवन बहरहाल बहुत छोटा है, और हर इंसान उसी चीज़ का हक़दार है जो कुछ आख़िरत में उसे मिलने वाला है।

इंसान के मनोवैज्ञानिक और व्यवहारिक संतुलन पर ईमान का जो प्रभाव पड़ता है उसे क़ुरआन बयान करता है: *"अगर तुम्हें (पराजित होने का) घाव लगा है तो उन लोगों को भी ऐसा घाव लग चुका है, और ये दिन हैं कि हम इनको लोगों में बदलते रहते हैं, और इससे यह भी मक़सद था कि अल्लाह तआला ईमान वालों को अलग कर दे और तुम में से गवाह बनाए और अल्लाह तआला बे-इंसाफों को पसन्द नहीं करता।"* (3:140), *"अगर तुम बे-आराम होते हो तो जिस तरह तुम बे आराम होते हो उसी तरह वे भी बे आराम होते हैं और तुम अल्लाह से ऐसी ऐसी उम्मीदें रखते हो जो वे नहीं रख सकते "और अल्लाह सब कुछ जानता (और) बड़ी हिकमत वाला है"* (4:104), "और अल्लाह की रहमत से निराश न हो कि अल्लाह की रहमत से बे ईमान लोग निराश हुआ करते हैं"(12:87), (और देखें 15:56)। लेकिन क़ुरआन यह भी कहता है कि लोग अपनी योग्यताओ, संस्कारों और अपने उद्देश्यों के लिहाज़ से अलग अलग तरह की सोच एव व्यवहार को प्रस्तुत करते हैं, और यह अल्लाह ही है जो हर व्यक्ति

की पूरी स्थिति से पूरी तरह बा खबर है और केवल वही है जो किसी व्यक्ति की पसन्द का जिसे व्यक्ति अपने लिए सबसे बहतर समझता है फ़ैसला कर सकता है।

उपरोक्त आयतों में सबसे आख़री आयत एक ऐसे सवाल के बारे में है जो अल्लाह के रसूल सल्ल. से पूछा गया था, कि *रूह* (आत्मा) क्या है। क्या इसका अर्थ वह आत्मा है जो अल्लाह ने इंसानी आकार के मिट्टी के पुतले (आदम) में फूंकी थी (15:29; 32:9; 38:72)? या इससे मुराद ''रूहुल कुदुस है'' जो क़ुरआन में जिब्रईल अलैहिस्सलाम को कहा गया है जो अल्लाह के नबी की तरफ़ *वह्यि* लेकर आते थे (2:87, 253; 5:110; 16:2; 19:17; 26:193; 40:15; 70:3; 78:38)? इस *रूह* से मुराद चाहे वह रूह हो जो अल्लाह ने इंसान में फूंकी थी और जो इंसान की *रूहानियत* (आत्मा) को प्रेरित करती है, या अल्लाह के रसूल की तरफ़ फरिशते के द्वारा भेजी गयी *वह्यि* हो, दोनों ही रहस्यमय हैं और इन में से हर एक के बारे में जानने की जिज्ञासा पैदा होती है। क़ुरआन हालांकि ऐसी चीजों की प्रकृति को स्पष्ट नहीं करता जो इंसानी प्रकृति से अलग हों और इंसान के लिए उनका बोध सम्भव न हो। क़ुरआ बस यह इशारा देता है कि रूह अल्लाह का कलाम है और उस पर उसी का हुक्म चलता है, और इंसान का ज्ञान जो उसे अपनी इन्द्रियों व मस्तिष्क से प्राप्त होता है, सीमित है। इंसान की जानकारी में, ज़मीन पर आबाद होने से लेकर अब तक जो कुछ भी आ सका है, वह आधुनिक खोजों के बावजूद अभी भी बहुत सीमित है, और इस सृष्टि में, आत्मा का रहस्य तो अपनी जगह, अनेक ऐसे भौतिक तथ्य हैं जिन तक इंसानी अक़ल नहीं पहुंच सकी है। इसके बावजूद, आत्मा के प्रभाव, चाहे वह इंसान के अन्दर अल्लाह के द्वारा फूंकी गयी आत्मा हो या पैग़म्बरों की तरफ़ आने वाला फ़रिश्ता हो, जगज़ाहिर है और उनका महत्व समझा जा सकता है, हालांकि इसकी प्रकृति और स्वरूप समझ में नहीं आता जिस तरह चुम्बक और बिजली जैसे भौतिक बलों के प्रभाव तो मालूम हैं लेकिन उनका स्वरूप मालूम नहीं है।

إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ أَيُّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۝

जो चीज़ें ज़मीन पर हैं हमने उनको ज़मीन की सजावट के लिये बनाया है, ताकि हम लोगों की आज़माईश करें के कौन ज़्यादा अच्छा अमल करता है। (18:7)

धरती को साज सज्जा दी गयी है जिससे उस पर बसने वाले इंसानों को जीविका के साधन उपलब्ध होते हैं और तरह तरह के आनन्द प्राप्त होते हैं। अगर यह आनन्द लेते हुए इंसान ज़हन में यह रखे कि यह मज़े उससे इस जीवन में तो कभी भी छिन सकते हैं और तमाम इंसानों के लिए भी उनका एक दिन खात्मा हो जाएगा, और फिर वह अल्लाह से रहनुमाई (मार्गदर्शन) मांगे, और जो नेअमतें उसे दुनिया में मिली हुई हैं उन्हें इस्तेमाल करते हुए अल्लाह

की प्रसन्नता प्राप्त करने की इच्छा रखे तो ऐसा आदमी इन वक़्ती मज़ों को और इस जीवन की साज सज्जा को बहतरीन तरीक़े से बरतेगा और इस जीवन के बाद आने वाले जीवन में भी अल्लाह की बहतरीन नेअमतें और उपहार उसे प्राप्त होंगे। लेकिन यह आवश्यक संतुलन अधिकतर मामलों में बना नहीं रहता और आदमी इस दुनिया के आनन्द और साज सज्जा में मगन हो जाता है। इस के नतीजे में वह संसारिक वस्तुओं को और जीवन के साधनों व संसाधनों को जमा करने में लग जाता है इस बात की परवाह किए बिना कि इससे दूसरों को क्या नुक़सान पहुंच रहा है या ख़ुद उसे आख़िरकार क्या नुक़सान पहुंचेगा। यह निस्संदेह अल्लाह की तरफ़ से इंसान की अक़ल व इच्छा के लिए, जो कि इंसान को अल्लाह की तरफ़ से अनमोल उपहार हैं, एक कठिन परीक्षा है।

وَ لَقَدْ صَرَّفْنَا فِیْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَ كَانَ الْاِنْسَانُ اَكْثَرَ شَیْءٍ جَدَلًا ﴿۵۴﴾

और हमने इस क़ुरआन में लोगों की हिदायत के लिये बहुत सी मिसालें तरह तरह से बयान की हैं, और ये इन्सान सब से बढ़ कर झगड़ालू है। (18:54)

अल्लाह ने इंसान को बुद्धि और बोलने की जो शक्ति दी है उसे कोई आदमी ग़लत तरीक़े से या असीमित ढंग से भी इस्तेमाल कर सकता है जैसे यह कि समय को व्यर्थ गंवाए, या किसी ख़ास मामले में अपनी हठ पर परदा डालने के लिए, या किसी अनुचित बात को मनवाने के लिए वह इन शक्तियों और क्षमताओं को लगाता है। लेकिन ऐसी चीज़ों के लिए दिमाग़ और जीभ का उपयोग ना-समझी की बात है और इन शक्तियों का यह ग़लत इस्तेमाल इंसानी सूझ-बूझ के भी ख़िलाफ़ है और उसे धोखा देने के समान है। इस तरह के व्यवहार में शब्दों का प्रयोग विचारों की उद्देश्यपूर्ण अभिव्यक्ति और सकारात्मक आदान प्रदान के लिए नहीं होता, बल्कि वाक्यपटुता, खोखली बातों और लड़ाई झगड़ों के लिए होता है। जो लोग समझने और बोलने की महान क्षमताओं का दुरूपयोग करते हैं वह किसी भी बात पर तकरार करने लगते हैं चाहे वह सही हो या ग़लत। इस तरह के बातूनी लोगों को जो अपने ग़लत और बुरे विचारों व कर्मों को दुरूस्त साबित करने के लिए या दूसरों को गुमराह करने के लिए बतौल-बाज़ी करते हैं, क़ुरआन के रूप में मौजूद अल्लाह का संदेश भी इस बतौल-बाज़ी से नहीं रोक सकता (2:26)।

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ؕ وَ نَبْلُوْكُمْ بِالشَّرِّ وَ الْخَیْرِ فِتْنَةً ؕ وَ اِلَیْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿۳۵﴾

हर जानदार को मौत का मज़ा चखना है, और हम तुम को बुरे भले सब हालात से आज़माते हैं, और तुम को हमारी तरफ़ लौट कर आना है। (21:35)

यह आयत इस दुनिया में इंसान की कहानी को पूरा करती है। इस जीवन के तमाम उतार चढ़ाव हर इंसान के लिए एक परीक्षा हैं और इन सभी तरह की स्थितियों में इंसान का जो व्यवहार रहा होगा उसके मुताबिक़ उसका फैसला होगा। अल्लाह की हस्ती में और आख़िरत के जीवन में किसी का सच्चा विश्वास उसे कामयाबी के घमण्ड और नाकामी की निराशा से बचाएगा। उसे अपना काम स्थिरता के साथ जारी रखने की प्रबल इच्छा शक्ति प्राप्त होगी, कामयाबी मिलने पर वह अल्लाह का शुक्रगुज़ार होगा और नाकामियों से उबरने के लिए संयम और अडिगता के साथ कोशिश करेगा क्योंकि वह अल्लाह की तरफ़ से एक आजमाईश (परीक्षा) में होता है और उससे मार्गदर्शन व मदद का इच्छुक होता है।

خُلِقَ الْاِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ؕ سَاُورِيْكُمْ اٰيٰتِيْ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ ۝

इन्सान जल्दी का पैदा किया हुआ है, मैं जल्द ही तुमको अपनी निशानियां दिखाऊँगा, अतः तुम मुझ से जल्दी ना करो। (21:37)

इंसान के स्वभाव में जल्दबाज़ी है जिसकी वजह से वह अपने फ़ायदे के लिए दूसरों को नुकसान पहुंचाने में लगा रहता है। ऐसी जल्दबाज़ी में वह आम तौर से अनुचित और ग़लत हरकतें करता है। इंसान अपने रब से भी यही चाहती है कि वह भी तुरन्त अपनी बात पूरी करे और क़ियामत ले आए और आख़िरत का जो यक़ीन दिलाया जा रहा है उसे सामने ले आए (देखें पहले जिक्र की गयी आयतें 10:11; 17:11 और उनकी तफ़सीरे) हालांकि सच्चाई यह है कि यह जल्दबाज़ी उसे अज़ाब (अल्लाह के प्रकोप) से ही क़रीब करती है अगर वह ग़ौर करे (6:57, 58; 10:11, 51; 22:47; 26:203, 204; 27:46, 71, 72; 29:53, 54; 37:176; 42:18)। लेकिन अल्लाह तआला ने अपनी योजना और न्यायिक फ़ैसले के मुताबिक़ दुनिया की समाप्ति का समय निर्धारित किया हुआ है और यह समय जल्दी या देर में आने की इंसानी तमन्ना से कभी नहीं बदलेगा (6:60; 11:3; 14:10; 16:61; 18:58; 20:129; 29:53; 39:42; 40:67; 42:14; 71:4)।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَّ غَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ؕ وَ نُقِرُّ فِي الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى

ऐ लोगों! अगर तुम को मरने के बाद जो उठने में कोई शक है, तो हम ने पहली बार तुम को मिटटी से पैदा किया, फिर नुतफ़े (वीर्य) से, फिर ख़ून के लोथड़े से, फिर बोटी से जो बनावट में पूरी भी होती है और अधूरी भी, ताकि हम तुम्हारे सामने अपनी क़ुदरत ज़ाहिर कर दें, और हम जिसको चाहते हैं एक मुद्दत तक रहम (गर्भाश्य) में ठहराये रखते हैं फिर तुम को बच्चा बना कर निकालते

ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا
اَشُدَّكُمْ ۚ وَ مِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَ مِنْكُمْ
مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ
مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ؕ وَ تَرَى الْاَرْضَ
هَامِدَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ
وَ رَبَتْ وَ اَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۭ بَهِيْجٍ ۝٥
ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَ اَنَّهٗ يُحْيِ الْمَوْتٰى
وَ اَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝٦

हैं, ताकि तुम जवानी को पहुंच जाओ, और कुछ तुम में से मर जाते हैं, और कुछ निहायत ख़राब उम्र की तरफ़ लौट जाते हैं, जिसका नतीजा ये होता है के जानने के बाद भी बेख़बर हो जाते हैं और ऐ देखने वाले तू देखता है कि ज़मीन सूखी पड़ी होती है फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वो हरी भरी हो जाती और उभरने लगती है और तरह तरह की दिल लगती चीज़ें उगाती है। ये इसलिये हुआ कि अल्लाह बरहक़ (सत्य) है, और ये के वह ज़िन्दा करता है, और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (22:5-6)

وَ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ
طِيْنٍ ۝١٢ ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ
مَّكِيْنٍ ۝١٣ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً
فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ
عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ۗ ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ
خَلْقًا اٰخَرَ ؕ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ
الْخٰلِقِيْنَ ۝١٤ ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ۝١٥
ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ۝١٦

और हमने इन्सान को मिटटी के सत से पैदा किया। फिर हमने उसको एक मज़बूत और महफ़ूज़ जगह में नुतफ़ा बना कर रखा। फिर हम ही ने नुतफ़े को गोश्त का लोथड़ा बनाया, फिर लोथड़े को बोटी बनाया, फिर बोटी को हड्डी बनाया, फिर हड्डी पर मास चढ़ाया, फिर उसको नए रूप में बना दिया, तो क्या बड़ी शान है अल्लाह की, जो सब से बेहतर बनाने वाला है। फिर तुम उसके बाद ज़रूर मर जाओगे। फिर तुम क़यामत के रोज़ दोबारा ज़िन्दा किये जाओगे। (23:12-16)

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ
ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ
لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُيُوْخًا ۚ وَ
مِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ وَ لِتَبْلُغُوْٓا اَجَلًا
مُّسَمًّى وَّ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝٦٧ هُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ
وَ يُمِيْتُ ۚ فَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ
كُنْ فَيَكُوْنُ ۝٦٨

वही है जिसने तुम को मिटटी से पैदा किया, फिर नुतफ़े से, फिर लोथड़े से, फिर तुम को बच्चा बना कर निकालता है, फिर ताकि तुम पहुंचो अपनी जवानी को, फिर ताकि बूढ़े हो जाओ, और कोई तुम में पहले फ़ौत हो जाता है, और ताकि निर्धारित समय तक पहुंच जाओ, और ताकि तुम समझो। वही है जो जिलाता है और मारता है, फिर वो जब चाहता है के कोई काम करे तो कह देता है कि हो जा, तो वो हो जाता है। (40:67-68)

क़ुरआन जिस तरह कुछ जगहों पर इंसान के मनोवैज्ञानिक और नैतिक पहलू पर कलाम करता है इसी तरह कहीं कहीं इंसान के भौतिक पहलू पर भी बात करता है। ऊपर की आयतों में पहली आयत मिट्टी से आदम की पैदाइश के प्राथमिक चरण से लेकर इंसान के शरीरिक या भौतिक विकास तक पर रोशनी डालती है। क़ुरआन की एक दूसरी आयत बताती है कि आदम के अन्दर अल्लाह ने ख़ुद रूह फूंकी और फिर आदम व उनकी पत्नि जो ख़ुद उसी अस्तित्व से पैदा की गयी थीं, को ज़मीन पर संतानोत्पत्ति के लिए और जीविका उपार्जन के द्वारा विक्सित होने के लिए भेजा गया। ऊपर की आयत 22:5 में क़ुरआन इंसान की फिर से पैदाइश के भौतिक चरणों को बयान करता है, पहले मर्द का वीर्य और औरत का अण्डाश्य तैयार होता है, फिर विवाह के माध्यम से दोनों के बीच शरीरिक मिलन होता है और इस मिलन से रक्त की बूंद जमती है और लोथड़ा बनता है, फिर इंसानी वजूद का निर्माण होने लगता हे और यह वजूद शिशु के रूप में पैदा होता है अगर अल्लाह चाहता है और अल्लाह नहीं चाहता तो नहीं पैदा होता है। और यह केवल अल्लाह ही जानता है कि वह बच्चा अपने जीवन में शरीरिक, मानसिक और अध्यात्मिक रूप से कैसा होगा, वह चूंकि इंसान कि अनुवांशिक गुणों के इंसान में स्थानांतरित होने को जानता है और भौतिक व सामाजिक वातावरण से इंसान के मेलजोल के नतीजों से अवगत हे। अल्लाह यह बात जानता है कि वह कब तक जिएगा और कब मरेगा। जीवन की औसत अवधि पूरी होने पर इंसानी विकास का एक नया मोड़ आता है और फिर से शरीरिक, बौद्धिक व मनोवैज्ञानिक दुर्बलता आना शुरू हो जाती है ( और देखे 16:70 और उसकी तफसीर, 36:68)।

क़ुरआन में इंसान के भौतिक विकास के जो चरण बयान किए गए हें उन्हें एक आम पाठक आसानी से समझ सकता है और जीव वैज्ञानिक उन्हें गहराई के साथ और वैज्ञानिक रूप से समझ सकते हैं। यह क़ुरआन का एक निराला अंदाज़ है जिसमें वर्णन की सुन्दरता और सटीकता दोनों शामिल हैं। यह एक आम आदमी के ज्ञान को भी बढ़ाता है और विषय विशेषज्ञों की आंखें भी खोलता है और उन्हें सतही नज़र से ऊपर उठ कर देखने के लायक़ बनाता है। जब क़ुरआन इंसानी शरीर के विकास के चरणों को बयान करता है तो वह उसे जीवन के सामूहिक परिप्रेक्ष्य में पेश करता है और इंसानी विकास को बयान करते हुए पेड़ पौधों के विकास का भी ज़िक्र करता है। इस तरह से ज़हन भौतिक जीवन से अध्यात्मिक जीवन की तरफ़ मुड़ जाता है जो अल्लाह से सम्बंध के द्वारा और उसके मार्गदर्शन से मज़बूत होता हे। सृष्टि और जीवन के बारे में क़ुरआन जो ख़बरें देता है वो वैज्ञानिक तथ्यों को बयान करने के लिए नहीं हैं बल्कि लोगों को आम बुनियादी ज्ञान देने के मक़सद से हैं और पढ़ने वाले को सृष्टि से सृष्टा की तरफ़ और पैदाइश से पैदा करने वाले की तरफ़ ले जाने के लिए है।

الَّذِيٓ اَحۡسَنَ كُلَّ شَيۡءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلۡقَ
الۡاِنۡسَانِ مِنۡ طِيۡنٍ ۚ ثُمَّ جَعَلَ نَسۡلَهٗ مِنۡ
سُلٰلَةٍ مِّنۡ مَّآءٍ مَّهِيۡنٍ ۚ ثُمَّ سَوّٰىهُ وَ
نَفَخَ فِيۡهِ مِنۡ رُّوۡحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمۡعَ
وَالۡاَبۡصَارَ وَالۡاَفۡـِٕدَةَ ؕ قَلِيۡلًا مَّا تَشۡكُرُوۡنَ ۝

जिसने हर चीज़ को अच्छी तरह बनाया, और इन्सान की पैदाईश को मिटटी से शुरू किया। फिर उसकी नस्ल को सत से यानी हक़ीर पानी से पैदा किया। फिर उसको दुरूस्त किया और उसमें अपनी रूह फूंकी, और तुम्हारे कान, आंखें और दिल बनाए तुम बहुत कम शुक्र करते हो। (32:7-9)

अल्लाह तआला हर जीव को इस तरह बनाता है कि वह अपने सामान्य रूप और विशेष अंगों तथा विशेष आक्रति के साथ अपनी कारकर्दगी के लिए पूरी तरह अनुकूल और वातावरण के अनुसार होता है। जीवों में सृष्टि के वातावरण से सामंजस्य और इन दोनों कारकों के बीच एक प्राकृतिक व्यवस्था स्पष्ट है जो उसके पीछे एक युक्तिपूर्ण हस्ती की शक्ति को ज़ाहिर करती है। पहला इंसान मिट्टी के पुतले से इस अनुपातिक ढंग से बनाया गया कि वह दुनिया में अपनी इंसानी क्रियाओं के लिए पूरी तरह उपयुक्त हो, फिर इस पुतले में अल्लाह ने अपनी रूह फूंकी। यह सवाल ग़ौर करने का है कि इंसानी वजूद को बनाने और फिर उसे अल्लाह की मंशा के मुताबिके ठीक उसी अनुपात में जो इंसानी क्रियाओं के लिए उपयुक्त हो, प्रजनन के लायक बनाने के बीच क्या कोई समयान्तर है? क्या इंसान की रचना विकास के इन चरणों से गुज़रने मे लम्बा समय लेती हे जैसा कि संयोजक शब्द ''सुम्मा'' (फिर) से ज़ाहिर होता है, या आयत 23:12 में इन शब्दों से कि *''हमने इंसान को मिट्टी के सत से पैदा किया''*? क़ुरआन के ऐसे बयानों का कोई निश्चित जवाब बहुत कठिन है जिन का सम्बोधन आने वाली पीढ़ियों के लिए हो, चाहे उनके ज्ञान व जानकारी का स्तर कुछ भी हो। ''सुम्मा'' जो आम तौर से ''फिर'' या ''उसके बाद'' या ''कुछ समय के बाद'' के अर्थ में उपयोग होता है ''और'' के अर्थ में भी उपयोग हो सकता है, किसी अन्तराल को ज़ाहिर किए बिना। क़ुरआन कहता है ''मैं ने उनको न तो आसमानों और ज़मीन के पैदा करने के समय बुलाया था और न ख़ुद उनके पैदा करने के समय। और मैं ऐसा न था कि गुमराह करने वालों को सहायक बनाता।'' (18:51)

किसी भी चीज़ को बनाने के लिए अल्लाह का हुक्म इस तरह काम करता है कि *''जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है तो उससे फ़रमा देता है कि 'हो जा' तो वह हो जाती है।''* (36:83; 2:117; 3:47; 6:73; 16:40; 19:35; 40:68)। लेकिन अल्लाह का यह आदेश इस बात के विपरीत नहीं है कि जिन चीज़ों को वह पैदा करता है वो विभिन्न चरणों से गुज़रें या उनके पूरा होने में कुछ समय लगे। पैदा करना एक क्रमवार गतिशील प्रक्रिया है जैसा कि इस सृष्टि में और जीवों में जिनमें इंसान भी शामिल है, दिखाई देता है: ''वही है जो तुम को तुम्हारी माओं के पेट में (पहले) एक तरह फिर दूसरी तरह तीन अन्धेरों में बनाता है।''(39:6), वह

*"अपने जीवों मे जो चाहता है बढ़ाता है"* (35:1)। इंसान पैदा होने के बाद पैदाइश की एक लगातार प्रक्रिया से गुज़रता रहता है और अपने आसपास के भौतिक व सामाजिक वातावरण से सम्पर्क में आता है। इस लिहाज़ से अल्लाह का नाम *"अल-ख़ालिक़"* (पैदा करने वाला) हमेशा और हर समय के लिए दुरूस्त है और इस दुनिया के जीवन में लगातार जारी हरकत पर दलील बनता है। *"सब जीव भी उसी के हैं और आदेश भी (उसी का है)"* (7:45)। आख़िरत के अनन्त जीवन में अल्लाह की रचना किसी दूसरे रूप और दिशा में जारी रहती है: "जिस दिन यह ज़मीन दूसरी ज़मीन से बदल दी जाएगी और आसमान भी (बदल दिए जाएंगे)" (14:48)। कई आयतों में क़ुरआन ने आख़िरत के जीवन को नई पैदाइश से मिसाल दी है (10:34; 21:104; 27:64; 29:19; 30:11,27)। कई दूसरी आयतों में इंसान के मरने के बाद के जीवन को एक नई पैदाइश कहा है (17:49, 98; 50:15), *"अल्लाह पैदाइश को शुरू करता है और फिर अपनी उस रचना को एक नया रूप देता है"* (29:20)। इस तरह अल्लाह तआला हमैशा पैदा करता रहता है और हमैशा के लिए पैदा करने वाला है: *"तुम्हारा रब जो चाहता है पैदा करता है और (जिसे चाहता है) चुन लेता है।"* (28:168)

पहले इंसानी जोड़े को प्रजनन की व्यवस्था दी गयी थी जिससे इंसानी समुदाय का सिलसिला चला, और उनके समस्त भौतिक, बौद्धिक और मनोवैज्ञानिक व अध्यात्मिक गुण आने वाली पीढियों में पीढी दर पीढी स्थानांतरित होते रहे। इंसान को दूसरे जीवों से विशिष्ट बनाने वाली उसकी शक्तियां केवल शरीरिक अनुकूलता तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि बौद्धिक, मनोवैज्ञानिक व नैतिक तथा अध्यात्मिक पहलुओं पर भी छाई हुई हैं। महसूस करना, सोचना, इरादा करना और फ़ैसला लेना जैसे गुणों से इंसान की रचना हुई है जिसे इन नेअमतों के लिए अपने पैदा करने वाले अल्लाह तआला का शुक्र गुज़ार होना चाहिए हालांकि आम तौर से ऐसा नहीं होता। इन नेअमतों से लाभान्वित होते हुए और दैनिक जीवन की शरीरिक व भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इन शक्तियों को काम में लेते हुए हमारी नैतिक गिरावटें हमारे लिए रुकावट भी बन जाती है और इंसान के वजूद और व्यवहार पर पाश्विकता (हैवानियत) छा जाती है।

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَاَكُمْ فِي الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝ وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ؕ اَفَلَا

और (अल्लाह) तो वो ही है जिसने तुम्हारे कान और आंखें और दिल बनाये, लेकिन तुम बहुत कम शुक्र करते हो। और वही तो है जिसने तुम को ज़मीन में फ़ैलाया, और उसी की तरफ़ तुम जमा हो कर जाओगे। और वही है जो ज़िन्दगी बख़्शता और मौत देता है, और रात दिन का बदलना भी उसके हाथ में है, क्या तुम समझते नहीं।

تَعْقِلُوْنَ ۝٨٠ بَلْ قَالُوْا مِثْلَ مَا قَالَ
الْاَوَّلُوْنَ ۝٨١ قَالُوْٓا ءَاِذَا مِتْنَا وَ كُنَّا تُرَابًا
وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ۝٨٢ لَقَدْ
وُعِدْنَا نَحْنُ وَ اٰبَآؤُنَا هٰذَا مِنْ قَبْلُ اِنْ
هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٨٣

दरअसल बात ये है के जो बात पहले के लोग कहा करते थे, वही ये कह रहे हैं। ये कहते हैं के जब हम मर जायेंगे और मिटटी और हडिडयाँ हो जायेंगे, तो क्या हम फिर से ज़िन्दा किये जायेंगे? (23:78-83)

आख़िरत के जीवन के संदर्भ में क़ुरआन का एक और तर्क यह है कि अल्लाह ने इस दुनिया और पूरी सृष्टि को एक लगी बंधी व्यवस्था में गठित किया है और इसमें इंसान के लिए बहुत फ़ायदे रखे हैं। इंसान की पहली रचना उसकी सुनने, देखने, महसूस करने, सोचने और पूरी ज़मीन पर चलने फिरने की क्षमताओं के साथ, उसी तरह फिर से पैदा करने के मुक़ाबले कोई आसान बात नहीं, और यह किसी मक़सद के बग़ैर भी नहीं हो सकती। इंसानी जीवन और यह सारा जगत ऐसी अचम्भित करने वाली रचना है कि यह अचानक ही घटनात्मक रूप से अस्तित्व में नहीं आ सकती, और ऐसी अचम्भापूर्ण रचना की नक़ल करने वाले के बारे में यह कल्पना नहीं की जा सकती कि वह उसे पूरा किए बिना, और ख़ास तौर से इंसानों के संदर्भ में उनके साथ इंसाफ किए बिना इसका विनाश होने देगा या इसे समाप्त होने देगा। उपरोक्त आयतें यह जताती हैं कि आख़िरत के जीवन का इंकार कोई नया दृष्टिकोण नहीं है, और इस इंकार का चले आना इसके सही होने पर तर्क नहीं बन सकता, बल्कि इसके विपरीत इस इंकार से यह सिद्ध होता है कि इंकार करने वाले लोग अपनी इन्द्रियों का उपयोग बे सोचे समझे और सतही ढंग से करते हैं और इंसानी अक़ल को नकारते हैं। यही वजह है कि ऊपर की पहली आयत जो अल्लाह की बख़्शी हुई इंसान की प्रतिभाओ को उजागर करती है वह केवल भौतिक इन्द्रियों का ही ज़िक्र नहीं करती बल्कि आंख और कान से आगे बढ़ कर दिल का जिक्र भी करती है कि जो महसूस करने, सोचने, प्रेरणा लेने, इरादा करने और विचारों के एकत्र होने की जगह के रूप में पहचाना जाता है। केवल छूकर या देखकर जानने तक सीमित रहने से इंसान अपने विशेष गुणों से वंचित रहता है, कल्पनात्मक दृष्टि से ग़रीब रहता है और इसके कारण इंसान की क्षमताएं सामूहिक रूप से सिकुड़ी रहती हैं।

اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ ؕ اَفَاَنْتَ
تَكُوْنُ عَلَيْهِ وَكِيْلًا ۝٤٣ اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ
اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ اَوْ يَعْقِلُوْنَ ؕ اِنْ

क्या आपने उसको देखा जिसने अपनी .ख़्वाहिशात को अपना माबूद बना लिया है, तो क्या आप उस पर निगहबान हो सकते हैं। क्या आप ये .ख़्याल करते हैं के उनमें अक्सर सुनते या अक़्ल रखते हैं, नहीं ये तो

هُمْ إِلَّا كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا ﴿٤٤﴾

चौपायों की तरह हैं बल्कि उनसे भी.ज्यादा बदतर हैं। (25:43-44)

जब कोई इंसान अपनी महान अक़्ली और रूहानी शक्तियों को नज़र अंदाज़ करता है तो क्षणिक आनन्द व इच्छाओं से बंधा रहता है और इस तरह वह जानवरों की तरह व्यवहार करता है। जानवर का काम केवल भूख को मिटाना है यह देखे बग़ैर कि उसकी हरकत से दूसरों पर क्या प्रभाव पड़ता है या उसका क्या नतीजा सामने आएगा। लेकिन यह जानवर अपनी प्रवृत्ति के अनुसार और प्राकृतिक स्वभाव के मुताबिक़ अपने काम में लगे हुए हैं और उन पर अहंकार या अदूरदर्शिता का आरोप नहीं आता। यह तो इंसान है जिसे इस बात का दोष दिया जाना चाहिए कि वह अपनी सोचने, समझने और फैसला करने की शक्तियों को दबाकर रखता है और अपने वजूद व व्यवहार को जानवरों के स्तर पर रखता है।

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ بَشَرًا فَجَعَلَهُ نَسَبًا وَصِهْرًا ۗ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيرًا ﴿٥٤﴾

और वही तो है जिसने पानी से आदमी को पैदा किया, फिर उसको वंश पर आधारित रिश्ते और विवाह से बनने वाले रिश्ते दिए और आपका रब बड़ी क़ुदरत वाला है। (25:54)

इंसान को ज़मीन पर शादी करके और संतान पैदा करके परिवार बनाने के साधन देकर भेजा गया है। यह दाम्पत्य और प्रजनन के सम्बंध इंसानों के विस्तार व फैलाव का आधार बनते हैं। चूंकि इंसान को ज़मीन पर एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए शरीरिक और बौद्धिक शक्तियां भी प्रदान की गयी है (17:70), इसलिए इंसान पूरी ज़मीन पर फैल गए और इस तरह इंसानी प्रजाति को नए परिवार बनाने का और ज़मीन के दूसरे भागों पर उनके आबाद होने और विक्सित होने का मौका मिलता है। इन समस्त योग्यताओं से युक्त इंसान को अल्लाह ने ज़मीन पर बसाया, और आने वाली पीढ़ियों में यह चीज़े स्थानांतरित कीं ताकि वे उसे और स्वयं को अल्लाह के मार्गदर्शन के अनुसार प्रगति दें (2:30, 38-39; 11:61)।

وَابْتَغِ فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَأَحْسِنْ كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْأَرْضِ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ﴿٧٧﴾

और जो कुछ अल्लाह ने तुम को अता किया है उससे आख़िरत का घर हासिल करो, और दुनिया में से अपना हिस्सा ना भूल जाओ, और जैसे अल्लाह ने तुम से भलाई की है, वैसी ही तुम भी भलाई करो, और ज़मीन में फ़साद (उत्पात) ना करते फ़िरो, क्योंके अल्लाह फ़साद करने वालों को पसंद नहीं रखता। (28:77)

यह आयत दुनिया के जीवन और आख़िरत के जीवन के बीच एक सटीक संतुलन पेश करती है और यह स्पष्ट करती है कि इंसान किस तरह दोनों जगतों के बहतरीन वरदान प्राप्त कर सकता है। अल्लाह के मार्गदर्शन का अनुसरण करने का मतलब किसी भी तरह से यह नहीं होता कि इंसान इस जीवन से या दूसरे इंसानों के साथ सम्बंध बनाने से विमुख हो जाए। अल्लाह तआला ने इंसान को जो शरीरिके, बौद्धिक, मनोवैज्ञानिक और अध्यात्मिक शक्तियां दी हैं, उन्हें जब उचित ढंग से इस्तेमाल किया जाता है तो ये एक संतुलित व्यक्ति और संतुलित समाज का निर्माण करती हैं। क़ुरआन यह शिक्षा देता है कि इंसान को अल्लाह ने जो कुछ भी बख़्शा है चाहे वह शरीरिक ऊर्जा हो, या ज्ञान हो, या दूसरी नेअमतें हों, वह उन लोगों पर खर्च करें जो उनके ज़रूरतमन्द हैं।

ऊपर की आयत में क़ुरआन यह सिखाता है कि हर एक व्यक्ति को अल्लाह की बख़्शी हुई नेअमतों के इस्तेमाल में व्यापक दृष्टि और खुला मन रखना चाहिए। इन नेअमतों को व्यक्ति और समाज के फ़ायदे के लिए इस्तेमाल करना चाहिए, इस तरह व्यक्ति आख़िरत के अनन्त जीवन में भी अपने लिए भलाइयां जमा करता है और साथ ही साथ इस दुनिया में भी फ़ायदा उठाता है। इस जीवन की जायज़ आवश्यकताओं को भुला नहीं देना चाहिए जैसा कि कुछ लोग यह ग़लत धारणा रखते हैं कि धार्मिक व्यक्ति को इस दुनिया से कुछ लेना देना नहीं होना चाहिए। इस जीवन की बहतरीन चीजों से अल्लाह की हिदायत के मुताबिक आनन्दित होते हुए और दोनों तरह के अतिवाद से बचते हुए इंसान इस अस्थायी जीवन और आख़िरत के अनन्त जीवन में स्थान प्राप्त करने की जिज्ञासा को शरीर और आत्मा के बीच और व्यक्ति व समाज की ज़रूरतों के बीच संतुलित रखता है। यह संतुलन इस्लामी शिक्षाओं के प्रभाव से होता है जो सीधा और सच्चा दीन है और उस प्रकृति के अनुसार है जिस पर अल्लाह ने इंसानों को पैदा किया है (30:30), और मुसलमानों को *उम्मते वस्त* (संतुलित समुदाय) बनाया है (2:143)।

وَ مِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْۤا اِلَيْهَا وَ جَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّ رَحْمَةً ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۲۱﴾ وَ مِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ اخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَ اَلْوَانِكُمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ﴿۲۲﴾ وَ مِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ بِالَّيْلِ وَ النَّهَارِ

और उसी की निशानियों में से है कि उसने तुम्हारे लिये तुम्हारी ही जिन्स से औरतें पैदा कीं ताकि उनकी तरफ़ (आकर्षित होकर) आराम हासिल करो और तुम में आपसी मोहब्बत और रहमत पैदा की, बेशक इसमें निशानियां हैं ग़ौर करने वालों के लिये। और उसी की निशानियों में से है आसमानों और ज़मीन का पैदा करना, और तुम्हारी ज़बानों और रंगों का अलग-अलग होना, बेशक इसमें निशानियां हैं जानने वालों के लिये। और उसी की निशानियों में से है तुम्हारा रात और दिन

وَابْتِغَآؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّسْمَعُوْنَ ۝۲۳

में सोना, और उसके फ़ज़्ल (रोज़ी) का तलाश करना, बेशक इसमें निशानियां हैं सुनने वालों के लिये। (30:21-302))

एकता में विविधता और सामंजस्य अल्लाह की सृष्टि का एक आम सिद्धांत है। सृष्टि में आम तौर से और ज़मीन पर खास तौर से चीजों की बनावट, विशेषता, वातावरण, दिन और रात की अवधियां वग़ैरह हर चीज़ में अत्यधिक विविधता है। इंसानों में दो लिंग और अनेकों इंसानी पीढ़ियां व नस्लें हैं, भाषाएं और रंग व रुप हैं और इंसान को अपने जैसे दूसरे इंसानों से भी और अपने से भिन्न इंसानों से भी सम्बंध बनाने की योग्यताएं दी गयी हैं। इंसान को अपने सामाजिक वातावरण में बदलाव लाने की क्षमता भी दी गयी है और वातावरण के साथ ख़ुद को ढालने और बदलने की योग्यता भी दी गयी है। इंसान को इस ज़मीन पर काम और महनत के द्वारा अपनी जीविका भी कमाना है और उसे तरक्की भी देना है। खुद अपने आप को तरक्की देने, दूसरे इंसानों के साथ सम्बंध बनाने और सृष्टि को विक्सित करने की योग्यता विविध प्रकार की चीजों को बरतने में इंसान की सूझबूझ और सृजनात्मक प्रतिभा को ज़ाहिर करती हे। इसके नतीजें में इंसान के अन्दर उस हस्ती के बारे में गम्भीरता से सोचने की भावना पैदा होना चाहिए जो इस पूरी सृष्टि और उसके विविध अंगों के बीच समन्वय बनाए रखने का कारण है, क्योंकि यह इंसान के लिए निशानियां है जो ज़ाहिर में दिखाई देने वाली चीजों के पीछे इंसान को नज़र आ सकती है। कोई व्यक्ति अगर सोने और सपने देखने पर गम्भीरता से विचार करे तो वह इंसानी जीवन पर और दुनिया में तथा इंसान के अपने अन्दर होने वाले विकास पर उसके अनिवार्य प्रभावों को समझ सकता है। अगर बुद्धि पूरी सृष्टि की विविधता में उस शक्ति को पहचान सकती है जिसने यह विविधता पैदा की है और साथ ही साथ इन विविध चीजों के बीच एक संतुलन और समन्वय को बनाए हुए है तो वह वास्तव में ज्ञान की गहराइयों तक पहुंच सकती है। यह भौतिक और इंसानी विविधता उस इंसान के लिए जो सोच विचार से और चिंतन से काम ले, अल्लाह की क़ुदरत व ताक़त की और इंसानी पीढ़ियों की निगरानी के लिए उसकी व्यवस्था की कैसी आखें खोल देने वाली निशानी है।

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِی الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ اَیْدِی النَّاسِ لِیُذِیْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِیْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ یَرْجِعُوْنَ ۝۴۱

लोगों के कर्मों के सबब थल और जल में फ़साद फ़ैल गया है, तो अल्लाह उनको उनके कुछ कर्मों का मज़ा चखा दे, शायद के वो कुछ आ जायें। (30:41)

अल्लाह तआला ने इंसान को अच्छे या बुरे कर्मों की आज़ादी के साथ पैदा किया है, और

इसी वजह से ऐसे लोग भी हैं जो दुनिया में ऊधम मचाते हें और सृष्टि को ख़राब व बर्बाद करते है अगर वे अपने दिमाग़ के बजाए घमण्ड, स्वार्थ और तंगनज़री जैसी नकारात्मक और घटिया इंसानी भावनाओं पर चलते हैं। वातारवण प्रदूषण, सामाजिक बुराइयों, हिंसा और लडाइयों से यह साबित होता है कि इंसान किस तरह खुद अपनी तबाही के रास्ते पर चलते हुए स्वयं को गम्भीर नुक़सान पहुंचाता है। इंसान का अहं और संसारिक आनन्द की प्राप्ति की कोशिशें अल्लाह पर ईमान और आख़िरत में जवाबदेही के यक़ीन के चलते एक खास दृष्टिकोण में ढल जाती है और व्यक्ति के जीवन व उसके सम्बंधों में एक संतुलन स्थापित हो जाता है। इस दुनिया में बुरे कामों के दीर्धकालिक नतीजों को झेलना इंसानी समाजों के लिए अल्लाह का नियम है, और इस तरह लोगों को अपने हाथों किए गए बुरे कर्मों की सजा मिलती है। यह सजा उनके कुकर्मों के नतीजे में और अल्लाह के बनाए गए सामान्य प्राकृतिक नियमों के आधीन होती है क्योंकि यह कुकर्म अल्लाह द्वारा बनाई गयी व्यवस्था के उल्लंघन पर आधारित होते हैं।

اَللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضَعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا وَّ شَیْبَةً ؕ یَخْلُقُ مَا یَشَآءُ ۚ وَ هُوَ الْعَلِیْمُ الْقَدِیْرُ ﴿۵۴﴾

अल्लाह ही तो है जिसने तुमको (शुरू में) कमज़ोर हालत में पैदा किया, फिर कमज़ोरी के बाद ताक़म बख़्शी, फिर ताक़त के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा दिया, वो जो चाहता है पैदा करता है और वही जानने वाला और क़ुदरत रखने वाला है। (30:54)

यहाँ इंसान की जीवन अवधि में उसकी शक्तियों के बढ़ने व घटने का एक और हवाला दिया गया है (देखें इससे पहले ज़िक्र की हुई आयतें 70:16; 5: 22 और उनकी तफ़सीर)। दुनिया में इंसान के जीवन की शुरूआत और समाप्ति दोनों कमज़ोरी की हालत में होती हैं। शुरू में वह एक असहाय नवजात अस्तित्व होता है जो धीरे धीरे बड़ा हो कर वृद्ध अवस्था को जा पहुंचता है। लेकिन जीवन का यह उतार चढाव जो हर एक के जीवन में आता है, इंसान की आंखें नहीं खोलता और उसका दिल इस लगातार होते रहने वाले बदलाव के पैग़ाम को समझने व क़ुबूल करने लिए नहीं खुलता बल्कि जीवन इस तरह से बीतता रहता है कि जैसे वह हमेशा ऐसे ही रहेगा। बदलाव अल्लाह की हर रचना का बुनियादी निमय है, और हमेशा रहने वाली हस्ती केवल अल्लाह की ही है जिसने आख़िरत के जीवन को अनन्त बनाया है। सृष्टि के सभी नियमों और व्यवस्था में ग़ौर करने वाला हर आदमी सृष्टा की हिकमत और इंसाफ़ को देख सकता है।

اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ وَ اَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّ بَاطِنَةً ؕ وَ مِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّ لَا هُدًى وَّ لَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۝ وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَ لَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ۝

क्या तुमने नहीं देखा के जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है, सबको अल्लाह ने तुम्हारे काम में लगा दिया है, और तुम पर अपनी ज़ाहिरी और बातनी नेमतें पूरी कर दी हैं, और कुछ अल्लाह के बारे में बहस करते हैं बिना जानकारी और दलील के और बग़ैर किसी रौशन किताब के। और जब उनसे कहा जाता है के तुम पैरवी करो इस किताब की जो अल्लाह ने अवतरित की है तो कहते हैं हम तो उसी की पैरवी करेंगे जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया है, अगरचे शैतान उनके बड़ों को दोज़ख के अज़ाब की तरफ़ बुलाता रहा हो तब भी। (31:20-21)

अल्लाह ने इंसान को शरीरिक, बौद्धिक, मनोवैज्ञानिक और अध्यात्मिक शक्तियों के साथ पैदा किया है जो उसे इस लायक बनाती हैं कि वह प्रकृति की शक्तियों से फ़ायदा उठाए उन नियमों के मुताबिक़ जिन पर अल्लाह ने उनको बनाया है। इंसान को अपने ज्ञान और कार्यशक्ति के साथ आकाश की बुलन्दियों और पाताल की गहराइयों तक पहुंचने के लायक़ बनाया गया है। अल्लाह की कृपा केवल भौतिक और ठोस चीज़ों तक ही सीमित नहीं है, उसके करिश्मे इंसान की मनोवैज्ञानिक और अध्यात्मिक शक्तियों में भी दिन ब दिन सामने आ रहे हें। लेकिन इंसान को अपनी योग्यताओं से लाभान्वित होने के लिए और अपनी तंगनजरी, स्वार्थपूर्ति और दूसरी कमज़ोरियों पर नियंत्रण पाने के लिए भौतिक सीमाओं से परे मार्गदर्शन की भी बहुत आवश्यकता है ताकि वह अपनी भावनाओं और विचारों को एक सही तराज़ू में तौल सके। ऐसी मुकम्मल और सच्ची रहनुमाई केवल अल्लाह से ही मिलने की उम्मीद की जा सकती है जो हर चीज़ को जानने वाला और हिकमत वाला है।

ऐसे भी लोग हैं जो ज्ञान, तर्क और किसी ठोस जानकारी के बग़ैर अल्लाह की रहनुमाई के ख़िलाफ़ हुज्जतबाज़ी करते हैं। कुछ लोग यह मानते हैं कि उन्हें अपने पूर्वजों की परम्परा पर चलते हुए उनकी ही आस्था और पूजा पद्धति पर अमल करना चाहिए। क़ुरआन ऐसे अन्धे अनुसरण की बार बार निन्दा करता है जो इंसानी बुद्धि का अपमान हे और इंसान की तरक़्क़ी को रोकता है और अल्लाह तआला की इस सर्वश्रेष्ठ रचना (जीव) को जानवरों के स्तर पर रखता है जो कि बस अपने रेवड़ के साथ साथ ही चलते रहते हैं।

إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنْ يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ ۖ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ﴿٧٢﴾

हमने अमानत (का बार) आसमान और ज़मीन पर और पहाड़ों पर रखा तो सबने इस बार को उठाने से इन्कार कर दिया, और इससे डर गए, और इन्सान ने उसको उठा लिया, बेशक वो ज़ालिम और जाहिल था। (33:72)

यह एक क़िस्सा है जो इंसानों को यह बताने के लिए क़ुरआन में बयान किया गया कि इंसान को अल्लाह ने ज़मीन का वारिस होने के रूप में जो ज़िम्मेदारियां दी हैं उन्हें जब इंसान नज़र अंदाज़ करता है को वह किस क़दर गुस्ताख़, कुकर्मी और अज्ञानी हो जाता है। अपनी ज़िम्मेदारियों को भूल कर अपनी हैसियत और अपनी खूबियों पर गर्व करना इंसान की अपरिपक्वता, अहंकार और तंगनज़री को ज़ाहिर करता है। अल्लाह ने निस्संदेह इंसान को प्रतिष्ठा दी है, समझबूझ दी है और इरादे की आज़ादी दी है लेकिन वह अपना व्यवहार जानवरों की तरह केवल जैविक स्तर तक ही सीमित रखता है और केवल अपनी शरीरिक इच्छाओं को पूरा करने और संतुष्टि पाने की कोशिशों तक ही सीमित रखता है। इंसानी ज़िम्मेदारी जो कि इंसान को उसकी क्षमताओं की वजह से मिली हुई है, इतनी भारी है कि सृष्टि और उसके तत्व उसके बोझ से कांप कर रह गए। इंसान को अल्लाह की इस अमानत के प्रति पूरी तरह बाख़बर रहना चाहिए और अल्लाह की कृपा को जीवन और इस संसार को जिसमें वह रहता है विक्सित करने के लिए इस्तेमाल करने की ज़िम्मेदारी को महसूस करना चाहिए। अल्लाह ने इंसान को जो बड़ाई दी है उसे अगर इंसान भुला देगा और अपनी ज़िम्मेदारी से मुंह मोड़ेगा तो यह इंसान की कितनी मूर्खता होगी।

وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ ۖ أَفَلَا يَعْقِلُونَ ﴿٦٨﴾

और जिसको हम बड़ी उम्र देते हैं तो उसे हम कमज़ोरी की तरफ़ लौटा देते हैं, तो क्या ये अक़्ल से काम नहीं लेंगे? (36:68)

यह आयत इंसान से अपने जीवन के विभिन्न चरणों में अपने शरीरिक, मनोवैज्ञानिक और बौद्धिक बदलावों पर ग़ौर करने का आग्रह करती है। बचपन में इंसान की शरीरिक और बौद्धिक योग्यताएं प्राथमिक स्तर पर होती हैं, फिर वह बड़ा होता है और तरक्क़ी करता है और आत्म अभिव्यक्ति के कुछ ख़ास गुण भी उसके अन्दर पैदा हो जाते हैं। फिर आख़िर में बुढ़ापे की स्थिति में दूसरी तरह का एक बचपना वापिस लोट आता है और वैसी ही शरीरिक, बौद्धिक और मनोवैज्ञानिक कमज़ोरियां आ जाती हैं। इस तरह हम यह देख सकते हैं कि उम्र लम्बी होने से भी कुछ फर्क नहीं पड़ता। अल्लाह के रसूल सल्ल॰ ने फ़रमाया है कि मोमिन को यह दुआ

करना चाहिए: *''ऐ अेल्लाह मेरे जीवन मे बरकत दीजिए और उसे अच्छा बनाइए'', और ''ऐ अल्लाह मेरे लिए मौत में बरकत दीजिए और मौत के बाद वाले जीवन में भी''* (मुस्लिम; तथा देखें आयतें 16:70; 5:22 और उनकी व्याख्या)। इंसान को हमैशा अल्लाह से डरते रहना चाहिए जो एक मात्र हमैशा रहने वाली हस्ती है और सर्वशक्तिमान है, और यह समझना चाहिए कि ज़मीन पर उसकी सक्रियता सीमित और निर्धारित अवधि के लिए है, और उसकी समस्त शक्तियां इस जीवन की भी एक सीमिति अवधि के लिए हैं कि जीवन का प्रारम्भिक और अन्तिम समय तो कमज़ोरी का समय है। कोई व्यक्ति एक बार जब इस बात से आगाह हो जाए तो उसे अपनी जवानी और उर्जा का समय अपनी और दूसरों की भलाई के लिए लगाना चाहिए। बुजुर्गों और अपंगों की मदद जैसे भलाई के कामों में हर व्यक्ति की निजी विशेषता से ज़्यादा से ज़्यादा लाभान्वित होने के लिए सामूहिक प्रयास और आपसी सहयोग दरकार होता है।

خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ
مِنْهَا زَوْجَهَا وَ اَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ
ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ؕ يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ
اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ
ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ
الْمُلْكُ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝

**6.** उसने तुम को एक आदमी से पैदा किया, फिर उससे उसका जोड़ा बनाया, और तुम्हारे लिये मवेशियों के आठ जोड़े उतारे, वो तुमको पैदा करता है तुम्हारी माँओं के पेट में तीन अंधेरों के अन्दर एक हालत के बाद दूसरी हालत पर, ये है अल्लाह तुम्हारा रब, इसी की बादशाहत है, इसके सिवा कोई माबूद नहीं है, फिर तुम कहाँ फिरे जाते हो? (39:6)

इंसान, मर्द व औरत दोनों, की पैदाइश का एक और क़ुरआनी हवाला यहाँ दिया गया है, एक जीवित अस्तित्व से पहली पैदाइश, फिर इंसान की प्रजनन प्रक्रिया की निगरानी जिससे पीढ़ियों के सिलसिले चलते रहते हैं और इंसानी सिलसिला जारी रहता है। इस आयत में यह बताया गया है कि शरीर की उत्पत्ति और संरचना की प्रक्रिया कई चरणों से गुज़रती है और चरणों के दौरान जो बदलाव आते हैं वे इतने व्यापक हैं कि हर चरण और उसमें होने वाली प्रगति को एक नयी रचना कहा जा सकता है: *''फिर उसको नई सूरत में बना दिया'*।' (23:14) भ्रूण एक सुरक्षित घेरे के अन्दर विक्सित होता है (23:13), जो क़ुरआन के अनुसार तीन अंधेरे परदों से घिरा होता है। इन से अभिप्राय वह चिकना द्रव पदार्थ हो सकता है जो झिल्ली की तरह भ्रूण को चारों ओर लिपटा होता है और जिसके अन्दर भ्रूण विक्सित होता है, दूसरे परदे से अभिप्राय गर्भाश्य हो सकता है जिसके चारों ओर नाल लिपटी होती है और पैण्डू तक जाती है, और तीसरे परदे से अभिप्राय पेट का निचला भाग हो सकता है।

यह आयत इंसान को सजीव प्राणियों के एक और वर्ग की ओर भी ध्यान दिलाती है अर्थात मवेशी, जिनके ऊपर इंसान का बहुत कुछ दारो मदार है, ख़ास तौर से क़बायली और उनमें भी मुख्यतः चरवाहों का समाज, जैसे अरब के लोग जहां से इस्लाम के वैश्विक संदेश की शुरूआत हुई, अपनी आवश्यकताओं के लिए उन पर निर्भर रहते हैं और खाना, पानी, कपड़ा, निवास के साधन और आवागमन के साधन इन मवेशियों से प्राप्त करते हैं (16: 5-8, 80)। आठ प्रकार के मवेशी हैं जो दुनिया के अधिकतर भागों में अपार संख्या में पाए जाते हें और जिनका हवाला क़ुरआन की आयतों (6:143-144) में दिया गया है, और प्राचीन व्याख्याकार यह मानते हैं कि वे भेड़ बकरी, गाए और ऊंट हैं जिनके जोड़े संख्या में आठ होते हैं। इंसान को अपनी अक़्ल से यह सोचना चाहिए क उसे अल्लाह ने जीवन की महत्वपूर्ण आवश्यक वस्तुएं इन मवेशियों को इंसान के आधीन करके किस तरह उपलब्ध कराई हैं और रहने, खाने पीने व चलने के साधन इन के द्वारा उपलब्ध कराए हैं। इंसान को ख़ुद अपनी पैदाइश और संरचना पर और अपने विकास पर भी गहराई से विचार करना चाहिए। लेकिन अधिकतर लोग अपनी अक़्ल को गम्भीरतापूर्वक इस्तेमाल में नहीं लाते और सृष्टा की ओर इशारा करने वाले इन स्पष्ट प्रतीकों को बे-नियाज़ी के साथ सतही नज़रों से देखते गुज़र जाते हें, और इस तरह वे ख़ुद अपने दिमाग़ और अपनी अक़्ल के साथ अन्यायपूर्ण बर्ताव करते हैं।

وَالَّذِيْنَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ اَنْ يَّعْبُدُوْهَا وَ اَنَابُوْٓا اِلَى اللّٰهِ لَهُمُ الْبُشْرٰى ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ۙ﴿۱۷﴾ الَّذِيْنَ يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ وَ اُولٰٓئِكَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۱۸﴾

और जिन्होंने इससे परहेज़ किया के वो बुतों को पूजें, और और पूरे मन से अल्लाह की तरफ़ पलटें, उनके लिये ख़ुशख़बरी है तो आप मेरे उन बन्दों को ख़ुशख़बरी सुना दीजिये। जो बात को कान लगा कर सुनते हैं फिर उसकी अच्छी बातों की पैरवी करते हैं, तो यही वो लोग जिनको अल्लाह ने हिदायत की और यही अक़्ल वाले हैं। (39:17-18)

यह आयत हर समझदार इंसान को दो अनिवार्य सिद्धांत बताती है। पहला सिद्धांत यह कि बुराई और ना इंसाफी करने वाली शक्तियों के साथ सम्बंध बनाने से बचें। आयत में अरबी का शब्द ''ताग़ूत'' इस्तेमाल हुआ है जो अरबी के ''तग़ा'' से निकला है जिसका अर्थ है ज्यादती करना, हद से गुज़रजाना। इस अर्थ में यह शब्द केवल बुतों (मूर्तियों) तक ही सीमित नहीं रहता जैसा कि अरब के लोग अज्ञानता के युग में बुतों को पूजते थे, और बहुत से पुराने मुफ़स्सिरों ने इसका यही अर्थ लिखा भी है, बल्कि इससे मुराद बुराई की वे तमाम शक्तियां भी ली जा सकती हैं जो शक्ति के नशे में चूर हो कर लोगों पर ज़ुल्म व ज्यादती करती हैं (देखें 2 256-57 4 76 16 32)। अलबत्ता बुतों की पूजा और उनकी ताक़त व शक्ति को मानने की मूर्खतापूर्ण

बात स्वयं इंसानी बुद्धि का अपमान है और एक ऐसी बुराई है जिससे और बहुत सी बुराइयां पनपती हैं। (6 138-139; 148 16 35, 116)।

इसके बाद वाली आयत यह तक़ाजा करती है कि इंसान के सामने जो विचार या मत प्रस्तुत किया जाए उसे वह गम्भीरता से सुने, उस पर ग़ौर करे और उसे अच्छी तरह से जान कर उसके बारे में ख़ुद फ़ैसला करे और पहले से कोई विचार बना कर न रखे और व्यक्तिगत या सामुदायिक पूर्वाग्रह में उसे रद न करे। लेकिन विभिन्न विचारों व विचारधारओं को सुनना इस दृढ़ नैतिक इच्छाशक्ति के साथ होना चाहिए कि अक़्ली, नैतिक और भौतिक लिहाज़ से जो बात सबसे ज़्यादा स्वीकार्य होगी उसे ही स्वीकार करना और उसका समर्थन करना है। क़ुरआन इंसानों से यह नहीं चाहता कि वो बे सोचे-समझे इस्लाम की तरफ़ दौड़ लगा दें बल्कि वह चाहता है कि इंसान अपनी अक़्ल का सम्मान करे और उसे उचित तरीके से काम में लाए फिर जिस नतीजे पर भी वह पहुंचे और जो भी फ़ैसला करे। जैसा कि खुद मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "अमल का दारो मदार नियत पर है और इंसान के लिए वस वही है जिस की वह नियत करे।" (बुखारी, मुस्लिम, इब्ने हंबल, अबुदाऊद, तिरमिजी, नसई, इब्ने माजा)।

اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَالَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا ۚ فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَ يُرْسِلُ الْاُخْرٰٓى اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝

अल्लाह मरते वक़्त (लोगों की) रूह क़ब्ज़ कर लेता है, और (उनकी रूहें) जो मरते नहीं उनके सोते वक़्त क़ब्ज़ कर लेता है फिर जिनकी मौत का हुक्म कर चुका है तो उन को रोक लेता है, और बाक़ी रूहों को एक निर्धारित समय तक के लिये रिहा कर देता है, इसमें निश्चिंत रूप से निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो चिंतन करते हैं। (39:42)

क़ुरआन बार बार जीवन व मृत्यू का और सोने व जागने का जिक्र करता है (3:145,156; 7:25,158; 10:56; 25:47; 30:23,40; 40:11,68; 45:26; 43:50; 78:9-11)। उपरोक्त आयत में मृत्यू और सोने की क्रिया को एक जैसा बताया गया है क्योंक मृत हालत में इंसान की चेतना पूरी तरह और हमेशा के लिए समाप्त हो जाती है, जबकि नींद की हालत में चेतना आंशिक रूप से और अस्थायी रूप से मन्द हो जाती है। नींद में सपने आते हैं, जो कुछ इंसान की चेतन अवस्था उस पर बीतता है या उसके आसपास घटित होता है वह उसे सपने में दिखाई देता है लेकिन मृत्यू आत्मा को वह कुछ दिखाती है जो इन्द्रियों के द्वारा नहीं देखा जा सकता। सोना और जागना इंसानी मस्तिष्क के लिए यह समझने में मददगार हो सकता है कि जिस तरह सोने के बाद इंसान जागता है इसी तरह मृत्यू को बाद फिर से जी उठना भी सम्भव है, हालांकि

सोने और मृत्यू की अवस्था में बहरहाल अन्तर है। अल्लाह को यह शक्ति प्राप्त है कि वह पहली बार शरीर को जीवन देता है इस अंदाज़ से कि वह नींद की स्थिति में अस्थाई रूप से स्थगित हो जाता है, और मृत्यू के समय पूरी तरह निष्क्रिय हो जाता है। जीवन के इन सारे तथ्यों परे अगर ग़ौर किया जाए और इन्हें समझने का प्रयास किया जाए तो अनन्त जीवन की कल्पना की जा सकती है और वे लोग जो अपनी अक़्ल इस्तेमाल करते हें और गम्भीरतापूर्वक विचार करते हैं इसका अंदाज़ा लगा सकते हैं।

فَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ۫ ثُمَّ اِذَا خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا ۙ قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ ؕ بَلْ هِىَ فِتْنَةٌ وَّ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

फिर जब आदमी को तकलीफ़ होती है तो वो हम को पुकारने लगता है, फिर जब हम उसको अपनी तरफ़ से कोई नेमत अता करते हैं तो कहता है ये तो मुझको मेरे ज्ञान की बदौलत मिली है। (नहीं) बल्के वो एक आज़माईश है, लेकिन अक्सर लोग समझते नहीं हैं। (39:49)

इंसान की सबसे बड़ी कमज़ोरी यह है कि वह अपने दोषों और कमियों पर ध्यान नहीं करता। परिश्रम और प्रयास से इंसान को अपनी सीमाओं का अहसास होता है और फिर वह उस वास्तविक शक्ति से आगाह होता है जो पूरी इंसानियत और पूरी दुनिया को कन्ट्रोल करती है। लेकिन जब कठिन समय बीत जाता है तो इंसान आम तौर से खुद को मिलने वाला सबक भुला देता है। जीवन जब दोबारा शुरू होता है तो इंसान यह भूल जाता है कि कामयाबी और खुशहाली अल्लाह की तरफ़ से है जिसका इंसान को शुक्र गुजार होना चाहिए उसी ध्यान व एकाग्रता के साथ जिस ध्यान और एकाग्रता से कठिन स्थिति में उसको पुकारता है, इसके बजाए वह यह डीगं मारने लगता है कि उसने अपनी क्षमता और प्रतिभा से यह कामयाबी और खुशहाली प्राप्त की है। राहत व सुविधा की स्थिति में भी अल्लाह की शुक्रगुजारी उसी तरह होनी चाहिए जिस तरह कठिनाई और दिक्कत के समय उसे पुकारा जाता है (देखें 10 12, 14 34 33 72 व उनकी तफसीर)।

اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَ اَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّ خَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَ قَلْبِهٖ وَ جَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ غِشٰوَةً ؕ فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝ وَ قَالُوْا مَا هِىَ اِلَّا

क्या आप ने उस व्यक्ति को देखा, जिसने अपनी इच्छाओं ही को अपना पूज्य बना लिया, और अल्लाह ने उसके जानते बूझते उसको गुमराह कर दिया, और उसके कान पर और दिल पर मोहर लगा दी, और उसकी आंख पर पर्दा डाल दिया, अब अल्लाह के बाद उसको कौन हिदायत दे सकता है? तो क्या तुम सीख नहीं लेते। और

حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَآ
اِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَمَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ
عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿٢٤﴾

वो कहते हैं हमारी इस दुनियावी ज़िन्दगी के अलावा और कोई ज़िन्दगी नहीं है कि हम यहीं मरते हैं और जीते हैं, और हमें तो ज़माना ही मार डालता है, और उनको उसका कोई इल्म नहीं है, सिर्फ़ अनुमान लगाते हैं।
(45:23-24)

अल्लाह की तरफ़ से रहमनुमाई (मार्गदर्शन) इंसान की प्राकृतिक आवश्यकता है, अल्लाह इंसान और इंसानी प्रकृति व स्वभाव का बनाने वाला है और हर चीज़ से बाख़बर है, और इसी लिए व्यक्ति व समाज के लिए जो चीज़ फ़ायदेमंद उसकी वह हिफ़ाज़त करता है। जब इंसान अल्लाह की रहनुमाई को अनदेखा करता है और अपनी इच्छाओं पर चलता है जो कि तंगनज़री और स्वार्थपूर्ति पर टिकी होती हैं तो यह चीज़ व्यक्ति और समाज को आख़िरकार सामूहिक रूप से नुकसान पहुंचाती है। इंसानी अक़्ल के लगातार दुरुपयोग से ग़लत फ़ैसले और ग़लत बर्ताव की आदत पड़ जाती है जो कि खुद इसी दुरुपयोग का नतीजा होती है। इसी तरह व्यक्तियों का अपनी शरीरिक, बौद्धिक और मनोवैज्ञानिक तथा अध्यात्मिक शक्तियों के दुरूपयोग से कान और दिल पर मुहर लग जाती है और आंखों पर परदा पड जाता है। जब इंसान सही ज्ञान और सही फैसलों के लिए अल्लाह की दी हुई सभी शक्तियों व क्षमताओं को निष्क्रिय रख छोड़ता है तो उसकी अपनी अदूरदर्शिता और स्वार्थपूर्ण व्यवहार आख़िरकार उसकी अपनी तबाही का सबब बनते हैं और फिर कौन है जो अल्लाह की रहनुमाई से वंचित रहने वाले ऐसे व्यक्ति की कोई मदद कर सके।

कुछ लोग अपने स्वार्थपूर्ण और भौतिकतावादी सोच के लिए तर्क देते हैं और यह कहते हैं कि जो कुछ इस दुनिया से परे है उस पर ईमान लाने का कोई मतलब नहीं है। ऐसे भी लोग हैं जो अपनी इच्छाओं का अनुसरण करते हैं, आरज़ुओं, फर्ज़ी विचारों और सतही ज्ञान पर चलते हैं। जबकि इस सृष्टि का आपसी समन्वय, इसका मनमुग्ध कर देने वाला दर्शन और इसकी व्यवस्था, इस बात की तरफ़ इशारा करती है कि इस सृष्टि को बनाने वाले ने इसे निरर्थ और बे मक़सद नहीं बनाया हे, और इंसानी जीवन को उसके न्यायपूर्ण अंजाम तक पहुंचाए बिना वह इसे समाप्त नहीं करेगाः *''क्या तुम यह समझते हो कि हम ने तुमको बे फ़ायदा पैदा किया है और यह कि तुम हमारी तरफ़ लोट कर नहीं आओगो, अल्लाह जो सच्चा बादशाह है (उसकी शान) इससे ऊंची है।''* (13:115-116)।

اَمْ لَمْ يُنَبَّاْ بِمَا فِيْ صُحُفِ مُوْسٰى ﴿٣٦﴾ وَ
اِبْرٰهِيْمَ الَّذِيْ وَفّٰٓى ﴿٣٧﴾ اَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ

क्या उसको ख़बर नहीं है जो मूसा के सहीफ़ों में हैं। और कुछ इब्राहीम के जिन्होंने (हक़े इताअत और हक़े रिसालत

وِّزْرَ اُخْرٰى ﴿٣٨﴾ وَ اَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا
مَا سَعٰى ﴿٣٩﴾ وَ اَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ يُرٰى ﴿٤٠﴾
ثُمَّ يُجْزٰىهُ الْجَزَآءَ الْاَوْفٰى ﴿٤١﴾ وَ اَنَّ اِلٰى
رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى ﴿٤٢﴾

दोनों को) पूरा किया। वो ये के कोई दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा। और ये के इन्सान को उतना ही मिलता है जितनी के वो कोशिश करता है। और बहुत जल्द उसकी कोशिश को देखा जायेगा। फ़िर उसको पूरा पूरा बदला दिया जाएगा। और ये के तुम्हारे परवरदिगार के पास पहुंचना है। (53:36-42)

उपरोक्त आयतें दुनिया के इस जीवन में अल्लाह की न्यायिक व्यवस्था के सिद्धांत बयान करती हैं और अल्लाह के क़ानून यानि शरीअत और आख़िरत में बदले के दिन से ख़बरदार करती हैं। इन सिद्धांतों पर अल्लाह की तरफ़ से आऐ हुए पैग़ामों में हमैशा ज़ोर दिया गया है जिनमें इब्राहीम और मूसा अलैहिस्सलाम के पैग़ाम का यहाँ नाम लेकर ज़िक्र किया गया है। इब्राहीम अलैहिस्सलाम का सभी पैग़म्बरों में एक विशेष स्थान है कि उन्होंने, जहाँ कहीं भी वह गए, एक अल्लाह की इबादत करने की सीख दी, और एक ऐसे पैग़म्बर की हैसियत से जिन्होंने तौहीद की परम्परा को अपने बेटों इस्माईल और इस्हाक़ और उनकी औलादों के ज़रिए मज़बूती से कायम किया। हज़रत मूसा को अल्लाह के नाज़िल किए हुए क़ानून के हवाले से जाना जाता है जिनमें ख़ास तौर से उनके दस उपदेश शामिल हैं।

अल्लाह की इस न्यायिक व्यवस्था का अनिवार्य सिद्धांत जैसा कि उपरोक्त आयतों से इशारा मिलता है, यह है किसी भी कर्म की ज़िम्मेदारी उसी पर होगी जिसने वह कर्म किया होगा, और किसी दूसरे को न तो इस दुनिया में और न आख़िरत में जवाबदेही के समय इसके लिए ज़िम्मेदार बनाया जाएगा चाहे वह खुद को इसके लिए स्वयं अपनी इच्छा से ही पेश करे। इंसान अपनी नियतों के लिए और अपने प्रयासों के लिए जवाबदेह होगा, और फ़ैसले के समय इंसान के कर्म तौले जाएंगे, न कि उसके दावे और न किसी दूसरे के कर्म, चाहे उसका कितना भी क़रीबी रहा हो। यह है अल्लाह का न्यायिक सिद्धांत जो इस दुनिया में भी लागू होता है। फ़ैसले के दिन अल्लाह तआला बिल्कुल अकेले इंसान की तमाम कोशिशों और नियतों का उसकी समस्त स्थितियों के लिहाज़ से फ़ैसला करेगा, यह फ़ैसला पूरी तरह मुकम्मल होगा और वह अकेला ही हर चीज़ के साथ इंसाफ़ करेगा।

خَلَقَ الْاِنْسَانَ ﴿٣﴾ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ﴿٤﴾

उसी ने इन्सान को पैदा किया। उसी ने उसको बोलना सिखाया। (55:3-4)

हज़रत आदम की पैदाइश के समय से ही अल्लाह ने इंसान को बोलने अर्थात अभिव्यक्ति की योग्यता दी है और साथ ही साथ बुद्धि भी दी है। बुद्धि और बोलने की इन शक्तियों के साथ इंसान को उसकी इच्छा में स्वतंत्र भी रखा गया है और इंसान के मन में जो विचार आते हैं व्यक्त करने के लिए उन्हें चुनना और उनकी अभिव्यक्ति के लिए शब्दों का चयन करना भी इंसान के अधिकार में है। अल्लाह ने इंसान के अन्दर जो रूह फूंकी है और इंसान के अन्दर जो बुद्धि व बोलने की शक्ति है उनके बीच एक पक्का सम्बंध है। सोचने और बोलने की शक्तियों से काम लेकर इंसान कहने या करने के लिए जिस बात का चयन करता है उसके लिए वह जवाबदेह है (50:18)।

إِنَّ الْإِنسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا ﴿١٩﴾ إِذَا مَسَّهُ
الشَّرُّ جَزُوعًا ﴿٢٠﴾ وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ
مَنُوعًا ﴿٢١﴾ إِلَّا الْمُصَلِّينَ ﴿٢٢﴾ الَّذِينَ هُمْ
عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ﴿٢٣﴾ وَالَّذِينَ فِي
أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُومٌ ﴿٢٤﴾ لِّلسَّائِلِ
وَالْمَحْرُومِ ﴿٢٥﴾

बेशक इन्सान उतावला पैदा हुआ है। जब उसे तकलीफ़ पहुंचती है तो घबरा उठता है। और जब राहत हासिल होती है तो कंजूस बन जाता है। उन लोगों को छोड़कर जो नमाज़ पढ़ने वाले हैं। जो नमाज़ का एहतमाम करते और बिला नाग़ा पढ़ते हैं। और जिन के माल में हिस्सा निर्धारित है। मांगने वाले का, और दूसरे वंचितों को। (70:19-25)

यह आयतें इंसान के अहं के कुछ पहलुओं पर रोशनी डालती हैं। जीवन के उतार चढ़ाव में इंसान की कमज़ोरियां और उसकी रुकावटें ज़ाहिर होती हैं। प्रतिकूल स्थिति में इंसान हताश हो जाता है और स्वयं को लाचार समझने लगता है और अपनी बिपता बयान करने लगता है। शान्ति और राहत व आनन्द की स्थिति में घमण्डी हो जाता है और दूसरों की ज़रूरतों को भूल जाता है और अपनी कोताहियों व कमियों को भुला देता है और यह समझने लगता है कि वह अपनी जगह बिल्कुल ठीक व्यक्ति है और अपनी विशेष क्षमताओं की बदौलत वह कामयाबी का हक़दार है।

जो लोग अल्लाह की इबादत पर कायम रहते हैं वह अपने उस रूहानी क़ुतुबनुमा को इस्तेमाल करते हैं जो कि अल्लाह ने हर इंसान को अपने अंदर संयम, संतुलन और स्थिरता बनाए रखने के लिए प्रदान किया है, वह अल्लाह की रहनुमाई की बदौलत जीवन के उतार चढ़ाव का सामना उदारता के साथ करने के योग्य बनते हैं। इबादत पर क़ायम रहने का मतलब केवल कुछ ख़ास कर्मकाण्ड करना नहीं है बल्कि अपने आप को पूरी तरह अल्लाह के हवाले कर देना और उसके मार्गदर्शन को स्वीकार कर लेना है, और अल्लाह के अस्तित्व पर वास्तविक रूप से ईमान रखना है। इबादतों के माध्यम से अल्लाह से ऐसा क़रीबी सम्बंध पैदा होने से

इंसान के अन्दर स्थिरता आती है और कामयाबी व नाकामी दोनों स्थितियों में इंसान का उत्साह व ऊर्जा बनी रहती हे। अल्लाह से इस तरह का सम्बंध रखने वाला व्यक्ति सदकर्म का प्रचार करता है और अपने सम्पर्क में रहने वाले सभी लोगों को फ़ायदा पहुचाने वाला होता है, *"कुछ शक नहीं कि नमाज़ बे हयाई और बुरी बातों से रोकती है और अल्लाह का ज़िक्र बड़ा (अच्छा काम) है और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे जानता है"* (29:45)। सदकर्म के स्पष्ट प्रतीक जो अल्लाह के सामने मुस्तक़िल सिर झुकाते रहने और नमाज़ में उससे कलाम करने से विक्सित होते हैं वे हैं दूसरों के अधिकारों को पहचानना, जरूरतमंदों या अपने अधिकारों से वंचित लोगों की मदद करना और जो लोग अपने जीवन की आवश्यकताओं और जीविका उपार्जन के अधिकार और अपना जायज़ हिस्सा प्राप्त करने की योग्यता से वंचित हों, उन्हें अपने बस भर देते रहना (51:19; 70: 24-25)। और शरीरिक या बौद्धिक मदद तो इंसान किसी भी मामले में दूसरों को दे सकता है। ग़रीबों और ज़रूरेतमंदों की मदद करने का ज़िक्र नमाज़ के साथ जोड़ कर क़ुरआन की 26 आयतों में आया है और उन इबादतों को निरर्थ बताया गया है जिनसे इंसान के अन्दर दूसरों के प्रति कुछ अच्छा करने की भावना नहीं जागती (देखे सूरत 107 की सभी आयतें)।

وَلَآ أُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ۝٢
أَيَحْسَبُ الْإِنسَانُ أَلَّن نَّجْمَعَ عِظَامَهُۥ ۝٣
بَلَىٰ قَٰدِرِينَ عَلَىٰٓ أَن نُّسَوِّيَ بَنَانَهُۥ ۝٤

और उस जान की क़सम जो अपने ऊपर बहुत मलामत करे। क्या इन्सान ये ख़्याल करता है के हम उसकी हड्डियाँ जमा ना करेंगे। हम ज़रूर करेंगे क्योंके हम इस की ताक़त रखते हैं के उसकी पोर पोर फिर से ठीक कर दें। (75:2-4)

जैसा कि पहले बयान किया जा चुका है कि क़ुरआन ने इंसानी नफ़्स (मानव स्व) के तीन पहलू बताए हैं, एक बुराई पर उक्साने वाला, दूसरा मलामत करने वाला और तीसरा इंसान को संतुष्टि का भाव दिलाने वाला (12:53, 75:2, 89:27 क्रमशः)। मनोविश्लेष्णात्मक सिद्धांत (Psychoanalytic Theory) भी इंसानी स्वं के तीन आयामों की बात करता है; *आईडी,* जो कि पूरी तरह अवचेतना में है और स्वभाविक आवश्यकताओं व इच्छाओं से पैदा होने वाली ऊर्जा का केन्द्र है, दूसरा *सुपर ईगो* जो आंशिक रूप से चेतना का अंग होता है और अनुवांशिक रूप से तथा सामाजिक सिद्धांतों से इंसान में पैदा होने वाली बुराई व अच्छाई को समझने की क्षमता का नाम है और मौलिक संस्कारों की व्यवस्था से भावनाओं को जगाता है यानि ज़मीर और अपराध-बोध, और तीसरा *ईगो,* जो वास्तविकता के प्रति एक लगे बंधे नैतिक व्यवहार को ज़ाहिर करता है और सच्चाई को अपनाने या न अपनाने और उसके प्रति नज़रिया बनाने का काम करता है।

इंसान की शरीरिक बनावट और इंसान की मानसिक स्थिति और आत्मीयता में अल्लाह की सृजन कला के करिशमे नज़र आते हें। जैसे उंगली की बनावट और उसके काम, कि इसने इंसानी सभ्यता के विकास में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। चीज़ों को पकड़ने और हरकत में लाने का काम उंगलियों से लिया जाता है, कलात्मक कामों में उंगलियों से काम लिया जाता है, उंगली के स्पर्श से चीजों की गर्मी व ठण्डक का अनुमान लगाया जाता है और दूसरे किसी इंसान को या जानवरों को अपनी अन्दरूनी भावना से अवगत कराया जाता है। उंगलियों के पोरों पर मौजूद उंगलियों के निशान (फिंगर प्रिन्ट्स) पहचान के लिए भी इस्तेमाल किए जाते हैं। इंसानी शरीर का यह एक छोटा सा भाग कितना महत्वपूर्ण है और अल्लाह की रचना का कैसा शानदार करिशमा है!

بَلِ الْاِنْسَانُ عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ۙ وَّ لَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ؕ

बल्के इन्सान ख़ुद अपने आप पर गवाह है। चाहे वो बहाने बनाए। (75:14-15)

इंसान अपनी भावनाओं से, अपनी प्रवृत्तियों से और अपनी नियतों से बा-ख़बर होता है, यद्यपि वह अपने बहुत से कर्मों पर क्षमा याचना के लिए अपनी अक़्ल और भाषा की क्षमता को काम में लाता है और अपने असिल मक़सद को छिपाता है। लेकिन स्वयं को फ़रेब देने या दूसरों को धोखे में रखने से आख़िरकार कोई फ़ायदा नहीं। एक न एक दिन आदमी की अंदरूनी हक़ीक़त ज़ाहिर हो जाती है और जो कुछ उसने अपने अंदर छिपा रखा होता है वह सामने आ जाता है। फ़ैसले के दिन आदमी खुद अपने ख़िलाफ़ गवाही देगाः ''यहाँ तक कि जब उसके पास पहुचं जाएंगे तो उनके कान और आंखें और त्वचा (यानि दूसरे अंग) उनके खिलाफ़ उनके कर्मों की गवाही देंगे'' (41:20)।

اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ سُدًى ؕ اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ۙ ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰى ۙ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ؕ اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰۤى اَنْ يُّحْيِ ـَۧ الْمَوْتٰى ؑ

क्या आदमी इस घमंड में है के आज़ाद छोड़ दिया जायेगा। क्या वो एक वीर्य की एक बूंद ना था, जो (रहम में) टपकाया गया था। फिर वो ख़ून का लोथड़ा बना, फिर अल्लाह ने उसको बनाया फिर उसके अंग दुरूस्त किये। फिर उसकी दो क़िसमें बना दीं मर्द और औरत। क्या उसको इस बात पर क़ुदरत नहीं के मुर्दों को जिला उठाये? (75:36-40)

इंसान अपनी हैरत अंगेज़ शरीरिक, मानसिक, बौद्धिक और अध्यात्मिक संरचना के साथ और बहु आयामी जीवन के साथ आख़िर यह कैसे सोच सकता है कि वह अपनी सभी शक्तियों

को जैसे चाहे इस्तेमाल करे कोई उससे जवाब लेने वाला नहीं है। अल्लाह हर इंसान को उसके कर्मों और नियतों के लिए जवाबदेह बनाता है और हर इंसान को उसकी मृत्यू के बाद वह उठा खड़ा करेगा। अगर मर्द और औरत के शरीरिक सम्बंध से एक चलता फिरता इंसान अस्तित्व में आ सकता है तो फिर इस बात में भी कोई शक नहीं किया जा सकता है कि अल्लाह एक बने बनाए जीव को मौत दे कर फिर से उठा खड़ा करे।

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ
لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ۝١ اِنَّا خَلَقْنَا
الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ۖ نَّبْتَلِيْهِ
فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ۝٢ اِنَّا هَدَيْنٰهُ
السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا كَفُوْرًا ۝٣

बेशक इन्सान पर एक निशान ऐसा भी गुज़रा है के कहीं उसका नाम भी ना था। बिला शुबह हमने इन्सान को मिश्रित बूंद से पैदा किये ताकि उसे आज़मायें, तो हमने उसको सुनता देखता बनाया। हमने उसको रास्ता भी दिखाया, या तो वो शुक्रगुज़ार हो या ना शुक्रा। (76:1-3)

यह सृष्टि तो तब अस्तित्व में आई जब इंसान का कोई नाम व निशान भी नहीं था, इसलिए सृष्टि की तुलना में इंसान का ज़ाहिर में कोई महत्व नहीः *''आसमानों और ज़मीन का पैदा करना लोगों को पैदा करने से बड़ा (काम) है लेकिन अधिकतर लोग जानते नहीं।''* (40:57)। दूसरी तरफ़ इंसान एक असामान्य जीव है इसके बावजूद वह एक कमज़ोर जीव है जिसे पहले मिट्टी के पुतले से बनाया गया और फिर मर्द के वीर्य की एक बूंद और औरत के अण्डाश्य से उसकी प्रजाति चले। इंसान को असमान्य गुण और विशेषताएं बख़्शी गयी हैं और शरीरिक, बौद्धिक व रूहानी क्षमताएं दी गयी हैं। फिर इन सलाहियतों और शक्तियों को अपनी मर्ज़ी से इस्तेमाल करने का अधिकार दिया गया कि वह खुद अपने चारों ओर बसी दुनिया को चाहे तो बनाए या चाहे तो बिगाड़े। अल्लाह की रहनुमाई और इंसान की अध्यात्मिक शक्ति इंसान को सदकर्म और निर्माणकारी कामों की तरफ़ प्रेरणा देकर और विघटन, अहंकार और अदूरदर्शिता से बचा कर निर्माण की तरफ़ ले जा सकती है।

يٰٓاَيُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ ۝٦
الَّذِىْ خَلَقَكَ فَسَوّٰىكَ فَعَدَلَكَ ۝٧ فِىْٓ اَىِّ
صُوْرَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ ۝٨

ऐ इन्सान! तुझको किस चीज़ ने अपने रब के बारे में धोके में डाल दिया। जिसने तुझ को पैदा किया, तेरे अंग दुरूस्त किये और तेरा आकार संतुलित बनाया। जिस सूरत में चाहा तुझे जोड़ दिया। (82:6-8)

अल्लाह ने इंसान को पैदा किया और उसको एक संतुलित शरीर दिया और उसे विभिन्न प्रकार की शक्तियां दीं और संसाधन दिए जिनसे काम लेकर वह अपनी इंसानी ज़िम्मेदारियों को अंजाम दे सकता है और दुनिया के इस जीवन में अपनी भूमिका निभा सकता है। अपनी बहु आयामी शक्तियों और योग्यताओं से काम लेकर इंसान ख़ुद अपने आप को भी तरक़्क़ी दे सकता है और अपने भौतिक व सामाजिक वातावरण को भी तरक़्क़ी दे सकता है। इन संतुलित बौद्धिक और मानसिक व अध्यात्मिक शक्तियों को पहचान कर इंसान को अल्लाह का शुक्र गुज़ार होना चाहिए जो अगर चाहता तो किसी और रूप में भी पैदा कर सकता था लेकिन उसने ऐसा न करके एक संतुलित और कारामद अस्तित्व बनाया। उसकी शुक्रगुज़ारी का बहतरीन तरीक़ा यह है कि इन इंसानी शक्तियों और क्षमताओं को एक सामूहिक इंसानी विकास के लिए उपयोग किया जाए और दुनिया के साधनों व संसाधनों को स्वार्थपूर्ति, अदूरदर्शिता और अन्याय के बग़ैर सामूहिक रूप से तरक्की दी जाए।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلْإِنسَٰنُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلَٰقِيهِ ۝٦

ऐ इन्सान! तू अपने पालनहार की तरफ़ बढ़ने में लगा हुआ है तू ज़रूर उससे मिलेगा। (84:6)

जीवन को अगर आख़िरत के अनन्त जीवन से अलग कर दिया जाए जो कि कर्मों का फल मिलाने की जगह है और जिसका विश्वास अल्लाह ने दिलाया है, तो दुनिया का यह जीवन कठिनाइयों और दिक़्क़तों से भरा मालूम होता है। हर ज़माने में कुछ दिमाग़ों ने कविताओं, कहानियों और धारणाओं के रूप में आख़िरत के जीवन में शक पैदा करने वाला नास्तिक साहित्य परोसा है, इन दिमाग़ों ने अल्लाह से उम्मीद का यह रिश्ता ख़त्म कर दिया और इस वजह से शक और अविश्वसनीयता पैदा हुई। इस जीवन में ऐसा हो सकता है कि अच्छे लोग दुश्वारियों और दिक़्क़तों में मुब्तिला रहें और बुराई में लगे लोग खूब फलें फूलें, और इस जीवन की अवधि भी इतनी कम है कि सभी व्यक्तिगत और सामूहिक योग्यताएं पूरी तरह काम में नहीं आ पाती हैं या न्याय और शान्ति के सभी तकाज़े पूरे नहीं होते हैं। चुनाँचे यह स्वभाविक है कि एक और जीवन हो जहां न्याय पूरा हो और इंसानी क्षमताओं की पूर्ति हो, जहां वे लोग जो यहाँ अन्याय की पीड़ा झेलते हैं वे राहत और आनन्द प्राप्त कर सकें और वे लोग जो यहाँ नाजायज़ और ज़ालिमाना तरीक़ों से मौज मस्ती कर रहे हैं, वो अपने कुकर्मों पर पछताएं। यह अल्लाह की तरफ़ से न्याय की ऐसी गारण्टी है जो इंसान के लिए एक उम्मीद पैदा करती है और आख़िरत के अनन्त जीवन पर इंसान का विश्वास दृढ़ करती है।

يٰٓاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ﴿٢٧﴾ ارْجِعِيْٓ اِلٰى
رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿٢٨﴾ فَادْخُلِيْ فِيْ
عِبٰدِيْ ﴿٢٩﴾ وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ﴿٣٠﴾

ऐ संतोष (पाने) वाली रूह। तू अपने रब की तरफ़ लौट चल, तू उससे राज़ी और वो तुझसे ख़ुश। बस तू मेरे बन्दों में शामिल हो जा। और मेरी जन्नत में दाख़िल हो जा। (89:27:30)

इंसान की जीवन यात्रा का बहतरीन ख़ात्मा यह है कि वह अपने मालिक और रचियता की तरफ़ पूरे संतोष और सुकून की हालत में लोटे। जैसा कि पहले बयान किया जा चुका है, हर इंसान की नफ़्स के तीन पहलू है, उक्साने वाला नफ़्स, मलामत करने वाला नफ़्स और सुकून व इतमिनान दिलाने वाला नफ़्स जिसकी तरफ़ ऊपर की आयत में इशारा किया गया है। यह तीन पहलू इंसानी मनोवृत्ति के तीन दायरों की ओर ध्यान दिलाते हैं जो साइकोएनिलिटकल थ्यूरी में बयान किए गए हैः आईडी, सुपर ईगो और ईगो (देखें पहले ज़िक्र की गयी आयतें 12:53; 75:2 और उनकी तफ़सीर)। लेकिन उनकी तुलना करना यहाँ हमारा उद्देश्य नहीं है।

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ﴿٤﴾
اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ عَلَيْهِ اَحَدٌ ﴿٥﴾
يَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ﴿٦﴾ اَيَحْسَبُ
اَنْ لَّمْ يَرَهٗٓ اَحَدٌ ﴿٧﴾ اَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ
عَيْنَيْنِ ﴿٨﴾ وَ لِسَانًا وَّ شَفَتَيْنِ ﴿٩﴾ وَ
هَدَيْنٰهُ النَّجْدَيْنِ ﴿١٠﴾

हमने इन्सान को दिक़्क़त (भरे जीवन) में पैदा किया है। क्या वो समझता है कि इस पर किसी का ज़ोर नहीं चलता। कहता है कि मैंने बहुत सा माल लुटा दिया। क्या वह यह समझता है कि उसको किसी ने देखा नहीं। क्या हमने उसको दो आँखें नहीं दीं। और ज़बान और दो होंट नहीं दिये। और हमने उसको (ख़ैरो शर के) दोनों रास्ते बता दिये। (90:4-10)

जीवन परिश्रम और कठिनाइयों से भरा हुआ है और जीवन को ठीक से बिताने के लिए आदमी को स्वयं पर नियंत्रण रखने का अभ्यास करना होता है। अलबत्ता जिन लोगों को इस दुनिया में अधिकार और संसाधन प्राप्त हो जाते हैं वो इस धोखे में मुब्तिला हो जाते हैं कि उनकी यह ख़ुशहाली हमैशा के लिए है और उन्हें यह संसाधन व शक्तियां किस तरह प्राप्त हुए हैं या इस शक्ति और धन दौलत का इस्तेमाल वो किस तरह करते हैं इसकी कोई जवाबदेही नहीं करनी है। आदमी जब इन चीज़ों का आदी हो जाता है और घमण्ड में उन्हें अपने लिए एक अधिकार समझने लगता है तो वह अल्लाह की कृपा को भूल जाता है जिसने इंसान को जानवरों से ऊपर उठाया है, और अपनी आंखों को जिन से वह देखता हे, अपनी जीभ और होंटों को जिन से वह बोलता है, और ख़ास तौर से अपनी अक़ल, नैतिक शक्ति और आत्मा को जिनसे वह सही और ग़लत का भेद कर सकता है, अपनी मिलकियत समझने लगता है।

इंसान अल्लाह की इन तमाम नेअमतों के लिए जवाबदेह है और इस जवाबदेही का ख़्याल उसे अपने ज़हन में रखना चाहिए, चाहे वह कितना ही शक्तिशाली या दौलत मन्द हो। यह जीवन अपनी तमाम राहतों के साथ समाप्त हो जाएगा और जिन्होंने जीवन के इन उतार चढाव में खुद पर नियंत्रण रखा होगा और इसकी कठिनाइयों व दिक़्तों को सब्र के साथ बर्दाश्त किया होगा, और अपनी शक्ति व दौलत को इस्तेमाल करते हुए लालच से बचे होंगे उन्हें इस दुनिया में भी इसका बदला मिलेगा और आख़िरत में भी इनाम से नवाज़े जाएँगे। इसके विपरीत वो लोग जिनकी दौलत और ताक़त ने उनमें घमण्ड पैदा कर दिया होगा, आख़िरकार नुक़सान उठाने वालों में होंगे।

وَ نَفۡسٍ وَّ مَا سَوّٰىهَا ۝٧ فَاَلۡهَمَهَا
فُجُوۡرَهَا وَ تَقۡوٰىهَا ۝٨ قَدۡ اَفۡلَحَ مَنۡ
زَكّٰىهَا ۝٩ وَقَدۡ خَابَ مَنۡ دَسّٰىهَا ۝١٠

और नफ़्स (जान) की क़सम और उसकी क़सम जिसने उसे ठीक ठीक बनाया। फिर उसकी बुराई और नेकी को उस में डाल दिया। यक़ीनन वही कामयाब है जिसने उसको (अपनी नफ़्स को) पाक किया; और वह बर्बाद हुआ जिसने उसे गुनाहों में दबा दिया। (91:7-10)

وَ الَّيۡلِ اِذَا يَغۡشٰى ۝١ وَ النَّهَارِ اِذَا
تَجَلّٰى ۝٢ وَ مَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَ الۡاُنۡثٰۤى ۝٣ اِنَّ
سَعۡيَكُمۡ لَشَتّٰى ۝٤ فَاَمَّا مَنۡ اَعۡطٰى وَ اتَّقٰى ۝٥
وَ صَدَّقَ بِالۡحُسۡنٰى ۝٦ فَسَنُيَسِّرُهٗ
لِلۡيُسۡرٰى ۝٧ وَ اَمَّا مَنۡۢ بَخِلَ وَ اسۡتَغۡنٰى ۝٨
وَ كَذَّبَ بِالۡحُسۡنٰى ۝٩ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلۡعُسۡرٰى
۝١٠ وَ مَا يُغۡنِىۡ عَنۡهُ مَالُهٗۤ اِذَا تَرَدّٰى ۝١١ اِنَّ
عَلَيۡنَا لَلۡهُدٰى ۝١٢

रात की क़सम जब वो (दिन को छुपा ले)। और दिन की क़सम जब चमक उठे। और उस हस्ती की क़सम जिसने नर और मादा पैदा किये। तुम लोगों की कोशिशें तरह तरह की हैं। तो जिसने दिया और ख़ुदा से डरा। और अच्छी बात का अनुमोदन किया। तो बहुत जल्द हम उसको आसानी मुहैया कर देंगे। और जिसने कंजूसी किया और बे परवाह रहा। और अच्छी बात को झुटलाया। तो हम उसको कठिनाई में पड़ जाने देंगे। और उसका माल उसके कुछ काम ना आयेगा जब वो जहन्नम के गढ़े में गिरेगा। हमारा काम तो राह बनाना है। और आख़िरत भी हमारे क़ब्ज़े में है और दुनिया भी।

(92:1-13)

अल्लाह ने इंसानी जान को काम करने के लायक़ बनाया है, और इस बात को शरीरिक, बौद्धिक, और मानसिक व नैतिक एवं अध्यात्मिक शक्तियों से और इंसानी जीवन को तथा दुनिया को तरक़्क़ी देने के मिशन को पूरा करने की सलाहियतें देकर साबित किया है। अल्लाह की नेअमतों की इन्तेहा यह है कि उसने इंसान को इरादे की आज़ादी दी है और उसे अक़्ली,

नैतिक व अध्यात्मिक शक्तियां दी हैं जो उसे सही और ग़लत में फ़र्क़ करने के लायक़ बनाती हैं। लेकिन इसके बावजूद इंसानी नफ़्स में सही आचार अपनाने और बुराइयों से बचाए रखने की पूरी शक्ति पैदा करने के लिए निरन्तर प्रयास ज़रूरी है क्योंकि बुराई की प्रेरणा और नैतिक कमज़ोरियों की मौजूदगी की वजह से, जो कि उसे अपनी आज़ाद मर्ज़ी को बरतने के लिए दी गयी है, उसे लगातार एक चुनौती से जूझते रहना होता है। अल्लाह की रहनुमाई इंसान की अपने चरित्र की पाकी और नैतिक गुणों को बनाए रखने की मुस्तक़िल कोशिशों में मददगार होती है और बुराई के जाल में फंसने से बचाने के लिए उसकी निगरानी करती है।

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ
تَقْوِيْمٍ ۝ ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ
سٰفِلِيْنَ ۝ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝

के हमने इन्सान को एक हसीन सांचे में ढाला है। फिर (रफ़्ता रफ़्ता) उसकी हालत को बदल कर पस्त से पस्त तर कर दिया। मगर जो लोग ईमान लाये, और अच्छे काम किये तो उनके लिये ख़त्म न होने वाला बदला है। (95:4-6)

अल्लाह ने इंसान को ज़मीन पर चलने फिरने, उसे तरक्क़ी देने और ज़मीन पर सभ्यता को विक्सित करने के लायक़ बनाया है। उसे विभिन्न प्रकार की शक्तियां और योग्यताएं दी गयी हैं जो संतुलित और समानुपातिक हैं और आपस में समन्वयित है, और उसे इस जीवन में अपना इंसानी मिशन पूरा करने के लायक़ बनाती हैं। लेकिन जब तक इंसान की मर्जी और इच्छा अपनी अक़ल और नैतिक व अध्यात्मिक शक्तियों को उचित ढंग से इस्तेमाल करने की पाबन्द नहीं होगी तब तक इंसान केवल अपनी पाश्विक (शरीरिक) आवश्यकताओं को ही पशुओं की तरह पूरा करता रहेगा (देखें आयत 7:179, 25:44 और उनकी तफ़सीर)। अल्लाह की रहनुमाई इंसान को अपनी स्वभाविक क्षमताओं को जो कि अल्लाह ने उसे दी हैं, बनाए रखने और इस दुनिया में ज़मीन पर इंसानी मिशन को पूरा करने और अपनी मंज़िल व लक्ष्य को पाने के लिए है। जो लोग इस रहनुमाई का अनुसरण करते हैं उन्हें इस दुनिया में शान्ति और संतोष और दूसरों की मुहब्बत हासिल होती है, और आख़िरत के अनन्त जीवन में अल्लाह के कभी समाप्त न होने वाले इनाम मिलते रहेंगे।

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ۝ خَلَقَ
الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۝ اِقْرَاْ وَ رَبُّكَ
الْاَكْرَمُ ۝ الَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۝ عَلَّمَ
الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ۝ كَلَّآ اِنَّ

(ऐ मोहम्मद (स.अ.स.) अपने रब का नाम लेकर पढ़ो जिसने पैदा किया। जिसने इन्सान को ख़ून की फुटकी से बनाया। पढ़ो और तुम्हारा रब बड़ा करम वाला है। जिसने क़लम (के ज़रिये) से लिखना सिखाया। इन्सान को वो बातें सिखाईं जो वो नहीं जानता था। बेशक

| | |
|---|---|
| اِلْاِنْسَانَ لَيَطْغٰىٓ ۙ اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ۙ اِنَّ اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ۙ | इन्सान सरकश हो जाता है। इसलिये के अपने आपको बेनियाज़ समझने लगता है। बेशक तेरे रब ही की तरफ़ लौटना है। (96:1-8) |

यह वो पहली आयतें हैं जो पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उनके मिशन और पैग़ाम के बारे में अवतरित हुई थीं, और इस तरह यह आयतें इस्लाम के प्रथम संदेश और इंसानियत के कल्याण के लिए अल्लाह की पुकार का पहला अध्याय हैं। यहाँ अल्लाह इंसान को उसकी पैदाइश की हक़ीकत याद दिलाता हैः यानि वीर्य और अण्डाश्य के मिले हुए कीटाणु से, जो हालांकि बहुत सूक्ष्म होता है लेकिन उसमें इंसानी शक्तियों का भण्डार मौजूद होता है जिनमें सबसे ऊँची चीज़ इंसानी दिमाग़ और इच्छा की आज़ादी व शक्ति है। इंसान को बोलने की शक्ति दी गयी है जिनसे वे उन तमाम चीज़ों के नाम लेता है जो उसके सम्पर्क में आती हैं। (देखें आयत 2:131 और उसकी तफ़सीर) उसे अल्लाह ने यह योग्यता भी दी है कि वह शब्दों को संकेतों में भी बदल सकता है, और इस तरह इंसान को इस लायक़ बनाया गया कि वह जो कुछ जाने उसे लिख कर सुरक्षित भी कर ले और इस सुरक्षित सामग्री को दूसरों तक पहुंचाए। यह एक ऐसा कारनामा है जो सभ्यता के इतिहास को सुरक्षित करने के लिए ज़रूरी चीज़ बन गया है। इंसान को क़लम का इस्तेमाल सिखा कर और ज्ञान प्राप्त करने तथा उसका प्रसार करने की योग्यता देकर अल्लाह ने इंसान को धरती पर एक जगह से दूसरी जगह सूचनाओं को पहुंचाने और उनका आदान प्रदान करने में मदद दी। क़ुरआन की यह पहली आयतें ज़मीन पर इंसान के सभ्यात्मक चरित्र पर ज़ोर देती हैं जहां उसे अल्लाह का नुमाइन्दा बन कर काम करने का दायित्व दिया गया है।

इंसान की अक़्ल, ज्ञान, बोलने की क्षमता, लिखने की योग्यता सहित सभी तरह की योग्यताएं उसके शक्ति व अधिकार और आत्मनिर्भर होने का अहसास दिलाती हैं लेकिन फिर वह घमण्ड में आकर सीमाओं को लांघने लगता है और दूसरों के अधिकार कुचलने में लग जाता है। ऐसे घमण्डी व्यक्ति को यह आयतें यह याद दिलाती हैं कि वह इस दुनिया के जीवन में तो अपनी इच्छाएं बे रोक-टोक पूरी कर सकता है लेकिन तमाम इंसानों को आख़िर में निश्चित रूप से अपने मालिक की तरफ़ पलटना है और हर व्यक्ति को इस दुनिया में अपने सभी कामों की जवाबदेही निश्चित रूप से उस दूसरे जीवन में करनी ही होगी।

| | |
|---|---|
| اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ۚ وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۚ وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ۙ | बेशक इन्सान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है। और वो ख़ुद भी इस पर गवाह है। और वो माल की चाहत में बहुत कट्टर है। (100:6-8) |

यह आयतें दुनिया के आराम व राहत और माल व दौलत से इंसान की मुहब्बत को उजागर करती हैं। लेकिन इंसान का यह रवैया ऐसा है जो मालिक के प्रति शुक्रगुज़ारी वाला नहीं है। इसके बजाए इस दुनिया की राहतों की तरफ़ लगे रहने का यह रवैया आदमी को आम तौर से न्याय और सदाचार से दूर ले जाता है और इंसान इस जीवन की राहतों और ऐश व मस्ती में मुब्तिला हो कर उन लोगों से बे-नियाज़ हो जाता है जो वास्तव में ज़रूरत मन्द होते हैं और उस मालिक को भूल जाता है जिसने यह दौलत दे कर उसे इस परीक्षा में डाला है कि वह किस तरह अपनी दौलत को इस्तेमाल करता है और उन लोगों से कैसा बरताव करता है जो जीवन की आवश्यक चीज़ों के ज़रूरत मन्द हैं। लेकिन समय आने पर, जो कि उसके जीवन में कभी भी आ सकता है और आख़िरत में तो निश्चित रूप से आएगा, वह अपनी अदूरदर्शिता, स्वार्थ-पूर्ति और लालच का इकरार करेगा जिसकी वजह से वह अल्लाह की डाली गयी आज़माइश (परीक्षा) में नाकाम हुआ, दूसरों के अधिकारों की अवहेलना की और अल्लाह की कृपा का दुरुपयोग किया। लेकिन यह पछतावा अगर तब हुआ जब यह जीवन समाप्त हो रहा होगा तो बहुत देर हो चुकी होगी और कोई पछतावा व तौबा किसी काम न आएगी।

وَالْعَصْرِ ۝١ إِنَّ الْإِنسَانَ لَفِي خُسْرٍ ۝٢
إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَ
تَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝٣

ज़माने के वक़्त की क़सम। इन्सान घाटे में है। उन लोगों को छोड़कर जो ईमान लाये और नेक काम करते रहे और आपस में हक़ की प्रेरणा और सब्र की ताकीद करते रहे। (103:1-3)

इंसान की क्षमताओं के सीमित होने और उसकी अदूरदर्शिता की वजह से, जल्दबाज़ी, लालच और स्वार्थपूर्ति उसे आख़िरकार पूरी तरह नुक़सान की तरफ़ ले जाती है इस दुनिया के जीवन में भी और आख़िरत के अनन्त जीवन में भी। अल्लाह पर ईमान और जवाबदेही की चिंता से इंसान की नज़र व्यापक और विस्तृत होती है, वह लोगों से मामला करते समय अल्लाह की पसन्द का ख़्याल रखता है और दुनिया के इस जीवन में काम करते हुए वह आख़िरत के जीवन पर नज़र रखता है। यह दूरदर्शिता उसे स्वयं अपने अहंकार से बचाती हे और सदाचार व सदकर्म की प्रेरणा देती हे, और सत्य पर आधारित नैतिक मूल्यों को बनाए रखने तथा उन्हें बढ़ावा देने के लिए दूसरों के साथ सहयोग पर आमादा करती है। सच्चाई का दायरा बहुत व्यापक और समग्र है, और अल्लाह पर ईमान व उसकी इबादत तथा उसकी हिदायत पर चलना उस सत्य का प्रतिबिम्ब है जिसके नूर से यह दुनिया जगमगा रही है।

# समाज, सभ्यताएं, राजनीतिक और शासकीय अधिकार

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَ تَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ۚ وَ تُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَ تُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ؕ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ؕ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۲۶﴾ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَ تُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۚ وَ تُخْرِجُ الْحَیَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَ تُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَیِّ ۚ وَ تَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۲۷﴾

कहो कि ऐ ख़ुदा! ऐ बादशाही के मालिक तू जिसको चाहे बादशाही बख़्शे और जिससे चाहे बादशाही छीन ले, और जिसको चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़लील करे, हर तरह की भलाई तेरे ही हाथ है, और बेशक तू हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। तू ही रात को दिन में दाख़िल करता और तू ही दिन को रात में दाख़िल करता है और तू ही बेजान से जानदार पैदा करता है, और तू ही जानदार से बेजान पैदा करता है, और तू ही जिसको चाहता है बेशुमार रिज़्क़ बख़्शता है। (3:26-27)

اِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ؕ وَ تِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ يَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَآءَ ؕ وَ اللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۴۰﴾

अगर तुमको बेहिसाब रोज़ी देता है। तो उस क़ौम को भी ऐसा ही घाव लग चुका है, और हम इन दिनों को इंसानों दरमियान अदलते बदलते रहा करते हैं ताकि अल्लाह उन ईमान वालों को जान ले, और तुम में से कुछ को गवाह बनाना था, और ज़ालिमों से अल्लाह मोहब्बत नहीं करता। (3:140)

فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ ؕ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ ۗ فَاِمَّا مَنًّۢا بَعْدُ وَ اِمَّا فِدَآءً حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا ۛؕ ذٰلِكَ ۛؕ وَ لَوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا۟ بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ ؕ وَ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿۴﴾

जब तुम काफ़िरों से भिड़ जाओ तो उनकी गर्दनें उड़ा दो, यहां तक जब तुम ख़ूब ख़ूरेज़ी कर चुको तो (क़ैदियों को) मज़बूत से मज़बूत बांध लो, फिर बाद में या तो एहसान कर के छोड़ दो या फ़िदया लेकर, जब तक के लड़ने वाले अपने हथियार ना रख दें, ये हुक्म (याद रखो) और अगर अल्लाह चाहता तो दूसरी तरह बदला ले लेता, लेकिन उसने चाहा के एक को दूसरे से (लड़ाकर) तुमको आज़माये और जो लोग ख़ुदा की राह में मारे गए तो अल्लाह उनके कर्म हरगिज़ बेकार नहीं करेगा। (47:4)

क़ुरआन यह बिन्दु उजागर करता है कि राजनीतिक शक्ति और शासन करने वाली शक्तियों

का सम्बंध उस डायनामिज़्म अर्थात गतिशीलता से है जो पूरी सृष्टि के भौतिक और जैविक दानों स्तरों पर पूरी तरह छायी हुई है

राजनीतिक और सामाजिक सत्ता का बदलाव रात और दिन के बदलाव की तरह है, या जीवन और मृत्यू के एक दूसरे के आगे पीछे आने जाने की तरह है (3:26-27)। ख़ुद मुसलमान भी अल्लाह के इस नियम से अलग नहीं है जिसके अन्तर्गत व्यक्तियों और समाजों की एक दूसरे के द्वारा परीक्षा होती रहती है (47:7)। जब कामयाबी की शर्तों को पूरा नहीं किया जाता तो नाकामी के अपमान से कोई नहीं बचता, क्योंकि अल्लाह अपनी सृष्टि को जिस तरह चलाता है उसमें किसी के लिए कोई पक्षपात नहीं है। कोई भी मुस्लिम राजनीतिक सत्ता या शासन हमेशा रहने वाला नहीं है या दूसरों के साथ मामलों के माध्यम से होने वाली परीक्षा से ऊपर नहीं है। मुस्लिम समाज और राज्य शासन के बीच मतभेद हो सकते हैं जिनमें हर एक को अपना मत किसी हिंसा या उत्तेजना के बग़ैर स्वतंत्र रूप से ज़ाहिर करने का अधिकार है लेकिन बहतरीन तरीक़े से और नैतिकता के दायरे में रहते हुए (16:125)।

सामाजिक और राजनीतिक संगठन इस्लाम के शूराई निजाम (सलाह व मशौरा पर आधारित व्यवस्था) में आधारभूत महत्व रखते हैं, और *"अम्र बिल मारूफ़"* व *"नही अनिल मुनकर"* (अच्छी बातों का आदेश देना व बुरे कामों से रोकना) (3:104) की ज़िम्मेदारी व हक को पूरा करने का एक माध्यम हैं (देखें पांचवे अध्याय में शासक व शासित के बीच सम्बंध)। सामाजिक और राजनीतिक गतिशीलता और बदलावों के बारे में क़ुरआन का नज़रिया मुस्लिम दिमाग़ों को अपने व्यवहार में या मामलों में और ख़ास तौर से राजनीतिक मामलों में एक सक्रिय रहने वाली शूरा (सलाहकार मण्डल) की व्यवस्था करने की ताकीद करता है। लेकिन दुर्भाग्य से कई सदियों से किसी भी स्तर पर इस पर अमल नहीं हो रहा है। इसके अलावा, सामाजिक विकास के विभिन्न आयामों पर ग़ौर करने से इंसानी अक़्ल ने जो नतीजे निकाले हैं वो भी इस संदर्भ में क़ुरआन के नज़रिए को प्रतिबिम्बित करते हैं। अगर इब्ने खलदून (मृ. 1406) के शानदार इल्मी कामों को बाद के लोगों ने आगे बढाया है तो इसका मतलब यह है कि मुसलमान सदियों पहले सामाजिक ज्ञान का एक आज़ाद व्यवस्थित और अति महत्वपूर्ण स्कूल क़ायम कर चुके थे।

فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا وَ هِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَ بِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّ قَصْرٍ مَّشِيْدٍ ۝ اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ

ग़ज़ हमने कितनी बस्तियों को तबाह कर डाला जबके वो नाफ़रमान थीं, सो वो अपनी छतों पर गिरी पड़ी हैं, और बहुत से कुएं बेकार, और बहुत से महल वीरान पड़े हैं। क्या उन लोगों ने मुल्क में सैर नहीं की, ताकि उनके दिल ऐसे होते के उनसे समझ सकते, और कान ऐसे

يَّعْقِلُوْنَ بِهَآ اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ۚ فَاِنَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَ لٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِيْ فِي الصُّدُوْرِ ۝ وَ يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَ لَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ؕ وَ اِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ۝ وَ كَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ اَخَذْتُهَا ۚ وَ اِلَيَّ الْمَصِيْرُ ۝

होते के उनसे सुन सकते, बात ये है के आंखें अंधी नहीं होतीं बल्के दिल जो सीनों में हैं वो अंधे होते हैं। और ये आपसे अज़ाब के लिये जल्दी करते हैं, और अल्लाह अपना वादा हरगिज़ ख़िलाफ़ नहीं करेगा और तुम्हारे रब के नज़दीक एक दिन हज़ार बरस का है तुम लोगों की गिनती के हिसाब से। और कई बस्तियों को मैंने मोहलत दे रखी थी, और वो नाफ़रमान थे, फिर मैंने उनको पकड़ लिया, और मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है।

(22:45-48)

राजनीतिक सत्ता और सभ्यताओं का उत्थान व पतन इतिहास का एक महत्वपूर्ण दर्शन है, और ऐसे सामाजिक बदलावों की इंसानी ज़हन ने क्रमवार स्वीकार कर लिया है जिसने यह समझ लिया है कि बदलाव के ये क़ानून भौतिक परिवर्तनों के नियमों की तरह ही स्थायी है (यह बात नोट करने वाली है कि दोनों तरह के बदलाव का क़ुरआन की दो लगातार आयतों से क्या सम्बंध है (3:26-27)। अरबी का शब्द *"क़रया"* यहाँ इस्तेमाल हुआ है जिसका मतलब है शहर, या ऐसी जगह जहां लोग स्थायी रूप से रहते हों, और क़ुरआन में इसे बहुवचन में *"क़ुरा"* पचास से अधिक बार उपयोग किया गया है। क़ुरआन सामाजिक व आर्थिक न्याय की तरफ़ इशारा करता है और दौलत मन्द के अनैतिक व ग़ैर ज़िम्मेदाराना बर्ताव की तरफ़ उंगली उठाता है जो खुद की तबाही और किसी समाज या आबादी के पतन का कारण बनता है (7:96; 16:112; 17:16)। किसी देश पर सैनिक हमला और क़ब्ज़ा बसी बसाई आबादी को मुसीबत में मुब्तिला कर देता है और भौतिक व सामाजिक लिहाज़ से प्रभावित करता है। (27:34)। शहरी आबादी के महत्व की वजह से अल्लाह तआला न्याय और नैतिकता के लिए अपनी रहनुमाई वहां भेजने की व्यवस्था करता है (6:92,131; 21:109; 25:15; 26:208; 58:59; 42:7; 43:23)।

कुकर्मी व्यक्तियों और समूहों को सज़ा देने का मामला अल्लाह ने आम तौर से कारक और नतीजों (Cause and Effect) के प्राकृतिक नियमों पर रख छोड़ा हे (देखें पहले ज़िक्र की गयी आयत 13:11 और उसकी व्याख्या)। क़ुरआन के मुताबिक़ कुछ विशेष लोगों को इस दुनिया में तुरन्त सज़ा देने का फैसला जैसा कि पिछली उम्मतों के साथ पेश आया, केवल इसलिए नहीं किया गया कि उन्होंने पैग़ाम को झुटलाया, बल्कि उनके कुकर्मों, ज़ुल्म और अन्याय व शोषण की वजह से किया गया (7:74-76, 80-82, 85-88; 11:59, 84-88, 91-92, 102, 117;

16:12; 18:59; 21:11; 28:59)। इसके अलावा यह कि इन कुकर्मियों ने जिन्हें सजा दी गयी अल्लाह के पैग़म्बरों को धमकाया, उन्हें क़त्ल किया और उन्हें व उनके मानने वालों को अपनी बस्तियों से निकाला (7:88; 11:91; 14:13; 16:12; 18:20; 19:46; 36:18; 44:20-21)। मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पैग़ाम के संदर्भ में क़ुरान स्पष्ट रूप से कहता है कि लोगों को प्राकृतिक नियम पर छोड़ा गया है: *"और अगर अल्लाह चाहता तो (और किसी तरह) इनसे बदला ले लेता लेकिन उसने चाहा कि तुम्हारी परीक्षा एक (को) दूसरे से (लड़वा कर) करे।"* (47:4)।

पिछली उम्मतों और सभ्यताओं की जो यादगारें और खण्डर बाक़ी बचे हैं वे किसी के लिए भी सीख लेने को पर्याप्त हैं लेकिन बहुत से लोग सतही नज़र से आगे बढ़ कर नहीं देखते और उनके उत्थान व पतन के कारणों पर ध्यान नहीं देते। दिल के लिए अरबी का शब्द दिमाग़ के साथ भावनात्मक क्रिया करने वाले स्थान के लिए बोला जाता है जो प्रेरणा, इरादे और निर्णय का केन्द्र है। जो लोग अल्लाह के पैग़ाम को रद करते हैं, उनके पास आंखें और कान तो होते हैं लेकिन वे इन्द्रियों से महसूस होने वाले तथ्यों के साथ अक़ल और भावनाओं का सम्बंध बनाने में नाकाम रहने वाले लोग होते हैं। अगर उनकी कल्पना शक्ति और इच्छा शक्ति काम करती तो अल्लाह के पैग़ाम तक उनकी पहुंच हो जाती और इतिहास में होने वाले सामाजिक बदलावों और पूर्वकाल की बची खुची यादगारों का वे नोटिस लेते। इस तरह की तुरन्त तबाही हालांकि अब नहीं होती लेकिन अल्लाह के बनाए गए प्राकृतिक नियम कुकर्मियों को उनके किए की सज़ा देने के मामले में अब भी बदले नहीं हैं और आख़िरकार उन्हें उसका अंजाम भुगतना ही होता है हालांकि ऐसा हो सकता है कि ज़ाहिर में किसी जवाबदेही के बग़ैर ही वे कुकर्मी दुनिया से चले जाएं।

जो चीज़ लोगों को समझना चाहिए वह यह कि समय चाहे वह हमारे हिसाब से एक दिन का हो, एक महीने का हो या एक साल का हो, अल्लाह की अनन्त और समय व स्थान से परे व्यवस्था की अपेक्षा कोई हैसियत नहीं रखता। लोग समय का हिसाब ज़मीन पर अपने वजूद के हिसाब से और ज़मीन व सूरज या चांद के बीच सम्बंध के हिसाब से गिनती करने के लिए लगाते हें, लेकिन अल्लाह के नज़दीक यह चीज़ें कोई महत्व नहीं रखतीं और दुनिया व उसकी समाप्ति के लिए अल्लाह ने जो नियम बनाए हैं और जो आदेश जारी किए हैं उनसे इन चीज़ो का कोई सम्बंध नहीं है। हमारा समय हमारे लिए महत्व रखता है, समय की बंदिश से आज़ाद अल्लाह के निज़ाम के लिए उसका महत्व नहीं है। उसका एक दिन हमारे 24 घण्टों के हिसाब से नहीं है कि ज़मीन सूरज के चारों ओर अपना एक चक्कर पूरा करने में इतना समय लेती है। अल्लाह का दिन तो हमारे हिसाब से एक हजार साल का या पचास हजार साल का भी हो सकता है (70:4)। और इसकी अवधि इस पर निर्भर है कि अल्लाह अपने एक दिन

(*"योमुल्लाह"*) में क्या करना चाहता है। हम यह बात जानते हैं कि एक लाइट इअर (प्रकाश वर्ष) यानि वह दूरी जिस तक प्रकाश अंतरिक्ष में एक साल में पहुंचता है 15878 अरब मील है, और यह नाप अंतरिक्ष विज्ञान में सितारों और कहकशाओं (आकाशगंगाओं) के बीच दूरी नापने के लिए इस्तेमाल होता है, जैसे हमारे सौर मण्डल और क़रीबी ग्रहों एलफ़ा, केन्टोरि और प्राक्सिमा केन्टोरि के बीच की दूरी, जोकि लगभग 4.3 लाइट इअर है। अगर समय का हिसाब प्रकाश की गति से लगाया जाए तो यह बहुत लम्बा समय है और इसकी गति बहुत तेज़ है, तो फिर अल्लाह का निर्धारित किया हुआ समय क्या है और कितना है?

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّ اُنْثٰى وَ جَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّ قَبَآىِٕلَ لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ۝

ऐ लोगों! हमने तुम को एक मर्द और एक औरत से पैदा किया है, और तुम्हारी क़ौमें और क़बीले बनाये ताकि एक दूसरे को पहचानो, अल्लाह के नज़दीक तुममें ज़्यादा इज़्ज़त वाला वो है जो सबसे ज़्यादा परहेज़गार (अल्लाही की नाफ़रमानी से बचने वाला) हो बेशक अल्लाह ख़ूब जानने वाला बा ख़बर है। (49:13)

यह आयत वैश्विक बहुलता की इस्लामी बुनियाद उपलब्ध कराती है, और यह बताती है कि इंसानों के बीच विविधता विश्व स्तर पर आपसी सहकारिता, सहयोग और एक दूसरे की कमियों का पूरा करने का माध्यम है न कि एक दूसरे को अलग थलग करने और विवाद पैदा करने के लिए है। विभिन्न ज़मानों में और विभिन्न स्थानों पर बसने वाले इंसान इंसानी अधिकार और इंसानी प्रतिष्ठा व सम्मान में समान हैं, और अल्लाह के नज़दीक सब एक हैं, चाहे उनकी शरीरिक और सांस्कृतिक विशेषताएं आपस में कितनी ही भिन्न हों। क़बीले, नस्लें और जातियां तथा भाषाएँ और संस्कृतियां (22:30) व्यवहारिक और वैज्ञानिक आवश्यकताओं के लिए वर्गीकरण का आधार बनती हें। लेकिन उनके कारण इंसान का मौलिक तत्व और विभिन्न व्यक्तियों या समूहों के अधिकार कभी समाप्त या कम नहीं होते न उनके बीच इन आधारों पर कोई रुकावट खड़ी होती है। तमाम दुनिया के लोगों को यह बात जान लेनी चाहिए, हां अलग अलग संस्क्रतिक और भौतिक वातावरण मे रहने वाले तमाम लोगों को नाकि कुछ ख़ास देशों को जो कि दुनिया के नक़शे पर दिखाई देते हैं, कि वे एक दूसरे के सकारात्मक गुणों से फ़ायदा उठाएं, और नकारात्मक बातों के ख़िलाफ़ एक दूसरे का सहयोग करें। यह है वास्तविक रूप से ज्ञान रखना और एक दूसरे को पहचानना जिससे वैश्विक स्तर पर आपसी सहयोग और एकता को बढ़ावा मिलता है।

# इंसानः एक वैश्विक जीव

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّ خَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَ بَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّ نِسَآءً ۚ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِىْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَ الْاَرْحَامَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ①

ऐ इन्सानों! अपने रब की नाफ़रमानी से बचो जिसने तुमको एक जानदार से पैदा किया, और उस जानदार से उसका जोड़ा बनाया, और उन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें फैला दीं, और अल्लाह से डरते रहा करो, जिसके नाम से तुम एक दूसरे से (अपने हक़) मांगा करते हो, और रिश्तेदारी का ध्यान रखो, बेशक अल्लाह तुम सब पर नज़र रखे हुए है। (4:1)

यह अल्लाह की तरफ़ से जो सभी जीवों का, पूरी सृष्टि का मालिक है, जो न्याय करने वाला और न्यायिक अस्तित्व है, सभी इंसानों - मर्दों व औरतों - के बीच समानता की एक घोषणा है इसके बावजूद कि सभी इंसान रंग व नस्ल में आपस में एक दूसरे से भिन्न हैं। इसके अलावा यह ऐलान है इंसानी समुदाय के वैश्विक होने का जो पूरे विश्व के सभी भागों में फैल गया है।

اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِىْٓ اَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ ؕ قَالُوْا كُنَّا مُسْتَضْعَفِيْنَ فِى الْاَرْضِ ؕ قَالُوْٓا اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا ؕ فَاُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ⑨⑦ اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَ النِّسَآءِ وَ الْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ حِيْلَةً وَّ لَا يَهْتَدُوْنَ سَبِيْلًا ⑨⑧ فَاُولٰٓئِكَ عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّعْفُوَ عَنْهُمْ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَفُوًّا غَفُوْرًا ⑨⑨ وَ مَنْ يُّهَاجِرْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يَجِدْ فِى الْاَرْضِ مُرٰغَمًا كَثِيْرًا وَّسَعَةً ؕ وَ مَنْ يَّخْرُجْ مِنْۢ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى اللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَ قَعَ اَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ⑩⓪

बेशक जब फ़रिश्ते उनकी जान निकालते हैं जो अपने ऊपर जुल्म करते थे, तो फ़रिश्ते उनसे पूछते हैं के तुम किस हाल में थे तो वो कहते हैं के हम देश में कमज़ोर थे, तो फ़रिश्ते कहते हैं कि क्या अल्लाह की ज़मीन बहुत विशाल ना थी कि तुम उसकी तरफ़ पलायन कर जाते। बस उन लोगों का ठिकाना जहन्नम है, और वो जाने के लिए बुरी जगह है। मगर जो कमज़ोर मर्द और औरतें और बच्चे इस क़ाबिल नहीं थे कि वो अपना कोई जुगाड़ कर सकते और ना रास्ता जानते थे। सो उनके लिये उम्मीद है कि अल्लाह माफ़ कर दे, और अल्लाह तो है ही बड़ा माफ़ करने वाला और बड़ा बख़्शने वाला। और जो अल्लाह के रास्ते में हिजरत (पलायन) करेगा तो वो ज़मीन पर जाने के लिए बहुत जगह और बहुत गुंजाइश पायेगा, और जो अपने घर से इस नीयत से चलेगा कि वो अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ हिज्रत करेगा फिर उसको मौत आ जाये तब भी उसका सवाब अल्लाह के ज़िम्मे वाजिब हो गया, और अल्लाह बड़ा बख़्शने

वाला और बड़ा रहम करने वाला है। (4:97-100)

उपरोक्त आयतें इस पर ख़ास तौर से ज़ोर देती हैं कि इंसान जिसे अल्लाह ने प्रतिष्ठा दी है और अपनी रहनुमाई से उसके सम्मान की सुरक्षा का बन्दोबस्त किया है, उसे अगर अपने देश में जुल्म व ज़्यादती का सामना हो और वहाँ वह अपने अधिकार प्राप्त न कर सकता हो तो उसे वतन छोड़ देना चाहिए। इंसान को न्याय की तलाश में दुनिया में जहां जा सकता हो जाना चाहिए ऐसी जगह जो पीड़ितों के लिए खुली हो, या फिर उसके अपने प्यारे वतन में ही उसके अधिकार और उसका सम्मान सुरक्षित हो। जो लोग अपनी इज़्ज़त और प्रतिषठा के लिए वतन से निकलने का मौक़ा रखते हों और फिर वतन में ही रह कर अपमान झेलते रहें तो यह उनकी ग़लती है, और अगर वे ऐसी जगह मरते हैं जहां अल्लाह के दिए गए इंसानी सम्मान व प्रतिष्ठा से वंचित थे तो फिर उसकी ज़िम्मेदारी उन्हध पर है क्योंकि इस अपमान व अनादर को स्वीकार करने का कोई बहाना उनके पास नहीं है। जो लोग निकलने की क्षमता नहीं रखते, तो अल्लाह उनकी स्थितियों से अवगत है, और वह इंसानों की कमज़ोरियों पर उन्हें मआफ़ कर देता है अगर यह कमज़ोरी कायरता का एक बहाना न हो।

وَ لَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيْۤ اٰدَمَ وَ حَمَلْنٰهُمْ فِي
الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ وَ رَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ
وَ فَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا
تَفْضِيْلًا ۟

और हमने बनी आदम को इज़्ज़त बख़्शी और उनको थल और जल में सवारी अता की, और पाकीज़ा रोज़ी इनायत की, और अपनी मख़्लूक़ात में से बोहतों पर उनको फ़ज़ीलत दी। (17:70)

यह आयत साफ़ तौर से कहती है कि तमाम इंसानों को उनके पैदा करने वाले ने बराबर का सम्मान दिया है और यह सम्मान व्यक्ति के अधिकारों और ज़िम्मेदारियों दोनों पर निर्भर है। इंसान को शरीरिक, अक़्ली और मनोवैज्ञानिक व नैतिक और अध्यात्मिक क्षमता के साथ पैदा किया गया है जिनकी बदौलत वह खुद को तरक़्क़ी देने और दुनिया को खुशहाल बनाने की योग्यता रखता है। चुनाँचे वह आदिकाल से ही जल व थल और हवा में एक जगह से दूसरी जगह जाने के योग्य रहा है और अब तो वह अंतरिक्ष में भी जाता है, और दुनिया की तमाम अच्छी चीज़ों से वह रोज़ी के साधन जुटा सकता है जो अल्लाह ने इंसान की सभी शक्तियों को बनाए रखने तथा विक्सित करने के लिए पूरी दुनिया में उपलब्ध कराई हैं, और यही चीज़ इंसान को दूसरे सभी जीवों से ऊपर उठाती है। इस तरह इंसान एक वैश्विक व सार्वभौमिक जीव है और पूरे विश्व में आवागमन के किसी भी साधन से इधर से उधर जाना आना अल्लाह

की उन नेअमतों में से एक नेअमत है जिनका आदर और रक्षा उन तमाम लोगों को करना चाहिए जो इंसान की प्रतिष्ठा और वैश्वीकरण में विश्वास रखते हैं।

وَ مِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ اخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَ اَلْوَانِكُمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ﴿۲۲﴾

और उसी की निशानियों में से है आसमानों और ज़मीन का पैदा करना, और तुम्हारी ज़बानों और रंगों का जुदा जुदा होना, बेशक इसमें निशानियां हैं जानने वालों के लिये। (30:22)

यहाँ सभी इंसानों के बीच समानता पर एक बार फिर ज़ोर दिया गया है, चाहे उनमें शरीरिक, भाषाई और सांस्कृतिक लिहाज से कितना भी अन्तर हो। वैश्विक विविधता और बहुलता एक इंसानी तथ्य है और अल्लाह का निर्धारित किया गया भाग्य है और यह उस असिल मालिक की निशानियों और करिश्मों में से है जिसे उन लोगों को मानना चाहिए जो प्राकृति के तथ्यों को समझते हैं और अपना जीवन उसके अनुसार चलाना चाहिए।

وَ مِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ؕ وَ هُوَ عَلٰى جَمْعِهِمْ اِذَا يَشَآءُ قَدِيْرٌ ﴿۲۹﴾

और उसी की निशानियों में से है आसमानों और ज़मीन का पैदा करना, और उन जानवरों का पैदा करना जो उसने आसमानों और ज़मीन में फ़ैला दिये हैं, और वो जब चाहे उन सब को जमा करने की क्षमता रखता है। (42:29)

यह आयतें क्या फ़ैसले के दिन इंसानों और ज़मीन पर बसने वाले अन्य सभी जीवों और आसमानों व अंतरिक्ष में रहने वाले जीवों के एक जगह जमा होने का इशारा करती हैं या इनसे मुराद इस जीवन में ही ज़मीन के सभी जीवों के किसी सम्भावित सम्मिलन से है? अगर इससे अभिप्राय यही दूसरी बात है तो यह अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि इंसान की उड़ान एक न एक दिन ग्रहों और नक्षत्रों तक पहुंच जाएगी। अल्लाह ही बहतर जानता है।

اَللّٰهُ الَّذِيْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ فِيْهِ بِاَمْرِهٖ وَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مِّنْهُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۱۳﴾

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिये दरया को नियंत्रित कर दिया ताकि उसके हुक्म से उसमें कश्तियां चलें और ताकि तुम उसको फ़ज़्ल (रोज़ी) तलाश करो, और ताकि तुम शक्र करो। और उसी ने वो सब जो कुछ आसमानों आर ज़मीन में है अपनी तरफ़ से तुम्हारे काम में लगा रखा है, इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिये जो ग़ौर करते हैं। (42:12-13)

इन आयतों में से पहली आयत समुद्र का ज़िक्र करती है जिसे इंसान के आधीन कर दिया गया है और जहाज़ों से आवागमन का साधन बना दिया गया है, और दूसरी आयत उन चीज़ों की तरफ़ इशारा करती है जिन्हें आसमानों और जमीनों में आम तौर से इंसानों के लिए ठहरा दिया गया है। अगर यह आयत पहली आयत की तरह आवागमन का हवाला भी देती है तो यह हवा और अंतरिक्ष में इंसान के जाने का पहला इशारा है। इंसान पर अल्लाह का कितना अहसान है कि उसने इंसान को यात्रा करने और आने जाने की इन योग्यताओं से धनी किया है।

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّ اُنْثٰى وَ جَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّ قَبَآىِٕلَ لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ۝

ऐ लोगों! हमने तुम को एक मर्द और एक औरत से पैदा किया है, और तुम्हारी क़ौमें और क़बीले बनाये ताकि एक दूसरे को पहचानो, अल्लाह के नज़दीक तुम में ज़्यादा इज़्ज़त वाला वो है जो सबसे ज़्यादा परहेज़गार (अल्लाह की नाफ़रमानी से बचने वाला) हो बेशक अल्लाह ख़ूब जानने वाला बा ख़बर है। (49:13)

उपरोक्त आयतें इंसान की वैश्विकता और इंसानी दुनिया की बहुलता का ज़िक्र करती हें। अलग अलग नस्लों के लोगं, उनके क़बीले और ब्रादरियां और उनकी अलग अलग शरीरिक, भाषाई और सांस्कृतिक विशेषताएं एक दूसरे को पहचानने और एक दूसरे के साथ सहयोग को बढ़ावा देने का माध्यम हें ताकि लोग इस बहुतायत और बहुलता से फ़ायदा उठाएं। लेकिन इंसानों के बीच यह वैश्विक आपसी सहयोग तब तक नहीं चल सकता जब तक कि तमाम दुनिया के इंसानों को व्यक्तिगत और वर्गीय रूप से क़ानूनी और व्यवहारिक स्तर पर बराबरी न दी जाए।

# इंसानी पहुंच से परे जीव जन्तु

## फ़रिश्ते, जिन्न और शैतान

الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۙ

3. जो यक़ीन रखते हैं छुपी हुई चीज़ों का और बनाए रखते हैं नमाज़ को और जो कुछ हमने उन्हें देखा है उसमें से ख़र्च करते रहते हैं। (2:3)

क़ुरआन में अल्लाह की ठोस रचनाओं जैसे सृष्टि और उसकी महान आकाशगंगाएं, ग्रह व नक्षत्र और विभिन्न प्रकार के जीव जन्तु जैसे तरह तरह की फफूंदी, कीटाणु, पौधे, कीड़े मकोड़े, पशु और जलीय जन्तु, और इन सब से ऊपर इंसान और उसकी बहु आयामी और बहुमूल्य योग्यताओं, पाश्विक शक्ति, बौद्धिक शक्ति और मानसिक व नैतिक तथा अध्यात्मिक शक्ति का ज़िक्र हे। इसके अलावा, क़ुरआन अल्लाह की ऐसी रचनाओं का भी ज़िक्र करता है जो "इंसानी इन्द्रियों के दायरे से परे हैं", और जैसा कि मुहम्मद असद ने उपरोक्त आयत की तफ़सीर में लिखा है, अल्लाह की रचनाओं के इस भाग को "इसी वजह से साइंस के आधार पर न तो साबित किया जा सकता है और न रद किया जा सकता है जिस तरह अल्लाह के अस्तित्व, सृष्टि के उद्देश्य, मरने के बाद का जीवन, रूहानी शक्तियों की मौजूदगी, और उनकी परस्पर सहकारिता वग़ैरह को वैज्ञानिक विश्लेषण के द्वारा साबित या रद नहीं किया जा सकता। केवल वही व्यक्ति अल्लाह पर और इस बात पर कि जीवन का एक उद्देश्य और अर्थ है ईमान ला सकता है, जो इस बात को मानता हो कि सृष्टि का पूरा सत्य हमारे अवलोकन और हमारे वातावरण से परे है।" (The messsage of the Quran, Note 3, Verse 2: 3)। अल्लाह के अस्तित्व और मरने के बाद आख़िरत के अनन्त जीवन का यक़ीन तर्क से, और इस दोषरहित सृष्टि और इसमें सक्रिय नियमों और इसकी व्यवस्था पर बौद्धिक चिंतन से ही प्राप्त हो सकता है। लेकिन अल्लाह तआला की रूहानी (अभौतिक) रचनाओं जैसे फ़रिश्ते, जिन्न और शैतान आदि का अस्तित्व और इंसानों से उनका सम्बंध इंसानी स्पर्श के दायरे से और इंसानी कल्पना की सीमा से परे है। इन रचनाओं का हवाला क़ुरआन व *सुन्नत* में मौजूद है जो कि अल्लाह की वहिय् के स्रोत हैं, और इस लिए केवल कल्पना, धारणा या वहम की इसमें कोई सम्भावना नहीं है। क़ुरआन में इस सम्बंध में जो जानकारियां दी गयी हैं वे बुनियादी है, और इंसानी चिंतन को अपील कर सकती हैं, इसके बावजूद कि उन्हें ठोस रूप में नहीं देखा जा सकता या स्पर्श से महसूस नहीं किया जा सकता।

## (अ) फ़रिशते

### अल्लाह की इबादत करते हैं और उसके समीप हैं, लेकिन उसके साझीदार नहीं हैं।

وَ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّیْ جَاعِلٌ
فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَةً ؕ قَالُوْۤا اَتَجْعَلُ فِیْهَا
مَنْ یُّفْسِدُ فِیْهَا وَ یَسْفِكُ الدِّمَآءَ ۚ وَ
نَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَ نُقَدِّسُ لَكَ ؕ
قَالَ اِنِّیْۤ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝۳۰ وَ
عَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ
عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ ۙ فَقَالَ اَنْۢبِـُٔوْنِیْ بِاَسْمَآءِ
هٰۤؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ۝۳۱ قَالُوْا
سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَاۤ اِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ؕ اِنَّكَ
اَنْتَ الْعَلِیْمُ الْحَكِیْمُ ۝۳۲ قَالَ یٰۤاٰدَمُ
اَنْۢبِئْهُمْ بِاَسْمَآئِهِمْ ۚ فَلَمَّاۤ اَنْۢبَاَهُمْ
بِاَسْمَآئِهِمْ ۙ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّیْۤ
اَعْلَمُ غَیْبَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۙ وَ اَعْلَمُ
مَا تُبْدُوْنَ وَ مَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ۝۳۳ وَ اِذْ
قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا
اِلَّاۤ اِبْلِیْسَ ؕ اَبٰی وَ اسْتَكْبَرَ ۫ وَ كَانَ مِنَ
الْكٰفِرِیْنَ ۝۳۴

और जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा, मैं ज़मीन में अपना ख़लीफ़ा बनाऊंगा। उन्होंने कहा क्या आप उसको ख़लीफ़ा बनाएंगे जो ज़मीन में फ़साद करेगा, और ख़ून ख़राबा करेगा, और हम आपकी पाकी बयान करते हैं। आपकी हम्द के साथ और आपको बे-ऐब जानते हैं, अल्लाह तआला ने फ़रमाया, यक़ीनन मैं जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। और अल्लाह ने आदम को कुल चीज़ों के नाम सिखा दिये, फिर उनको फ़रिश्तों के सामने पेश किया, फिर कहा अब तुम बताओ मुझ को इन चीज़ों के नाम अगर तुम सच्चो हो। तो वो बोले, आप पाक हैं, हम तो कुछ नहीं जानते, बस जो आपने हमें सिखा दिया है, बेशक आप ही ख़ूब जानने वाले हिकमत वाले है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, ऐ आदम तुम बता दो! इन चीज़ों के नाम, फिर जब आदम ने उन चीज़ों के नाम बता दिये तो अल्लाह ने फ़रमाया, कि क्या मैंने तुम से कहा न था के मैं आसमानों और ज़मीन की छुपी चीज़ों को जानता हूँ और जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो वो सब जानता हूँ। और जब हमने फ़रिश्तों से कहा के तुम आदम के सामने सज्दा करो, तो वो सब सज्दे में गिर पड़े मगर इबलीस ने ना किया, और वो काफ़िरों में से हो गया। (2:30-34)

(और देखें 7:11; 15:28-31; 17:61; 18:50; 20:116)

مَا كَانَ لِیَ مِنْ عِلْمٍۭ بِالْمَلَاِ الْاَعْلٰۤی اِذْ
یَخْتَصِمُوْنَ ۝۶۹ اِنْ یُّوْحٰۤی اِلَیَّ اِلَّاۤ اَنَّمَاۤ
اَنَا نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ۝۷۰ اِذْ قَالَ رَبُّكَ
لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّیْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ طِیْنٍ ۝۷۱

मुझको ऊपर की दुनिया की कोई ख़बर ना थी, जबकि वो तकरार कर रहे थे। मेरी तरफ़ तो इसलिये वही की जाती है के मैं साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ। याद कीजिए जब आपके रब ने फ़रिश्तों से कहा के मैं मिटटी से एक इन्सान पैदा करने वाला हूँ। तो जब मैं उसको ठीक ठीक

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ﴿٧٢﴾ فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ﴿٧٣﴾ إِلَّا إِبْلِيسَ اسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿٧٤﴾

बना लूँ और उसमें अपनी रूह फूंक दूं तो तुम उसके आगे सज्दा में गिर पड़ना। तो तमाम फ़रिश्तों ने सज्दा किया। सिवाए शैतान ने के उसने तकब्बुर किया और काफ़िरों में से हो गया। (38:69-74)

उपरोक्त आयतें सृष्टि के जनक अल्लाह तआला और उसकी रचना फ़रिश्तो के बीच सम्बंध को बताती हैं। यह जीव हालांकि एक विशेष वर्ग है जो हमैशा अल्लाह के आस पास रहते है, लेकिन वे ख़ुद अपने बल पर किसी चीज़ का ज्ञान प्राप्त करने की योग्यता नहीं रखते, और केवल उतना ही जानते हैं जितना अल्लाह उन्हें बताता है या कोई आदेश देकर उनमें से किसी को कुछ जानने का मौक़ा देता है। अलबत्ता, यह मालूम होता है कि कुछ ख़ास स्थितियों में अपन मन की बात को ज़ाहिर करने (अभिव्यक्ति) की योग्यता वो रखते हैं, जैसा कि उन्होंने आदम की पैदाइश के समय आदम और उनकी संतान को ज़मीन पर ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) बनाए जाने की अल्लाह की योजना के बारे में सवाल किया (2:30; 38:69), *"हालांकि वे हमैशा अल्लाह की वन्दना के साथ उसका गुणगान करते रहते हैं।"*

अल्लाह और फरिश्तों के बीच बातचीत किस तरह होती है, यह हम नहीं जानते, जिस तरह हम यह नहीं जान सकते या इसकी कल्पना नहीं कर सकते कि अल्लाह ने अपने पैग़म्बरों को किस तरह अपना पैग़ाम दिया, उन सभी पैग़म्बरों को जिनकी भाषाएँ अलग अलग थीं (जैसे मूसा अलैहिस्सलाम से बात करना - 4:164; 7:143-144; 20:11-36; 27:8-11; 28:29-35; या मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मेराज के मौक़े पर बात करना - 42:51)। फ़रिश्तों को सम्भवता इंसान की तरह बुद्धि और बोलने की शक्ति नहीं दी गयी है इसलिए वे उन अनेक चीज़ों के नाम बताने की क्षमता नहीं रखते थे जो उनके सामने प्रस्तुत की गयी थीं, लेकिन आदम यानि इंसान को अल्लाह ने यह क्षमता दी है। इसके अतिरिक्त, फ़रिश्ते अपनी प्रकृति और स्वभाव के लिहाज़ से अल्लाह के आज्ञापालन के लिए बाध्य हैं (6:66), जबकि इंसान को मर्ज़ी और चयन की आज़ादी दी गयी है, और इसी लिए फरिशते इस बात से चिंतित थे कि इंसान की यह योग्यता जब क्रियान्वन में आएगी तो ख़राबी और बर्बादी का कारण बनेगी (2:30)।

इंसान को अल्लाह की तरफ़ से दी गयी इस प्रतिष्ठा के लिए ही अल्लाह की तरफ़ से फरिश्तों को जो कि उसके बहुत क़रीब में ऊंचे मुक़ाम पर रहते हैं, आदम के सामने झुक जाने का हुक्म दिया गया था ताकि अल्लाह की क़ुदरत को वे स्वीकार करें और उसकी मर्ज़ी के आगे ख़ुद को झुकाए रखने का इज़हार करें।

وَلَا يَأْمُرَكُمْ أَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ وَ
النَّبِيّٖنَ أَرْبَابًا ؕ أَيَأْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ
بَعْدَ إِذْ أَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٨٠﴾

और ना तुम्हें वह ये हुक्म देगा कि फ़रिश्तों को नबियों को रब बना लो, क्या वो तुम को कुफ़्र का हुक्म देगा जब के तुम मुसलमान हो चुके? (3:80)

لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ أَنْ يَّكُوْنَ
عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ؕ وَ
مَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيَسْتَكْبِرْ
فَسَيَحْشُرُهُمْ إِلَيْهِ جَمِيْعًا ﴿١٧٢﴾

मसीह (अ.स.) हरगिज़ भी कोई आर नहीं करेंगे इससे के वो अल्लाह के बन्दे हैं, और ना अल्लाह के क़रीब रहने वाले फ़रिश्ते, और जो अल्लाह की बन्दगी से आर और तकब्बुर करेगा, तो अल्लाह सबको अपने पास जमा करेगा। (4:172)

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ يَقُوْلُ
لِلْمَلٰٓئِكَةِ أَهٰٓؤُلَآءِ إِيَّاكُمْ كَانُوْا
يَعْبُدُوْنَ ﴿٤٠﴾ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ أَنْتَ وَلِيُّنَا
مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ
الْجِنَّ ۚ أَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾

और जिस दिन अल्लाह सबको जमा करेगा, फिर फ़रिश्तों से कहेगा के क्या ये लोग तुम्हारी पूजा करते थे। 41. फ़रिश्ते कहेंगे, आप पाक है, आप हमारे सरंक्षक हैं ना कि ये, बल्के ये तो जिन्नात की पूजा किया करते थे, उनमें से अक्सर जिन्नात ही को मानते थे। (34:40:41)

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ مِنْ دَآبَّةٍ وَّالْمَلٰٓئِكَةُ وَهُمْ لَا
يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٤٩﴾ يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ
فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ﴿٥٠﴾

और तमाम के तमाम जानदार जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं और फ़रिश्ते भी ये सब अल्लाह के आगे सज्दा करते हैं और वो घमण्ड नहीं करते। वो सब अपने रब से डरते हैं जो उनके ऊपर हैं, और जो उनको आदेश होता है उस पर अमल करते हैं। (16:49-50)

أَفَأَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِيْنَ وَاتَّخَذَ
مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ إِنَاثًا ؕ إِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ
قَوْلًا عَظِيْمًا ﴿٤٠﴾

(मुशरिको!) क्या तुम्हारे रब ने तुमको बेटों के साथ ख़ास किया, और ख़ुद फ़रिश्तों को बेटियां बनाया है, बेशक तुम बहुत बड़ी बात कहते हो। (17:40)

وَجَعَلُوا الْمَلٰٓئِكَةَ الَّذِيْنَ هُمْ عِبٰدُ
الرَّحْمٰنِ إِنَاثًا ؕ أَشَهِدُوْا خَلْقَهُمْ ؕ
سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْئَلُوْنَ ﴿١٩﴾
وَقَالُوْا لَوْ شَآءَ الرَّحْمٰنُ مَا عَبَدْنٰهُمْ ؕ

और उन्होंने फ़रिश्तों को जो अल्लाह के बन्दे हैं, औरत क़रार दे रखा है, क्या वो उनकी पैदाईश के वक़्त मौजूद थे, उनकी ये गवाही लिख ली जायेगी, और उनसे बाज़पुर्स की जायेगी। और वो कहते हैं के अगर अल्लाह चाहता तो हम उनको ना पूजते, उनको इसका कुछ इल्म नहीं ये

तो केवल अटकल से बातें करते हैं। (43:19-26)

مَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ إِنْ هُمْ
إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿٢٠﴾

और आसमानों में बहुत से फ़रिश्ते हैं जिनकी सिफ़ारिश कोई भी फ़ायदा नहीं देती, मगर बाद इसके के अल्लाह जिसके लिये चाहे इजाज़त दे, और सिफ़ारिश पसंद करे। जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते, वो फ़रिश्तों को स्त्रियों के नाम देते हैं। हालांकि उनको उसका कोई इल्म नहीं है, ये महज़ अपने अनुमान पर चलते हैं, और अंदाज़े लगाना, सच्चाई के मुक़ाबले में कुछ काम नहीं आया करता। (53:26-28)

وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِي السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِي
شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا إِلَّا مِنْ بَعْدِ أَنْ
يَّأْذَنَ اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰى ﴿٢٦﴾ إِنَّ
الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ لَيُسَمُّونَ
الْمَلٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ الْأُنْثٰى ﴿٢٧﴾ وَمَا لَهُمْ
بِهٖ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ يَّتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ ۚ
وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ﴿٢٨﴾

इसके बावजूद कि फ़रिश्तों को अल्लाह का संगत प्राप्त है, यह बात ज़हन में रहना चाहिए कि वे भी केवल अल्लाह के जन्तु हैं और उसकी इबादत में लगे हुए हें। उनमें से किसी के लिए भी देवता होने की कल्पना नहीं की जा सकती, जिनमें जिब्रईल अलैहिस्सलाम भी शामिल हैं जो *"रूहुल-क़ुदुस"* (पाक रूह) हैं (2:87, 253; 5:110; 16:2; 19:17; 26:193; 40:15; 42:52; 58:22; 70:4; 78:38; 97:4)। फ़रिश्ते अल्लाह की बेटियाँ नहीं हैं जैसा कि अज्ञान काल के अरब मूर्तिपूजक कहा करते थे, इसी तरह ईसा भी अल्लाह के बेटे नहीं हैं जैसा कि ईसाई मानते हैं। इस्लामी अक़ीदे के मुताबिक़ यह सबके सब अल्लाह के बन्दे और इबादत करने वाले हैं, ये हस्तियां एक क्षण के लिए भी इससे अधिक कोई हैसियत नहीं चाहतीं। (4:172)।

सत्य को झुटलाने वालों के ख़िलाफ़ यह तर्क देना कि वे अल्लाह के लिए क्यों यह बात मानते हैं कि अल्लाह बेटियों का बाप है जबकि वे अपने लिए बेटियों का बाप होना अपमान की बात समझते हैं और बेटों का बाप होने को पसन्द करते हैं, केवल विरोधियों की बातें उनके मुंह पर मारने के लिए है ताकि उनके चरित्र का दोग़लापन तर्क के रूप में जताया जाए, इसका मतलब यह हरगिज़ नहीं है कि इस बात को स्वीकार किया जा रहा है कि पुरूषों का दर्जा स्त्रियों से ऊंचा है (3:159; 9:71)। इस तरह किसी भी फ़रिश्ते के बारे में ख़ुदाई शक्ति की कल्पना करना या उसका दावा करना, या *रूहुलक़ुदुस* को या मरियम के पुत्र मसीह को ख़ुदाई में शरीक मानना इस्लामी अक़ीदे में हराम (वर्जित) है। फरिशते आख़िरत में फ़ैसले के दिन कोई सिफ़ारिश भी नहीं कर सकते, सिवाय इसके कि अल्लाह किसी को सिफ़ारिश का मौक़ा दे, और सिफ़ारिश करने वाले भी उसी के लिए सिफ़ारिश करेंगे और केवल उसी बात की सिफ़ारिश

करेंगे जिसे अल्लाह पसन्द करे।

## अल्लाह का पैग़ाम इंसानों को पहुंचाने के लिए ज़मीन पर फ़रिशतों को भेजने के ख़िलाफ़ तर्क

وَ قَالُوْا لَوْ لَاۤ اُنْزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ؕ وَ لَوْ اَنْزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِيَ الْاَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُوْنَ ۝ وَ لَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَّ لَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَّا يَلْبِسُوْنَ ۝

और कहते हैं कि इस रसूल पर फ़रिश्ता क्यों नाज़िल ना हुआ, अगर हम फ़रिश्ता नाज़िल करते तो काम ही ख़त्म हो जाता, फिर तो उनको मोहलत ही ना दी जाती। अगर हम उसको फ़रिश्ता बनाते तो उसको मर्द के रूप में ही आदमी में भेजते, और जो शक अब उनको हो रहा है, वही शक फिर भी उनको होता।

और देखें 15:7-8; 17:92; 41:14; 43:53-60

وَ مَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْۤا اِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰۤى اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُوْلًا ۝ قُلْ لَّوْ كَانَ فِي الْاَرْضِ مَلٰٓئِكَةٌ يَّمْشُوْنَ مُطْمَئِنِّيْنَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَلَكًا رَّسُوْلًا ۝

और उनके पास जब हिदायत आ गई तो उनको ईमान लाने से कोई चीज़ रुकावट नहीं होती सिवाय इसके के उन्होंने कहा के क्या अल्लाह ने इन्सान को रसूल बनाकर भेजा। आप कह दें के अगर ज़मीन में फरिश्ते होते के इसमें चलते फ़िरते, बस्ते तो हम उन पर आसमान से फ़रिश्ते को रसूल बना कर भेजते। (17:94-95)

قُلْ لَّاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَ لَاۤ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَ لَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّيْ مَلَكٌ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰۤى اِلَيَّ ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَ الْبَصِيْرُ ؕ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ۝

आप फ़रमा दीजिये, मैं तुम से ये नहीं कहता हूँ के मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं और ना मैं ये कहता हूँ के मैं ग़ैब की बातें जानता हूं, और ना मैं ये कहता हूँ के मैं फ़रिश्ता हूं, मैं तो सिर्फ़ उसका अनुपालन करता हूं जो मुझे वही किया जाता है, आप ये भी फ़रमा दीजिये के एक अंधा है और दूसरा आँखों वाला है, तो क्या दोनों बराबर हैं, तो फिर तुम क्यों नहीं ग़ौर करते (और क्यों नहीं सोचते) (6:50)

और देखें 11:12, 31

وَ لَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَاۤ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَ كَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى وَ حَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ

और अगर हम उनके पास फ़रिश्ते भी भेज देते, और उनसे मुर्दे बात भी कर लेते, और हम कुल मौजूदात भी उनके सामने जमा कर देते तो भी ये लोग ईमान ना लाते, मगर ये

شَیۡءٍ قُبُلًا مَّا کَانُوۡا لِیُؤۡمِنُوۡۤا اِلَّاۤ اَنۡ یَّشَآءَ اللّٰہُ وَ لٰکِنَّ اَکۡثَرَہُمۡ یَجۡہَلُوۡنَ ﴿۱۱۱﴾

के अल्लाह ही चाहता तो दूसरी बात है, लेकिन उनमें अक्सर जहालत ही की बातें करते हैं। (6:111)

فَقَالَ الۡمَلَؤُا الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا مِنۡ قَوۡمِہٖ مَا ہٰذَاۤ اِلَّا بَشَرٌ مِّثۡلُکُمۡ ۙ یُرِیۡدُ اَنۡ یَّتَفَضَّلَ عَلَیۡکُمۡ ؕ وَ لَوۡ شَآءَ اللّٰہُ لَاَنۡزَلَ مَلٰٓئِکَۃً ۚۖ مَّا سَمِعۡنَا بِہٰذَا فِیۡۤ اٰبَآئِنَا الۡاَوَّلِیۡنَ ﴿۲۴﴾

पस उनकी क़ौम के काफिर सरदारों ने कहा, ये तो तुम ही जैसा आदमी है, तुम पर बड़ाई हासिल करना चाहता है, और अगर चाहता तो फ़रिश्ते उतार देता, हमने बाप दादों से तो ये बात कभी नहीं सुनी। (23:24)

وَ قَالُوۡا مَالِ ہٰذَا الرَّسُوۡلِ یَاۡکُلُ الطَّعَامَ وَ یَمۡشِیۡ فِی الۡاَسۡوَاقِ ؕ لَوۡ لَاۤ اُنۡزِلَ اِلَیۡہِ مَلَکٌ فَیَکُوۡنَ مَعَہٗ نَذِیۡرًا ۙ﴿۷﴾

और ये लोग कहते हैं ये कैसा रसूल है, खाना खाता है, बाज़ारों में चलता फ़िरता है, इसके पास कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं आता के इसके साथ वो भी डराता। (25:7)

وَ مَاۤ اَرۡسَلۡنَا قَبۡلَکَ مِنَ الۡمُرۡسَلِیۡنَ اِلَّاۤ اِنَّہُمۡ لَیَاۡکُلُوۡنَ الطَّعَامَ وَ یَمۡشُوۡنَ فِی الۡاَسۡوَاقِ ؕ وَ جَعَلۡنَا بَعۡضَکُمۡ لِبَعۡضٍ فِتۡنَۃً ؕ اَتَصۡبِرُوۡنَ ۚ وَ کَانَ رَبُّکَ بَصِیۡرًا ﴿۲۰﴾ وَ قَالَ الَّذِیۡنَ لَا یَرۡجُوۡنَ لِقَآءَنَا لَوۡ لَاۤ اُنۡزِلَ عَلَیۡنَا الۡمَلٰٓئِکَۃُ اَوۡ نَرٰی رَبَّنَا ؕ لَقَدِ اسۡتَکۡبَرُوۡا فِیۡۤ اَنۡفُسِہِمۡ وَ عَتَوۡ عُتُوًّا کَبِیۡرًا ﴿۲۱﴾ یَوۡمَ یَرَوۡنَ الۡمَلٰٓئِکَۃَ لَا بُشۡرٰی یَوۡمَئِذٍ لِّلۡمُجۡرِمِیۡنَ وَ یَقُوۡلُوۡنَ حِجۡرًا مَّحۡجُوۡرًا ﴿۲۲﴾

और हमने आप से पहले जितने रसूल भेजे थे वो सब खाते थे, और बाज़ारों में चलते फिरते थे, और हमने तुम में एक को दूसरे के लिये आज़माईश बनाया है, क्या तुम सब्र करोगे, और आपका रब ख़ूब देखने वाला है। और जो लोग हमसे मिलने की उम्मीद नहीं रखते, कहते हैं के हम पर फ़रिश्ते क्यों नाज़िल नहीं किये गए, या हम (आँख से) अपने रब को देख लें, ये अपने ख़्याल में अपने आप को बहुत बड़ा समझते हैं, और ये बहुत ही बड़ी सरकशी है। जिस दिन ये फ़रिश्तों को देखेंगे उस दिन गुनाहगारों के लिये कोई ख़ुशी नहीं होगी और कहेंगे के पनाह है पनाह है। (25:20-22)

ऐसा सोचना ग़लत होगा कि लोगों को अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाने वाली हस्ती अमर हो और इंसानी प्रकृति से परे हो। लेकिन विरोधियों की तरफ़ से यह कोशिश होती है कि अल्लाह के पैग़म्बर की हस्ती को चुनौती दी जाए और लोगों के बीच उसका महत्व कम करने का प्रयास किया जाए। ऐसे विरोधियों ने विभिन्न युगों में यह कुतर्क किए हैं कि अल्लाह का संदेशवाहक तो फ़रिश्ता होना चाहिए, या कम से कम संदेश पहुंचाने में मददगार बन कर साथ साथ हो, या किसी भी तरह से पैग़म्बर के साथ दिखाई देने वाला उसका साथी हो। इन कुतर्कों के जवाब

में क़ुरआन साधारण तरीक़े से लोगों का ध्यान प्राकृतिक नियमों की तरफ़ दिलाता है, और इस संदर्भ में यह कहता है कि फ़रिश्तों का ठिकाना ज़मीन पर नहीं है, और उनका प्राकृतिक रूप इंसानी वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाने के लिए लोगों के साथ बातचीत करने, भाषा और कर्म व क्रिया से उनको संदेश देने की ज़रूरत होती है। अगर अल्लाह का संदेशवाहक इंसानों से भिन्न प्रकृति रखने वाला होता तो वह इंसानों के साथ यह मामला कैसे करता। और यह कि अगर अल्लाह का संदेश पहुंचाने के लिए फ़रिश्ते को ही भेजा जाता तो क्या यह फरिशता इंसानों को सही ढंग से समझाने के लिए उनके पास खुद इंसान बन कर न आता, और इस तरह के कुतर्क के साथ फ़रिश्ता अगर इंसान बन कर आता तो उसके साथ भी क्या फिर यही मामला नहीं किया जाता। यह लोग जो दूसरों को इन बातों से भ्रमित करने की कोशिश कर रहे हैं क्या सच्चाई को झुठलाने वाले नहीं हैं और क्या अपने कुतर्कों से स्वयं को ही भ्रमित नहीं कर रहे हैं? इसी तरह, खुद अल्लाह के पैग़म्बर ने भी पूरा ज़ोर देकर यह बात कही कि वह खुद भी इंसान हैं, उनके पास अल्लाह का पैग़ाम आता है, वह फ़रिश्ता नहीं हैं। इस तरह इंसानों के समझाने और अल्लाह का पैग़ाम उन्हें पहुंचाने के लिए फ़रिश्तों को भेजे जाने की बातों के रद में क़ुरआन बार बार सार्थक तर्क देता है।

## फ़रिश्तों की कुछ विशेषताएं

فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَ قَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ۝

फिर शैतान ने उन दोनों के दिल में वसवसा डाला, ताकि उनके पर्दे का बदन दोनों के सामने ज़ाहिर कर दे जो एक दूसरे से पोशीदा था, और कहने लगा के तुम्हारे रब ने तुम दोनों को उस पेड़ से मना नहीं किया था मगर महेज़ इसलिए के तुम कहीं फ़रिश्ते बन जाओ या कहीं हमेशा ज़िन्दा रहने वालों में हो जाओ। (7:20)

उपरोक्त आयत में शैतान पहले इंसानी जोड़े को यह जताने की कोशिश करता है कि फ़रिश्तों की प्रकृति अपने अमर होने के आधार पर इंसानी प्रकृति से बुलन्द है। अगर उस समय उन (आदम व हव्वा) के ज़हन में यह बात रही होती कि अल्लाह के हुक्म पर फ़रिश्ते उनके आगे दण्डवत हो चुके हैं और इसी से यह बात साबित है कि शैतान का दावा झूठा है और सच्चाई इसके विपरीत है, तब शैतान उन्हें बहकाने में असफ़ल हो जाता। लेकिन इंसान को इस स्वभाव के साथ पैदा किया गया है कि वह बरतरी और अमर होने की जिज्ञासा में रहता है, हालांकि यह केवल एक धोखा है, और इसी कमज़ोरी से शैतान ने फ़ायदा उठायाः "और

हमने पहले आदम से प्रण लिया था मगर वह (उसे) भूल गए और हमने उनमें संयम व सहनशीलता न देखी'' (20:115)।

इस आयत से यह बात भी स्पष्ट होती है कि इंसान को फ़रिश्ता बनने के लिए पैदा नहीं किया गया है। इंसान के भौतिक और मानसिक विकास को नज़रअंदाज़ करके केवल उसकी आत्मा को बढ़ावा देने की कोशिश, या स्वयं को मुस्तक़िल तौर से आम इंसानों से अलग थलग करके एक कोने में बैठ जाना इंसानी स्वभाव के भी विपरीत है और इस्लाम की उदारवादी शिक्षाओं के भी विपरीत है। इस प्रकार के रवैये से इंसान टूट फूट जाएगा लेकिन वह फ़रिश्ता किसी तरह नहीं बन सकता।

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ وَ اَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَاً وَّ اٰتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّ قَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَاَيْنَهٗۤ اَكْبَرْنَهٗ وَ قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ وَ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ ۝

जब उस औरत ने उनकी मक्कारी सुनी तो उनके पास दावत का पैग़ाम भेजा, और उनके लिये एक बैठक सजाई और (फल तराशने के लिये) हर एक को एक एक छुरी दी, और यूसुफ़ से कहा के इनके सामने बाहर आओ, जब औरतों ने उनको देखा तो हैरान रह गयीं और (फ़ल काटते काटते) अपने हाथ काट लिये, और (बेसाख़्ता) कहने लगीं अल्लाह की शान ये तो आदमी नहीं है ये तो कोई करीम फ़रिश्ता है। (12:31)

इस आयत से यह इशारा मिलता है कि इंसान के ज़हन में फ़रिश्ते की कल्पना और उसका यह रूप मौजूद होता है कि वह सुन्दर होता है। हालांकि फ़रिश्तों की प्रकृति भिन्न होती है और फ़रिश्ते की असल सुन्दरता को न देखा जा सकता है न समझा जा सकता है, न उसकी जस का तस कल्पना की जा सकती है क्योंकि इंसान की सौन्दर्य कल्पना इंसानी प्रकृति के मुताबिक़ ही हो सकती है। अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्ल. की एक हदीस के मुताबिक जिसे मुस्लिम और इब्ने हंबल ने हज़रत आयशा रजि. से नक़ल किया है, फरिशतों को नूर (रोशनी) से पैदा किया गया है लेकिन ऐसा कोई प्रसंग क़ुरआन में नहीं है। तथापि, फ़रिश्ते नैतिक सौन्दर्य रखते हैं क्योंकि उन्हें ऐसी प्रकृति पर पैदा किया गया है कि वे कभी पाप नहीं कर सकते, हमैशा अच्छे आचरण पर ही रहते हें

# दुनिया के इस जीवन में फ़रिशते किस तरह काम करते हैं

وَ اتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى مُلْكِ
سُلَيْمٰنَ ۚ وَ مَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ وَ لٰكِنَّ
الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ
السِّحْرَ ۗ وَ مَآ اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ
هَارُوْتَ وَ مَارُوْتَ ؕ وَ مَا يُعَلِّمٰنِ مِنْ
اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَآ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا
تَكْفُرْ ؕ فَيَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ
بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَ زَوْجِهٖ ؕ وَ مَا هُمْ
بِضَآرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَ
يَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ وَ لَا يَنْفَعُهُمْ ؕ
وَ لَقَدْ عَلِمُوْا لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ فِى
الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۗ وَ لَبِئْسَ مَا شَرَوْا
بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ ؕ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۳﴾ وَ لَوْ
اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا وَ اتَّقَوْا لَمَثُوْبَةٌ مِّنْ عِنْدِ
اللّٰهِ خَيْرٌ ؕ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۴﴾

उन लोगों ने ऐसी चीज़ (यानी सिह्र) का इत्तेबा किया जिसका तज़केरः सुलैमान के अहेदे हुकूमत में बहुत से शयातीन (यानी ख़बीस जिन्न) किया करते थे। सुलेमान उस सिह्र को नहीं मानते थे। अलबत्ता यही शयातीन कुफ़्र करते थे और आम आदमियों को भी ये सिह्र सिखाया करते थे और उस सिह्र को भी सिखाया करते थे जो शहर बाबुल में दो फ़रिश्तों हारूत और मारूत पर नाज़िल किया गया था और दोनों फ़रिश्ते ये सिह्र किसी को भी न सिखाते थे जब तक ये ना कह देते के हमारा वजूद ही एक इम्तिहान है तो तुम काफिर ना बन जाना। सो लोग उन दोनों से ये सिह्र सीख लिया करते थे जिससे मियाँ और बीवी में फ़र्क़ पैदा कर दे। और ये साहिर उसके ज़रिये किसी को भी कोई नुक़सान नहीं पहुंचा सकते थे। मगर अल्लाह के हुक्म से और ऐसी चीज़ सीख लेते हैं जो उनको नुक़सान पहँचाती है। और नफ़ा कोई नहीं होता। और ये यहूद भी जानते हैं। के जो शख़्स उस सह्र को इख़्तियार करेगा उस के लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं है। और बेशक ये बुरी चीज़ है। के उस सह्र के लिए अपनी जान दे देते हैं। काश! ये अपनी अक़्ल से जान जाते। और अगर वो ईमान लाते और अल्लाह से डरते तो अल्लाह के यहाँ अच्छा बदला मिलता (सिह्र तो कुफ़्र ही है) काश! ये जानते और अक़्ल से सोचते। (2:102-103)

इन आयतों में हज़रत सुलैमान की उस विशेष और असाधारण शक्ति का बयान है जो अल्लाह ने उन्हें बख़्शी थी कि अपने पिता हज़रत दाऊद की तरह, क़ुरआन के बयान के मुताबिक, एक नबी होने के साथ साथ एक राज्य के शासक भी थे। (हवाले के लिए और देखें - 4:163; 6:84; 21:78-81; 27:15-44; 34:10-14; 38:30-40)। यह शक्ति थी शैतानी बलों पर नियंत्रण पाने कीः *"और शैतानों (के समूह को भी उनके आधीन कर दिया था कि उन) में से कुछ उन के लिए ग़ौते लगाते थे और इसके अलावा दूसरे काम भी करते थे और हम*

*उनके निगहबान थे।''* (21: 82), *''फिर हमने हवा को उनके आधीन कर दिया कि जहां वह पहुंचना चाहते उनके आदेश से नर्म नर्म चलने लगती। और शैतानों को भी (उनके आधीन किया) वे सब भवन बनाने वाले और ग़ौते मारने वाले थे। और अन्यों को भी जो ज़ंजीरों में जकड़े हुए थे। यह हमारी देन है (चाहो) तो अहसान करो (चाहो तो) रख छोड़ो (तुम से) कुछ हिसाब नहीं है।''* (38: 36-39)।

ऐसा मालूम होता है कि सुलैमान अलैहिस्सलाम की मौत के बाद कुछ शैतानी ताक़तों ने लोगों को जादू सिखाने की कोशिश शुरू कर दी थी और उन्हें यह बहकाया था कि यह अमल तो सुलैमान के ज़माने से ही चला आ रहा है, हालांकि सुलैमान अलैहिस्सलाम ने न कभी जादू सिखाया न कभी इसकी इजाज़त दी। इसके अलावा, इन शैतानों ने लोगों में एक और चीज़ भी फैलाई जिसका सम्बंध फ़रिश्तों से जोड़ा गया, या कुछ तफ़सीरों के मुताबिक़, दो राजाओं से सम्बंधित थी। इन दो फ़रिश्तों ने लोगों की परीक्षा के लिए उन्हें जादू के कुछ नमूने दिखाए थे और उन्हे ख़बरदार कर दिया था कि यह नुक़सान पहुचाने वाला अमल है इसे न सीखें और हरगिज़ इस अमल में न लगें। यह अजीब बात मालूम होती है कि फ़रिश्ते ऐसी ग़लत बातों का ज्ञान लोगों को देंगे जिसे शैतान उचक लें और उसके द्वारा लोगों का शोषण करें, चाहे उन्होंने इसके प्रति लोगों को ख़बरदार ही कर दिया हो। चुनाँचे इस बात से इस दूसरी तफ़सीर को बल मिलता है जो इब्ने अब्बास से नक़ल की गयी है और बाद के कई अहम लोगों हसन अलबसरी, अबुलअसवद और अलज़हाक आदि ने इस को स्वीकार किया है कि यह शब्द *''मलकैन''* अर्था *''दो बादशाह''* है न कि *''मलकीन''* यानि *''दो फ़रिश्ते''* (देखें इस शब्द के सिलसिले में तिबरी, ज़मख़शरी और राज़ी वग़ैरह की तफ़सीरे)।

यहाँ मुहम्मद असद की *''मैसेज आफ क़ुरआन''* से कुछ पक्तियाँ नक़ल करना उचित होगा, जिनमें आयत 2:102 की तफ़सीर करते हुए नोट 83, 84 में लिखा है कि ''यह बात कि शैतान लोगों को जादू सिखा कर हक़ के विरोध पर आमादा थे, इंसान की इस अख़लाक़ी ज़िम्मेदारी को याद दिलाता है कि हर तरह की जादूई क्रिया को रद कर दें चाहे उसमें कामयाबी मिले या नहीं, क्योंकि इसका निशाना अल्लाह की बनाई हुई प्राकृतिक व्यवस्था को छिन्न भिन्न करना है यह बात सही है कि प्राचीन काल से बाबुल जादू के कमाल दिखाने के लिए प्रसिद्ध रहा है और क़ुरआन के हवाले से, जादू की हर क्रिया निन्दनीय है और रहस्यमय ज्ञान के पीछे पड़ना निन्दापूर्ण कार्य है।'' चुनाँचे असद आयत की तफ़सीर में लिखते हैं कि यहाँ यह सवाल पैदा नहीं होता कि रहस्य वास्तव में कोई ज्ञान है जिसे आम तौर से जादू कहा जाता है, या यह केवल नज़र का धोखा है। यहाँ केवल यह ध्यान दिलाना है कि कोई भी ऐसा प्रयास जिससे इंसान के ज़हन पर प्रभाव डाला जाए और इंसान धोखे में पड़े, एक रूहानी हमला है और इसके कारण जादू करने वाले के रूहानी दर्जे को बहुत नुक़सान पहुंचता है। जादू करने कराने के

विरोध में रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बहुत सी हदीसें हैं और एक हदीस में जादू को शिर्क बताया गया हे और सात बड़े गुनाहों में शुमार किया गया है (हवालाः बुखारी, मुस्लिम, अबुदाऊद, नसई)।

وَ لَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَ قَفَّيْنَا مِنْۢ
بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ ۡ وَ اٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ
مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَ اَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ
الْقُدُسِ ؕ اَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا
لَا تَهْوٰۤى اَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ ۚ فَفَرِيْقًا
كَذَّبْتُمْ ۡ وَ فَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ ﴿۸۷﴾

और हमने मूसा को किताब तौरेत दी और उनके बाद वक़्फ़े वक़्फ़े से रसूल भेजते रहे। और हमने ईसा इब्ने मरयम को नबूव्वत की खुली निशानियाँ अती कीं और हमने रूहुलक़ुदुस के ज़रिये उनकी ताईद की और जब कभी कोई भी रसूल तुम्हारे पाास ऐसे अहकाम ले कर आया जिनको तुम्हारा दिल न चाहता था तो तुम तकब्बुर कर के कुछ को झूठा क़रार दिया करते। और कुछ को बेधड़क क़त्ल कर डालते थे। (2:87)

और देखें 2:253, 5:116

जिब्रईल अलैहिस सलाम को क़ुरआन में रूहुलक़ुदुस भी कहा गया है क्योंकि उन्हें अल्लाह ने अपना संदेश बंदों को पहुंचाने के लिए माध्यम बनाया था (2:87, 253; 5:110; 16:2; 19:17-21; 26:192-193; 40:15; 42:52; 58:22)। मरियम के पुत्र मसीह और उनकी मां के बारे में जिब्रईल अलैहिस सलाम की मदद का ज़िक्र क़ुरआन में कई बार किया गया है, क्योंकि ईसा की पैदाइश और उनके करिशमे क़ौम को हैरान करने वाले थे। चुनाँचे जिब्रईल अलैहिस सलाम की भूमिका केवल अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि पैग़म्बरों और मोमिनों की मदद करना और अक़ीदे व अमल पर जमे रहने में उनका सहयोग करना भी शामिल है, खास तौर से ऐसी कठिन स्थितियों में उनका साथ देना जब विरोधी उनसे टकरा रहे हों और उनके आगे समस्याएँ खड़ी कर रहे हों।

وَ قَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اٰيَةَ مُلْكِهٖۤ اَنْ
يَّاْتِيَكُمُ التَّابُوْتُ فِيْهِ سَكِيْنَةٌ مِّنْ
رَّبِّكُمْ وَ بَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ مُوْسٰى وَ اٰلُ
هٰرُوْنَ تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۲۴۸﴾

और नबी ने उनसे कहा के उनकी बादशाहत की निशानी ये है के तुम्हारे पास एक संदूक़ आएगा जिसे फ़रिश्ते उठाए हुए होंगे उसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से तसल्ली बख़्श चीज़ होगी और बाक़ी की चीज़ों भी होंगी जो मूसा (अ.स.) और हारून (अ.स.) छोड़ गए थे, तुम्हारे लिये ये एक बड़ी निशानी है अगर तुम यक़ीन रखते हो। (2:248)

उपरोक्त आयत में फ़रिश्ते एक चमत्कारी कारनामा अंजाम देते हैं और उस संदूक़ को उठा लाते हैं जिसमें मूसा व हारून की यादगार निशानियां थीं और उनके उत्तराधिकारियों के पास

वह बादशाही के प्रतीक के रूप में सुरक्षित था और तालूत के बादशाह होने का प्रमाण था जिन्हें अल्लाह ने बनी इस्राईल का बादशाह बनाने के लिए चुना था जब बनी इस्राईल ने अपने पैग़म्बर से मुतालबा किया था कि उनके साथ दुश्मनों से लड़ने के लिए कोई सरदार नियुक्त किया जाए। क्या फ़रिश्ते इस संदूक को एक भौतिक वस्तु की तरह उठा कर लाए जिसके अंदर तौरात मौजूद थी, या वह अल्लाह की कृपा की निशानी के रूप में इस संदूक के आसपास गुप्त रूप से मौजूद थे और कोई शरीरिक परिश्रम करते हुए दिखाई नहीं दे रहे थे? इस बात से हट कर कि फ़रिश्तों ने इस घटना में रूहानी और अख़लाक़ी मदद की या उन्होंने वास्तव में एक भौतिक क्रिया अंजाम दी, यह स्पष्ट है कि उन्होंने दुनिया के इस जीवन में होने वाली घटनाओं में और इंसानों से सम्बंधित मामलों में अपनी भूमिका अंजाम दी।

فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ يُّصَلِّيْ فِي الْمِحْرَابِ ۙ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيٰى مُصَدِّقًۢا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَسَيِّدًا وَّ حَصُوْرًا وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٣٩﴾

पस फ़रिश्तों ने उनसे पुकार कर कहा, जब वो मेहराब में खड़े नमाज़ पढ़ थे, के अल्लाह आपको खुशख़बरी देता है याहिया की जो कलमातुल्लाह की तसदीक़ करेंगे, मक़तदा होंगे, और अपने नफ़्स को लज़्ज़त से रोकने वाले होंगे, आला दर्जे के शाईस्ता नबी भी होंगे। (3:39)

وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىكِ وَ طَهَّرَكِ وَ اصْطَفٰىكِ عَلٰى نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٢﴾

और जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरयम! बिला शुबह अल्लाह ने आपको चुन लिया है और पाक बनाया है और दुनिया जहान की औरतों में से चुना है। (3:42)

اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ اِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۖ اسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيْهًا فِي الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٥﴾

जब फ़रिश्तों ने कहा के ऐ मरयम! बेशक अल्लाह तुमको ख़ुशख़बरी देता है एक कलमे की जो अल्लाह की तरफ़ से है। उसका नाम और लक़ब मसीह ईसा इब्ने मरयम होगा, जो बावक़ार होगा दुनिया में और आख़िरत में भी। और प्रतिष्ठा वाले ख़ुदा में शुमार होंगे। (3:45)

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ﴿١٦﴾ فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۖ فَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ﴿١٧﴾ قَالَتْ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ

और इस किताब में मरयम का भी ज़िक्र कीजिये जब वो अपने घर वालों से अलग होकर एक मकान में चली गईं जो पूरब की तरफ़ था। तो उन्होंने अपने आगे पर्दा डाल लिया फिर हमने उनके पास अपना फ़रिश्ता भेजा जो ठीक आदमी की शक्ल उनके सामने आया। मरयम ने कहा मैं अल्लाह की पनाह माँगती हूँ तुमसे अगर तुम

تَقِيًّا ﴿١٧﴾ قَالَ إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ ۖ
لِأَهَبَ لَكِ غُلَامًا زَكِيًّا ﴿١٩﴾ قَالَتْ أَنَّىٰ
يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ وَلَمْ
أَكُ بَغِيًّا ﴿٢٠﴾ قَالَ كَذَٰلِكِ ۖ قَالَ رَبُّكِ
هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۖ وَلِنَجْعَلَهُ آيَةً لِّلنَّاسِ وَ
رَحْمَةً مِّنَّا ۚ وَكَانَ أَمْرًا مَّقْضِيًّا ﴿٢١﴾

अल्लाह से डरने वाले हो। फ़रिश्ते ने कहा के मैं तो तुम्हारे रब का भेजा हुआ हूँ (इसलिये आया हूं) के तुमको एक लड़का अता करूँ। मरयम (अ.स.) ने कहा, मेरे हाँ, लड़का कैसे होगा, जबके मुझे किसी आदमी ने छुवा तक नहीं और मैं बदकार भी नहीं हूं। फ़रिश्ते ने कहा के यूँ ही होगा, तुम्हारे रब ने फ़रमाया है के ये मुझे आसान है, हम उसको इसी तरह पैदा करेंगे ताकि लोगों के पास उसको अपनी निशानी और रहमत बनायें, और ये काम तो तय हो चुका है। (19:16-21)

وَ الَّتِي أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيهَا
مِن رُّوحِنَا وَ جَعَلْنَاهَا وَ ابْنَهَا آيَةً
لِّلْعَالَمِينَ ﴿٩١﴾

और उस औरत को याद कीजिये के जिन्होंने अपनी इज़्ज़त को महफ़ूज़ रखा, फिर हमने उनमें अपनी रूह फूंक दी, और हमने उनको और उनके बेटे को दुनिया वालों के लिये एक निशानी बना दिया। (21:19)

और देखें 4 171 66 12)

इन आयतों में रुहुलक़ुदुस जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने ज़करिया अलैहिससलाम और मरियम अलैहा अस्सलाम को कुछ ख़ास घटनाओं के बारे में अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाया, न कि लोगों को शिक्षा देने के लिए कोई सामान्य हिदायत। इसके लिए जिब्रईल मरियम के पास जो कि पैग़म्बर नहीं थीं, आदमी के रूप में आए। इस तरह जिब्रईल अलैहिस्सलाम और दूसरे फ़रिश्ते कुछ वक्ती (सामयिक) मुद्दों के संदर्भ में अल्लाह के दिशानिर्देश लेकर भी आए, और यह निर्देश पैग़म्बर या उनके अलावा दूसरे इंसानों के लिए भी हो सकते है। जहां तक इस बात का सवाल है कि अल्लाह ने *"उन (मरियम) में अपनी आत्मा फूंक दी"* तो यही बात इस अंदाज़ में आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश के संदर्भ में भी क़ुरआन में बयान हुई है: *"जब उसको (इंसानी आकार में) ढाल दूं और उसमें अपनी रूह फूँक दूँ तो उसके आगे सिजदे में गिर पड़ना।"* (15:29, और देखें 38:72), *"फिर उसको ढाल लिया फिर उसमें अपनी रूह फूंकी और तुम्हारे कान, और आंखें और दिल बनाए (मगर) तुम बहुत कम शुक्र करते हो"* (32:9)। इस आधार पर क़ुरआन कहता है कि *"ईसा का हाल आदम का सा है कि उसने (पहले) मिट्टी से उनका आकार बनाया फिर फ़रमाया कि (इंसान) हो जा तो वह (इंसान) हो गए।"* (3:59)

يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ اَنْ اَنْذِرُوْٓا اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاتَّقُوْنِ ۝٢

अल्लाह ही फ़रिश्तों को वही यानी अपना पैग़ाम देकर जिस पर चाहे अपने बन्दों में से भेजता है के लोगो को होशियार कर दें कि मेरे सिवा कोई दूसरा माबूद नहीं है, और मुझ ही से डरा करो। (16:2)

قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ هُدًى وَّ بُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ۝١٠٢

आप कह दें के इसको रूहुलक़ुद्दूस तुम्हारे रब की तरफ़ से लाये हैं हिकमत के साथ, ताकि मोमिनों को जमाए रखे, और हुक्म मानने वालों के लिये हिदायत और ख़ुशख़बरी है। (16:102)

اَللّٰهُ يَصْطَفِيْ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا وَّ مِنَ النَّاسِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝٧٥ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ ؕ وَ اِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝٧٦

अल्लाह फ़रिश्तों में से पैग़ाम पहुंचाने वाला चुन लेता है, और इन्सानों में से भी, बेशक अल्लाह तो ख़ूब सुनने वाला भी है, और ख़ूब देखने वाला भी है। अल्लाह जानता है उनके आगे आने वाले हालात को और पिछले हालात को भी, और सब आगे आने वाले कामों का अंजाम अल्लाह ही की तरफ़ है। (22:75-76)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا اُولِيْٓ اَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَ ثُلٰثَ وَ رُبٰعَ ؕ يَزِيْدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝١

सारी तारीफ़ें अल्लाह के लिये हैं जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है, जो फ़रिश्तों को अपना संदेशवाहक बनाने वाला है जिन के दो, दो, तीन, तीन और चार, चार पर हैं, वो पैदाईश में जो चाहता है बढ़ता है, निश्चित रूप से अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (35:1)

وَ اِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٩٢ نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ ۝١٩٣ عَلٰى قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ۝١٩٤ بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِيْنٍ ۝١٩٥

और ये क़ुरआन परवरदिगारे आलम का उतारा हुआ है। इसको अमानत दार फ़रिश्ता लेकर उतरा है।उसने तुम्हारे दिल में उतारा है, ताकि लोगों को नसीहत करते रहें। और उतारा भी साफ़ आरबी भाषा में। (26:192-195)

رَفِيْعُ الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ ۚ يُلْقِي الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ۝١٥

ऊँचे दर्जों वाला और अर्श का मालिक उस दिन से डराए जिस दिल लोग अपने रब से मिलेंगे, वही अपने बन्दों में जिस पर चाहता है अपना हुक्म उतारता है ताकि वो मुलाक़ात के दिन से डराये। (40:15)

وَ مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِيَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ عَلِيٌّ حَكِيْمٌ ﴿۵۱﴾ وَ كَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا ؕ مَا كُنْتَ تَدْرِيْ مَا الْكِتٰبُ وَ لَا الْاِيْمَانُ وَ لٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِيْ بِهٖ مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا ؕ وَ اِنَّكَ لَتَهْدِيْۤ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۵۲﴾ صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ؕ اَلَاۤ اِلَى اللّٰهِ تَصِيْرُ الْاُمُوْرُ ﴿۵۳﴾

और किसी इंसान के लिये ये मुमकिन नहीं है के अल्लाह उससे बात करे, मगर वही के ज़रिये से या पर्दे के पीछे से, या कोई फ़रिश्ता भेज दे, फिर वो अल्लाह के हुक्म से जो अल्लाह चाहे पैग़ाम पहुंचा दे, बिला शुबह वो आला है, बड़ी हिकमत वाला है। और इसी तरह हमने अपने हुक्म से आपके पास रूह (यानी जिब्राईल) को भेजा, आप ना तो ये जानते थे कि किताब क्या चीज़ है और ना ये जानते थे के ईमान क्या चीज़ है, लेकिन हमने इस क़ुरआन को एक नूर बनाया के इसके ज़रिये से हम अपने बन्दों में से जिसे चाहते हैं हिदायत करते हैं और बेशक ऐ नबी! आप सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत करते हैं। यानी उस अल्लाह के रास्ते की तरफ़ जिसका है वो सब कुछ जो आसमानों और ज़मीन में है, याद रखो के सारे मामले अल्लाह की तरफ़ रूजू होंगे।

(42:51-53)

اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ۙ﴿۴﴾ عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ۙ﴿۵﴾ ذُوْ مِرَّةٍ ؕ فَاسْتَوٰى ۙ﴿۶﴾ وَ هُوَ بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى ؕ﴿۷﴾ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ۙ﴿۸﴾ فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ۚ﴿۹﴾ فَاَوْحٰۤى اِلٰى عَبْدِهٖ مَاۤ اَوْحٰى ؕ﴿۱۰﴾ مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى ﴿۱۱﴾ اَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى ﴿۱۲﴾ وَ لَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰى ۙ﴿۱۳﴾ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ﴿۱۴﴾

उनका फ़रमाना तो ख़ालिस वही है जो उन पर भेजी जाती है। उनको बहुत क़ुव्वत वाले ने सिखाया। यानी जिब्राईल ताक़तवर ने फिर वो पूरे नज़र आये। जब के वो आसमान के बुलंद किनारे पर था। फिर क़रीब हुए और आगे बढ़े। तो दो कमान के फ़ासले पर या इससे भी कम। फिर अल्लाह ने अपने बन्दे पर वही नाज़िल की जो कुछ नाज़िल करना था। जो कुछ उन्होंने देखा उनके दिल ने उसको झूट ना जाना। क्या जो कुछ वो देखते हैं तुम इसमें उनसे झगड़ते हो? और उन्होंने उसको एक बार और भी देखा है। परली हद की बेरी के पास।

(53:4-14)

وَ لَقَدْ رَاٰهُ بِالْاُفُقِ الْمُبِيْنِ ﴿۲۳﴾ وَ مَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ﴿۲۴﴾

और बेशक उन्होंने इस फ़रिश्ते को आसमान के साफ़ किनारे पर देखा है। और वो पोशीदा बातों को ज़ाहिर करने में कंजूस नहीं।

(81:23-24)

उपरोक्त सभी आयतें जिब्रईल अलैहिस्सलाम के द्वारा पैग़म्बरों को अल्लाह का पैग़ाम प्राप्त होने के बारे में हैं। कुछ लोग वहि की इस क्रिया को सामान्य मानते हैं (2:16; 40:15) जबकि कुछ दूसरे लोग किसी ख़ास पैग़म्बर से सम्बंधित मानते हैं (16:102; 16:192-195; 42:52)। आयत 53:4-14 हमें यह बताती हैं कि मुहम्मद सल्ल. ने जिब्रईल अलैहिस्सलाम को उनके वास्तविक रूप में आंखों से देखा, जबकि उन्होंने मेराज की रात में भी जिब्रईल अलैहिस्सलाम को शरीरिक रूप में देखा था। अल्लाह का पैग़ाम उसके पैग़म्बरों पर उतारना फ़रिश्तों और ख़ास तौर से जिब्रईल अलैहिस्सलाम का एक अहम काम था। अलबत्ता आयत 42:5 से यह इशारा मिलता है कि अल्लाह की वहि या इलहाम प्रत्यक्ष भी पहुंचा है जिसमें कोई माध्यम (जैसे फ़रिश्ता) नहीं था। इसके अलावा कभी कभार अल्लाह ने पैग़म्बरों से सीधे भी कलाम किया है लेकिन परदों में रह कर, जैसे कि मूसा अलैहिस्सलाम से तूर पहाड पर कलाम किया (4:164; 7:143-144 20:19-36; 27:7-12; 28:29-35), और मुहम्मद सल्ल. के मामले में भी कि *मेराज* की रात *सिदरतुल मुन्तहा* पर आप से गुतुगू की। रसूलुल्लाह मुहम्मद सल्ल. के मुताबिक़ आपने जिब्रईल को उनकी प्राकृतिक काया में जीवन में केवल दो बार देखा, एक बार *वह्यि* का सिलसिला शुरू होने के दिनों में जब पहली बार *वह्यि* उतरने (96:1-5) के बाद कुछ समय के लिए *वह्यि* का सिलसिला रुक गया था और आप इस जिज्ञासा में थे कि फिर से *वह्यि* आए, और दूसरी बार *मेराज* की रोत जो कि रसूलुल्लाह के मदीना पलायन के कुछ पहले और पैग़म्बर बनाए जाने के 10 वर्ष बाद हुई थी (देखें, मैसेज आफ क़ुरआन में सेक्शन प्राफिट मुहम्मद)। जिब्रईल को उनकी प्राकृतिक काया में देखना और इतने करीब से देखना कि क़ुरआन ने अरबी मुहावरे में *"क़ाबा क़ौसेन"* (दो कमानों के बीच की दूरी) से मिसाल दी है, अपवाद है और यह कोई मुस्तकिल तरीक़ा नहीं था।

اِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ اَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ اَنْ
يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ
الْمَلٰٓئِكَةِ مُنْزَلِيْنَ ﴿١٢٤﴾ بَلٰٓى ۙ اِنْ تَصْبِرُوْا وَ
تَتَّقُوْا وَ يَاْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ هٰذَا
يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ
الْمَلٰٓئِكَةِ مُسَوِّمِيْنَ ﴿١٢٥﴾ وَ مَا جَعَلَهُ اللّٰهُ
اِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ وَ لِتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُكُمْ
بِهٖ ؕ وَ مَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ
الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿١٢٦﴾

जब तुम ईमान वाले से कह रहे थे के क्या काफ़ी नहीं के तुम्हारा रब तीन हज़ार फ़रिश्ते नाज़िल फ़रमा कर तुम्हारी मदद फ़रमा दे। हाँ अगर तुम दिल को मज़बूत रखो और अल्लाह से डरते रहो, और काफिर तुम पर अचानक हमला कर दें तो तुम्हारा रब पाँच हज़ार फ़रिश्तों को तुम्हारी मदद के लिए भेजेगा जिन पर निशान लगे हुए होंगे। और अल्लाह ने ये मदद केवल इसलिए की के तुम्हारे लिए ख़ुशख़बरी हो और तुम्हारे दिलों को उससे सुकून हो और मदद तो अल्लाह ही की तरफ़ से है, जो बड़ा ज़बरदस्त है, और हिकमत वाला भी है।

(3:124-126)

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُمْ بِأَلْفٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُرْدِفِينَ ۝٩ وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ وَلِتَطْمَئِنَّ بِهِ قُلُوبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِندِ اللَّهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝١٠

उस वक़्त को याद करो जब तुम अपने रब से फ़रयाद कर रहे थे, फिर अल्लाह ने तुम्हारी फ़रयाद सुन ली के मैं तुमको एक हज़ार फ़रिश्तों से मदद दूंगा, जो लगातार चले आते रहेंगे। और अल्लाह ने ये मदद महज़ इसलिये की के ख़ुशख़बरी हो, और दिलों को सुकून हासिल हो और मदद तो अल्लाह की ही तरफ़ से है, बिला शुबह अल्लाह ज़बरदस्त हिकमत वाला है। (8:9-10)

إِذْ يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَائِكَةِ أَنِّي مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِينَ آمَنُوا ۚ سَأُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ۝١٢

उस वक़्त को याद करो जब आपका रब फ़रिश्तों को हुक्म दे रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूं तो तुम ईमान वालों की हिम्मत बढ़ाओ, मैं अभी काफ़िरों के दिलों में रौब डाले देता हूं, सो तुम गर्दनों पर मारो और उनके एक एक पोर पर चोट लगाओ। (8:12)

इन आयतों में यह बताया गया है कि बद्र की लड़ाई (2 हिजरी/624ई) के मौक़े पर जब दुशमनों ने बड़ी संख्या में मुसलमानों पर हमला किया तो इसका मुक़ाबला करने में फ़रिश्तों ने मुसलमानों की मदद की। फ़रिश्तों की यह मदद भौतिक रूप में थी या केवल नैतिक? क्या फ़रिश्ते वास्तव में मुसलमानों के साथ मिल कर लड़ रहे थे या उन्होंने मुसलमानों का मनोबल बढ़ाया, उनके दिल मज़बूत किए और डटे रहने में उनकी सहायता की और मुसलमानों की संख्या को अधिक दिखा कर उनके उत्साह को बढ़ाया? यद्यपि कुछ हदीसों से जो कि बुख़ारी और मुस्लिम ने नक़ल की हैं, इस बात का समर्थन होता है कि फ़रिश्ते व्यवहारिक रूप से किसी हद तक जंग में सक्रिय थे, तथापि क़ुरआन की इन आयतों से दोनों अर्थ निकाले जा सकते हैं। क़ुरआन का बयान है कि *"इस मदद को तो अल्लाह ने तुम्हारे लिए ख़ुशख़बरी बनाया यानि इसलिए कि तुम्हारे दिलों को इससे तसल्ली हो"*, इसका मतलब यह है कि फ़रिश्तों की मदद रूहानी और अख़लाक़ी थी, रहा यह हुक्म कि *"उनके सर मार (कर) उड़ा दो और उनका पोर पोर मार (कर) तोड़ दो"* (8:12) तो इसे दोनों तरह से समझा जा सकता है कि इसका सम्बोधन फरिशतों से भी हो सकता है कि मुसलमानों के दुशमनों से लड़ें, और फ़रिश्तों के माध्यम से मोमिनों से भी हो सकता है कि मोमिनों को उभारें और उनसे यह कहें।

إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ ظَالِمِي أَنْفُسِهِمْ قَالُوا فِيمَ كُنْتُمْ ۖ قَالُوا كُنَّا

97. बेशक जब फ़रिश्ते उनकी जान क़ब्ज़ करते हैं जो अपने ऊपर जुल्म करते थे, तो फ़रिश्ते उनसे पूछते हैं कि तुम किस हाल में थे तो वो कहते हैं के हम ज़मीन में

مُسْتَضْعَفِيْنَ فِي الْاَرْضِ ؕ قَالُوْٓا اَلَمْ تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوْا فِيْهَا ؕ فَاُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَ سَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿۹۷﴾ اِلَّا الْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَ النِّسَآءِ وَ الْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ حِيْلَةً وَّ لَا يَهْتَدُوْنَ سَبِيْلًا ﴿۹۸﴾

महज़ मग़लूब और कमज़ोर थे, तो फ़रिश्ते कहते हैं कि क्या अल्लाह की ज़मीन विशाल ना थी तुम कि पलायन कर जाते? बस उन लोगों का ठिकाना दोज़ख़ है, और वो जाने के लिए बुरी जगह है। मगर जो कमज़ोर मर्द और औरतें और बच्चे इस क़ाबिल नहीं के वो अपनी कोई तदबीर कर सकें और ना रस्ते से वाक़िफ़ हैं। सो उनके लिये उम्मीद है के अल्लाह माफ़ कर दे, और अल्लाह तो है ही बड़ा माफ़ करने वाला और बड़ा बख़्शने वाला। (4:97-99)

وَ هُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ وَ يُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَ هُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ ﴿۶۱﴾ ثُمَّ رُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ؕ اَلَا لَهُ الْحُكْمُ ۫ وَ هُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ ﴿۶۲﴾

और वो अपने बन्दों पर रखता है, और वो तुम पर निगरानी रखने वाले फ़रिश्ते भेजता है, यहां तक के जब तुम में कोई मरता है तो हमारे फ़रिश्ते उसकी रूह क़ब्ज़ कर लेते हैं, और वो ज़रा भी कोताही नहीं करते। फिर सब अल्लाह की तरफ़ लौट जायेंगे, जो उनका मालिके हक़ीक़ी है, सुन लो! फ़ैसला अल्लाह ही का होगा, और वो बहुत जल्द हिसाब करने वाला है। (6:61-62)

وَ مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ قَالَ اُوْحِيَ اِلَيَّ وَ لَمْ يُوْحَ اِلَيْهِ شَيْءٌ وَّ مَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ ؕ وَ لَوْ تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ بَاسِطُوْٓا اَيْدِيْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَ كُنْتُمْ عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿۹۳﴾

और उससे ज़्यादा और कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह पर झूट लगाए, या कहता है के मुझ पर वही आती है हालांकि उस पर कोई वही नहीं आती, और जो ये कहे के जैसा कलाम अल्लाह ने नाज़िल किया है वैसा ही मैं भी लाता हूं, और अगर आप उन ज़ालिमों को उस वक़्त देखें जब ये मौत की सख़्तियों में होंगे और फ़रिश्ते अपने हाथ बढ़ा रहे होंगे हां अपनी जानें निकालो, आज तुम को ज़िल्लत की सज़ा दी जाएगी, इस सबब से के तुम अल्लाह के ज़िम्मे झूटी बातें करते थे और तुम अल्लाह की आयात से तकब्बुर करते थे। (6:93)

وَ لَوْ تَرٰٓى اِذْ يَتَوَفَّى الَّذِيْنَ كَفَرُوا ۙ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَ

और अगर आप देखें के जब फ़रिश्ते उन काफ़िरों की जान क़ब्ज़ करते हैं, और उनके मुँह पर, और उनकी

पीठों पर मारते जाते हैं और कहते हैं, आग में जलने का मज़ा चखो। ये अज़ाब उन कर्मों के जो तुमने अपने हाथों किए है, और अल्लाह अपने बन्दों पर जुल्म करने वाला नहीं। (8:50-51)

اَدْبَارَهُمْ ۚ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝٥٠ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَ اَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝٥١

जिनकी फ़रिश्तों ने रूह क़ब्ज़ की थी हालते कुफ्र में फिर वो काफिर सुलह का पैग़ाम डालेंगे के हम कोई बुरा काम नहीं कर रहे थे, क्यों नहीं! जो कुछ तुम करते थे अल्लाह ख़ूब जानता है। सो तुम दोज़ख़ के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, हमेशा हमेशा उसमें रहोगे, अब घमण्ड करने वालों का वो बुरा ठिकाना है। (16:28-29)

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۠ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ بَلٰٓى اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٢٨ فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝٢٩

जब फ़रिश्ते उनकी रूह क़ब्ज़ करते हैं इस हालत में के वो पाक होते हैं तो उनसे कहते हैं "अस्सलाम अलैकुम" "तुम अपने आमाल के सबब जन्नत में दाख़िल हो जाना"। (16:32)

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيْنَ ۙ يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ ۙ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٣٢

आप फ़रमा दीजिये, मौत का फ़रिश्ता जो तुम पर मुक़र्रर किया गया है तुम्हारी रूह क़ब्ज़ कर लेता है, फिर तुम अपने रब की तरफ़ लौटाये जाओगे। (32:11)

قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِيْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ۝١١ ع

उपरोक्त आयतों में से कई आयतों के मज़मून से यह लगता है कि मौत के समय रूह निकलने के लिए जो फ़रिश्ते इंसान के पास आते हैं उनकी संख्या कई है, क्योंकि उनका ज़िक्र बहुवचन में किया गया है (4:97; 6:61,93; 8:50; 16:28,32), जबकि आख़री आयत में यह कहा गया है कि मौत का फ़रिश्ता जो तुम पर नियुक्त किया गया है तुम्हारी रूह खींच लेता है इस तरह यह समझने की गुंजाइश है कि शायद मौत के फरिशते के साथ बहुत से मददगार हैं जिन्हें समय और स्थान के लिहाज़ से ज़िम्मेदारी बांट दी गयी है ताकि जिसका समय जब और जहाँ आ जाए ये फ़रिश्ते वहाँ पहुँच जाएँ।

इन आयतों से यह भी मालूम होता है कि फ़रिश्ते इंसानों की रूह निकालते समय जीवन में उनके अच्छे या बुरे कर्मों के लिहाज़ से उनके साथ अलग अलग तरह का मामला करते हैं, वे उनसे सवाल करते हैं और उन पर टिप्पणियाँ करते हैं। अच्छे कर्म वाले लोगों को महसूस

हो जाता है कि आख़िरत के नए जीवन में उनका स्वागत किया जा रहा है और उन्हें पुरस्कृत किया जाएगा, जबकि कुकर्मी अपने कुकर्मों के नतीजे को सामने देखने लगता है। हालांकि अन्तिम और विस्तृत जांच और फ़ैसला फैसले वाले दिन अल्लाह के सामने हर व्यक्ति की कुल परिस्थितियों (जैसे उसकी नियत, अल्लाह की हिदायत से बाख़बर होना, अपने अमल में आज़ाद होना वग़ैरहे) के हिसाब से होगा।

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ مَاتُوْا وَ هُمْ كُفَّارٌ
أُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَ الْمَلٰٓئِكَةِ
وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٦١﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ
لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَ لَا هُمْ
يُنْظَرُوْنَ ﴿١٦٢﴾

अलबत्ता जो काफिर ही हैं और कुफ़्र की हालत में उनको मौत आ जाएगी, तो उन लोगों पर अल्लाह की लानत है, उसके फ़रिश्तों और सारे आदमियों की। वे हमेशा हमेशा उस लानत में रहेंगे। उनसे ना तो अज़ाब ही हल्का होगा और ना उनको कोई मोहलत दी जाएगी।
(2:161-162; और 3:87)

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَ
الْمَلٰٓئِكَةُ وَ اُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًۢا
بِالْقِسْطِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾

अल्लाह तो इसकी गवाही देता है के उसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, और फ़रिश्ते और इल्म वाले भी गवाही देते हैं वही हाकिम है इन्साफ़ का, उसके सिवा कोई माबूद नहीं जो ज़बरदस्त है और हिकमत वाला भी है। (3:18)

لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَآ اَنْزَلَ اِلَيْكَ
اَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ ۚ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ
يَشْهَدُوْنَ ؕ وَ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿١٦٦﴾

लेकिन अल्लाह इस किताब के द्वारा जो उसने आप पर उतारी है गवाही देता है के ये किताब उसने अपने इल्म से नाज़िल की है और फ़रिश्ते भी गवाही देते हैं और अल्लाह तआला ही की गवाही काफ़ी वाफ़ी है।
(4:166)

وَ يُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ
خِيْفَتِهٖ ۚ وَ يُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيْبُ بِهَا
مَنْ يَّشَآءُ وَ هُمْ يُجَادِلُوْنَ فِى اللّٰهِ ۚ وَ هُوَ
شَدِيْدُ الْمِحَالِ ﴿١٣﴾

और बिजली उसकी तारीफ़ के साथ उसकी पाकी बयान करती है, और फ़रिश्ते भी उसके ख़ौफ़ से, और वही बिजलियां भेजता है फिर जिस पर चाहे गिरा देता है, और वो लोग अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं जबकि वो बड़ी क़ुव्वत वाला है। (13:13)

وَ لِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِى
الْاَرْضِ مِنْ دَآبَّةٍ وَّ الْمَلٰٓئِكَةُ وَ هُمْ لَا

और जानदार तमाम के तमाम जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं और फ़रिश्ते भी ये सब अल्लाह के आगे

يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٤٩﴾ يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَ يَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ﴿٥٠﴾

सज्दा करते हैं और वो घमण्ड नहीं करते। और वो सब अपने रब से डरते हैं जो उनके ऊपर हैं, और जो उनको आदेश होता है उस पर अमल करते हैं। (16:49-50)

هُوَ الَّذِيْ يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَ مَلٰٓئِكَتُهٗ لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَ كَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ﴿٤٣﴾

वही है जो तुम पर रहमत फ़रमाता है और उसके फ़रिश्ते तुम्हारे लिए रहमत की दुआ करते हैं ताकि वो तुम्हें अंधेरों से रौशनी में निकाल लायें वो मोमिनों पर बहुत मेहरबान है। (33:43)

اِنَّ اللّٰهَ وَ مَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَ سَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿٥٦﴾

बेशक! अल्लाह और उसके फ़रिश्ते रसूल पर दुरूद भेजते हैं, मोमिनों! तुम भी रसूल पर दुरूद और सलाम भेजते रहा करो। (33:56)

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَ لَا تَحْزَنُوْا وَ اَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٠﴾ نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ فِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَ لَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِيْٓ اَنْفُسُكُمْ وَ لَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ﴿٣١﴾ ؕ نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ ﴿٣٢﴾

बिला शुबह जिन लोगों ने ये कहा के हमारा रब अल्लाह है, फिर उन्होंने उस पर अपने क़दम जमाए रखे, तो उन पर फ़रिश्ते उतरेंगे (और कहेंगे) कि ना तो तुम कोई ख़ौफ़ करो और ना ग़मनाक हो, और जन्नत की ख़ुशख़बरी हासिल करो जिसका वादा तुम से किया जाता था। हम तुम्हारे दुनिया की ज़िन्दगी में भी दोस्त थे और आख़िरत में भी तुम्हारे साथी हैं, और जिस चीज़ की तुम इच्छा करोगे वो तुम को मिलेगी और जो मांगोगे वो भी तुम को मिलेगा। ये बतौर मेहमान के है ग़फ़ूरो रहीम की तरफ़ से। (4:30-32)

لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَ هُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿٤﴾ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَ يَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ؕ اَلَآ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٥﴾

उसी का है वो सब कुछ जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है, और वही सबसे बुलंद अज़मत वाला है। कुछ अजल नहीं है के आसमान अपने ऊपर से फट पड़े और फ़रिश्ते अपने रब की वंदना के साथ पाकी बयान करते हैं और ज़मीन वालों के लिये मआफ़ी तलब करते हैं, ख़ूब सुन लो के अल्लाह ही माफ़ करने वाला रहमत करने वाला है। (42:4:5)

إِنْ تَتُوبَآ إِلَى اللهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا ۚ وَ إِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللهَ هُوَ مَوْلٰهُ وَ جِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ۝

4. आप कह दीजिये के भला ये तो बतलाओ के जिन चीज़ों को तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, मुझ को ये दिखा दो के कौनसी चीज़ ज़मीन की उन्होंने पैदा की है, या उनकी आसमानों में कोई शिर्कत है, मेरे पास कोई किताब तो लाओ जो इससे पहले की हो या कोई मनकूल अंबिया का हो जो चला आता रहा हो (उसे पेश करो) अगर तुम सच्चे हो। ()

تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَ الرُّوْحُ فِيْهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ مِنْ كُلِّ اَمْرٍ ۝ سَلٰمٌ ۛ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۝

उस रात में फ़रिश्ते और रूहुलअमीन अपने रब के हुक्म से हर भलाई का हुक्म को लेकर उतरते हैं। ये रात बड़ी अमनो सलामती की रात है, फ़ज्र के तुलू तक रहती है। (97:4-5)

उपरोक्त आयतें यह इशारा देती हैं कि फ़रिश्तों की कारगुज़ारी पैग़म्बरों के पास अल्लाह का पैग़ाम लाने, उनकी मदद करने और मौत के समय इंसानों की रुह निकालने व उसे उसके स्थान पर पहुंचाने के साथ साथ इस दुनिया के मामलों में भी है। वह इस बात के गवाह बनते हैं कि अल्लाह के सिवा कोई पूजनीय नहीं है, उसका पैग़ाम सत्य है और उसके पैग़म्बर सत्य बात कहते हें (3:18; 4:166)। वे अल्लाह की वन्दना करने में दूसरे जीवों के साथ शरीक रहते हैं (13:13; 16:49; 42:5)।

यह दुआ ज़ाहिर करती है कि फ़रिश्ते कितने नूरानी हैं, और अल्लाह की रहमत कितनी व्यापक है जिसकी वे कामना करते हैं। वो अल्लाह से उसकी कृपा और मआफी मांगते हैं उन सभी जीवों के लिए जो ज़मीन पर बसते हैं, हालांकि वे पहले इस आशंका को व्यक्त कर चुके थे कि ज़मीन का यह जीव (इंसान) ज़मीन पर उत्पात मचाएगा और रक्तपात करेगा (2:30)। इसके अलावा वो उनफ़ लोगों पर उतरते हैं जो कहते हैं कि हमारा रब अल्लाह है और सीधे रस्ते पर चलते हैं, उनको उनके सदकर्मों का बहतरीन बदला मिलने की ख़ुशख़बरी सुनाते हैं और उनसे इस दुनिया के जीवन में भी मदद करने का वायदा करते हैं और आख़िरत के जीवन में भी (41:30-32)। वो मुहम्मद सल्ल. के दुशमनों की चालों के मुक़ाबले में उनकी मदद करते, अल्लाह, जिब्रईल और मोमिनों का साथ देते हें (66:4)। और जो लोग सत्य को झुठलाते हैं और झूट पर क़ायम रहते हैं उनको रद करने और उनकी भर्त्सना करने (उन पर लानत भेजने) में भी फरिशते अल्लाह और ईमान वालों के साथ शामिल रहते हैं (2:161)।

फरिशते *शबे क़द्र* का आयोजन करते हैं जो रमज़ान की अन्तिम दस रातों में से किसी रात

में होती है, जबकि रमज़ान वह महीना है जिसमें क़ुरआन अवतरित हुआ, और मुसलमानों पर जिसके रोजे अनिवार्य किए गए हैं। रमज़ान की इस ख़ास रात की शान (आभा) अलग है। मुसलमानों से कहा गया है कि वे रमज़ान की अन्तिम दस रातें इबादत में बिताएं, और इस ख़ास रात को फ़रिश्ते उनके साथ विशेष आयोजन करते हेः फ़रिश्ते और रूहुलकुदुस अपने रब के हुक्म से उसका फैसला लेकर उतरते हैं सुबह होने तक यह रात सलामती ही सलामती है (97:4-95). चुनाँचे फरिशतों को इस दुनिया के लिए भी ज़िम्मेदारियां दी हुई हें जिनके तहत वे इंसानों के साथ मामला करते हें और उनके जीवन पर असर डालते हैं। हम तो केवल इतना जानते हैं जितना अल्लाह ने क़ुरआन में बयान कर दिया है।

## दुनिया के ख़ात्मे के समय और आख़िरत के जीवन में फ़रिश्तों की भूमिका

هَلۡ يَنۡظُرُوۡنَ اِلَّاۤ اَنۡ يَّاۡتِيَهُمُ اللّٰهُ فِىۡ ظُلَلٍ مِّنَ الۡغَمَامِ وَ الۡمَلٰٓئِكَةُ وَ قُضِىَ الۡاَمۡرُ ؕ وَ اِلَى اللّٰهِ تُرۡجَعُ الۡاُمُوۡرُ ﴿۲۱۰﴾

क्या ये इस बात का इन्तिज़ार कर रहे हैं के अल्लाह का अज़ाब इस बादलों के सायबानों में आ नाज़िल हो, और फ़रिश्ते भी उतर आयें, और काम तमाम कर दिया जाए, और सारे कामों का रूजू अल्लाह ही की तरफ़ से है। (2:210)

هَلۡ يَنۡظُرُوۡنَ اِلَّاۤ اَنۡ تَاۡتِيَهُمُ الۡمَلٰٓئِكَةُ اَوۡ يَاۡتِىَ رَبُّكَ اَوۡ يَاۡتِىَ بَعۡضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ؕ يَوۡمَ يَاۡتِىۡ بَعۡضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا يَنۡفَعُ نَفۡسًا اِيۡمَانُهَا لَمۡ تَكُنۡ اٰمَنَتۡ مِنۡ قَبۡلُ اَوۡ كَسَبَتۡ فِىۡۤ اِيۡمَانِهَا خَيۡرًا ؕ قُلِ انۡتَظِرُوۡۤا اِنَّا مُنۡتَظِرُوۡنَ ﴿۱۵۸﴾

या ये कहते के अगर हम पर कोई किताब नाज़िल होती तो हम उनसे ज़्यादा राह पर होते, सो अब तुम्हारे पास रब की तरफ़ से एक खुली रहनुमाई और रहमत वाली किताब आ चुकी है, सो उससे ज़्यादा कौन ज़ालिम होगा जो हमारी आयात को झूटा बताए और उससे रोके, हम जल्द ही उनको जो हमारी आयात से रोकते हैं उस रोकने की सख़्त सज़ा देंगे। (6:158)

هَلۡ يَنۡظُرُوۡنَ اِلَّاۤ اَنۡ تَاۡتِيَهُمُ الۡمَلٰٓئِكَةُ اَوۡ يَاۡتِىَ اَمۡرُ رَبِّكَ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ ؕ وَ مَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَ لٰكِنۡ كَانُوۡۤا اَنۡفُسَهُمۡ يَظۡلِمُوۡنَ ﴿۳۳﴾ فَاَصَابَهُمۡ

आख़िर उनको अपने बुरे आमाल के सबब सज़ायें मिलीं, और जिस अज़ाब का वो मज़ाक़ उड़ाया करते थे उसी ने उनको आ घेरा। और मुशरिकीन कहते हैं के अगर अल्लाह चाहता तो हम अल्लाह के सिवा किसी दूसरे की इबादत ना करते और ना ही हमारे बाप दादा और ना ही

سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَ حَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٤﴾

हम किसी चीज़ को बग़ैर अल्लाह की मर्ज़ी के हराम करते जो लोग उनसे पहले हुए हैं उन्होंने भी ऐसी हरकत की थी सो रसूलों के ज़िम्मे तो सिर्फ़ साफ़ साफ़ पहुंचा देना था। (16:33-34)

يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ وَ يَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿٢٢﴾

जिस दिन ये फ़रिश्तों को देखेंगे उस दिन गुनाहगारों के लिये कोई ख़ुशी नहीं होगी और कहेंगे के पनाह है पनाह है। (25:22)

وَ يَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَ نُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيْلًا ﴿٢٥﴾

और जिस रोज़ आसमान बादलों के साथ फट जाएगा, और फ़रिश्ते कसरत के साथ उतारे जायेंगे। (25:25)

ये आयतें इस बात को जताती है कि इंसानों को फ़रिश्तों का नज़र आ जाना मृत्यू के समय के साथ ख़ास है, और उनका नज़र आना मौत के बाद का जीवन शुरू होने का प्रतीक है। यह स्थिति वर्तमान स्थिति से कुछ भिन्न है क्योंकि जीवन में इंसानों को फ़रिश्ते आम तौर से नज़र नही आते। जो लोग पैग़म्बर से यह मांग करते थे कि अल्लाह का पैग़ाम देने के लिए फ़रिश्तों को ज़मीन पर आना चाहिए, या यह कि फ़रिश्ता नबी का सहायक बन कर या प्रमाण के रूप में उसके साथ दिखाई दे, उन्हें क़ुरआन ने चेताया कि फ़रिश्ते को देखने की क्षमता इंसान को तभी हासिल होगी जब अल्लाह इस संसारिक जीवन को समाप्त करने का फ़ैसला करेगा। लेकिन तब बहुत देर हो चुकी होगी और सत्य को झुटलाने वालों के लिए फ़रिश्तों का देखना कुछ फायदेमन्द नहीं होगा, तब तो उन्हें केवल फ़ैसला और अपने किए का नतीजा ही देखना होगा। दूसरी आयतों में इस विचार को रद किया गया है कि अल्लाह का पैग़ाम लाने वाला कोई फ़रिश्ता हो, और यह स्पष्ट किया गया है कि ऐसा होना इंसानों और फ़रिश्तों दोनों की प्रकृति के विपरीत है कि वे एक दूसरे के साथ बस नहीं सकते, और एक दूसरे से कलाम नहीं कर सकते।

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَ مَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَ اَزْوَاجِهِمْ وَ ذُرِّيّٰتِهِمْ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿٢٣﴾ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ﴿٢٤﴾

यानी हमेशा रहने के बाग़ हैं जिन में वो दाख़िल होंगे और उनके बाप दादा और बीवियाँ और औलाद में से जो नेक होंगे वो भी जन्नत में होंगे और फ़रिश्ते (बहिश्त के) हर एक दरवाज़े से उनके पास आयेंगे। और कहेंगे तुम पर सलामती हो ये तुम्हारे सब्र का फल है, और आख़िरत का घर कैसा अच्छा है। (13:23-24)

और देखें 40 7-9

لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَ تَتَلَقّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿۱۰۳﴾

उनको ज़बरदस्त ख़ौफ़ ग़मगीन नहीं करेगा, फ़रिश्ते उनको लेने आया करेंगे और कहेंगे के ये है तुम्हारा दिन जिसका वादा तुम से किया जाता था। (21:103)

وَ تَرَى الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ وَ قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَ قِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۷۵﴾

और तुम फ़रिश्तों को देखोगे के अर्श के गिर्द घेरा बांधे हुए हैं, अपने रब की पाकी उसकी हम्द के साथ बयान कर रहे हैं, और उनमें इन्साफ़ के साथ फ़ैसला किया जायेगा, और कहा जायेगा, हर क़िस्म की तारीफ़ अल्लाह के लिये है, जो तमाम जहानों का परवरदिगार है।

(39:79)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَ يَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ﴿۶﴾

मोमिनों! तुम अपने आपको और अपने घर वालों को दोज़ख़ की आग से बचाओ, जिसका इंधन आदमी और पत्थर हैं, जिस पर तुंद ख़ू और सख़्त क़ुव्वत वाले फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं, जो हुक्म उनको मिलता है उसकी नाफ़रमानी नहीं करते और जो हुक्म मिलता है उसको बजा लाते हैं।

(66:6)

وَ اِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ؕ وَ اِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۷﴾

और अगर तुझको अल्लाह कोई तकलीफ़ पहुँचा दे तो उसका दूर करने वाला अल्लाह के सिवा और कोई नहीं, और अगर तुझको वो कोई नफ़ा पहुंचा दे तो वो हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है। (69:17)

تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَ الرُّوْحُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ﴿۴﴾

उसी की तरफ़ तमाम फ़रिश्ते और रूहुलअमीन चढ़ते हैं, (ये अज़ाब) उस रोज़ होगा जिसकी मिक़दार पचास हज़ार बरस होगी। (70:4)

وَ مَا جَعَلْنَآ اَصْحٰبَ النَّارِ اِلَّا مَلٰٓئِكَةً ۙ وَّ مَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ اِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۙ لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَ

और हमने दोज़ख़ के दारोग़ा फ़रिश्ते ही बनाये हैं और उनकी गिनती काफ़िरों की आज़माईश के लिये तय की है ताकि अहले किताब यक़ीन रखें और मोमिनों का ईमान और ज़्यादा हो, और अहले किताब और मोमिनीन

يَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِيْمَانًا وَّ لَا يَرْتَابَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۙ وَ لِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّ الْكٰفِرُوْنَ مَا ذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ وَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ مَا يَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ اِلَّا هُوَ ؕ وَ مَا هِيَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْبَشَرِ ۝

शक ना करें और इसलिये के जिन लोगों के दिलों में निफ़ाक़ (दोग़लेपन) की बीमारी है और जो काफिर हैं कहेंगे के इस मिसाल के बयान करने से ख़ुदा का मक़सूद क्या है, इसी तरह ख़ुदा जिसको चाहता है गुमराह करता है, और जिसको चाहता है हिदायत देता है और तुम्हारे परवरदिगार के लश्करों को उसके सिवा कोई नहीं जानता और ये तो इंसान (अ.स.) के लिये नसीहत है। (74:31)

يَوْمَ يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا ۙ لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَ قَالَ صَوَابًا ۝

जिस रोज़ रूहुलअमीन और फ़रिश्ते एक पंक्ति में खड़े होंगे कोई बोल ना सकेगा बग़ैर इजाज़ते रहमान के, और वो बोले भी तो दुरुस्त बोले। (78:38)

وَّ جَآءَ رَبُّكَ وَ الْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۝

और तुम्हारे रब का आदेश आये और फ़रिश्ते क़तार दर क़तार खड़े हो जाएँ। (89:22)

फ़ैसले के दिन फ़रिश्ते विभिन्न प्रकार की भूमिका में होंगे जैसा कि इन आयतों से इशारा मिलता है। वे अपने दर्जों के लिहाज़ से अल्लाह तआला के साथ होंगे (78:38; 89:221)। वे अल्लाह की तस्बीह (गुणगान) कर रहे होंगे और उसकी वन्दना में लगे होंगे और उनकी एक विशेष संख्या अल्लाह का अर्श उठाए हुए होगी (39:75; 69:17)। कुछ फ़रिश्तों का काम यह होगा कि जब ईमान लाने वाले और सदकर्मी लोग उठाए जाएंगे और नेअमतों से भरे बाग़ों में दाखिल होंगे तो वे फ़रिश्ते उन लोगों का स्वागत करेंगे और उन्हें बधाई देंगे (13:23-24; 21:103)। फ़रिश्तों की कुछ निर्धारित संख्या जहन्नम पर भी नियुक्त होगी (66:6; 74:103)। दुनिया के जीवन के खात्मे के समय ज़मीन पर और फिर आख़िरत का जीवन शुरू होने के बाद आसमानों में अपनी अपनी ज़िम्मेदारियों के मुताबिक़ फ़रिश्तों का एक दुनिया से दूसरी दुनिया की तरफ़ सफ़र करना भी उनका एक गुण है। यह अपार दूरी अंतरिक्ष विज्ञान के समीकरणों और गिनतियों के पैमाने से परे है और इंसान के कल्पनात्मक बोध के लिए क़ुरआन में इसे पचास हजार वर्ष की दूरी बताया गया है।

मतलब यह है कि आख़िरत के जीवन के बारे में अपने इंसानी बोध के अनुसार हम क़ुरआन के द्वारा दी गयी कल्पना को उसके शब्दों में इसी तरह समझ सकते हैं जैसा कि इस दुनिया में हम अपनी तमाम भाषाई, बौद्धिक और भौतिक सीमाओं के मुताबिक पचास हज़ार वर्ष की

दूरी की गणना कर सकते हें। हमें जन्नत के बारे में अल्लाह के पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल. की इस हदीस को ज़हन में रखना चाहिए जिसे आख़िरत के किसी भी मामले पर लागू किया जा सकता है कि "(अल्लाह ने) वहां ऐसी नेअमतें रखी हैं जिनको न किसी आंख ने देखा न किसी कान ने सुना और न किसी इंसान के दिल में कभी उनका विचार आया।" (बुखारी, इब्ने माजा)

## फ़रिशतों पर ईमान इस्लामी अक़ीदे का हिस्सा (आस्था का अंग) है

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَ هُدًى وَّ بُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۹۷﴾ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَ مَلٰٓئِكَتِهٖ وَ رُسُلِهٖ وَ جِبْرِيْلَ وَ مِيْكٰلَ فَاِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿۹۸﴾

कह दीजिये, कौन है जो जिब्राईल से दुश्मनी रखे, वही तो क़ुरआन को आपके दिल तक उतारते है अल्लाह के हुक्म से, वो अल्लाह की सारी किताबों की तसदीक़ करते हैं, रहनुमाई करते हैं, ख़ुशख़बरी देते हैं मोमिनीन को। जो कोई अल्लाह का दुश्मन हो, उसेके फ़रिश्तों का दुश्मन हो, उसके रसूलों का दुश्मन हो, जिब्राईल और मिकाईल का दुश्मन हो जान ले कि अल्लाह ऐसे काफ़िरों का दुशमन है। (2:97-98)

لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَ الْمَغْرِبِ وَ لٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ الْمَلٰٓئِكَةِ وَ الْكِتٰبِ وَ النَّبِيّٖنَ ۚ وَ اٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِي الْقُرْبٰى وَ الْيَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِيْنَ وَ ابْنَ السَّبِيْلِ ۙ وَ السَّآئِلِيْنَ وَ فِي الرِّقَابِ ۚ وَ اَقَامَ الصَّلٰوةَ وَ اٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ وَ الْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ وَ الصّٰبِرِيْنَ فِي الْبَاْسَآءِ وَ الضَّرَّآءِ وَ حِيْنَ الْبَاْسِ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ؕ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿۱۷۷﴾

नेकी ये नहीं है के तुम सिर्फ़ अपना मुँह पूरब व पश्चिम को कर लो, बल्कि नेकी दरअसल यही है के जो अल्लाह पर पूरा पूरा यक़ीन लायें यौमे आख़िरत के दिन पर, फ़रिश्तों पर, किताबों पर, रसूलों पर ईमान लायें, और माल जो उनको बड़ा अज़ीज़ है अपने रिश्तेदारों को, यतीमों को, मोहताजों को, मुसाफ़िरों को, मांगने वालों को और ग़ुलामों को आज़ाद कराने में ख़र्च करें, नमाज़ बराबर पढ़ते रहें और ज़कात देते रहें, जब वायदा करें तो इसको पूरा भी किया करें, और सख़्ती और तकलीफ़, और लड़ाई में सब्र किया करें, और अडिग रहा करें। यही हैं जो सच्चे हैं, और यही वो हैं जो अल्लाह से डरने वाले हैं। (2:177)

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَ الْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ مَلٰٓئِكَتِهٖ وَ كُتُبِهٖ وَ رُسُلِهٖ ۫ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ

जो चीज़ अल्लाह की तरफ़ से रसूल पर नाज़िल हुई है (यानी क़ुरआन) उस पर रसूल को और तमाम मोमिनीन को पूरा अक़ीदा है। सबके सब अल्लाह पर और उसके

رُسُلِهٖ ۫ وَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَا ۫ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَ اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨٥﴾

फ़रिश्तों पर, और उसकी किताबों पर, और उसके रसूलों पर ईमान रखते हैं, अल्लाह के रसूलों में से किसी में भेदभाव नहीं करते। और कहते हैं कि हमने आपका कलाम सुना हम ने ख़ुशी से इताअत की आज्ञा पालन करते हैं और आपसे बख़्शिश चाहते हैं ऐ हमारे रब! और आप ही की तरफ़ लौटना है। (2:285)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهٖ وَ الْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَ الْكِتٰبِ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَ مَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَ مَلٰٓئِكَتِهٖ وَ كُتُبِهٖ وَ رُسُلِهٖ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ﴿١٣٦﴾

और तुम अल्लाह ही की इबादत किया करो, और उसके साथ किसी दूसरे को शरीक ना किया करो, और अपने माँ बाप के साथ, अपने क़रीबी रिश्तेदारों के साथ, यतीमों के साथ, ग़रीबों के साथ, पास वाले पड़ोस के साथ, दूर वाले पड़ोस के साथ, महफ़िल में बैठों के साथ, और मुसाफ़िर के साथ, और अपने ग़ुलामों और लौंडियों के साथ अच्छा सलूक किया करो, बिलाशुबह अल्लाह तो उनको महबूब नहीं रखता जो अपने आपको बड़ा समझते हैं और शेख़ी बघारते हैं। (4:136)

यह बात इस्लाम के बुनियादी अक़ीदों (मौलिक आस्थाओं) में से है कि आदमी फ़रिश्तों के अस्तित्व पर ईमान रखे और उन तमाम बातों को माने जो उनके बारे में क़ुरआन में और सही हदीसों में बताई गयी हैं। यह ग़ैब (अदृश्य) पर ईमान का हिस्सा है यानी उन बातों या चीज़ों पर ईमान जो इंसान की इन्द्रियों और स्पर्श व समझ से परे हैं और जिनके बारे में ज्ञान का स्रोत अल्लाह की *वह्यि* है। क़ुरआन इस बात पर बार बार ज़ोर देता है कि फ़रिश्ते केवल अल्लाह के पैदा किए जीव हैं, और जब तक उन्हें अल्लाह कोई काम करने का आदेश न दे तब तक वे कोई हरकत करने की योग्यता नहीं रखते। लिहाज़ा इस्लामी अक़ीदे में फ़रिश्तों के मुक़ाम या हैसियत के बारे में कोई अतिश्योक्ति या कोई कमी करने की कोई गुंजाइश नहीं है। यह मानना कि फ़रिश्ते देवी या देवताओं की तरह हैं इस्लामी अक़ीदे के ख़िलाफ़ है और इसी तरह यह मानना भी इस्लामी अक़ीदे के ख़िलाफ़ है कि फ़रिश्तों का कोई वजूद नहीं है या फरिशते कुछ नहीं करते।

# (ब) अदृश्य जीव अलजिन्न

## जिन्नों का स्वरूप

وَ الْجَآنَّ خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ ﴿۲۷﴾

और जिन्न को उससे पहले बे धुएं की आग से पैदा किया। (15:27)

وَ اِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَ ذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِيْ وَ هُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ﴿۵۰﴾

और जब हमने फ़रिश्तों से कहा के आदम (अ.स.) को सज्दा करो तो सब ने सज्दा किया, मगर इब्लीस ने नहीं किया, वो जिन्नात में से था तो उसने अपने रब का कहा ना माना, तो फिर क्या तुम उसको और उसकी औलाद को मेरे सिवा दोस्त बनाते हो जबके वो तुम्हारे दुश्मन हैं, ये ज़ालिमों के लिये बुरा बदल है। (18:50)

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿۱۸﴾

यही वो लोग हैं जिन के बारे में भी उन लोगों के साथ अल्लाह की बात पूरी हो चुकी जो उनसे पहले जिन और इनसान हो गुज़रे हैं बेशक ये नुक़सान उठाने वाले हैं। (46:18) और देखें 7:38

وَ خَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ ﴿۱۵﴾

और जिन्नात को आग के शोले से पैदा किया। (55:15)

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ؕ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ﴿۳۳﴾

ऐ जिन्नो व इंसानों के गिरोह अगर तुम से हो सके के आसमानों और ज़मीन के किनारे से निकल जाओ तो निकल जाओ, जहां निकल कर जाओगे सल्तनत उसी की है। (55:33)

فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ ۙ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَ لَا جَآنٌّ ﴿۵۶﴾

उनमें नीची निगाह वाली औरतें होंगी जिनको उनसे पहले ना किसी इन्सान ने और ना किसी जिन्न ने हाथ लगाया होगा। (55:56, 74)

क़ुरआन यह इशारा करता है कि अदृश्य जीव (जिन्न) आग की लपट से पैदा किया गया है जो धुंवें से बुझती नहीं है, बहुत तेज़ होती है और घुसने वाली होती है। यह चीज़ जिन्न और

इंसान की बनावट में फ़र्क़ को दर्शाती है कि इंसान को बजने वाली मिट्टी से बनाया गया है। इस तरह इन दोनों जीवों की प्रकृति एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न है, यह दोनों अलग अलग प्रजातियां हैं और इनके स्वरूप और जीवन में अन्तर है। जिन्नों के पास अपनी सूझबूझ की शक्ति होती है, अपनी मर्ज़ी और ज़िम्मेदारी होती हे और उन्हें भी अल्लाह ने अपने संदेश का सम्बोधक बनाया है, जैसा कि आने आने वाली आयतों से पता चलता है। ''इब्लीस'' जिसे अंग्रेज़ी में सेतन या फ्रांसीसी भाषा में लूसीफ़र कहा जाता है, जो जिन्नों में से ही था (18:50), उसकी अवज्ञा (नाफ़रमानियों) इस संदर्भ में महत्वपूर्ण है। इस्लामी ज्ञान के एक प्रमाणित और मशहूर आलिम हसन बसरी का मत यही था जो कि क़ुरआनी आयत की व्याख्या पर आधारित है। इब्लीस की पैदाइश के बारे में यह स्पष्टीकरण कि वह जिन्नों में से था इस ग़लतफ़हमी को दूर करता है कि वह वास्तव में एक फ़रिश्ता था जिसने अल्लाह की नाफ़रमानी की, जैसा कि इस संदर्भ में क़ुरआन का बयान है कि अल्लाह ने फ़रिश्तों को आदम के आगे सिजदा करने का हुक्म दिया था और वे सब आदम के आगे झुक गए थे सिवाय इब्लीस के। सिद्धांत यह है कि फ़रिश्ते अल्लाह के किसी आदेश से हट नहीं सकते हैं और उन्हें जो कुछ आदेश दिया जाता है उसे अवश्य ही पूरा करते हैं( 66:6)।

इस घटना के संदर्भ में क़ुरआन के इस बयान से तर्क लेते हुए कोई यह कह सकता है कि अल्लाह का हुक्म तो फ़रिश्तों के लिए था। लेकिन, अगर जिन्न वहां मौजूद थे तो उनसे भी यह अपेक्षा थी कि वे भी इस आदेश का पालन करेंगे क्योंकि उनका दर्जा फ़रिश्तों से कम ही समझा जाता है। इब्लीस भी चूंकि एक जिन्न ही था लेकिन उसने अवज्ञा (नाफ़रमानी) जताई क्योंकि जिन्न अपनी मर्ज़ी और पसन्द का अधिकार रखते हें। इब्लीस ने अल्लाह से कुतर्क करते हुए अपनी इस हैसियत का हवाला दिया जो अल्लाह ने जिन्नों को दी है। लेकिन जिन्नों की शक्ति असीमित या निरंकुश नहीं है और चूंकि उन्हें आग से पैदा किया गया हे, इसलिए वे हर वह काम नहीं कर सकते जो करना चाहें, क्योंकि वे ख़ुद ख़ुदा नहीं हें बल्कि केवल ख़ुदा की मख़लूक (पैदा किए गए जीव) हैं। अल्लाह के सभी जीवों की तरह जिन में इंसान भी शामिल हैं जिन्न भी अपनी क्रियाओं में अल्लाह के बनाए हुए नियमों से बाध्य हैं और उन सीमाओं से बाहर नहीं जा सकते जिनका उन्हें पाबन्द किया गया है।

जिन आयतों में कुकर्मियो की सज़ा के लिए जहन्नम और जहन्नम में मिलने वाली यातनाओं का ज़िक्र किया गया है उनमें कुछ स्थानों पर ''उमम'' का शब्द प्रयोग हुआ है और जिन्नों व इंसानों की उमम का ज़िक्र है (7:38; 46:18)। यह उम्मत शब्द का बहुवचन है जिसका अर्थ है समूह या वर्ग (मिसाल के लिए देखें 28:23)। यह शब्द ऐसे वर्गों के लिए उपयोग होता है जो एक दूसरे से भिन्न होते हैं और यह अन्तर या भेद किसी एक प्रजाति या वर्ग में भी किसी आधार पर होता है। तो क्या ये आयतें ख़ास तौर से जिन्नों में अलग अलग समूहों या उनके

बीच अन्तर को दर्शाती हैं ? क्या उनमें प्रजनन की क्षमता और उसके के बाद दूसरी पीढी का पता देती हैं? जिन आयतों में जन्नत के अन्दर रफ़ीक़ो (सह वासियों) का ज़िक्र है जैसे कि *''उन्हें किसी इंसान या जिन्न ने पहले न छुआ होगा''* (55:56,74), से भी कुछ सवाल पैदा होते हैं। क्या इस बयान को इंसानों और जिन्नों के बीच लैंगिक सम्बंध की सम्भावना की तरफ़ एक इशारा माना जा सकता है? या जिन्नों के अन्दर कामशक्ति होने और प्रजनन की योग्यता होने का इशारा माना जा सकता है? इंसानों और जिन्नों के बीच बनावट और प्रकृति का अन्तर क़ुरआन के बयान को समझने के लिए उन हूरू की.. की पाकदामनी की तरफ़ एक इशारा होता, ख़ास तौर से जब उनके लिए *''नीची निगाह वालियों''* का हवाला दिया जाता है। क़ुरआन में इन सवालों का जवाब मौजूद नहीं है क्योंकि जिन्न साधारणतयः इंसान से अलग एक जीव हैं। इन सवालों का जवाब पाने के लिए जहां तक रसूलुल्लाह की हदीसों का सवाल है तो मैं केवल वही हदीसें पेश करूंगा जो उपरोक्त क़ुरआनी आयतों की बुनियादी बातों से सम्बंधित हैं, उनका पूरा विवरण नहीं, क्योंकि हदीसों को विशेष रूप से समझने के लिए अलग तरह के प्रयासों की ज़रूरत होती है। उन बाग़ों की हूरों के बारे में जिन्हें "पहले किसी ने न छुआ होगा", मैं 56:35-38 आयतों को पेश करूंगा जो यह इशारा करती हैं कि "उन (हूरों) को पैदा किया तो उनको कुंवारियां बनाया"। इन आयतों से सम्बंधित अपने तफ़सीरी नोट में मुहम्मद असद लिखते हैः ''रसूल सल्ल. की बहुत सी हदीसों के मुताबिक़ जो तिबरी और इब्ने कसीर ने पूरी की पूरी नक़ल की हैं, रसूलुल्लाह ने कई मौक़ों पर फ़रमाया कि सभी "स्वालेह (सदाचारी) औरतें, चाहें दुनिया में कितनी भी बूढ़ी हो कर मरी हों, कुंवारी और जवान स्थिति में उठाई जाएंगी, और अपने मर्द साथियों की हम उम्र होंगी और जन्नत में वे हमैशा जवान ही रहेंगी"।

## ख़ुदा नहीं ख़ुदा के पैदा किए जीव

وَ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَ خَلَقَهُمْ وَ
خَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَ بَنٰتٍۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ
سُبْحٰنَهٗ وَ تَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۱۰۰﴾ بَدِيْعُ
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ اَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ
وَّ لَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ؕ وَ خَلَقَ كُلَّ
شَيْءٍ ۚ وَ هُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۱۰۱﴾

और उन्होंने जिन्नात को अल्लाह का शरीक बना रखा है, जबकि अल्लाह ने उनको पैदा किया है, और उन्होंने अल्लाह के हक़ में बेटे और बेटियां बिना सुबूत तराशी हैं, और अल्लाह तो पाक है और बालातर है उन सब बातों से जो वो बयान करते हैं। वही आसमानों और ज़मीन का जनक है, अल्लाह के औलाद कहां हो सकती है जबके उसकी कोई बीवी नहीं है, अल्लाह ही ने हर चीज़ पैदा की है, और वो ही हर चीज़ को ख़ूब

जानता है। (6:100-101)

وَ يَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ يَقُوْلُ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اَهٰٓؤُلَآءِ اِيَّاكُمْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ۝ قَالُوْا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ الْجِنَّ ۚ اَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ ۝

और जिस रोज़ अल्लाह सब को जमा करेगा, फिर फ़रिश्तों से कहेगा के क्या ये लोग तुम्हारी पूजा करते थे। फ़रिश्ते कहेंगे, तू पाक है, तू ही हमारा दोस्त है, ना के ये, बल्के ये तो जिन्नात की पूजा किया करते थे, उनमें से अक्सर जिन्नात ही को मानते थे। (34:40-41)

وَ جَعَلُوْا بَيْنَهٗ وَ بَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ؕ وَ لَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ اِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ۝

और उन्होंने अल्लाह और जिन्नों में रिश्तेदारी क़ायम की है, हालांके जिन्नात जानते हैं के वो अल्लाह के सामने हाज़िर किये जायेंगे। (37:158)

जैसा कि कुछ लोग, ख़ास तौर से इस्लाम की शुरूआत के समय अरब के लोग, फ़रिश्तों में ख़ुदाई की कल्पना रखते थे और उन्हें अल्लाह के साथ उसकी ताक़त व क़ुदरत में शरीक समझते थे और यह कहते थे कि वे अल्लाह की बेटियां हैं, कुछ दूसरे लोग जिन्नों को खुदा के गुण रखने वाला समझते हैं और उन्हें खुदा के साझीदार बनाते हें। ऐसा लगता है कि कुछ लोग फरिशतों और जिन्नों में फ़र्क़ नहीं कर पाते थे और धोखे में रहते थे क्योंकि दोनों ही जीव अदृश्य हैं। वे फ़रिश्तों की इबादत का दावा करते थे लेकिन उनका यह दावा ग़लती से या किसी और वजह से सही नहीं था, वे वास्तव में जिन्नों को पूजते थे और उनकी ताक़त से डरते थे और उन्हें खुश करने तथा उनके क्रोध से बचने के लिए उनकी इबादत किया करते थे। क़ुरआन इस बात पर ज़ोर देता है कि अल्लाह एक है, वही वास्तविक सृष्टा और जनक है और फरिशतों, जिन्नों और अन्य सभी जीवों का स्वामी है और कोई उसका साझीदार होने का दावा नहीं कर सकता, न कोई उसका बेटा या बेटी हो सकता है, चाहे इंसानों में से हो, फरिशतों में से हो या कोई और हस्ती हो।

## ज़िम्मेदारी और बदला

وَ يَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَ قَالَ اَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا

और जिस रोज़ अल्लाह तमाम मख़लूक़ को जमा करेगा (और फ़रमायेगा) ऐ जिनों की क़ौम! तुमने इन्सानों (को गुमराह करने) में बड़ा हिस्सा लिया है और उनके इन्सान दोस्त कहेंगे, ऐ हमारे रब! हमने आपस में एक दूसरे से

بِبَعْضٍ وَّ بَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِیْٓ اَجَّلْتَ لَنَا ؕ
قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِیْنَ فِیْهَآ اِلَّا مَا
شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِیْمٌ عَلِیْمٌ ﴿۱۲۸﴾ وَ
كَذٰلِكَ نُوَلِّیْ بَعْضَ الظّٰلِمِیْنَ بَعْضًۢا بِمَا
كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ﴿۱۲۹﴾ یٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَ
الْاِنْسِ اَلَمْ یَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ یَقُصُّوْنَ
عَلَیْكُمْ اٰیٰتِیْ وَ یُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ یَوْمِكُمْ
هٰذَا ؕ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰۤی اَنْفُسِنَا وَ
غَرَّتْهُمُ الْحَیٰوةُ الدُّنْیَا وَ شَهِدُوْا عَلٰۤی
اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِیْنَ ﴿۱۳۰﴾

ख़ूब फ़ायदा उठाया, और अपनी निर्धारित मुद्दत तक पहुंच गए जो आपने हमारे लिये मुक़र्रर की थी, अल्लाह फ़रमायेगा के अब तुम सबका ठिकाना दोज़ख़ है, उसमें हमेशा हमेशा रहोगे, हाँ अगर अल्लाह चाहे (तो और बात है) बिला शुबह तेरा रब हिकमतों वाला, ख़ूब जानने वाला है। और इसी तरह हम कुछ जाहिलों को उनके आमाल की वजह से एक दूसरे के क़रीब रखेंगे। ऐ जिन्नात! और इन्सानों की जमात, क्या तुम ही में से तुम्हारे पास रसूल नहीं पहुंचे थे, जो तुम को मेरे अहकाम बयान करते थे और तुमको इस दिन से डराया करते थे, तो कहेंगे के हम अपने जुर्म का इक़रार करते हैं और उनको दुनिया की ज़िन्दगी ने भूल में डाले रखा था, और ये लोग इक़रार करेंगे के वो काफिर थे। (6:128-130)

قَالَ ادْخُلُوْا فِیْۤ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ
مِّنَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ فِی النَّارِ ؕ كُلَّمَا
دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ اُخْتَهَا ؕ حَتّٰۤی اِذَا
ادَّارَكُوْا فِیْهَا جَمِیْعًا ۙ قَالَتْ اُخْرٰىهُمْ
لِاُوْلٰىهُمْ رَبَّنَا هٰۤؤُلَآءِ اَضَلُّوْنَا فَاٰتِهِمْ
عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ؕ قَالَ لِكُلٍّ
ضِعْفٌ وَّ لٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ ﴿۳۸﴾ وَ قَالَتْ
اُوْلٰىهُمْ لِاُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَیْنَا
مِنْ فَضْلٍ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ
تَكْسِبُوْنَ ﴿۳۹﴾

अल्लाह फ़रमाएगा तुम उन्हीं उम्मतों के साथ दोज़ख़ में जाओ जो तुम से पहले जिन और इन्सान की गुज़र चुकी हैं, जब भी काफ़िरों की जमात दोज़ख़ में जाएगी तो अपनी जैसी दूसरी जमात पर लानत करेंगी, यहां तक जब वहां ये सब जमा होंगे। तो पीछे आने वाले पहले आने वालों के बारे में कहेंगे, ऐ हमारे रब! हमको इन लोगों ने गुमराह किया था सो इनको दोज़ख़ का अज़ाब दोगुना दीजिये, अल्लाह फ़रमाएगा के सब ही को दोगुना है लेकिन तुमको ख़बर नहीं है। और पहले लोग पिछलों से कहेंगे के फिर तुम को हम पर कोई बरतरी नहीं, सो तुम भी अपने किए के बदले अज़ाब चखो। (17:38-39)

وَ لَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِیْرًا مِّنَ
الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ ۖۗ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا
یَفْقَهُوْنَ بِهَا ۫ وَ لَهُمْ اَعْیُنٌ لَّا
یُبْصِرُوْنَ بِهَا ۫ وَ لَهُمْ اٰذَانٌ لَّا

179. और हमने दोज़ख़ के लिये जिन्नों व इंसानों में से बहुत से ऐसे लोग पैदा किये हैं जिनके दिल ऐसे हैं जिनसे समझते नहीं और जिनकी आँखें ऐसी हैं जिनसे देखते नहीं, और जिनके कान ऐसे हैं जिनसे सुनते नहीं, ये लोग मवेशियों की तरह हैं बल्कि ये ज़्यादा गुमराह हैं,

يَسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ﴿۱۷۹﴾

ये लोग ग़फ़्लत में पड़े हैं। (7:179)

قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَ الْجِنُّ عَلٰٓى اَنْ يَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَ لَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا ﴿۸۸﴾

आप कह दीजिये अगर तमाम इन्सान और जिन्नात इस बात के लिये जमा हो जायें के ऐसा क़ुरआन बना लावें तो भी ऐसा ना ला सकेंगे, और अगरचे वो सब एक दूसरे के मददगार भी बन जायें। (17:88)

وَ قَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ فَزَيَّنُوْا لَهُمْ مَّا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ وَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿۲۵﴾

और हमने उनके लिये कुछ साथ रहने वालों को मुक़र्रर किया था तो उन्होंने उनके अगले और पिछले आमाल को अच्छा कर के दिखाया था, और उनके बारे में भी उन लोगों के साथ जो जिन्नों और इंसानों में से पहले हो गुज़रे हैं अल्लाह का ये क़ौल पूरा होकर रहा कि बेशक वो ख़सारे में है।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿۱۸﴾

यही वो लोग हैं जिन के बारे में भी उन लोगों के साथ अल्लाह की बात पूरी हो चुकी जो उनसे पहले जिन और इनसान हो गुज़रे हैं बिला शुबह ये नुक़सान उठाने वाले हैं। (46:18)

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَ الْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ﴿۵۶﴾ مَآ اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّ مَآ اُرِيْدُ اَنْ يُّطْعِمُوْنِ ﴿۵۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ ﴿۵۸﴾

और मैंने जिन्नों और इन्सानों को तो महज़ अपनी इबादत के लिये पैदा किया है। मैं उनसे रिज़्क़ (रोज़ी) का तालिब नहीं हूं और ना मैं ये चाहता हूं के वो मुझे खिलायें। अल्लाह ख़ुद ही सबको रिज़्क़ देने वाला, क़ुव्वत वाला, क़ुदरत वाला है। (51:56-58)

उपरोक्त आयतों में जिन्नों की जिम्मेदारियों का उल्लेख किया गया है और इस बात को स्पष्ट किया गया है कि आख़िरत में उनके कर्मों का भी फैसला होगा और उसके मुताबिक़ उन्हें सज़ा या इनाम मिलेगा। इसके अलावा, इन आयतों से यह इशारा भी मिलता है कि अल्लाह के कुछ पैग़म्बर जिन्नों के बीच भी आए हैं और उन्हें फ़ैसले का दिन (आख़िरत) और बदला मिलने की ख़बर दी है। क्या अल्लाह के ये पैग़म्बर इंसान ही थे जिन्होंने इंसानों के साथ जिन्नों

को भी अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाया, या फिर वे जिन्न ही थे। इस सवाल पर अधिकतर आलिम पहले विचार से सहमत हें। इब्ने कसीर ने अपनी तफ़सीर में लिखा है कि उनसे पहले के महत्वपूर्ण आलिम इसी विचार के थे। क्या जिन्न इंसानी पैग़म्बरों के सम्बोधकों में शामिल थे या वे अपनी अदृश्य शक्ति और अपनी विशेष शक्तियों की वजह से खुद उनके पैग़ाम को सुन लेते थे। क़ुरआन में जिन्नों के द्वारा क़ुरआन सुनने और फिर उसका पैग़ाम अपने साथियों तक पहुंचाने का जो हवाला दिया गया है उससे इस दूसरे विचार का ही समर्थन होता है (51:56)। जब जिन्न अपनी विशेष योग्यताओं और क्षमताओं को काम में नहीं लाते और अपनी ज़िम्मेदारी से मुंह मोड़े रखते हैं तो क़ुरआन उनकी भी निन्दा इसी तरह करता है जिस तरह वह इंसानों की निन्दा करता है जो खुद अपने ऊपर जुल्म करते हैं, और अपने इस बर्ताव की वजह से उन्हें जानवरों से भी गया गुज़रा बताता है जिनके पास यह क्षमताएं हैं ही नहीं।

इंसानों के साथ जिन्नों को भी यह चुनौती दी गयी है कि वे क़ुरआन की तरह का कोई कलाम घड कर दिखाएं (17:88)। इससे एक अचम्भा (हैरत में डालने वाला सवाल) सामने आता है कि क्या दोनो जीवों के अन्दर सोचने और व्यक्त करने की समान क्षमता है, या यह कि जिन्न इंसानों के अन्दर यह भावनाएं और रवैया पैदा करते हैं जिन से उनके अन्दर घमण्ड, आत्मसरहाना और मनभावुक विचार पैदा होते हैं। यह बात स्पष्ट है कि जिन्नों और इंसानों के बीच सम्पर्क के कुछ निर्धारित माध्यम हैं जैसा कि आयत 6:128 से इशारा मिलता है: *"ऐ जिन्नों के समूह तुम ने इंसानों से बहुत फायदे प्राप्त किए तो जो इंसानों में उनके मित्र होंगे वे कहेंगे कि पालनहार हम एक दूसरे से फ़ायदा उठात रहे"।*

आयत 41:25 के शुरू में कुकर्मियों के संदर्भ में कहा गया कि *"उनकी संगत में रहने वाले" और उसके अन्त में बुराई में लगे "जिन्नो और इंसानी की जमातों"* का ज़िक्र किया गया है। क्या जिन्न और शैतान के बीच जिसका ज़िक्र आगे आएगा सम्बंध अलग है और जिन्न व इंसान के बीच सम्बंध अलग, अर्थात केवल रूहानी, या उसका कोई शरीरिक पहलू भी है? क़ुरआन ज़िम्मेदारियों में कोताही के संदर्भ में जिन्नो और इंसानों दोनों का ज़िक्र करता है जो अपने सरदारों और बड़ों का या पहले के लोगों का अंधा अनुसरण करते हैं और अपनी ज़िम्मेदारियों से आंखें चुराते हैं जो इन सब को लेकर जहन्नम में जा गिरेंगे (7:38-39), जबकि क़ुरआन व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी पर ज़ोर देता है और दूसरों के अंधे अनुसरण या नक़ल करने की निन्दा करता है (मिसाल के लिए देखें 2:166-167; 14:21; 33:67-68; 34:13-33; 40:47-48; और देखें 2:170; 5:4,10; 7:28,70-71; 10:78; 11:62-63,109; 14: 10-11; 21:53-54; 26:74-77: 31:21; 43:22-24)।

क्या जिन्नों में दर्जाक्रम या जीवों में पाई जाने वाली व्यवस्था के प्राकृतिक नियम होते हैं? (देखें 7:38; 27:17), और यह कि क्या उनके अन्दर व्यक्तिगत रूप से सूझबूझ और अक़लमन्दी

की अलग अलग सतहें होती हैं, जैसा कि आयत 27:39 से अंदाज़ा होता है। अपने चिंतन को क़ुरआन तक ही सीमित रखने पर हमें इसका विस्तृत उत्तर नहीं मिलता, और हदीसों में इस संदर्भ में जो विवरण है वह इस किताब के मूल विषय के दायरे से बाहर हैं।

## जिन्नों और हज़रत सुलैमान के बीच ख़ास सम्बंध का बयान

وَ لِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّ
رَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚ وَ اَسَلْنَا لَهٗ عَيْنَ
الْقِطْرِ ؕ وَ مِنَ الْجِنِّ مَنْ يَّعْمَلُ بَيْنَ
يَدَيْهِ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ؕ وَ مَنْ يَّزِغْ مِنْهُمْ
عَنْ اَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ
السَّعِيْرِ ﴿۱۲﴾ يَعْمَلُوْنَ لَهٗ مَا يَشَآءُ مِنْ
مَّحَارِيْبَ وَ تَمَاثِيْلَ وَ جِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَ
قُدُوْرٍ رّٰسِيٰتٍ ؕ اِعْمَلُوْٓا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا ؕ
وَ قَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ ﴿۱۳﴾ فَلَمَّا
قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلٰى مَوْتِهٖٓ
اِلَّا دَآبَّةُ الْاَرْضِ تَاْكُلُ مِنْسَاَتَهٗ ۚ فَلَمَّا
خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ اَنْ لَّوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ
الْغَيْبَ مَا لَبِثُوْا فِي الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ﴿۱۴﴾ ؕ

और सुलैमान के लिये हवा को (भी) उनके आधीन कर दिया, और उसकी सुबह की मंज़िल एक महीना की राह होती है और शाम की मंज़िल भी एक महीने की राह होती है, और उनके लिये हमने तांबे का झरना जारी कर दिया, और जिन्नात उनके रब के हुक्म से उनके सामने काम करते थे, और जो उनमें से हमारे हुक्म से फ़िरेगा उसको हम दोज़ख़ की आग का मज़ा चखा देंगे। ये जिन्नात उनके लिये वो चीज़ें बनाते थे जो वो चाहते थे यानी बड़ी बड़ी इमारतें और मूर्तियों और बड़े बड़े लगन जैसे तालाब, और देगें जो एक ही जगह रखी रहीं। ऐ दाऊद की औलाद! तुम नेक अमल किया करो, और मेरे बन्दों में शुक्र गुज़ार बहुत कम हैं। फिर जब हमने उनकी मौत का हुक्म दिया, तो किसी चीज़ से भी उनकी मौत का पता ना चला, मगर घुन के कीड़े से जो सुलैमान की लाठी को खा रहा था, जब वो गिर पड़े, तब जिन्नात को पता चला, के वो अगर गुप्त ज्ञान से वाक़िफ़ होते तो वो अपमान की पीड़ा न झेलते। (34:12-14)

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا لَّا
يَنْۢبَغِيْ لِاَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ
الْوَهَّابُ ﴿۳۵﴾ فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيْحَ تَجْرِيْ
بِاَمْرِهٖ رُخَآءً حَيْثُ اَصَابَ ﴿۳۶﴾ ۙ وَ الشَّيٰطِيْنَ
كُلَّ بَنَّآءٍ وَّ غَوَّاصٍ ﴿۳۷﴾ ۙ وَّ اٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ

उन्होंने दुआ मांगी, के ऐ मेरे रब! क़सूर माफ़ फ़रमा, और मुझे एक साम्राज्य दीजिए के मेरे अलावा किसी को भी नसीब ना हो, बेशक आप बड़ा अता फ़रमाने वाले हैं। सो हमने हवा को उनके आधीन कर दिया, के वो उनके हुक्म से जहाँ वो चाहें नर्मी से चला करे। और जिन्नात को भी ताबे कर दिया यानी इमारतें बनाने वालों और ग़ोताख़ोरों को भी। और दूसरे जिन्नात को

فِي الْاَصْفَادِ ﴿٣٨﴾ هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٩﴾

भी जो ज़ंजीरों में जकड़े रहते थे। (हमने कहा के) ये हमारा वरदान है, सो तुम चाहे किसी को दो या ना दो तुमसे उसको कोई हिसाब ना लिया जायेगा। (38:38-39)

وَ حُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَ الْاِنْسِ وَ الطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٧﴾

और सुलेमान (अ.स.) के लिये जिन्नों और इन्सानों और पक्षियों के झुण्ड जमा किये गए थे, और उनको क्रमवार गठित कर दिया जाता था।

قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَ اِنِّيْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ ﴿٣٩﴾

एक विशालकाय जिन्न ने कहा, मैं उसको लाता हूं इससे पहले के आप अपनी जगह से उठें, और मुझे इस पर क़ुदरत है (और मैं) अमानत दार हूं। (27:39)

इन आयतों से पैग़म्बर हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम और जिन्नों के बीच ख़ास सम्बंध सामने आता है। यह बिल्कुल एक अनोखा सम्बंध है कि अल्लाह ने जिन्नों की एक निर्धारित संखया को हज़रत सुलैमान की सेवा में लगा दिया था, वे उनके लिए सामान बनाया करते थे, भवन निर्माण करते थे, लगन और बर्तन बनाते थे। ये जिन्न जब काम में लगे होते थे तो क्या यह ज़ाहिरी रूप में दिखाई देते थे या अनदेखे ही रहते थे? क़ुरआन से हमें इस सवाल का जवाब नहीं मिलता। जो बात साफ़ समझ में आती है वह यह कि सुलैमान (अलैहिस्सलाम) जिस तरह हवा से और पक्षियों से बातें करते थे इसी तरह जिन्नों से भी उनकी बातचीत होती होगी कि यह अल्लाह की तरफ़ से प्रदान की गयी वे विशेष शक्तियां थीं जो हज़रत सुलैमान को मिली हुई थें।

एक होशियार और बहादुर जिन्न ने हज़रत सुलैमान को सबा की रानी का सिंहासन उठा कर ला देने का प्रस्ताव किया और इतनी जल्दी कि इससे पहले कि वह अपनी जगह से उठें वह सिंहासन उनके सामने ला कर हाजिर कर दिया जाएगा। इन जिन्नों को (जो कि शायद शैतान थे जैसा कि 38:37-38 आयतों से इशारा मिलता है) हज़रत सुलैमान के आदेशों का पालन करने में लगा दिया गया था और वे कठिन परिश्रम के लिए इतने बाध्य थे और उल्लंघन करने पर उन्हे सज़ा का इतना भय था कि उन्हें हज़रत सुलैमान का अपने सिंहासन पर विराजमान रहते हुए मृत हो जाने का भी पता तब तक नहीं चल सका जब तक कि उनकी लाठी जिस पर वे टेक लगाते थे, कीड़ा लगने से गिर न गयी और उसके गिरने से उनका शरीर भी नीचे गिर गया।

वह कीड़ा *"दाब्बा"* कौन सा था और उसने कितने समय में उस लाठी को खाकर अन्दर से खोखला किया? हज़रत सुलैमान के मृत हो जाने का पता उनके घर वालों और रक्षकों को होने में ज़्यादा समय नहीं लगा होगा, चुनाँचे यह कोई सूक्ष्म कीड़ा घुन होगा जिसक कतरने से बहुत कम समय में ही यह सब कुछ हो गया। इन आयतों (34:14) से जिन्नों की शक्ति सीमित होने का पता चलता है कि उन्हें हज़रत सुलैमान की मौत हो जाने का पता ही तब तक नहीं चला जब तक उन्होंने हज़रत सुलैमान का मृत शरीर नीचे गिरते हुए नहीं देख लिया।

यह देखा जा सकता है कि हज़रत सुलैमान और जिन्नों के बीच सम्बंध बिल्कुल अलग तरह का था। यह हज़रत सुलैमान का ख़ास करिशमा और असाधारण शक्तियां थीं जो अल्लाह ने उन्हें दी थीं, और जिन्नों व इंसानों के बीच सम्बंध का कोई आम सिद्धांत इससे मालूम नहीं होता।

## जिन्नों का क़ुरआन सुनना

وَ اِذۡ صَرَفۡنَاۤ اِلَيۡكَ نَفَرًا مِّنَ الۡجِنِّ يَسۡتَمِعُوۡنَ الۡقُرۡاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوۡهُ قَالُوۡۤا اَنۡصِتُوۡا ۚ فَلَمَّا قُضِىَ وَلَّوۡا اِلٰى قَوۡمِهِمۡ مُّنۡذِرِيۡنَ ۝ قَالُوۡا يٰقَوۡمَنَاۤ اِنَّا سَمِعۡنَا كِتٰبًا اُنۡزِلَ مِنۡۢ بَعۡدِ مُوۡسٰى مُصَدِّقًا لِّمَا بَيۡنَ يَدَيۡهِ يَهۡدِىۡۤ اِلَى الۡحَقِّ وَ اِلٰى طَرِيۡقٍ مُّسۡتَقِيۡمٍ ۝ يٰقَوۡمَنَاۤ اَجِيۡبُوۡا دَاعِىَ اللّٰهِ وَ اٰمِنُوۡا بِهٖ يَغۡفِرۡ لَكُمۡ مِّنۡ ذُنُوۡبِكُمۡ وَ يُجِرۡكُمۡ مِّنۡ عَذَابٍ اَلِيۡمٍ ۝ وَ مَنۡ لَّا يُجِبۡ دَاعِىَ اللّٰهِ فَلَيۡسَ بِمُعۡجِزٍ فِى الۡاَرۡضِ وَ لَيۡسَ لَهٗ مِنۡ دُوۡنِهٖۤ اَوۡلِيَآءُ ؕ اُولٰٓئِكَ فِىۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ ۝

और जब हमने आपकी तरफ़ जिन्नात की एक जमात को मुतावज्जह किया जो क़ुरआन सुनने लगे, पस जब वो क़ुरआन के पास आ पहुंचे (तो आपस में) कहा ख़ामोश रहो, जब पढ़ना ख़त्म हुआ तो वो अपने समुदाय में ख़बर पहुंचाने के लिये वापस गए। उन्होंने कहा ऐ हमारी क़ौम! हमने एक किताब सुनी, जो मूसा के बाद नाज़िल हुई है जो किताबें उससे पहले नाज़िल हुई है, उनकी तसदीक़ करती, हक़ और सीधे रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करती है। ऐ हमारी क़ौम! अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले की बात क़ुबूल करो, और इस पर ईमान लाओ, अल्लाह तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा, और तुम को दुख देने वाले अज़ाब से महफ़ूज़ रखेगा। और जो अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले की बात क़ुबूल ना करेगा तो वो ज़मीन मे अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकता, और ना उसका अल्लाह के सिवा कोई हिमायती होगा, ये लोग सरीह गुमराही में हैं। (46:29-32)

قُلۡ اُوۡحِىَ اِلَىَّ اَنَّهُ اسۡتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ

ऐ नबी (स.अ.स.)! लोगों से कह दो कि मेरे पास वही

आई है के जिन्नों की एक जमात ने क़ुरआन सुना तो कहा के हमने एक अजीब क़ुरआन सुना। जो भलाई का रास्ता बताता है, सो हम उस पर ईमान ले आये, और हम अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं बनायेंगे। और ये के हमारे रब की शान बहुत बड़ी है, वो ना बीवी रखता है ना औलाद। और ये के हम में से बहुत से जो बेवकूफ़ हैं अल्लाह के बारे में झूट बातें करते हैं। और हमारा ये मानना था के इन्सान और जिन्न अल्लाह के बारे में झूट नहीं बोलते। और ये के कुछ आदमी कुछ जिन्नों की पनाह लिया करते थे तो उससे उनकी सरकशी और ज़्यादा हो गई। और ये के उनका भी ये मानना था जिस तरह तुम्हारा मानना था के अल्लाह किसी को दोबारा नहीं जिलाएगा। और ये के हमने आसमान को टटोला तो उसको मज़बूत चौकीदारों और अंगारों से भरा हुआ पाया। और ये के हम वहाँ बहुत से ठिकानों पर ख़बरें सुनने के लिये बैठा करते थे तो अब कोई सुनना चाहे तो अपने लिये अंगारा तैयार पाये। और ये के हमें मालूम नहीं के उससे ज़मीन वालों के हक़ में बुरा होने वाला है या उनके रब ने उनकी भलाई का इरादा किया है। और ये के हममें कोई नेक हैं और कोई और तरह के, हमारे कई तरह के ढंग हैं। और ये के हमने यक़ीन कर लिया है के हम ज़मीन में अल्लाह को हरा नहीं सकते, और ना भाग कर उसको थका सकते हैं। और जब हमने हिदायत की ये किताब सुनी तो इस पर हम ईमान ले आये, जो शख़्स अपने रब पर ईमान लाता है वो उसको ना तो कोई नुक़सान का डर होता है, ना ज़ुल्म का। और ये के हम में कुछ मानने वाले हैं और कुछ नाफ़रमान, तो जो फ़रमांबरदार हो गए तो उन्होंने भलाई का रास्ता तलाश कर लिया। और जो गुनहगार हैं वो दोज़ख़ का ईंधन हैं। (72:1-15)

الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ۙ﴿۱﴾
يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَ لَنْ
نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ۙ﴿۲﴾ وَّ اَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ
رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّ لَا وَلَدًا ۙ﴿۳﴾ وَّ
اَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ
شَطَطًا ۙ﴿۴﴾ وَّ اَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ
الْاِنْسُ وَ الْجِنُّ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۙ﴿۵﴾ وَّ اَنَّهٗ
كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ يَعُوْذُوْنَ
بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا ۙ﴿۶﴾ وَّ
اَنَّهُمْ ظَنُّوْا كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّبْعَثَ
اللّٰهُ اَحَدًا ۙ﴿۷﴾ وَّ اَنَّا لَمَسْنَا السَّمَآءَ
فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا وَّ
شُهُبًا ۙ﴿۸﴾ وَّ اَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ
لِلسَّمْعِ ؕ فَمَنْ يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ
شِهَابًا رَّصَدًا ۙ﴿۹﴾ وَّ اَنَّا لَا نَدْرِيْٓ اَشَرٌّ
اُرِيْدَ بِمَنْ فِي الْاَرْضِ اَمْ اَرَادَ بِهِمْ
رَبُّهُمْ رَشَدًا ۙ﴿۱۰﴾ وَّ اَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَ
مِنَّا دُوْنَ ذٰلِكَ ؕ كُنَّا طَرَآئِقَ قِدَدًا ۙ﴿۱۱﴾ وَّ
اَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِي الْاَرْضِ وَ
لَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ۙ﴿۱۲﴾ وَّ اَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا
الْهُدٰٓى اٰمَنَّا بِهٖ ؕ فَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِرَبِّهٖ فَلَا
يَخَافُ بَخْسًا وَّ لَا رَهَقًا ۙ﴿۱۳﴾ وَّ اَنَّا مِنَّا
الْمُسْلِمُوْنَ وَ مِنَّا الْقٰسِطُوْنَ ؕ فَمَنْ اَسْلَمَ
فَاُولٰٓئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ۙ﴿۱۴﴾ وَ اَمَّا
الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۙ﴿۱۵﴾

इन आयतों में यह बयान किया गया है कि जिन्नों के एक वर्ग ने अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़ुरआन पढ़ते सुना। ऐसा नहीं लगता कि अल्लाह के रसूल की दावत और संदेश प्रसार के दौरान इस तरह की घटना कई बार या बार बार हुई हो, और क़ुरआन में इस तरह की घटना किसी और पैग़म्बर के संदर्भ में बयान नहीं हुई है, सिवाए इसके कि *"सोहफि मूसा"* के हवाले से जिन्नात का संक्षिप्त बयान हुआ है (46:30)। कुछ दूसरी आयतों में यह भी बयान हुआ है कि इंसान जिन्नों की शरण लिया करते थे, हालांकि ऐसा कोई इशारा नहीं मिलता कि यह शरण किस तरह ली जाती थी या इसमें किस तरह का सम्बंध स्थापित होता है। क्या यह एक वास्तविक स्थिति होती है या काल्पनिक? भौतिक सम्बंध होता है या अभौतिक? क्या जिन्नों का वह गुट जिसने क़ुरआन सुना, अल्लाह के रसूल के पास क़ुरआन सुनने के मक़सद से ही आया था या संयोग से उसे क़ुरआन सुनने का मौक़ा मिला। और अल्लाह की हिदायत (64:92) हमैशा अपने प्राकृतिक नियमों, ख़ास तौर से कारक और नतीजों के नियम के अन्तर्गत काम करती है। अल्लाह के रसूल की एक हदीस से इशारा मिलता है कि जब जिन्नों ने क़ुरआन सुना तो आप वहां जिन्नों की उपस्थिति से बा-ख़बर नहीं थे। (मुस्लिम, इब्ने हंबल और तिरमिजी)।

यह भी इशारा मिलता है कि जिन्नों की अपनी सीमाएँ हैं जिनसे वे बाहर नहीं जा सकते, और अगर वे ऐसा करना चाहें तो उन्हें चोट पहुंच सकती है, जैसा कि इंसानों के साथ होता है: *"ऐ जिन्नो व इंसानों के समूह, अगर तुम्हारा बस चले कि आसमान और ज़मीन के किनारों से निकल जाओ तो निकलो और तुम नहीं निकल सकते जब तक तुम्हारे पास इसका ज़ोर न हो तुम पर आग के शोले और धुंवा छोड दिया जाएगा तो फिर तुम मुकाबला न कर सकोगे"* (55:33-35)। जिन्न आसमानों की ख़बर लेने के लिए आसमान के क़रीब उचित जगहों पर बैठने की जुगत में रहते थे और अल्लाह की तरफ़ से आने वाले पैग़ाम से बा-ख़बर रहते थे, खास तौर से जो पैग़ाम हज़रत मूसा की तरफ़ भेजे गए। यहाँ ख़ास तौर से हज़रत मूसा का जिक्र क्यों हुआ? क्या जिन्नों ने उनको भेजा गया पैग़ाम सुन लिया था? जिन्न अल्लाह के पैग़ामों को उनकी अलग अलग भाषाओं में कैसे समझ लेते हैं, और वे इसे अपनी वाणि में दूसरों को किस तरह समझाते हैं, *"जब वे अपने समुदाय में वापिस गए कि (उनको) समझाएँ।"* (46:29)। और जब अल्लाह का कोई पैग़ाम जिन्नों के पास कभी भी किसी भी माध्यम से पहुंचे तो फिर यह साफ़ हो जाता है कि उनमें कुछ लोग सदाचारी हैं और कुछ सदाचारी नहीं है, क्योंकि पैग़ाम को सुनने के बाद वे अलग अलग रस्तों पर लग गए (71:11)।

जिन्नों के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए मुसलमान क़ुरआन और प्रमाणित हदीसों से इसे समझने के पाबन्द हैं, और उन से अलग किसी भी माध्यम से और किसी भी जिज्ञासा में पड़ने से उन्हें बचने का हुक्म दिया गया है। इंसान और जिन्न अपनी प्रकृति और अपने

जीवन में अलग अलग हैं, मुसलमानों को क़ुरआन व *सुन्नत* में जादू के द्वारा या दूसरे माध्यमों से जिन्नों से सम्पर्क बनाने, या किसी भी मामले में, चाहे कोई जायज़ मक़सद ही हो, उनसे कोई भी मदद लेने में अपना समय और अपनी ऊर्जाओं को व्यर्थ करने से बचने के लिए चेताया गया है। उन्हें जिन्नों की मदद से या किसी और तरीक़े से जादू का सहारा लेने से भी मना किया गया है, यहाँ तक कि अगर जादू से कोई नुक़सान पहुंचने का आभास हो तो भी उसे आत्म रक्षा में जादू का सहारा लेने की अनुमति नहीं है (जैसा कि इमाम हंबल और अबू दाऊद की रिवायतों में है) या किसी के मुक़ाबले जिन्न से कोई मदद लेना भी वर्जित है। इंसान और जिन्न एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न हैं और जिन्नों के भी कर्म अलग अलग तरह के हैं इस स्थिति में कोई मोमिन इस बात को कैसे सुनिश्चित कर सकता है कि अगर कोई जिन्न उसके सम्पर्क में आ भी गया तो वह किस तरह का जिन्न होगा।

## शैतान और इब्लीस

وَ اِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ اَبٰى وَ اسْتَكْبَرَ ۫ وَ كَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۳۴﴾

और जब हमने फ़रिश्तों से कहा के तुम आदम के सामने सज्दा करो, तो वो सब सज्दे में गिर पड़े मगर इबलीस ने ना किया, और वो काफ़िरों में से हो गया। (2:34)

فَاَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيْهِ ۪ وَ قُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَ لَكُمْ فِى الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّ مَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿۳۶﴾

फिर शैतान ने दोनों को डगमगा दिया जन्नत से निकलवा दिया, हमने कहा, उतर जाओ, आपस मे दुश्मन रहो, एक मुद्दत तक तुम्हारा ठिकाना और ज़िन्दगी की पूँजी ज़मीन पर है। (2:36)

وَ لَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ۪ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ لَمْ يَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿۱۱﴾ قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ؕ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِىْ مِنْ نَّارٍ وَّ خَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ﴿۱۲﴾ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ اَنْ تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ

और हम ने तुमको पैदा किया, फिर हमने ही तुम्हारी सूरत बनाई, फिर हम ही ने फ़रिश्तों से कहा के आदम को सज्दा करो, सो सब ने सज्दा किया, मगर इबलीस ने ना किया, वो सज्दा करने वालों में ना हुआ। अल्लाह ने पूछा, तुझ को किस ने रोका के सज्दा ना किया जबके मैं तुमको हुक्म दे चुका था, उसने कहा, मैं इससे बेहतर हूं, आपने मुझको आग से पैदा किया और इसको आपने मिटटी से पैदा किया। अल्लाह ने कहा तू आसमान से उतर जा, तुझको कोई हक़ हासिल नहीं के तू घमण्ड

करे, आसमान में रह कर, सो निकल जा, बेशक तू ज़लीलों में शुमार होगा। तो उसने कहा, मुझे मोहलत दीजिये क़यामत तक। अल्लाह ने कहा के तुझ को मोहलत है। उसने कहा के इस वजह से के आपने मुझको गुमराह किया है, मैं क़सम खाता हूं के मैं उनके लिए आपकी सीधी राह पर बैठूंगा। फिर मैं उन पर हमला करूंगा उनके आगे से भी पीछे से भी, और उनके दाहिनी जानिब से भी और बायें जानिब से भी, और उन में अक्सरों को आप एहसान मानने वाला नहीं पायेंगे। अल्लाह ने कहा के तू यहां से निकल जा ज़लीलों ख़्वार, जो उनमें से तेरा कहना मानेगा तो मैं ज़रूर तुम सबसे जहन्नुम को भर दूंगा। (7:11-18)

اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿١٣﴾ قَالَ اَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى
يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿١٤﴾ قَالَ اِنَّكَ مِنَ
الْمُنْظَرِيْنَ ﴿١٥﴾ قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ
لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١٦﴾
ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ
خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ
شَمَآئِلِهِمْ ؕ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ
شٰكِرِيْنَ ﴿١٧﴾ قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا
مَّدْحُوْرًا ؕ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَـَٔنَّ
جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٨﴾

इब्लीस ने कहा, ऐ मेरे रब! चूंकि आपने मुझे भटकने के लिए छोड़ दिया मैं क़सम खाता हूं के मैं गुनाहों को उनकी नज़र में दुनिया में सज़ा के दिखलाऊंगा और उन सब को गुमराह कर दूंगा। बजुज़ उनके जो उनमें तेरे मुख़्लिस बन्दे हैं। अल्लाह ने फ़रमाया के ये एक सीधा रास्ता है जो मुझ तक पहुंचता है। बिला शुबह मेरे बन्दों पर तेरा क़ाबू ना चलेगा, सिवा उन गुमराह लोगों के जो तेरी पैरवी करेंगे। और बेशक उन सब के लिये दोज़ख़ का वादा है। (15:39-43)

قَالَ رَبِّ بِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ لَاُزَيِّنَنَّ لَهُمْ
فِى الْاَرْضِ وَلَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٣٩﴾ اِلَّا
عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٤٠﴾ قَالَ هٰذَا
صِرَاطٌ عَلَىَّ مُسْتَقِيْمٌ ﴿٤١﴾ اِنَّ عِبَادِيْ
لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ اِلَّا مَنِ
اتَّبَعَكَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَاِنَّ جَهَنَّمَ
لَمَوْعِدُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٤٣﴾

और जब हमने फ़रिश्तों से कहा के तुम आदम को सज्दा करो, तो उन सब ने सज्दा किया, मगर इब्लीस ने ना किया, कहा के क्या मैं इसको सज्दा करूं जिसको आप ने मिटटी से बनाया। उसके कहा, भला देख तो ये शख़्स जिसको आप मुझ पर फ़ौक़ियत दी तो, अगर आप मुझ को क़यामत तक के लिये मोहलत दे दें तो मैं इसकी औलाद को अपने बस में करूंगा, मगर कुछ को छोड़कर। इरशाद हुआ, जा! उनमें से जो तेरी पैरवी करेगा तो तुम

وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا
اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ قَالَ ءَاَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ
طِيْنًا ﴿٦١﴾ قَالَ اَرَءَيْتَكَ هٰذَا الَّذِيْ كَرَّمْتَ
عَلَيَّ ۫ لَئِنْ اَخَّرْتَنِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ
لَاَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٦٢﴾ قَالَ
اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَاِنَّ جَهَنَّمَ

جَزَآؤُكُمْ جَزَآءً مَّوْفُوْرًا ﴿٦٣﴾ وَ اسْتَفْزِزْ
مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَ اَجْلِبْ
عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَ رَجِلِكَ وَ شَارِكْهُمْ فِي
الْاَمْوَالِ وَ الْاَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ؕ وَ مَا
يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿٦٤﴾ اِنَّ
عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ ؕ
وَ كَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيْلًا ﴿٦٥﴾

सबकी सज़ा दोज़ख़ है, पूरी सज़ा। और उनमें से जिस जिस पर तेरा क़ाबू चले अपनी आवाज़ से उसका क़दम उखाड़ देना, और उन पर अपने सवार, और प्यादे चढ़ा लाना, और उनके माल और औलाद में शिरकत कर लेना, और उनसे वादा करना, और शैतान उनसे बिलकुल झूटे वादे करता है। बेशक मेरे ख़ास बन्दों पर तेरा ज़रा क़ाबू ना चलेगा, और आपका रब काफ़ी कारसाज़ है। (17:61-65)

وَ اِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا
اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ
اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَ ذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَآءَ
مِنْ دُوْنِيْ وَ هُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ
لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ﴿٥٠﴾

और जब हमने फ़रिश्तों से कहा के आदम (अ.स.) को सज्दा करो तो सब ने सज्दा किया, मगर इब्लीस ने नहीं किया, वो जिन्नात में से था तो उसने अपने रब का कहा ना माना, तो फिर क्या तुम उसको और उसकी औलाद को मेरे सिवा दोस्त बनाते हो जबके वो तुम्हारे दुश्मन हैं, ये ज़ालिमों के लिये बुरा बदल है। (18:50)

قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٢﴾ اِلَّا
عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٨٣﴾ قَالَ
فَالْحَقُّ ۫ وَ الْحَقَّ اَقُوْلُ ﴿٨٤﴾ لَاَمْلَـَٔنَّ جَهَنَّمَ
مِنْكَ وَ مِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٥﴾

इब्लीस ने कहा तो तेरी इज़्ज़त की क़सम है के मैं उन सब को गुमराह कर दूंगा। मगर जो तेरे ख़ास बन्दे हैं। कहा ये सच है और मैं भी सच कहता हूं। के मैं दोज़ख़ को तुझसे और जो उनमें से तेरी पैरवी करेंगे सबसे भर दूंगा। (38:82-85)

अल्लाह के बाग़ी इब्लीस ने अल्लाह के हुक्म पर आदम के सामने झुक जाने से इंकार कर दिया और इस तरह उसने कुछ जिन्नों को शैतान बन जाने का रास्ता दिखाया, जिन्होंने अल्लाह की ना फ़रमानी करते हुए उसका अनुसरण करने को अपने लिए पसन्द किया। इस बात से पता चलता है कि जिन्न अपनी मर्ज़ी में स्वतंत्र हैं और वे अपना रास्ता ख़ुद चुन सकते हैं। आयत 18:50 यह बताती है कि इब्लीस जिन्नों में से था, तथापि हसन बसरी (मृ. 827 ई) कहते हैं कि इब्लीस कभी भी जिन्न नहीं था। जैसा कि पहले क़ुरआन का बयान नक़ल किया जा चुका है कि इब्लीस ने अल्लाह के हुक्म की ना फ़रमानी की और आदम को सिजदा नहीं किया, जब कि यह हुक्म फ़रिश्तों को दिया गया था, तो इससे यह इशारा मिलता है कि जिन्न वहां मौजूद थे और चूंकि उनका दर्जा फरिशतों से कम है इसलिए उनसे भी यही अपेक्षा थी

कि फ़रिश्तों का अनुसरण करेंगे और वे भी आदम के आगे झुक जाएंगे, और इब्लीस भी उन जिन्नों में से था लेकिन उसने खुल कर अपनी ना फ़रमानी ज़ाहिर की। उसका यह घमण्ड जिसने उसे अल्लाह के मुक़ाबले इस नाफ़रमानी पर उक्साया जिन्नों के लिए बुराई का बीज बन गया और इंसानों को बुराई पर उक्साने का प्रेरक बन गया।

अल्लाह से कुतर्क करने की इब्लीस की इस हरकत से यह साबित होता है कि उसके पास अपनी अक़्ल या सूझबूझ की शक्ति है। इसी चीज़ ने उसे इस बुनियाद पर कुतर्क करने के योग्य बनाया कि उसे आग से पैदा किया गया है जबकि आदम को मिट्टी के ठिकरे से पैदा किया गया है। इंसानों को भटकाने और बग़ावत पर उक्साने के उसके इरादों से यह ज़ाहिर होता है कि वह और उसकी संतान कितनी चालाक और अपने मिशन पर लगातार सक्रिय रहने वाली तथा प्राया अपने मिशन में कामयाब होने का विश्वास रखने वाली है और यह कि इंसानों को भटकाने की उसकी यह कोशिश कई तरह से पूरी हो सकती है जैसा कि उसने कहा कि आउंगा उनके पास आगे से और पीछे से, दाएं से और बाएं से, और उनमें से अधिकतर को तू (ऐ अल्लाह) अपना शुक्रगुजार नहीं पाएगा। शैतान की यह चालें खुली या छिपी हो सकती हैं, प्रत्यक्ष या परोक्ष हो सकती हैं, और किसी इंसान को इंकार या अतिश्योक्ति में किसी भी चरम पर ले जाने की दिशा में हो सकती हैं।

शैतान अधिक से अधिक इंसानों को भटकाने के लिए जी तोड़ कोशिशों में लगा रहता है, यहाँ तक कि वे लोग जो इस भ्रम में हों कि वे सही रास्ते पर हैं उनकी नियतों के बारे में खुद उन्हें भी और दूसरों को भी ग़लतफ़हमी में मुब्तिला करके गुमराह कर सकता है। वह प्रेरणा और लालच से भी काम लेता है और डरावे और आशंकाओं से भी काम लेता हैः "शैतान तुम्हें ग़रीबी से डराता है (ताकि तुम नाजायज़ साधनों से आय प्राप्त करने की कोशिश करो) और तुम्हें शर्म के काम करने (हराम व नाजायज़ तरीक़े अपनाने) पर भी उक्साता है (2:268)। अपने विभिन्न उपायों से, झूठे वायदों से, ख़तरों से और इंसानी कमज़ोरियों का हर तरह से शोषण करके गुमराह इंसान के सभी फैसलों में एक शरीक बन जाता हैः वह किसी इंसान को ग़लत रास्तों से कमाने या ग़लत रास्तों में ख़र्च करने पर उक्सा सकता है, या हराम बच्चे पैदा करने या उनकी ग़लत तरीक़े से परवरिश करने की तरफ़ उक्सा सकता है, और तरह वह कुछ लोगों को छोड़कर आदम की (तमाम) औलाद की जड़ काटने में लगा रहता है (17:63)।

इतने आत्मविश्वास के साथ शैतान अल्लाह की इज़्ज़त व क़ुदरत की क़सम खा कर यह कहता है कि वह आदम की तमाम औलाद को गुमराह करके छोड़ेगा सिवाए उनके जो तेरे (ऐ अल्लाह) सच्चे बंदे होंगे (15:40)। इस तरह शैतान अल्लाह के सर्वशक्तिमान होने से पूरी तरह बाख़बर लगता है और यह मानता है कि भटकाऊ पर आधारित उसकी सारी कोशिशें जो उसने पहले की हैं, उस समय कर रहा है और आगे करता रहेगा वह उसके घमण्ड और हठ का

नतीजा हैं, और यह कि अल्लाह व अल्लाह की क़ुदरत के बारे में उसे कोई शक कभी नही रहा है। इस तरह शैतान खुद अपने लिए दुराचार और कुकर्मों का एक नमूना बन गया है। जिन लोगों की अक़लमन्दी, अल्लाह के बारे में ठोस समझ और दृढ़ इच्छा शक्ति उन्हें शैतान के मुकाबले अडिग रखती है और शैतान के बहकावों का मुक़ाबला करने के लिए वे अल्लाह से मदद मांगते रहते हैं वे उसके झूठे वायदों को रद्द कर देते है, जैसा कि अल्लाह ने फ़रमायाः *"जो मेरे (सच्चे) बन्दे हैं उन पर (ऐ शैतान) तेरा कुछ ज़ोर नहीं और (ऐ पैग़म्बर) तुम्हारा रब काम बनाने वाला काफ़ी है"।*

## इंसान से शैतान की दुशमनी के चलते इंसानों को शैतान की चालों से होशियार रहना चाहिए

فَاَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيْهِ ۠ وَ قُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَ لَكُمْ فِى الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّ مَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿۳۶﴾

फिर शैतान ने दोनों को उससे डगमगा कर जन्नत से निकलवा दिया, हमने कहा, उतर जाओ, आपस मे दुश्मन रहो, एक मुद्दत तक तुम्हारा ठिकाना और ज़िन्दगी की पूँजी ज़मीन पर है। (2:36)

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ كُلُوْا مِمَّا فِى الْاَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّ لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۱۶۸﴾

ऐ लोगो! तुम वो चीज़ें जो ज़मीन में तुम्हारे लिए हलाल और पाक हैं खाओ न और शैतान के क़दमों पर मत चलो, दरहक़ीक़त वो तुम्हारा खुला दुश्मन है। (2:168)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِى السِّلْمِ كَآفَّةً ۪ وَّ لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۲۰۸﴾

ऐ मोमिनो! तुम इस्लाम में पूरे-पूरे दाख़िल हो जाओ, और शैतान की पैरवी न करो, वो तो तुम्हारा खुला दुश्मन है। (2:208)

وَ اِذَا جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ اَوِ الْخَوْفِ اَذَاعُوْا بِهٖ ؕ وَ لَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ وَ اِلٰۤى اُولِى الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ ؕ وَ لَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ

और जब उनको किसी बात की ख़बर मिलती है चाहे अमन की बात हो या ख़ौफ़ की बात हो तो वो उसको मशहूर कर देते हैं, और अगर वो रसूल और अपने सरदारों के पास उस ख़बर को पहुंचाते तो छानबीन करने वाले तो उस ख़बर की जांच कर ही लिया करते और अगर

عَلَيْكُمْ وَ رَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطٰنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٨٣﴾

तुम पर अल्लाह की कृपा और रहमत ना होती तो तुम सब के सब शैतान के पीछे चलने वाले हो जाते, मगर थोड़े से लोग ना होते। (4:83)

وَ مِنَ الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّ فَرْشًا ؕ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ وَ لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۙ﴿١٤٢﴾

और मवेशियों में बोझ उठाने वाले और छोटे क़द के पैदा किये, अल्लाह का दिया हुआ अन्न खाओ, और शैतान के क़दमों पर ना चला करो, बेशक वो तुम्हारा खुला दुश्मन है। (6:142)

وَ قُلْ لِّعِبَادِيْ يَقُوْلُوا الَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِيْنًا ﴿٥٣﴾

और मेरे बन्दों से कह दो कि ऐसी बात कहा करें जो अच्छी हो, क्योंके शैतान उनमें फ़साद डलवाता है, बेशक शैतान इन्सान का खुला दुश्मन है। (17:53)

وَ اِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَ ذُرِّيَّتَهٗٓ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِيْ وَ هُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا ﴿٥٠﴾

और जब हमने फ़रिश्तों से कहा के आदम (अ.स.) को सज्दा करो तो सब ने सज्दा किया, मगर इब्लीस ने नहीं किया, वो जिन्नात में से था तो उसने अपने रब का कहा ना माना, तो फिर क्या तुम उसको और उसकी औलाद को मेरे सिवा दोस्त बनाते हो जबके वो तुम्हारे दुश्मन हैं, ये ज़ालिमों के लिये बुरा बदल है। (18:50)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ وَ مَنْ يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَ الْمُنْكَرِ ؕ وَ لَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَ رَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّ لٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢١﴾

मोमिनों! शैतान के क़दम ब क़दम ना चलना, और जो शैतान के क़दमों पर चलेगा तो वो बेहयाई और बुरे काम ही बताएगा, और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़ल और उसकी मेहरबानी ना होती तो एक शख़्स भी तुम में पाकबाज़ ना होता, लेकिन अल्लाह तो जिसे चाहता है पाक कर देता है, और अल्लाह ख़ूब सुनने वाला है जानने वाला है। (24:21)

وَ دَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ اَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ۚ هٰذَا

और वो शहर में उस वक़्त दाख़िल हुए, जब शहर के बाशिंदे बेख़बर हो रहे थे, तो देखा के वहाँ दो शख़्स

مِنْ شِيْعَتِهٖ وَ هٰذَا مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِيْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِيْ مِنْ عَدُوِّهٖ ۙ فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۖ قَالَ هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ۝۱۵

आपस में लड़ रहे थे, एक तो मूसा की क़ौम से था, दूसरा उनके दुश्मन की क़ौम से था, तो जो मूसा की क़ौम में से था, उसने मदद मांगी मूसा से, उस शख़्स के मुक़ाबले में उनके दुश्मनों में से था, तो मूसा ने उसको मुक्का रसीद किया तो उसका काम ही तमाम हो गया, मूसा ने कहा, ये काम तो शैतानी काम हुआ, बेशक वो इन्सान का खुला दुश्मन और बहकाने वाला है। (28:15)

اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ۭ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۝۶

क्योंके शैतान तुम्हारा दुश्मन है, तो तुम भी उसको अपना दुश्मन समझो, वो अपनी पैरवी करने वालों को बुलाता है, ताकि वो भी दोज़ख़ वालों में शामिल हों। (35:6)

وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝۶۲

और कहीं शैतान तुमको इससे रोक ना दे, वो तुम्हारा खुला दुश्मन है। (43:62)

क़ुरआन सभी इंसानों को आम तौर से और एक अल्लाह व रसूल पर ईमान रखने वाले लोगों को खास तौर से बार बार यह ध्यान दिलाता है कि शैतान जो कि अल्लाह का बागी है, उनका खुला दुशमन है। उसने अल्लाह की नाफ़रमानी की और लोगों को बहकाने की क़सम खाई है, और अपनी खुली व छिपी चालों में उन्हें फांसने की प्रतिज्ञा की है, वह उनसे झूठे वायदे करता है और उन्हें डराता है। चुनाँचे इंसानों को भी उसे एक दुशमन के तौर पर बरतना चाहिए न कि वे उसको अपना संरक्षक या सहयोगी बनाएं, और शैतान की मक्कारियों से हमैशा होशियार रहें। लेकिन इंसान बार बार इतनी चेतावनियों के बावजूद प्रायः बहक जाते हैं और बहकने वालों में वे लोग भी शामिल हैं जो अल्लाह और रसूल पर ईमान ला चुके हैं। ये लोग शैतान को बहकावे में आ जाते हैं, उसके जाल में फंसते हैं और अपनी इंसानी कमज़ोरियों और शैतान की चालों की वजह से गुमराह हो जाते हैं। इस तरह शैतान इंसानों को सीधी राह से फेरता है और उनका शोषण करता है, और जब कभी भी कोई इंसानी कमज़ोरी सामने आती है तो वह इंसान को बहकाने के लिए तुरन्त इस कमज़ोरी से फ़ायदा उठाने में लग जाता है और उसे लालच या डरावे के द्वारा तुरन्त ही या धीरे धीरे सीधे रास्ते से दूर ले जाता है। क़ुरआन ईमान वालों को यह भरोसा दिलाता है कि अल्लाह से मुहब्बत और डर का सम्बंध बनाए रखने से और शैतान की चालों से सावधान रहने से वे स्थिर और अडिग रहेंगे और सीधे रास्ते पर चलते रहेंगे, और यह स्थिति उनके लिए एक मुस्तक़िल ढाल बनी रहेगी।

शैतान चूंकि जन्मजात रूप से जिन्नों में से है इसलिए वह आग से पैदा किया गया है। देखें जिन्नों से सम्बंधित पहले बयान हो चुकी आयतें और उनकी व्याख्या (15:27, 55, 15) और इब्लीस से सम्बंधित आयतें 7:12; 38:76)।

## शैतान का चरित्रः

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْۤا اَوْلِيَآءَ الشَّيْطٰنِ ۚ اِنَّ كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيْفًا ﴿۷۶﴾

जो मोमिन हैं तो अल्लाह के रास्ते में लड़ते हैं और काफ़िर शैतान की राह में लड़ते हैं, सो तुम शैतान के मददगार से लड़ो (और डरो मत) क्योंके शैतान का दाव कमज़ोर होता है। (4:76)

اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ اِلَّاۤ اِنٰثًا ۚ وَ اِنْ يَّدْعُوْنَ اِلَّا شَيْطٰنًا مَّرِيْدًا ﴿۱۱۷﴾ لَّعَنَهُ اللّٰهُ ۘ وَ قَالَ لَاَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ﴿۱۱۸﴾ وَّ لَاُضِلَّنَّهُمْ وَ لَاُمَنِّيَنَّهُمْ وَ لَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ اٰذَانَ الْاَنْعَامِ وَ لَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ ؕ وَ مَنْ يَّتَّخِذِ الشَّيْطٰنَ وَلِيًّا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِيْنًا ﴿۱۱۹﴾ يَعِدُهُمْ وَ يُمَنِّيْهِمْ ؕ وَ مَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿۱۲۰﴾ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَ لَا يَجِدُوْنَ عَنْهَا مَحِيْصًا ﴿۱۲۱﴾

ये लोग अल्लाह को छोड़ कर बस कुछ ज़नानी चीज़ों की इबादत करते हैं, और ये सिर्फ़ शैतान की इबादत करते हैं जो के हुक्म से बाहर है। जिसको अल्लाह ने अपनी रहमत से महरूम कर दिया, और जिसने कहा था मैं ज़रूर तेरे बन्दों से अपना मुक़र्रर हिस्सा इताअत का लूंगा। और मैं उनको गुमराह करूंगा, और मैं उनको हवस दिलाऊंगा और मैं उनको तालीम दूंगा जिससे वा पशुओं के कानों को तराशा करेंगे, और मैं उनको सिखाऊँगा जिससे वो अल्लाह की बनाई हुई सूरत को बिगाड़ेंगे, और जो अल्लाह को छोड़कर शैतान को अपना साथी बनायेगा वो खुले नुक़सान में होगा। शैतान उन लोगों से वादे किया करता है और उनको हवस दिलाता है, और शैतान सिर्फ़ उनसे झूटे वादे करता है। ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नुम है, और उससे बचने की कहीं जगह ना पायेंगे। (4:117-124)

और देखें 22: 31

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَ الْمَيْسِرُ وَ الْاَنْصَابُ وَ الْاَزْلَامُ رِجْسٌ

मोमिनो! बेशक शराब (1), जुआ (2), बुतपरस्ती (3), और भाग्य ये चारों चीज़ें नापाक हैं, शैतानी काम हैं, पस इनसे बचते रहा करो, ताकि तुमको निजात मिले। बस

مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٩٠﴾ اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَ الْبَغْضَآءَ فِي الْخَمْرِ وَ الْمَيْسِرِ وَ يَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَ عَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿٩١﴾

शैतान तो यही चाहता है के तुमको शराब और जुऐ में डालकर तुममें दुश्मनी और कीना डाल दे, और तुमको अल्लाह की याद और नमाज़ से रोक दे, तो क्या तुम इन कामों से कुछ आओगे। (5:90-91)
(और देखें 8:11)

وَ حَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ﴿١٧﴾ اِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٨﴾

और उसको हर मर्दूद शैतान से महफ़ूज़ कर दिया है। हाँ! अगर कोई चोरी से सुने तो चमकता हुआ अंगारा उसके पीछे लगा दिया जाता है। (15-17-18)
(और देखें 37:7; 67:5)

اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ ؕ وَ كَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ﴿٢٧﴾

बेशक फ़ुज़ूल ख़र्च करने वाले शैतान के भाई हैं और शैतान अपने रब का बड़ा ना शुक्रा है। (17:27)

يٰۤاَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِيًّا ﴿٤٤﴾

अब्बा जान! आप शैतान की पूजा ना किया कीजिये, बेशक शैतान रहमान का नाफ़रमान है। (19:44)
(19:68, और देखें 6:128)

فَوَ رَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَ الشَّيٰطِيْنَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ﴿٦٨﴾

जो तुम्हारे रब की क़सम! हम उनको ज़रूर जमा करेंगे और शयातीन को भी, फिर उनको जहन्नम के इर्दगिर्द हाज़िर करेंगे इस हालत में के घुटनों पर गिर पड़े होंगे।
(19:68, और देखें 6:128)

لَقَدْ اَضَلَّنِيْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِيْ ؕ وَ كَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا ﴿٢٩﴾

उसने तो मुझे नसीहत आ जाने के बाद ही गुमराह कर दिया, और शैतान तो इन्सान को ऐन वक़्त पर दग़ा देता है। (25:29)

اِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْٓ اَصْلِ الْجَحِيْمِ ﴿٦٤﴾ طَلْعُهَا كَاَنَّهٗ رُءُوْسُ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٦٥﴾

वो एक पेड़ है जो दोज़ख़ के सबसे नीचे हिस्से में उगता है। उसके गुच्छे शैतानों के सर जैसे होंगे।
(37:64-65)

शैतान चूंकि जिन्न है चुनाँचे वह आग से पैदा किया गया है। उसे अपनी मर्जी की आज़ादी और अक़्ल दी गयी है, लेकिन उसने अल्लाह की इन बख़्शिशों को उसके ख़िलाफ़ बग़ावत का रास्ता अपनाने के लिए पसन्द किया, अल्लाह से तकरार और हुज्जत की और इंसान को बहकाने व भटकाने और गुमराह करने में मुस्तक़िल लगे रहने का प्रण किया। उसके घमण्ड और हठधर्मी की वजह से अल्लाह ने उस पर लानत की है। अल्लाह पर ईमान रखने वालों को उससे बचना चाहिए क्योंकि वह पहले दिन से उनका खुला दुश्मन है और वह लोगों को हमैशा बुरे और घिनौने कामों पर ही उक्साता है। लेकिन क़ुरआन इस बात को उजागर करता है कि जो कोई अल्लाह से डरता रहेगा वह शैतान की चालों पर नियंत्रण पा लेगा, चाहे शैतान कितनी ही चालाकी और मक्कारी से अपनी चालें चले। ऐसे मोमिन बन्दे या बन्दी का सम्बंध उस हस्ती से होता है जो तमाम शक्तियों का पैदा करने वाला और सर्वशक्तिमान है। वही शैतान का भी जनक और स्वामी है, शैतान निश्चित रूप से नुक़सान उठाने वाला है और उसकी सारी धोखेबाज़ियों का तौड़ किया जा सकता है। शैतान ने ख़ुद भी अपनी बग़ावत के शुरू से ही यह बात साफ़ कर दी है कि अल्लाह के सच्चें बन्दों को वह अपने जाल में नहीं फांस सकता, और अल्लाह ने भी इस बात का आश्वासन दिया है (15:40,42; 17:65; 38:83)।

शैतान का घमण्ड और हठधर्मी उसकी बग़ावत और अल्लाह की नाशुक्री को साफ़ ज़ाहिर करती है। इंसान से अपनी कट्टर दुश्मनी के बावजूद यह बात सुनिश्चित है कि वह अल्लाह की ताक़त व क़ुदरत को मानता है, और इसलिए वह इंसान को अपने जाल में फांसने के बाद ही उसे बुराई पर आमादा कर सकता है (8:48; 14:22)। गुमराही में मुब्तिला इंसान अपने कुकर्मों का नतीजा इस दुनिया में भुगतता है और आख़िरत में भी भुगतेगा, जब शैतान अपना फ़ैसला सुनेंगे और अल्लाह की यातना को अपने सामने देखेंगे, क्योंकि उन्हें भी जिन्न होने के रूप में अक़्ल और आचार विचार की आज़ादी और ज़िम्मेदारी दी गयी है (19:68; 6:128)।

## शैतान किस तरह बहकाता है

فَأَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ عَنْهَا فَأَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيْهِ ۠ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ إِلٰى حِيْنٍ ﴿٣٦﴾

फिर शैतान ने दोनों को उससे डगमगा दिया और उन्हें जन्नत से निकलवा दिया, हमने कहा, उतर जाओ, आपस में दुश्मन रहो, एक मुद्दत तक तुम्हारा ठिकाना और ज़िन्दगी की पूँजी ज़मीन पर है। (2:36)

وَ اتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى مُلْكِ
سُلَيْمٰنَ ۚ وَ مَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ وَ لٰكِنَّ
الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ
السِّحْرَ ۗ وَ مَآ اُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ
هَارُوْتَ وَ مَارُوْتَ ؕ وَ مَا يُعَلِّمٰنِ مِنْ
اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَآ اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا
تَكْفُرْ ؕ فَيَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ
بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَ زَوْجِهٖ ؕ وَ مَا هُمْ
بِضَآرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَ
يَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ وَ لَا يَنْفَعُهُمْ ؕ
وَ لَقَدْ عَلِمُوْا لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ فِى
الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۗ وَ لَبِئْسَ مَا شَرَوْا
بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ ؕ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۰۲﴾

वो लोग ऐसी चीज़ के पीछे लगे जिसका चर्चा सुलैमान की हुकूमत में बहुत से शयातीन (यानी ख़बीस जिन्न) किया करते थे। सुलेमान उस जादू को नहीं मानते थे। अलबत्ता यही शयातीन कुफ़्र करते थे और आम आदमियों को भी ये जादू सिखाया करते थे और उस जादू को भी सिखाया करते थे जो शहर बाबुल में दो फ़रिश्तों हारूत और मारूत पर नाज़िल किया गया था और दोनों फ़रिश्ते ये सिह्र किसी को भी न सिखाते थे जब तक ये ना कह देते के हमारा वजूद ही एक इम्तिहान है तो तुम काफिर ना बन जाना। सो लोग उन दोनों से ये जादू सीख लिया करते थे जिससे मियाँ और बीवी में फ़र्क़ पैदा कर दे। और ये साहिर उसके ज़रिये किसी को भी कोई नुक़सान नहीं पहुंचा सकते थे। मगर अल्लाह के हुक्म से और ऐसी चीज़ सीख लेते हैं जो उनको नुक़सान पहँचाती है। और नफ़ा कोई नहीं होता। और ये यहूद भी जानते हैं। के जो शख़्स उस मंत्र को इख़्तियार करेगा उस के लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं है। और बेशक ये बुरी चीज़ है के उस मंत्र के लिए अपनी जान दे देते हैं। काश! ये अपनी अक़्ल से जान जाते। (2:102)

اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى
الْجَمْعٰنِ ۙ اِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطٰنُ
بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا ۚ وَ لَقَدْ عَفَا اللّٰهُ
عَنْهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۵۵﴾

बिला शुबह उस रोज़ जो तुम में से पुश्त फेर चुके थे जबकि वो दो फ़रीक़ आपस में मुक़ाबला कर रहे थे इसके सिवा और कोई बात नहीं हुई के उनको शैतान ने उनके कुछ आमाल की वजह से लग़्ज़िश दे दी, और यक़ीन जानो के अल्लाह ने उनको माफ़ कर दिया, बेशक अल्लाह तो बड़ा बख़्शने वाला और बड़ा हिल्म वाला है। (3:155)

اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَ يَاْمُرُكُمْ
بِالْفَحْشَآءِ ۚ وَ اللّٰهُ يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ
وَ فَضْلًا ؕ وَ اللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۶۸﴾

(देखो!) शैतान (का कहा ना मानना वो) तुम को तंगदस्ती का खौफ़ दिलाता है और बे हयाई के काम करने को कहता है। और अल्लाह तुम से अपनी बख़्शिश और रहमत का वादा करता है, और अल्लाह ही बड़ी वुसअ़त

वाला और ख़ूब जानने वाला है। (2:268)

إِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّفُ أَوْلِيَآءَهٗ ۠ فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَ خَافُوْنِ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٥﴾

बस इतनी सी बात है के ये शैतान ही है जो तुमको अपने दोस्तों से डराता है। सो तुम उनसे ना डरना और मुझ ही से डरना अगर तुम मोमिन हो। (3:175)

وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ أَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ وَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ لَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ وَ مَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا فَسَآءَ قَرِيْنًا ﴿٣٨﴾

और जो लोग अपना माल लोगों के दिखाने के लिए ख़र्च करते हैं, और ना अल्लाह पर ईमान लाते हैं और ना ही आख़िरत के दिन पर (तो ये शैतान के साथी हैं) और जिनका साथी शैतान है तो बुरा साथी है। (4:38)

إِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖۤ إِلَّاۤ إِنٰثًا ۚ وَ إِنْ يَّدْعُوْنَ إِلَّا شَيْطٰنًا مَّرِيْدًا ﴿١١٧﴾ لَّعَنَهُ اللّٰهُ ۘ وَ قَالَ لَاَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ﴿١١٨﴾ وَّ لَاُضِلَّنَّهُمْ وَ لَاُمَنِّيَنَّهُمْ وَ لَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ اٰذَانَ الْاَنْعَامِ وَ لَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ ؕ وَ مَنْ يَّتَّخِذِ الشَّيْطٰنَ وَلِيًّا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِيْنًا ﴿١١٩﴾ يَعِدُهُمْ وَ يُمَنِّيْهِمْ ؕ وَ مَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ إِلَّا غُرُوْرًا ﴿١٢٠﴾

ये लोग अल्लाह को छोड़ कर सिर्फ़ चन्द ज़नानी चीज़ों की इबादत करते हैं, और ये सिर्फ़ शैतान की इबादत करते हैं जो के हुक्म से बाहर है। जिसको अल्लाह ने अपनी रहमत से महरूम कर दिया, और जिसने कहा था मैं ज़रूर तेरे बन्दों से अपना मुक़र्रर हिस्सा इताअत का लूंगा। और मैं उनको गुमराह करूंगा, और मैं उनको हवस दिलाऊंगा और मैं उनको तालीम दूंगा जिससे वा चारपायों के कानों को तराशा करेंगे, और मैं उनको तालीम दूंगा जिससे वो अल्लाह की बनाइ हुई सूरत को बिगाडेंगे, और जो अल्लाह को छोड़ कर शैतान को अपना रफ़ीक़ बनायेगा वो सरीह नुक़सान में होगा। शैतान उन लोगों से वादे किया करता है और उनको हवस दिलाता है, और शैतान सिर्फ़ उनसे झूटे वादे करता है। (4:117-120)

قُلْ أَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَ لَا يَضُرُّنَا وَ نُرَدُّ عَلٰۤى أَعْقَابِنَا بَعْدَ إِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِى اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ فِى الْأَرْضِ حَيْرَانَ ۖ لَهٗۤ أَصْحٰبٌ

आप कह दीजिये, क्या हम अल्लाह के सिवा ऐसी चीज़ की इबादत करें जो हमें ना तो कोई नफ़ा दे, और ना कोई नुक़सान, और हम क्या उल्टे पैरों फिर लौट जायें, इसके बाद के अल्लाह ने हमको हिदायत कर दी है, ये ऐसी मिसाल है के शयातीन ने जंगल में एक शख़्स को

يَّدْعُوْنَهٗۤ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ؕ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ وَ اُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿۷۱﴾

बेराह कर दिया, वो भटकता फ़िरता है, उसके साथी उस को सीधे रास्ते की तरफ़ बुला रहे हैं के हमारे पास आ, आप कह दीजिये, बेशक अल्लाह ही का रास्ता वो रास्ता है जो सीधा है, और हमको ये हुक्म है के हम सारे जहान के रब की ही इताअ़त और फ़रमांबर्दारी करें। (6:71)

قَالَ فَبِمَاۤ اَغْوَيْتَنِىْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ﴿۱۶﴾ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَ مِنْ خَلْفِهِمْ وَ عَنْ اَيْمَانِهِمْ وَ عَنْ شَمَآئِلِهِمْ ؕ وَ لَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ﴿۱۷﴾

उसने कहा के इस सबब से के आपने मुझको गुमराह किया है, मैं क़सम खाता हूं के मैं उनके लिए आपकी सीधी राह पर बैठूंगा। फिर मैं उन पर हमला करूंगा उनके आगे से भी पीछे से भी, और उनके दाहिनी जानिब से भी और बायें जानिब से भी, और उन में अक्सरों को आप एहसान मानने वाला नहीं पायेंगे। (7:16-17)

وَ اتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِىْۤ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿۱۷۵﴾ وَ لَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَ لٰكِنَّهٗۤ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَ اتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۱۷۶﴾

और आप उन लोगों को उस शख़्स का हाल पढ़ कर सुनाईये, के उसको हमने अपनी आयात दीं, फिर वो उनसे बिलकुल ही निकल गया, फिर शैतान उसके पीछे लग गया सो वो गुमराहों में शुमार हो गया। और अगर हम चाहते तो उसको उन आयात के बदौलत बुलंद मर्तबा कर देते, लेकिन वो दुनिया की तरफ़ मायल हो गया, और अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात की पैरवी करने लगा, तो उसकी हालत कुत्ते की सी हो गई के तू अगर इस पर हमला कर दे तब भी वो हांपे और या उसको छोड़ दे तब भी हांपे, यही हालत उन लोगों की है जिन्होंने हमारी आयात को झुटलाया, सो आप उस हाल को बयान कर दीजिये, शायद वो सोचें। (7:175-176)

يٰبَنِىْۤ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَاۤ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ؕ اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَ قَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ؕ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ

ऐ औलादे आदम! शैतान तुम को कहीं किसी फ़ितने में मुबतला ना कर दे जैसे उसने तुम्हारे दादा और दादी को जन्नत से निकलवा दिया था इस हालत में के उनका लिबास भी उनसे उतरवा दिया, ताकि उनके पर्दे का बदन भी उनको दिखाई देने लगे, वो और उसको लश्कर तुमको इस तरह देखता है के तुम उनको नहीं देखते हो,

لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٧﴾

हम शैतानों को उन ही लोगों का दोस्त होने देते हैं जो ईमान नहीं लाते। (7:27)

وَ قَالَ لِلَّذِیْ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِیْ عِنْدَ رَبِّكَ ۫ فَاَنْسٰىهُ الشَّیْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِی السِّجْنِ بِضْعَ سِنِیْنَ ﴿٤٢﴾

और दोनों शख़्सों में से जिसकी निस्बत ख़्याल था के वो निजात पा जायेगा, उससे कहा के अपने आक़ा से मेरा ज़िक्र कर देना, फिर शैतान ने उनका अपने आक़ा से ज़िक्र करना भुला दिया तो यूसुफ़ और चन्द साल जेल में रहे। (12:42)

وَ رَفَعَ اَبَوَیْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَ خَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا ۚ وَ قَالَ یٰۤاَبَتِ هٰذَا تَاْوِیْلُ رُءْیَایَ مِنْ قَبْلُ ۫ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّیْ حَقًّا ؕ وَ قَدْ اَحْسَنَ بِیْۤ اِذْ اَخْرَجَنِیْ مِنَ السِّجْنِ وَ جَآءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ نَّزَغَ الشَّیْطٰنُ بَیْنِیْ وَ بَیْنَ اِخْوَتِیْ ؕ اِنَّ رَبِّیْ لَطِیْفٌ لِّمَا یَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِیْمُ الْحَكِیْمُ ﴿١٠٠﴾

और अपने मां बाप को ऊँचे तख़्त पर बैठाया, और सबके सब यूसुफ़ के सामने सज्दा में गिरे, और यूसुफ़ ने कहा ऐ मेरे बाप! ये है मेरे ख़्वाब की ताबीर जो मैंने पहले ज़माना में देखा था जिसको मेरे रब ने सच्च कर दिखाया, और अल्लाह ने मेरे ऊपर एहसान किया जिस वक़्त के उसने मुझे क़ैद से निकाला है, और ये के तुम सब को बाहर से यहां लाया और उसके बाद के शैतान ने मेरे और भाईयों के दरमियान फ़साद डलवा दिया था, बेशक मेरा रब जो चाहता है उसके लिये लतीफ़ तदबीर कर देता है, बेशक वो बड़ा जानने वाला और बड़ी हिकमतों वाला है। (12:100)

اَلَمْ تَرَ اَنَّاۤ اَرْسَلْنَا الشَّیٰطِیْنَ عَلَى الْكٰفِرِیْنَ تَؤُزُّهُمْ اَزًّا ﴿٨٣﴾

क्या आपने नहीं देखा के हमने शैतान को काफ़िरों पर छोड़ रखा है के वो उनको बराआंगीख़्ता करता रहे। (19:83)

قَالَ رَبِّ بِمَاۤ اَغْوَیْتَنِیْ لَاُزَیِّنَنَّ لَهُمْ فِی الْاَرْضِ وَ لَاُغْوِیَنَّهُمْ اَجْمَعِیْنَ ﴿٣٩﴾ اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِیْنَ ﴿٤٠﴾

39. इब्लीस ने कहा, ऐ मेरे रब! बसबब आपके मेरे गुमराह करने के मैं क़सम खाता हूं के मैं गुनाहों को उनकी नज़र में दुनिया में सज़ा के दिखलाऊंगा और उन सब को गुमराह कर दूंगा। 40. बजुज़ उनके जो उनमें तेरे मुख़्लिस बन्दे हैं। (15:39; और देखें 6:43; 16:63)

وَ قَالَ الشَّیْطٰنُ لَمَّا قُضِیَ الْاَمْرُ اِنَّ اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَ وَعَدْتُّكُمْ

22. और शैतान कहेगा जब हिसाब किताब का फ़ैसला हो चुकेगा के जो वादा अल्लाह ने तुम से किया था वो

فَاَخْلَفْتُكُمْ ؕ وَ مَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ اِلَّاۤ اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ ۚ فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَ لُوْمُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ مَاۤ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَ مَاۤ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ؕ اِنِّيْ كَفَرْتُ بِمَاۤ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ ؕ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۲۲﴾

सच्चा था, और जो वादा मैंने तुम से किया था वो झूटा था, और मेरा तुम पर कोई ज़ोर ना था, हां मैंने तुम को बुलाया था तो तुमने मेरा कहना मान लिया तो तुम मुझे मलामत ना करो, और अपने आप को मलामत करो, ना मैं तुम्हारी फ़रयाद रस्सी कर सकता हूं और ना तुम मेरी फ़रयाद रसी कर सकते हो, मैं इससे इन्कार करता हूं के तुम मुझे अल्लाह का शरीक बनाते थे। बिला शुबह ज़ालिमों के लिये दर्द देने वाला अज़ाब है। (14:22)

وَ اسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَ اَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَ رَجِلِكَ وَ شَارِكْهُمْ فِي الْاَمْوَالِ وَ الْاَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ؕ وَ مَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿۶۴﴾

और उनमें से जिस जिस पर तेरा क़ाबू चले अपनी आवाज़ से उसका क़दम उखाड़ देना, और उन पर अपने सवार, और प्यादे चढ़ा लाना, और उनके माल और औलाद में शिरकत कर लेना, और उनसे वादा करना, और शैतान उनसे बिलकुल झूटे वाद करता है। (17:64)

لَقَدْ اَضَلَّنِيْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِيْ ؕ وَ كَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا ﴿۲۹﴾

उसने तो मुझे नसीहत आ जाने के बाद ही गुमराह कर दिया, और शैतान तो इन्सान को ऐन वक़्त पर दग़ा होता है। (25:29)

كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّيْۤ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۶﴾ فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَاۤ اَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيْهَا ؕ وَ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۷﴾

शैतान की सी मिसाल है के वो इन्सान से कहता है के तू काफिर हो जा, फिर जब वो काफिर हो गया, तो कहता है के मेरा अब तुम से कोई वास्ता नहीं है मैं तो अल्लाह से डरता हूँ जो सारे जहानों का रब है। तो दोनों का अंजाम ये हुआ के दोनों दोज़ख़ में दाख़िल हुए, हमेशा उसमें रहेंगे, और बेइन्साफ़ों की यही सज़ा है।(59:16-17)

وَ اِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَ قَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَ اِنِّيْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَآءَتِ الْفِئَتٰنِ نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَ قَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ

और जब शैतान ने उनको उनके आमाल को ख़ुशनुमा बना कर दिखाया और कहा के आज लोगों में से तुम पर कोई ग़ालिब आने वाला नहीं है, और मैं तुम्हारा हामी हूं फिर जब दोनों जमातें एक दूसरे के मुक़ाबिल हुईं, तो वो उल्टे पाऊँ भागा और कहा मैं तुम से कोई वास्ता नहीं

مِّنْكُمْ اِنِّيْٓ اَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ ؕ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٤٨﴾

रखता, मैं उन चीज़ों को देख रहा हूं जो तुमको नज़र नहीं आतीं, मैं तो अल्लाह से डरता हूं, और अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है। (8:48)

وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَ لَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿٢١﴾

और जब उनसे कहा जाता है के तुम पैरवी करो इस किताब की जो अल्लाह ने नाज़िल की है तो कहते हैं हम तो उसी की पैरवी करेंगे जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया है, अगरचे शैतान उनके बड़ों को दोज़ख़ के अज़ाब की तरफ़ बुलाता रहा हो तब भी। (31:21)

اِنَّ الَّذِيْنَ ارْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ ؕ وَ اَمْلٰى لَهُمْ ﴿٢٥﴾

जो लोग राहे हिदायत ज़ाहिर होने के बाद पीठ देकर फिर गए तो शैतान ने उनको ये फ़िरना अच्छा करके दिखा दिया, और दूर के वादे दिये। (47:25)

اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ لَيْسَ بِضَآرِّهِمْ شَيْـًٔا اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠﴾

ऐसी सरगोशियां तो शैतान की हरकात से होती है, ताकि जो मोमिनों को रंज में डाले, और वो अल्लाह के हुक्म के बग़ैर उनका कुछ नुक़सान नहीं पहुंचा सकता, और मोमिनों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिये। (58:16)

وَ كَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَ الْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا ؕ وَ لَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَ مَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١١٢﴾ وَ لِتَصْغٰٓى اِلَيْهِ اَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَ لِيَرْضَوْهُ وَ لِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ ﴿١١٣﴾

और इस तरह हमने हर एक नबी के दुश्मन बहुत से शैतान पैदा कर दिये थे, कुछ आदमी, कुछ जिन्नात जिनमें से कुछ दूसरे कुछ को चिकनी चुपड़ी बातों का वसवसा डालते थे धोके में डालने के लिए, अगर तुम्हारा रब चाहता तो वो ये काम ना करते, सो उनको छोड़ो, जो इफ़्तराप्रदाज़ी ये कर रहे हैं करने दीजिये। ये लोग इस लिए ये कर रहे थे के उनके दिल जो आख़िरत पर यक़ीन नहीं रखते उस तरफ़ मायल हो जायें और उसको पसंद कर लें और मुरतकिब हों जायें, उन कामों के जिनके ये मुरतकिब हो रहे हैं। (6:112-113)

وَ يَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ

और जिस रोज़ अल्लाह तमाम मख़लूक़ को जमा करेगा

الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَ قَالَ اَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّ بَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِيْٓ اَجَّلْتَ لَنَا ؕ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۲۸﴾ وَ كَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًۢا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿۱۲۹﴾

(और फ़रमायेगा) ऐ जिनों की क़ौम! तुमने इन्सानों (को गुमराह करने) में बड़ा हिस्सा लिया है और उनके इन्सान दोस्त कहेंगे, ऐ हमारे रब! हमने आपस में एक दूसरे से ख़ूब फ़ायदा उठाया, और अपनी मोईय्यत मुद्दत तक पहुंच गए जो तूने हमारे लिये मुक़र्रर की थी, अल्लाह फ़रमायेगा के अब तुम सबका ठिकाना दोज़ख़ है, उसमें हमेशा हमेशा रहोगे, हां अगर अल्लाह चाहे (तो और बात है) बिला शुबह तेरा रब हिकमतों वाला, ख़ूब जानने वाला है। और इसी तरह हम कुछ कुफ़्फ़ार को उनके आमाल के सबब कुछ के क़रीब रखेंगे। (6:128-129)

اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰىهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ؕ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿۱۹﴾

शैतान ने उन पर क़ाबू पा लिया है, तो अल्लाह की याद को उन से भुला दिया है। ये जमात शैतान का लश्कर है, ख़बरदार शैतान का लश्कर नुक़सान उठाने वाला है। (58:19)

يٰٓاَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِيًّا ﴿۴۴﴾

अब्बा जान! आप शैतान की पूजा ना किया कीजिये, बेशक शैतान रहमान का नाफ़रमान है। (19:44)

اَلَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِيْ يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْٓا اِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا ۘ وَ اَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَ حَرَّمَ الرِّبٰوا ؕ فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَ ؕ وَ اَمْرُهٗٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ وَ مَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۲۷۵﴾

जो सूद खाते हैं तो वो क़ब्रों से ऐसे उठेंगे जैसे किसी को जिन्न ने लिपट कर दीवाना बना दिया हो ये इसलिए के वो कहते थे कि सौदा बेचना भी तो वैसा ही है जैसे सूद लेना। हालांकि सौदे को अल्लाह ने हलाल किया है और सूद को हराम, तो जिसके पास अल्लाह की तरफ़ से नसीहत पहुंची और वो सूद लेने से कुछ आ गया तो जो पहले हो चुका वो उसी का रहा और उसका मामला अल्लाह के सुपर्द, और जो फिर लेने लगा तो ये लोग दोज़ख़ी हो गए। वो हमेशा ही दोज़ख़ में जलते ही रहेंगे। (2:275)

وَ اذْكُرْ عَبْدَنَآ اَيُّوْبَ ۘ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ

और (उसके अलावा) उनके लिये हमारे पास ख़ास

أَنِّي مَسَّنِيَ الشَّيْطَانُ بِنُصْبٍ وَعَذَابٍ ﴿٤١﴾ ارْكُضْ بِرِجْلِكَ هَٰذَا مُغْتَسَلٌ بَارِدٌ وَشَرَابٌ ﴿٤٢﴾

हमारा क़ुर्ब है, और नेक अंजामी भी है। और आप हमारे बन्दे अय्यूब (अ.स.) को भी याद कीजिये, जब उन्होंने अपने रब को पुकारा के शैतान ने मुझे रंज और तकलीफ़ दी है। (38:41-42)

وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيَاطِينُ ﴿٢١٠﴾ وَمَا يَنبَغِي لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٢١١﴾ إِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُولُونَ ﴿٢١٢﴾

और इस क़ुरआन को शैतान लेकर नाज़िल नहीं हुए। ये काम उनके लायक़ नहीं है, और ना उनमें इतनी सकत है (के वो इसको उठा सकें)। बेशक शैतानों को सुनने से रोक दिया गया है। (26:210-212)

और देखें 81:25

जैसा कि हम पहले जिक्र कर चुके हें, क़ुरआन तमाम इंसानों को आम तौर से और ईमान वालों को ख़ास तौर से अपने अनदेखे दुशमन शैतान से सावधान रहने के लिए बार बार निर्देश देता है, जिसने अल्लाह से बग़ावत करके उससे यह मोहलत मांग ली है कि वह आदम की संतान में से जितने लोगों पर उसका बस चले उनसे बदला ले और उन पर अपने बर्चस्व को साबित करे इस तरह कि उन्हें बग़ावत और बुराई का रास्ता दिखाए और इस रास्ते पर उनको ले चले। इंसान को अक़्ल की जो नेअमत मिली हुई है, जिससे वह फ़ैसला कर सकता है कि क्या चीज़ या क्या काम ग़लत है और फिर उससे बचने का फैसला ले सकता है, इस अक़्ल को निश्क्रिय करने के लिए शैतान अपनी पूरी चालाकी को काम में लाता है और ग़लत काम करने पर उक्साता है, इस तरह कि इंसान ग़ौर व फ़िक्र से काम नहीं लेता जो कि वास्तव में उसकी बहुत बड़ी ग़लती है। वह इंसान की सोचने समझने की शक्ति को कुचलने के लिए और उसे जल्दबाज़ी, स्वार्थपूर्ति और कमनज़री में फंसाने के लिए अपना पूरा ज़ोर लगा देता है। इंसान को सूझबूझ और इरादे की आज़ादी दी गयी है और इंसान के अन्दर सही या ग़लत कार्य करने की क्षमता रख दी गयी है (90:10; 91:7-10)। इंसान के जो कमज़ोर पहलू हैं या बुराई की ओर ले जाने वाली भावनाएं है उन्हें शैतान छेड़ने और भड़काने के लिए और इंसान की बौद्धिक, अध्यात्मिक या नैतिक क्षमताओं को जहां तक हो सके कुचलने के लिए शैतान सभी सम्भव तरीक़े अपनाता है, ताकि इंसानी जीवन को पाश्विक स्तर पर ले आए और इंसानी अक़्ल को केवल खाने, पीने, कामोक्ति और ऐश का जीवन जीने की इच्छा को पूरा करने में ही लगा दे (3:14)।

क़ुरआन इंसानों को यह भी बताता है कि दिखाई न देने वाला शैतान किस तरह उन्हें गुमराह करने की कोशिश करता है और उनकी क्षमताओं को किस तरह ग़लत रास्ते में लगाने

का काम करता है या यह सुझाता है कि किस तरह उन्हें इन कामों में लगाना है जो ग़लत और बुरे हैं। शैतान अपना काम छोटी छोटी ग़लतियों और वक्ती ख़ताओं में मुब्तिला करके शुरू करता है ताकि इंसान धीरे धीरे गिरावट में मुब्तिला हो और रफ़्ता रफ़्ता पतन की ओर चलता चला जाए (2:36; 3:155), बजाए इसके कि वे अचानक ही किसी बड़े झटके से दो चार हों और फिर शैतान की चाल से सावधान हो जाएं। तथापि क़ुरआन इस बात पर ज़ोर देता है कि इंसान अपने कर्म का खुद भोगी है, इसलिए आदम व हव्वा द्वारा वर्जित पेड़ का फल खा लेने की ग़लती का ज़िक्र जिसे अल्लाह ने तौबा करने पर अपनी कृपा से मआफ कर दिया था, इस तरह करता है कि ये उनका अपना ही फ़ैसला था (2:36-37; 7:10-25)।

चुनाँचे शैतान इंसानी कमज़ोरियों और ग़फ़लतों को निशाना बनाता है, और जो लोग अपनी कमज़ोरियों को ज़ाहिर करते हैं और उन कमज़ोरियों पर नियंत्रण पाने का प्रयास नहीं करते उन्हें शैतान अपनी पकड़ में ले लेता है। जो इंसान सही फैसला लेते हैं और दृढ़ इच्छा शक्ति रखते हैं, वे अल्लाह की मदद और सहायता से शैतान की चुनौती का मुक़ाबला करने योग्त होते हैं और अपनी इंसानी अक़लमन्दी व इच्छा शक्ति को काम में लाकर शैतान की चालों और धोखेबाज़ियों पर काबू पा लेते हें। जो लोग अपनी कमज़ोरियों और ग़लतियों के सबब शैतान को अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं वे यह आरोप नहीं लगा सकते कि शैतान ने उन्हें गुमराह करने के लिए कुछ विशेष उपाय किए हैः *"उनके कुछ कामों के बदले शैतान ने उन्हें फ़ुसला दिया।"* (3:155) लेकिन क्षणिक ग़लतियों पर सच्ची तौबा और शैतान के उक्सावों के मुक़ाबले अपनी इच्छा शक्ति को मज़बूत करने के गम्भीर प्रयासों की बदौलत अल्लाह अपनी रहमत से उन्हें मआफ कर देता है क्योंकि वह इंसानी कमज़ोरियों की रिआयत करता हैः *"लेकिन अल्लाह ने उन्हें मआफ़ कर दिया, अल्लाह मआफ़ करने वाला और दयावान है। क़ुरआन यह बताता है कि लगातार गुनाह करते रहना इंसानी अक़ल का दुरूपयोग है।"* (3:135-136; 4:17-18)।

शैतान का तरीक़ा यह है कि वह इंसान के सामने ग़लत काम या ग़लत चीज़ों को अच्छा बना कर, सजा कर और जायज़ बता कर पेश करता है (6:43; 8:48; 15:39-40; 16:63; 27:24; 28:15; 29:38; 38:82-83)। शैतान इंसान को यह सुझाता है कि वे अपनी पाश्विक प्रवृत्तियों और चाहतों के पीछे लगा रहे और केवल वक्ती और निजी आकांक्षाओं को पूरा करता रहे, ताकि इंसान धीरे धीरे गम्भीर चिंतन और दीर्धकालिक व्यापक हितों पर ध्यान देने की क्षमता खो बैठे। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए शैतान विभिन्न प्रकार से ऐसे तमाम प्रयास करने की कोशिश करता हे जिन के द्वारा वह इंसानों को उनके आगे से और पीछे से और दांएं से और बाएं से बहकाने में सफ़ल हो सके, और उनमें से जिसको भटका सके अपनी आवाज़ से भटकाता रहे और उन पर अपने सवारों और प्यादों को चढ़ा कर लाता रहे और उनके माल व औलाद में शरीक बनता रहे और उनसे वायदे करता रहे (17:64)।

जब किसी इंसान को शैतान उसके पूर्वजीवन के विचारों, कल्पनाओं या गुनाहों के द्वारा गुमराह करता है तो यह पीछे से आना है। इस तरह से शैतान उसे (मर्द औरत को) बीते दिनों के विचारों में लगाए रखता है और वर्तमान के तथ्यों से विमुख रखता है। इस तरीक़े पर भटकने वाले लोग वे भी हैं जो अपने पूर्वजों के अनुपालन और अनुसरण में लगे रहते हैं चाहे पूर्वजों का तरीक़ा या व्यवहार ग़लत ही रहा हो (2:170; 5:104; 7:28; 21:53-54; 26:74; 31:21; 43:22-23)। हालांकि इंसान को यह सोचना चाहिए कि वह पूर्व की किसी घटना, किसी काल, किसी पिछड़ जाने वाले रिशतेदार या दोस्त की यादों में रह कर जो समय बिता रहा है उसे रोका जा सकता हे। इसी तरह शैतान इसे भी अपने लिए एक आसान काम समझता है कि वह किसी इंसान को वर्तमान के आनन्दों में और अस्थायी राहत व ऐश की प्राप्ति में मगन कर दे, या भविष्य की ऐसी आकांक्षाओं में लगा दे जो जायज़ या नाजायज़ किसी भी तरीक़े से उसे हासिल हों। किसी नेक आदमी के पास शैतान दाएं ओर से इस तरह आ सकता है कि उसे नेकी के मामले में इतना कट्टर बना दे कि वह उसकी खातिर स्वयं को या दूसरों को नुक़सान पहुंचाने पर आमादा हो जाए। बाएं ओर से शैतान के आने का रास्ता यह है कि शैतान किसी गुनहगार आदमी को और अधिक गुनाहों में लगा दे और उसका यह हाल कर दे कि उसे तौबा करने और पलटने का विचार ही न आए। हालांकि इंसान का हाल यह है कि उस पर किसी समय नेकी (सदाचारिता) का प्रभाव ज़्यादा हो सकता है और किसी समय वह बुराई में लिप्त हो सकता है क्योंकि इंसान के अन्दर दोनों तरह की प्रवृत्तियां डाली गयी हें। चुनाँचे चालाक और मक्कार और बहकाने पर हर समय लगा रहने वाला शैतान इंसान की कमज़ोरियों और ग़लतियों से फ़ायदा उठाने के लिए हर समय तत्पर रहता है: *"और इनको उस व्यक्ति का हाल पढ़ कर सुना दो जिसको हमने अपनी आयतें दीं तो उसने उनको उतार दिया फिर शैतान उसके पीछे लगा तो वह भटक जाने वालों हो गया"* (7:175)।

अल्लाह ने इंसान को पैदा किया है और उसे अपनी बनाई हुई प्रकृति के अनुसार जीने का रास्ता दिखाया है और उसे यह समझाया है कि अल्लाह की महान योजना के तहत उसके जीव किस तरह अपने उद्देश्य को पूरा करते हैं। लेकिन इंसान इस प्राकृतिक सामंजस्य को दरहम बरहम करने का प्रयास करता है और अपनी जल्दबाज़ी, स्वार्थपूर्ति, अदूरदर्शिता या और किसी ग़लत रुजहान के चलते प्रकृति द्वारा जुटाए गए संसाधनों को नष्ट करता है। शैतान के धोखे और फ़रेब में यह भी शामिल है कि वह (इंसानों से कहे) कि *"वे अल्लाह के बनाए हुए रूपों को बदलते रहें"* (7:120)। यह बात सभी जीवित प्राणियों पर भी लागू होती है और वातावरण व पूरी सृष्टि पर भी और अल्लाह तआला फ़साद (बिगाड़) को पसन्द नहीं करता (2:205; और देखें 2:11-12,27,60; 5:64; 7:56,74; 8:73; 10:18; 11:85, 116; 13:25; 26:152,183; 28:77, 83; 29:36; 30:41; 38:28)।

शैतान इंसान की घातक कमज़ोरियों से पहले दिन से ही अवगत है जबकि उसने पहले इंसानी जोडे आदम व हव्वा को बहकाने का काम किया था। वह यह बात जानता है कि इंसान के अन्दर उन चीज़ों को जानने की कितनी जिज्ञासा है जिनको वह नहीं जानता है, और वह अमर हो जाने की कितनी लालसा अपन अन्दर रखता है (7:20; 20:21), और यह कि जब आदम व हव्वा ने वर्जित पेड का फल खा लिया तो उनके अन्दर किस तरह इंसानी काम-भावना जाग उठी। चुनाँचे शैतान इंसान की उन कमज़ोरियों को निशाना बनाता है, इंसान की जिज्ञासा को भड़काता है और इंसानों के अन्दर आपसी भाईचारे का सम्बंध होने के बावजूद एक दूसरे पर बर्चस्व प्राप्त करने की होड़ को हवा देता है (12:100; 17:53; 58:10, और देखें आदम के दो बेटों के आपसी झगड़े से सम्बंधित आयतें (5:27-31), और इंसान की काम-भावना को जगाता है: *"ऐ बनी आदम (देखना कहीं) शैतान तुम्हें बहका न दे जिस तरह तुम्हारे मातापिता को (बहकाकर) जन्नत से निकलवा दिया और उनसे उनके कपड़े उतरवा दिए ताकि उनके सतर (छिपाने की जगह) उन्हें खोल कर दिखा दे।"* (7:27)। इस तरह शैतान इंसान की विभिन्न परिस्थितियों के अनुसार विभिन्न प्रकार की चालें चलता है और शैतान की चालें कभी ख़तरे से ख़ाली नहीं होतीं। शैतान कमज़ोरों को बे सहारा होने का अहसास दिलाता है और हमैशा दरिद्र बने रहने पर संतुष्ट रखता है (3:175; 4:97-98), जबकि शक्तिशाली लोगों को घमण्ड में मुब्तिला करता है और अत्याचार व उत्पीड़न पर उभारता है।

क़ुरआन इंसान को शैतान की इन मक्कारियों और तरह तरह की भटकाऊ चालों से सावधान करता हे जिनके द्वारा वे किसी भी प्रकार की बुराई को स्वीकार्य, बल्कि पसंदीदा और आनन्द दायक बनाता है और जहां तक मुमकिन हो उनके लिए तर्क सुझाता है। शैतान प्रेरणा या डर व आशंका के द्वारा और चिंताएं व उमंगे पैदा करके तथा अपनी मदद व समर्थन के वायदे करके इंसान को अपनी बुराई की तरफ़ खींचने की पूरी कोशिश करता है। वह झूट बोलता और धोखा देता है, लेकिन इंसानी कमज़ोरियों का शोषण करना उसके लिए आसान है और उसके झूठ व फ़रेब पर इंसान यक़ीन कर लेता है क्योंकि वह धोखे में आने, विचार घढ़ने और काल्पनिक बातों में मुब्तिला होने को हमैशा तैयार रहता या रहती है। क़ुरआन इंसान को ख़बरदार करता है कि वह शैतान के ख़ाली ख़ोली और झूठे डरावों और वायदों से प्रभावित न हों *"(यह डर दिखाने वाला) तो शैतान है जो अपने दोस्तों से डराता है, तो अगर तुम मोमिन हो तो उनसे मत डरना और मुझ से ही डरते रहना"* (3:175 तथा देखें 2:268), *"वह उनको वायदे देता है और उम्मीदें दिलाता है और जो कुछ शैतान उन्हें वायदे देता है वह धोखा ही धोखा है।"* (4:120; तथा 17:64)।

फिर क़ुरआन शैतान की यह तसवीर भी पेश करता है कि उसने जिन लोगों को दुनिया में फ़रेब दिया होगा और उनसे अपनी मदद के झूठे वायदे किए होंगे, उनसे आख़िरत में वह किस

तरह बिदक जाएगा और अपने आप को उन से अलग करके उन्हें अकेला और बे सहारा छोड़ देगा (8:48; 14:22; 59:16-17)। जो इंसान शैतान की पैरवी करता है और उसके वायदों पर भरोसा करता है उसकी मिसाल ऐसी है जैसे किसी को जिन्नात ने जंगल में भटका दिया हो (6:71), और इसी लिए इंसान को चाहिए कि इस अनदेखे और बदतरीन दुशमन पर भरोसा न करें क्योंकि शैतान इंसान को समय पड़ने पर धोखा देने वाला है (25:29)।

लेकिन शैतान की इन मुस्तकिल धोखेबाज़ियों के बावजूद बहुत से लोग हैं जो शैतान को अपना समर्थक और सहयोगी बनाते हें और शैतानों के साथ मिल कर एक संयुक्त मोर्चा बना लेते हें। ऐसे इंसानों और शैतानों के गुटों को क़ुरआन *शयातीनुल जिन्न वल इंस* (जिन्नी शैतान और इंसानी शैतान) कह कर ज़िक्र करता है (6:112, और देखें 2:14; 4:76,119; 6:121,128; 7:27,30; 17:27), और उन्हें *"साअ क़रीना"* (बुरा साथी) (4:38) और *"हिज़्बुश्शैतान"* (शैतान की पार्टी) (58:19) ठहराता है, क्योंकि शैतान ने उन्हें क़ाबू में कर लिया है और अल्लाह की याद उनको भुला दी है। यह शैतान की फौज है और सुन रखो कि शैतान की फ़ौज नुक़सान उठाने वाली है (58:19)। यह बुरे सहयोगी जो कि अस्थायी और कम समय के सहयोगी है क्योंकि शैतान कभी लम्बे समय के लिए किसी का विश्वसनीय साथी नहीं बन सकता, फ़ैसले के दिन इस बात का इकरार करेंगे कि हम एक दूसरे से फ़ायदा उठाते रहे (6:128)। लोग शैतान से इतने क़रीब और उसके इतने आधीन हो जाते हैं कि वे जान बूझ कर या अनजाने उसके पुजारी बन जाते हैं (19:44)।

अब अगर इंसान और शैतान के बीच सम्बंध इतना अधिक बढ़ जाए और वह इंसानों के अन्दर इतना ज़्यादा घुस जाए कि वह उनकी धमनियों में खून के साथ दौड़ने लगे (जैसा कि अल्लाह के रसूल की मुबारक हदीस में बयान हुआ है जो बुख़ारी, मुस्लिम, इब्ने हंबल, अबु दाऊद, इब्ने माजा और अलदारमी वग़ैरह ने बयान की है) तो क्या वे इंसान को शरीरिक रूप से और बग़ैर किसी माध्यम के प्रत्यक्ष नुक़सान पहुंचा सकता है? क़ुरआन में है कि *"जैसे किसी को जिन्न ने लिपट कर दीवाना कर दिया हो"* (2:275) और क़ुरआन यह बताता है कि अय्यूब ने कहा कि शैतान ने मुझे यातना और तकलीफ़ दे रखी है (48:41)।

शैतान के शरीरिक प्रभावों के इस बयान को प्रतीकात्मक भी समझा जा सकता है, या यह समझा जा सकता है कि शैतान इस जीवन में वास्तव में बुराई का स्रोत है चाहे उसकी बुराई किसी पर उसके अपने या दूसरे के कर्मों की वजह से आए। शैतान इंसानों को जादू भी सिखाता है (2:102), लेकिन यह केवल इतना ही है कि वह उन्हें सीखने या अनुभव करने की प्रेरणा देता हे। यह भी शैतान का एक उक्सावा ही हो सकता है कि लोग बहुत से कामों को शैतान की हरकत समझें जबकि ऐसा न हो, जैसा कि ख़ुद क़ुरआन में ही इस की मिसाल मौजूद है। इस्लाम से पहले के अरब लोग यह समझते थे कि शायरी जिन्न या शैतान सिखाते हें, इसी

लिए क़ुरआन को भी उन्होंने शैतानों से ही जोड़ा, चुनाँचे क़ुरआन ने इब बात का खण्डन किया और इस पर ज़ोर दिया कि इसका स्रोत केवल अल्लाह की हस्ती हे और यह नज़र न आने वाली शक्तियां अल्लाह के कलाम में कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकतीं (26:210-212; 81:25)। जहां तक प्राकृतिक आपदाओं में शैतान की दख़ल अंदाज़ी का सवाल है, मिसाल के तौर पर आंधी, बाढ़ भूकम्प आना, ज्वाला मुखी फूटना आदि तो क़ुरआन यह बताता है कि यह सृष्टि अल्लाह की बनाई गयी यांत्रिक व्यवस्था से बंधी है और उसके बनाए हुए नियमों व कानूनों के तहत चल रही है, चाहे किसी भी हरकत का कोई भी नतीजा हो (2:164; 7:57; 10:22; 13:3; 14:32; 15:9-22; 16:14-15; 17:66-69; 21:30-33; 22:65; 25:48; 27:61-63; 29:65; 30:24-26; 31:31; 35:12,38,40; 42:28, 33-34; 43:12; 45:5,12; 27:27; और देखें 17:77; 21:33; 33:38; 36:40; 48:23)।

## शैतान और पैग़म्बर

وَ كَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَ الْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا ؕ وَ لَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَ مَا يَفْتَرُوْنَ ﴿۱۱۲﴾ وَ لِتَصْغٰۤى اِلَيْهِ اَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَ لِيَرْضَوْهُ وَ لِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ ﴿۱۱۳﴾

और इस तरह हमने हर एक नबी के दुश्मन बहुत से शैतान पैदा कर दिये थे, कुछ आदमी, कुछ जिन्नात जिनमें से कुछ दूसरे कुछ को चिकनी चुपड़ी बातों का वसवसा डालते थे धोके में डालने के लिए, अगर तुम्हारा रब चाहता तो वो ये काम ना करते, सो उनको छोड़ो, जो झूठ घड़ने का काम ये कर रहे हैं करने दीजिये। ये लोग इसलिए ये कर रहे थे के उनके दिल जो आख़िरत पर यक़ीन नहीं रखते उस तरफ़ मायल हो जायें और उसको पसंद कर लें और दोषी हों जायें, उन कामों के जिनके ये दोषी हो रहे हैं। (6:112-113)

وَ مَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ وَّ لَا نَبِيٍّ اِلَّاۤ اِذَا تَمَنّٰۤى اَلْقَى الشَّيْطٰنُ فِيْۤ اُمْنِيَّتِهٖ ۚ فَيَنْسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطٰنُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۵۲﴾ لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطٰنُ فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ

और आपसे पहले हम ने कोई रसूल, कोई नबी ऐसा नहीं भेजा जिनको ये वाक़या पेश ना आया हो के जब उसने पढ़ा तो शैतान ने उसके पढ़ने में शुबह डाला, फिर अल्लाह उसके डाले हुए शुबह को दूर कर देता है, फिर अल्लाह अपनी आयात को मज़बूत कर देता है, और अल्लाह ख़ूब जानने वाला और ख़ूब हिकमत वाला है। ये इसलिये है के जो शक शैतान डालता है उसको

مَّرَضٌ وَّالْقَاسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاِنَّ
الظّٰلِمِيْنَ لَفِيْ شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ ﴿٥٣﴾ وَّلِيَعْلَمَ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ
فَيُؤْمِنُوْا بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ قُلُوْبُهُمْ ؕ
وَاِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٤﴾

आज़माइश का माध्यम बनाए, उन लोगों के लिये जिनके दिलों में बीमारी है और जिनके दिल सख़्त हैं, और बिला शुबह ये ज़ालिम लोग सख़्त मुख़ालफ़त में हैं। और इसलिये भी है के जिन लोगों को इल्म दिया गया है वो जान लें के ये आपके रब की तरफ़ से हक़ है तो इस पर ईमान लायें, और उनके दिल अल्लाह के सामने विनम्रता पूर्वक करें, और जो ईमान लाये हैं, अल्लाह उनको सीधा रास्ता दिखाता है। (22:52-54)

وَالشَّيٰطِيْنَ كُلَّ بَنَّآءٍ وَّغَوَّاصٍ ﴿٣٧﴾ وَّ
اٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ﴿٣٨﴾

और जिन्नात को भी ताबे कर दिया यानी इमारतें बनाने वालों और ग़ोताख़ोरों को भी। और दूसरे जिन्नात को भी जो ज़ंजीरों में जकड़े रहते थे। (38:37-38)

शैतान अल्लाह के पैग़म्बरों के साथ भी छल करने की कोशिश करता है। इंसानों और जिन्नों में से जो लोग उसके पीछे चलने वाले होते हैं वे उन लोगों के स्वभाविक दुशमन होते हैं जो लोगों के पास अल्लाह की हिदायात और संदेश लेकर आते हैं और शैतान की योजनाओं से उन्हें सावधान करते हैं (6:12-13)। ये उन पर आरोप गढ़ते और उन्हें फैलाते हें लेकिन अल्लाह उनकी रक्षा करता है, तथापि यह उसकी मंशा है कि वह इंसानों और जिन्नों को एक दूसरे के द्वारा परीक्षा करे, इसी लिए वह उन्हें बुद्धि के साथ साथ मर्जी की आज़ादी भी देता है ताकि वे अपने लिए जो चाहें उसका चुनाव करें। क़ुरआन पैग़म्बरों और तमाम ईमान वालों को इस झूट व मनगढ़त बातों की अनदेखी करने की सीख देता है और ग़लत इरादे रखने वालों को इस झूट व मनगढत के जाल में उलझने के लिए छोड़ देने को कहता है ताकि वे इस भ्रम में पड़े रहें कि वे अल्लाह की हिदायत की सीख देने वालों के ख़िलाफ़ जो कुच कर रहे हैं सही कर रहे हैं। आख़िरकार हर चीज़ का रिकॉर्ड तैयार किया जा रहा है और हर इंसान को उसके अनुसार बदला दिया जाएगा जो कुछ उसने अपने लिए चुना होगा और अपनी मर्ज़ी से जो कुछ भी किया होगा। यहाँ तक अल्लाह के पैग़म्बरों की उम्मीदों और आकांक्षाओं को भी शैतान अपनी चालों का निशाना बना सकता है। जैसे कि अल्लाह के पैग़मबर की यह उम्मीदें कि लोग अल्लाह की हिदायत को सकारात्मक रूप से लेंगे, और जब वे अपने लोगों की अधिकांश संख्या को ये देखें कि वे तो अल्लाह के संदेश को झुठला रहे हैं और उनका प्रतिरोध कर रहे हैं तो इससे उनका मनोबल कम हो और वे कमज़ोर पड़ें। इस तरह के शैतानी कचूके पैग़म्बर को प्रभावित कर सकते हैं क्योंकि वह मनुष्य है लेकिन अल्लाह शैतान के ऐसे प्रयासों को कामयाब

नहीं होने देता है और अपने पैग़ाम और अपने पैग़म्बर के आत्मविश्वास की रक्षा करता है (38:34-35 और देखें 38:34-35; 11:120; 17:74-75; 25:32)।

शैतानी प्रवृत्ति के कुछ इंसान और जिन्न अल्लाह के पैग़म्बरों को मूल उद्देश्य को बारे में लोगों के अंदर शक व आशंकाएं पैदा करते हैं और यह आरोप देते हैं कि पैग़म्बरों का असिल उद्देश्य केवल अपने लिए निजी और व्यक्तिगत लाभ अर्जित करना है। शैतान को यह बातें लोगों के मन में डालने और यह शक व संदेह पैदा करने का मौका अल्लाह ने दे रखा है ताकि उसके ये प्रयास इंसानों की परीक्षा का माध्यम बनें, और जो लोग समझदार होंगे और ज्ञान रखने वाले होंगे वे शैतान के धोखों से धोखे में न आएंगे और सच्चाई को स्वीकार करके उसे अपना लेंगे। दूसरी ओर जो लोग ग़लत भावनाएं रखते होंगे वे शैतान की कानाफूसी को खुशी खुशी स्वीकार कर लेंगे और उसे फैलाने में अपनी सारी शक्तियां लगा देंगे। हालांकि बुराई लोगों को जोड़ नहीं सकती क्योंकि यह स्वार्थपूर्ति और अवसरवादिता को बढ़ावा देती है, और जितने लोग भी बुराई को अपनाएंगे उनके उद्देश्य उतने ही एक दूसरे से अलग अलग होंगे और एक ही तरह की बुराई में लिप्त होने के बावजूद उनमें फूट पड़ेगी (59:11-17)।

एक अल्लाह में विश्वास रखने वाले लोगों को उनका सच्चा अक़ीदा इस पर तैयार करता है कि वे अल्लाह की प्रसन्नता को अपना लक्ष्य बनाएं और आख़िरत में उसकी तरफ़ उपहारों व पुरस्कारों पर नज़र रखें। उनकी यह दूरदर्शिता उनके दिलों को एक दूसरे के क़रीब लाती है और उन्हें आपस में जोड़ती है चाहे उनके बीच समय और स्थान के लम्बे फासले हों (59:8-10)। और जब अल्लाह पर ईमान रखने वाले लोग किसी समय शैतान के बहकावे में आ जाते हैं तो वे तुरन्त तौबा कर लेते हैं और अपना दोष स्वीकारते हैं (3:135,155; 7:2011-202) *''और जो लोग ईमान लाए हैं अल्लाह उनको सीधे रस्ते की तरह हिदायत करता है' /'* (22:45)

## शैतान से बचाव

قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ لَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۳۸﴾ وَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿۳۹﴾

हमने हुक्म दिया कि तुम यहाँ से उतर जाओ, फिर अगर तुम को मेरी जानिब से कोई हिदायत पहुँचे तो जो कोई मेरी हिदायत पर चलता रहेगा, तो उसको ना कोई डर होगा और न कोई दुख। और जो कुफ़्र करेंगे और हमारी आयात को झूठ जानेंगे, सो वो ही दोज़ख़ी होंगे और उसमें हमेशा पड़े रहेंगे। (2:38-39)

قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيْعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى ۙ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى ﴿١٢٣﴾ وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِيْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ﴿١٢٤﴾

अल्लाह ने कहा, तुम दोनों जन्नत से उतर जाओ, तुम एक दूसरे के दुश्मन होंगे फिर अगर मेरी तरफ़ से तुम्हारे पास कोई हिदायत आए, तो जो मेरी हिदायत की पैरवी करेगा तो वो ना गुमराह होगा और ना तकलीफ़ में पड़ेगा। और जो मेरी नसीहत से मुंह मोड़ेगा तो उसकी ज़िन्दगी तंग हो जाएगी, और क़यामत के दिन हम उसको अंधा करके उठायेंगे। (20:123-124)

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ اِنِّيْ وَضَعْتُهَآ اُنْثٰى ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ ؕ وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰى ۚ وَاِنِّيْ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَاِنِّيْٓ اُعِيْذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٣٦﴾

जब उनके हां लड़की पैदा हुई तो कहने लगीं के ऐ मेरे रब! मेरे तो लड़की हुई, और अल्लाह को ख़ूब मालूम है के उनके हां क्या पैदा हुआ और वो लड़का उस लड़की के बराबर नहीं, मैंने उसका नाम मरयम रख दिया है और मैं उसको और उसकी औलाद को आपकी पनाह में देती हूं शैताने मरदूद से। (3:36)

وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٠٠﴾

और अगर आपको शैतान की तरफ़ से कोई वसवसा आने लगे तो अल्लाह की पनाह मांग लिया करो, बिला शुबह वो ख़ूब सुनन वाला और ख़ूब जानने वाला है। (7:200)

فَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿٩٨﴾ اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٩٩﴾ اِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهٗ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِهٖ مُشْرِكُوْنَ ﴿١٠٠﴾

तो जब क़ुरआन पढ़ना चाहो तो अल्लाह की पनाह मांग लिया करो मर्दूद शैतान से। उसका कोई ज़ोर नहीं चलता उन लोगों पर जो ईमान रखते हैं और अपने रब पर भरोसा रखते हैं। उसका ज़ोर तो बस उन्हीं लोगों पर चलता है जो उसको अपना दोस्त बनाते हैं और अल्लाह के साथ शिर्क करते हैं। (16:98-100)

وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٩٧﴾ وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ ﴿٩٨﴾

और आप यूं कहें, ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह मांगता हूं शैतानों के वसवसों से। और ऐ मेरे रब! मैं तेरी पनाह मांगता हूं इस बात से भी के वो मेरे पास आ मौजूद हों। (23:97-98)

وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ

और अगर आप को शैतान की तरफ़ से कोई वसवसा पैदा हो तो अल्लाह की पनाह मांगा करें, बिला शुबह वो

ख़ूब सुनने वाला ख़ूब जानने वाला है। (41:36) فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۖ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

अल्लाह के बाग़ी शैतान के बारे में जो कि इंसान का भी एक अनदेखा दुश्मन है, ख़बरदार करने और मागदर्शन करने के साथ साथ क़ुरआन इस दिखाई न देने वाले ख़तरे से बचने के तरीक़े भी बताता है। जब शैतान ने विद्रोह का झण्डा उठाया और इंसान की अक़ल व नैतिकता को लगातार निशाना बनाते रहने की छूट अल्लाह से प्राप्त कर ली तो उसने घोषणा की कि उसकी चालें उन लोगों को कुछ नुक़सान नहीं पहुंचा सकेंगी जो अल्लाह के सच्चे बन्दे होंगे। चुनाँचे शैतान के हमलों और अपनी मानवीय कमज़ोरियों जिनको शैतान निशाना बनाता है के नुकसान से बचने के लिए वास्तविक ढाल अल्लाह का तक़वा (ईशभय) है। इस तक़वा पर ज़ोर देने के लिए किसी ईमान वाले बन्दे या बन्दी को क़ुरआन पढ़ने या कोई दूसरा महत्वपूर्ण मामला शुरू करते समय अल्लाह की शरण लेने की सीख दी गयी है। जब किसी मोमिन के यहाँ कोई बच्चा पैदा हो तो बच्चे के लिए उसके करने का सबसे पहला काम यह है कि वह उसकी रक्षा के लिए दुआ करे। अगर कभी शैतान किसी ईमान वाले के दिल या दिमाग़ पर प्रभाव डालने में सफल हो जाए तो मोमिन बन्दा या बन्दी अल्लाह को याद करके और अपने तक़वा को पुना प्राप्त करके शैतान की उक्साहट को दूर कर सकता है। शैतान की चालों को सभी पहलू मोमिन के सामने अल्लाह और आख़िरत पर ईमान की बदौलत खुल जाते हैं क्योंकि इंसान और दुनिया के इस जीवन का हाल एक सा ही है कि दोनों की एक उम्र और अवधि निर्धारित है। अल्लाह का तक़वा और शैतान से बचने के लिए उसकी शरण मांगना केवल ज़ुबान से कुछ शब्द बोल देने का नाम नहीं है, बल्कि जीवन का एक ढंग है। जब आदम व हव्वा और शैतान को दुनिया में भेजा गया था तो अल्लाह तआला ने यह फ़रमा दिया था कि तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से हिदायत पहुंचेगी तो (उसका अनुसरण करना क्योंकि) जिन्होंने मेरी हिदायत का अनुसरण किया उनको न कुछ डर होगा और न वे खेदग्रस्त होंगे (2:38)।

जब तक कोई मोमिन अपने जीवन में अल्लाह की हिदायत का पालन करता रहेगा (या करती रहेगी) तब तक शैतान की चालों से बचा रहेगा (या बची रहेगी), चाहे वह कोई व्यक्ति हो, कोई परिवार हो, समाज हो या दूसरों के साथ उनके सम्बंधों का मामला हो, हर जगह यह शरण मांगना ज़रूरी है और शरण मिलती रहेगी। इस प्रकार के एक समग्र सुरक्षा बन्दोबस्त के साथ शैतान को घुसपैठ करने के लिए कोई रास्ता नहीं मिलेगा और अगर कभी वह अपनी किसी घुसपैठ में सफ़ल हुआ भी तो भी यह कामयाबी अस्थायी होगी और जारी नहीं रहेगी क्योंकि मोमिन बन्दा या बन्दी जल्दी ही पलट जाता है या पलट जाती है और अल्लाह की शरण में आ जाता है, *"जो लोग परहेज़गार हैं जब उनको शैतान की तरफ़ से कोई उक्साहट होती है तो चौंक पड़ते हैं और (दिल की आँखें खोल कर) देखने लगते हैं।"* (7:201)।